# পরিষদ্ গ্রন্থাবলী।

### কৃত্তিবাদী রামায়ণ ( উত্তরকাণ্ড )

## শ্রীযুক্ত হীরেন্দ্রনাথ দত্ত কর্তৃক সম্পাদিত।

্১৩4) কর্ণভন্নালিন খ্রীট, বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ কার্য্যালয় হইতে প্রকাশিত।

কলি কাতা

द নং রামধন মিত্রের লেন, স্থাসপুকুর,

"বিশ্বকোষ প্রেস"

এ, এন্, বস্ক কর্তৃক মুদ্রিত।

সম ১৩১১।

#### উত্তরকাণ্ডের মুখবন্ধ।

তিনখানি প্র'থি অবলম্বন করিয়া উত্তরকাও সম্পাদিত হইয়াছে। তল্মধ্যে একথানিতে কোন দন তারিথ নাই, দেখিলেও প্রাটান লিপি বলিয়া মনে হয় না। এথানি সাহিত্য-পরিষদের সংগ্রহ। অপর ছইথানি পুঁথি বিশ্বকোয-কার্যালয়ের সংগৃহীত। শেষোক্ত ছইথানিতে দন তারিথ আছে, এবং লেথকের নাম ও ঠিকানা আছে। একথানির স্যাপ্তি অংশ এইরপ—

"কৃতিবাস পণ্ডিত ভণে রামের চরণে। উত্তরা হইল সাঙ্গ গীত রামায়ণে।

যথা দৃষ্টং তথা নিথিতং। ভীনভাপি রণে ভঙ্গো মুনীনাঞ্চ মতিভ্রমঃ। তারিথ ২ সন ১০০৯ সাল...লথিমবার সাকিম থণ্ডবোষ পাত্রসাতর। পল্লপণ্ডিত সহস্তলিখিতং ॥ শ্রীরামচন্দ্রায় নমঃ নমঃ।"

এই পুঁথির শেষ পূতাঙ্ক ১৬২। ১ম পাতা নাই, তৎপরে বন্দনার অংশ নিতান্ত অপ্পষ্ট, শিবের বিবাহ ছুইতে বেশ প্রস্ট।

অপর পুঁথিবীন ১৫০ শকের নিপি। এই পুঁথির শেষে এইরূপ লেখা আছে—

> "শ্রীরামের চরিত্র শ্রবণে পাণের বিনাশ। উত্তরকাণ্ড সম্পূর্ণ গাইল ক্রন্তিবাস॥ ०॥

ইতি শ্রীবংস পণ্ডিত শ্রীকৃত্তিবাসবিরচিতং স্কবি স্ক্রমতি উত্রকাণ্ডরচিতং সমাপ্তং ॥ ০ ॥ যথা দৃষ্টং তথা লিখিতং লেখকো নান্তিদোষকঃ। ভীমস্তাসিরণে ভলো ম্নীনাঞ্চ মতিভ্রমঃ। শাকে ১৫০২ ইতি তারিখ ২৫ মাঘ শ্রীনরসিংহ শর্মণং সাক্রমিদং॥ ০ ॥ ০ ॥ রাবণেন হতা সীতা ক্রফপক্ষে সিতাইমী। মীতা রাভ্রৌ দিনস্তার্কে অর্চন্দ্রাইভারবে ॥"

ইহুার শেব প্রান্ধ ১৯৯। জাভোগান্ত সমস্তই অথণ্ডিত আছে। গ্রহমুদ্রশ আরম্ভ হইলে পর এই পুঁথি থানি সংগৃহীত হয়।

সাহিত্য-প্রনিধনের পুঁথির সহিত ২০০৯ সালের পুঁথির অনেকটা ঐক্য দৃষ্ট হয়। এই উভয় পুঁথিই আদর্শপ্ররূপ ব্যবস্থাত হইয়াছে। ১৫০২ শকের পুঁথিখানি শক্তি প্রাচীন হইলেও ১০০৯ শক্ষের পুঁথির সহিত অধিকাংশ স্থনেই পাঁঠির ব্যবস্থ নাই। বিষয়গত সাদৃশু সত্ত্বেও পাঠবৈষম্যের প্রতি দৃষ্টি করিবে, এই ছইখানি পুঁথি যেন ছই জন কবির রচনা বলিয়া মনে হইবে। ১০০১ সালের পুঁথি ও সাহিত্য-পরিষদের পুঁথির শেষাংশ নিতান্ত অস্পষ্ট, শ্বেই জন্ম আলোচ্য রামায়ণের শেষাংশ ১৫০২ শকের পুঁথির সাহায্যে মুদ্রিত হইয়াছে।

শীরামপুরের মুদ্রিত রামায়ণ ও বটতলার রামায়ণের সহিত বর্ত্তমান উত্তর-কাণ্ডের অনেক বিষয়ে পার্থক্য লক্ষিত হয়। প্রচলিত মুদ্রিত পুস্তকে বৈষ্ণবীয় প্রভাবের ছায়াপাত স্থাপ্ট, কিন্তু এই উত্তরকাণ্ডে শৈবপ্রভাবই পরিলক্ষিত হয়। আর একটা বিশেষত্ব এই যে, বর্ত্তমান প্রন্থে শস্থকের তপস্থা-প্রসঙ্গে বর্দ্ধমানবাসী আপ্রেরিজাতির কুলজী কতকটা গুথিত হইগ্নাছে। এই পুস্তকে বহু অপ্রচলিত শক্ষ আছে, তাহার একটা নির্ঘণ্ট দেওয়া হইল; ক্রুক্টী অপ্রচলিত শক্ষের অর্থগ্রহ করিতে পারি নাই।

এই, গ্রন্থ সম্পাদনকালে আদশ প্রথির প্রতি লক্ষ্য করিয়া প্রাচীন রীতি রক্ষা করা হইয়াছে।

> শ্রীহীরেন্দ্রনাথ দত্ত সম্পাদক

#### রামায়ণ উত্তরকাণ্ড।

#### সূচীপত্ৰ

\*\* ····

বিষয়			পৃষ্ঠা
মুনিগণের শ্রীরাম-সম্ভাষণ · · ·	•••	***	ે
देसाजिर वर्षत त्यमन		•••	0
মহাদেবের বিবাহোৎসব ···	***		8
८गोतीत अधिवांम	•••	• • •	€. €
বর্ষাত্রী ও কন্তাষাত্রিগণ 🕠	***	• • •	•
শিবের বরবেশে যাতা	•••	•••	٩
শিবের বিবাহ •••	1,525,2	•••	ь
হরগোরীর ভোজন	***	•••	9
ফুলশ্যা ও বর বিদায়	***	• • •	5.
The state of the s	. en '		33
হ্মেকর শৃঙ্গ হরণ ওলঙা নিশাণ · · ·	•••	***	
স্থমের তাক্ষেত্র 🔐	• • •	••	>২
স্থমেকুর আমন্ত্রণে পর্ববিতগণ্ডের আগমন		•••	50
শ্বতনাশাবালী ••	• • •	•••	28
사람들은 사람들은 학생들은 사람들이 가는 사람들은 사람들이 되는 것이 없다.			<b>&gt;</b> ¢
नातानत वर्गभूरत शमन			
দেবগণের লক্ষা রক্ষণে যুক্তি	<b>▶ ♦ 6</b> 7	• • • . 	74
ইক্সাহ নারদের ব্রহ্মলোকে গমন · · ·	•••		>9
			36
পর্বতগণের সহিত ইন্দ্রের যুদ্ধ 🕠			
পর্বতগণের পরাজয় · · ·		• •	্যস
রাক্ষসগণের জন্ম-বিবরণ •••		•••	٠,٠
마상이 그렇게 화가하다 이 경상하고 있습니다. 그렇게 하는 이 나를 가게 되었습니다.		6.4 ·	২৬
যক্ষরক্ষা প্রভৃতির জন্ম-বিবরণ \cdots			
প্লকেশ ও মাল্যবান প্রভৃতির কর্ম: •	•••		**
মারীচ আছি রাক্তের জন 👵	***		5.0
নারাধণের রাক্ষ্য বঙ্গে প্রতিজ্ঞা 🔐			33
			3.
রাক্সন্থ নারামণের বৃদ্ধ 🥶 😬			

## मृहोभज।

ादयस			পৃষ্ঠা
রাক্ষদগণের পাতালপুরে গমন	• • •		26
রাবণ কুস্তকর্ণ প্রভৃতির জন্ম · · ·	, •,•,•	•••	. ₹ 9
রাবণের প্রতি ইমালীর উপদেশ	***	***	٥.
কুবেরের লঙ্কাত্যাগ	•••	• • •	05
सत्नानतीयर तांवर्णत विवार	•••		৩২
রাবণের নিক্ট কুবেরের দূতপ্রেরণ	***	***	99
কুনের ও রাবণের যুদ্ধ	• • •		98
পুষ্পকর্থ লইয়া রাবণের কৈলাস গমন		•••	.૭૧
ব্লাবণের প্রতি নন্দীর ও বেদবতীর বিবরণ	• • •	• • •	سواق
রাবণের প্রতি বেদবতীর অভিশাপ	*** *		192
রাবণ কর্তৃক মক্রৎ রাজার যজ্ঞভঙ্গ	• • •	•••	8.
রাবণের দিখিজয়ে যাত্রা	***		83
শনারণ্যসহ রাবণের যুদ্ধ	6.00	T.	8.5
অনারণৌর পরাজয়			89
নর্মনাকৃলে রাবণের শিব পূজার উচ্ছোন		•	88
নর্মনা নদীর হ্রাস বৃদ্ধির কারণামুসন্ধান			84
শক্ত্নের দারপালের সহিত রাবণের দশ্ব			84
কার্ত্বীগ্যাৰ্জ্নের সহিত রাবণের যুদ্ধ			୍ୟ
त्रीवरणंत्र शताब्वय ଓ वक्कन			1.129
অৰ্জুন সমীপে পুলস্তা মুনির পার্থনা			85
রাবণের মৃক্তি ও অর্জুনের বিবরণ	•••	***	83
ভোজরাজের নিকট অর্জুনের পরাজয়			Œ o
অর্জুনের যমদগির আতিথ্য স্বীকার			6>
তপোবনে সগৈতে রাজার ভোজন			65
মুনির নিকট রাজার কপিলা গাভী প্রার্থনা	***		6.0
किथना इटेंटि टेम्काफि शृष्टि			€6
মানণা ২২০৩ নেসাদ স্বাচ মুমদ্যির সহিত অর্জুনের বৃদ্ধ	•••		ee.
			e.
অর্জুনের বাণে যমধগ্রির প্রতন 🙃	••••	(	49.
ব্যেকার বিলাপ ও কটকগণের জীবন দান	***		G)e

সূচীপত্ত।	<b>.</b>
	পঠা

<b>विव</b> त्र				পৃষ্ঠা
পরশুরামকে উদ্দেশ করিয়া রেণুক	१व कुमन		•••	¢>
পরশুরাম ও গণেশের যুক্ত	•••	•••	•••	40
শিবের নিকট পরশুরামের অস্ত্রাদি	া প্রাথি	***	··· 1 18 11	42
পরগুরামের অর্জুনকে যুদ্ধার্থে আ	হবান	***	•••	45
অর্জুনসহ পরওরামের যুদ্ধ	•••	•••	•••	80
রেণুকার চিত্যসজ্জা	•••	•••	***	42
রেণুকার চিতারোহণ	•••	•••	•••	44
ভার্গব ও রাবণ সংবাদ	***	•••	•••	*
বালীর নিকট রাবণের গমন	a m :	***	•••	97
বালীর নিকট রাবণের পরাভব		•••	***	65
বালীর সহিত রাবণের মিত্রতা	***	***	***	10
রাবণের যমপুরে গমন		***	***	95
यमध्री वर्गन		•••	• • • •	92
যমের সহিত রাবণের যুগ্ত		1.00	•••	98
নাগণণের সহিত রাবণের যুদ্ধ 🕽	• • •	•••	•••	<b>b</b> 2
নিবাত কৰচের সীহিত নামণের বি	<b>f</b>	•••		73
রাবণের স্থরতি দর্শন	***	•••	•••	50
বক্সপার রাবণের যুক্ত	***	•••	•••	P-8
রাবণের বলিদ্বারে যুক্ত যাত্রা	***	***		be
রাবণের বলি দর্শন	•••	• • •	***	64
বলির নিকট রাবণের পরাজয়	4.84	***	***	<b>b</b> 9
যারণ-পর্বত সংবাদ	•••	•••	***	p-b-
মাদ্বাভার সহিত রাবণের যুদ্ধ	***			<b>b</b> 3
চন্দ্রের সহিত বাবণের যুক্ত	• • • • •	* * 4	•••	٠,
রাবণেত্ব কপিল দর্শন		***	•••	23
রাবণ্ডের রভাগর্মন			•••	200
রারণের প্রতি নলকুবেরের অভি	শাপ			86
প্রাৰণ কর্তৃক বহু রাজকভাগ্রহণ				<b>3</b> E
कोडाटकदमञ्ज महिल त्रांगरभन्न युव	*12		***	'~'

	29
রাবণ বিহার	
শূর্বণথার প্রতাপ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
<b>८मयनाएमत निकृष्ठिमा युख्य</b>	۵۵
<b>भिष्यमादित युक्त याँजां</b>	302
রাবণের মথুরায় গমন • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	ن <u>) د</u> ه
मथुतांत्र तावरंगत निमञ्जन शहन	>08
দেৰগণের বিষ্ণুর নিকট গমন	> • €
त्रादग-वर्ध दनवर्गात श्रार्थना	>•%
সাবিত্র বস্থর বুদ্ধ কথা · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	> 9
দেৰগণের সহিত রাবণের যুদ্ধ	5 ob
চণ্ডীর প্রতি রাবণের উক্তি · · · · · ·	>>>
हैक कर्ड्क द्रोगर्गद वसन	558
<b>ट्यचनार</b> न्त युक्कांत्रस्त्र	254
<b>(मधनार्येत क्रिक्स</b> ••••	>56
মেখনাদের নিকট ইক্র বন্দী	>>9
टेप्सत वषनमूकि	356
অহল্যার বিবরণ ••• •••	>>>
ইন্দ্রের প্রতি ব্রহ্মশাপ	5 P.
অহন্যার অভিশাপ কথা	525
গৌতদের দেবপুরে গমন ••• •••	>২২
গোতমের ব্রহ্মা ও শিব দর্শন \cdots \cdots	520
নারায়ণের শ্রেষ্ঠতা বর্ণন •••	528
হনুমানের জন্মকথা	>২৫
हनुभारनत वानानीना	525
रनुमारनत दत्र नाङ	395
হনুমানের প্রতি চক্রমোলির অভিশাপ	১৩২
হনুমানের ঋষামূথে গমন · · · ·	500
हन्मारनव प्रध्रन ७००	>08
बानीत दर्काष	

	<b>मृ</b> ही	পত্ৰ।		1/.
<b>ि</b> वस्त्र				পূৰ্ণা
বানর-ভয়ে বাবণের পলায়ন	•••	. • •		১৩৭
স্থগ্রীবের আখাস	***	***	***	204
বালীমুগ্রাবাদির জন্মকথা	***	•••	***	১৩৯
বানরের জন্মকথা		***	***	282
বাশীর নিকট স্থগ্রীবের পরাভব	***		2**	589
রযুর চরিত্র 🔒	***	•••	***	588
निनीत्भन्न जनात्मध-यञ्ज	***	* * *	444	286
ইন্দ্র ও রবুর যুদ্ধ	#- <b>4</b> P	. ***	***	>62
ইক্রের অম্ব প্রত্যপূর্ণ	*.0 *	4.4	***	>4+
রঘুকে দেবগণের ছলনা		***	***	262
র্যুরাজার আয়বলিদান	* * *		***	>& ?
রপুর ওরুদক্ষিণা	•••	***	***	540
গ্রীরামের নিত্যকর্ম	4.4.	***	** 5	>66
রামের বহ-রাজ-স্ভার্যণ	***	+ 0 5	4++	549
রামকর্ত্ব হন্যানাদিকে প্রস্থা	র •••	***	* 4 4	> @b
বানরগণকে বিদীর্থন	***			\$2.5
হন্মানের প্রতি দীতার বরদান	***	* #4	***	>160
विधीयगानित विनाम	* * *		*1*	263
অশোকবন-নির্ম্মাণ	* * *	•••	* * *	342
অশোক্বনে রাম্মীতার মিলন	• • •	***	•••	360
সীতার গর্ভ	•••	A 4 V	***	>98
রামের অপ্যশ শ্রবণ	a * 4,	***	***	244
সীতাবর্জনে রামের অভিপ্রায়	• • •	***	***	> 66
সীতার বনবাস	•••	• • •	***	209
সীতার বালীকিকুটারে আগমন	***	• • •		298
রামলক্ষণের শোক	•••	• • •	***	290
নুগুরাজার আখ্যান	***	***	***	>18
যাতির উপাধ্যান			•••	396
নিমির কথা	***		***	395

## দূচীপত্ত।

दियन				পৃষ্ঠা
কুকুর-বিপ্র-সংবাদ	***	* b *,	•••	299
কুকুরের রামের নিকট অভিযোগ		***	•	> 96
ব্রাহ্মণের কালিঞ্জরে রাজ্যলাভ	• • •	+ 4 +	***	298
কুকুরের পূর্বজন্ম-কথন	•	e e e	•••	360
দবণের কথা	***	• • •	***	727
শক্রদ্বের মধুপুরে গমন	***	res.	***	245
কল্মাষণাদ রাজার কথা	***	•••	***	248
লবকুশের জন্ম	***	***	***	246
মারাতার কথা		m'a +	- <b>*</b>	560
শক্তর ও লবণের বৃদ্ধ	'** * *			569
नवन्व	***	***	•••	266
मथुदा-निर्मान	***		***	74%
লবকুশেরু গান	***	***	÷ • •	>>=
শক্তমের মধুরায় রাজ্যলাভ	***	***	***	tat
ব্রান্ধণপুত্রের মৃত্যু	• : •		***	355
শূরের তপতা	* * *		and the second s	290
भव्यत्व मञ्ज्याङ्व	***		***	864
শমুকের স্বর্গলাভ	•••	•••	•••	> 3a
শস্কের পুত্রগণের কথা	***	+ + 4	•••	220
পেচক-গৃধিনীর বিবাদ	***	b # *		229
পেচক-গৃদিনী সংবাদ	***	•••	***	356
ব্রহ্মদত্তের কথা	***	• • •	•••	555
শ্রীরামের অগন্ত্যাশ্রমে গমন	•••	***	***	₹••
খেত উপাখ্যান	***	284	•••	2.5
দণ্ডের উপাখান	***	4.44		₹•೨
मटखर ताबानान । मखकातरगात	উৎপত্তি			₹ 0 €
রাজহয়-প্রদম্	***	***		ર • છ
বূত্রাস্থরের কথা				२०१
रेन्गारेशक डिशाशान				२०३

	সূচীপত্ৰ			100
বিষয়	in the . Although			পৃষ্ঠা
ইলার উপাথান	•••	***		235
অশ্বমেধের উত্তোগ	***		***	२५७
ष्वश्रदम्भ युड्ड		• • •		₹5€
লবকুশের যুদ্ধ	***	4 = 3	v 4 a	225
বান্মীকি কর্তৃক লবকুশের যুদ্ধ-	नेवृद्धि	• • •	•••	₹€8
বান্মীকির রামু-সম্ভাষণ	4 + 3	***	***	₹ @ @
হনুমানের নিকট গীতার উক্তি	•••	***		<b>२ &amp; b</b>
বশিষ্ঠের নিকট রামের যজ্ঞবার্ত	<u>া</u> শ্ৰণ	7**	***	३ <b>७</b> ०
শ্রীরাদের অখ্যেধ্যক্ত সমাপন	***	***	•••	२७७
গ্ৰকুশের অযোধ্যাযাত্রা	***	***	***	₹ % ₡
লবকুশের অযোধ্যা-ভ্রমণ	***	***	***	२०৮
লবকুশের রামায়ণ-গান			•••	290
দীতা পরীক্ষার প্রস্তাব	p + b	* 4 +	***	२१२
দীতার পাতালপ্রবেশ *	43.	4 * *	• • •	. २१७
লবকুশের প্রবোধ	4	***	***	२१8
শীরামের ক্রোধ	1		***	<b>૨</b> ૧¢
রামের সাখনা	• • • •	* 9.5	• • •	296
কেশ্ব-দূত আগমন	* * *	***	5 # 3	296
কুমারগণের রাজ্যাভিষেক			•••	292
কালপুক্ষের আগমন	***	•••	***	250
म भाग वर्डिन	***	4 * *	•••	26-5
<sup>*</sup> রামের স্বর্গারোহণ	•••		8 W M	₹₩4
ফৰশ্ৰতি	• • •	* * *		269
উত্তরকাও সমাপ্ত	<b>* * *</b> .		> 0 0	266

#### शृष्ठीत जगमः त्यायन ।

২৮০ পৃষ্ঠার পর লক্ষণবর্জন শীর্ষক পৃষ্ঠা হইতে "২৮১" হইতে "২৮৮" স্থানে ভ্রমক্রমে ২৭০ হইতে ২৮০ পঞ্জান্ধ ছেইবার পড়িয়াছে, অতএব পাঠকালে ২৮১ হুইতে ২৮৮ পৃষ্ঠা সংশোধন করিয়া লইবেন।

## রামায়ণ। উত্তরাকাণ্ড।

(5)

(2)

सरमा स्था राजी कर हरन । নাত কাও বামায়ণ ভাহার ফলন। सम्बन्धितः सारक कथन गाउँ मस्य दर्गत সনামত পুসুক কইল বাকীকি যুনিবর। श्वमित्न शामा ग्रह्ण मान नित्नाहन । व প্রায় হল (লাভ) হয় কীর্ত্তি সকলণ। ध्यां काटक शहित जांवन निनात । উদ্ভৱকান্ত গৃহিদ কন্তু নিৰ্য্যাদ। अक्ष नेकिश शहर वाहेरम लाउ छा छ। সাহবাদে ওন গোজ, উত্তরকাও ও ॥১० ল্কাফাতে গাইল বামের ছাতা নুও। উন্ধ্রাও ভনহ যেন অমূতের ভাও। देवाताका विषयी ताम इन्धेंब वर्षत । पुर्वा रामाण भावि बलाईन एवं। भिनाहन दमिल का गानन रहेन शतिकान 150 অবোধাতে জাই দভে শীরাদের করিতে কল্যাণ विकृतस्य मृनि जाहेना अध्यत ध्रसाद । धारी चित्रवाराका दीतात लाहता भारत नात्म हाती जीतात्म त्नाजातं माथा। কুৰ্বাহিত্যৰ স্থানিক জীৱামে কতে কথা ॥ २०

শ্রেষ্ট পুষর এ পাঠ ওছোটিক হয় পাবে শ্রেষ্ট প্রায়াকীক ৮১

वादीत कथा छनि का श्रीताराय शक्त वान (कान दकान शनित टेरन जाजनस्य क्रीतारमञ क्या छनिका चार्तिगर करिका गम्स स्थान (यस अन्ड मार । Cहाना ट्रानिएड बाहिया मृनि श्वरामिशासी অসিত ব্ৰক্ৰীত আইনা কৌঞ্জিণ্ট **মহাস্ত**ি উতত্ত মৃত্ত আইলা পিয়াল প্রাশর। শাণিকা শভা বিজই নিশাকর ।। কোংভ কাৰ্থৰ আৰু কৌশিক কাৰ্তিক বাচপাতি অন্তরীকে আইলা ভরিত ॥১৫ হংস বাছকি মুন চক্র শ্লপাণি। উদারাজ অন্তরাজ বন্ধদেশে **जा**नि ॥ লোমা দেখিতে আইলা উত্যদিশের মুর্ ক্তু ক্রেশ্ব আইলা আর অধিপাৰি देवशालायम भारानिक समाजम ।३६ রুচি ভৈরব পুলহের আগমন।। মেদা মুনি মহাজানী গৌতম গোৰ্মন काम विशिष्ठे आहेला मामल हमाना অধির্ম বাচ্পতি স্টির প্রচণ্ড ( मी इक्छ मीलक्छ याहेला माई ए हिं (उ(म) (प्रचिट्ट काईवा भूग भक्षिमित्रास्त ভাত্তিক অন্তিক বহুমুচি পাগস্থা মহাপুষ্টি

101

(8)

পর্মাত ভরত চাবন দম্ভরাজ। জৈমিনি অস্তি মুনি শুম্ত ভ্রদাজ।। विक्रभणां भिवभणी द्वम द्वम १६ অষ্টাৰক তিজট শকু মূনি ভাগৰ বিশ্বাসিত্র জমদগ্নি কগুপ গৌতন। ¢ তোমা দেখিতে পশ্চিমদিগের মুনির আগমন পৌল্ডা পুলহ আইলা ব্রকার নন্দন। यांकीथिना कारेगा वाजी कत नकन ॥ বিশ্বদেব সুল শিরা সাবর্ণিক মন্তু। শতানন্দ নিত্যানন্দ আইলা বরতন্ত্ব ॥ ১০ কুশপ্রেল ব্যধ্যক অত্থান জনকর।জ। भा \* \* क्ष्य भूगित समाया॥ ভরৎকার জন্ম নারদ ছুর্থ কাত্যায়ন। शर्यम् आरेशी विष्ण ७क नाव वर्ष। श्रीतीत राह्न किन का श्रीतम श्रीवार १० मकल भूनि करें का देवल शितात्मत (शांवत ॥ চতুর্বেদ পঢ়ে মুনি কেহে। সাম গান। तम পढ़िका जारमत मुख्य एमन इकी थान। মুনি সব দেখিক। রামের হাস্থা বদন। একে একে বন্দিল মুনিসভার চরণ॥ ২० षाशीकांत किंग पूनि स्तविक गन। লাক্ষণে বানরে বন্দিল সভে মুনির চরণ।। বনিতে আসন দিল পাদা অৰ্ঘ্য জল। পোড় হাতে মুনিকে রাম পুচেত্ত কুশল। মুনি সব বোলেন আমার কুশল নিবৃতি।২৫ ্রাক্ষদের হাথে জখন হৈল অব্যাহতি॥ প্রমি লক্ষণ বীর আর সীতা গোসাঞিনী\*। রীক্ষণের কাথে এড়াইলা বড় ভাগ্য মানি॥

भोठे। छर--कामिनी ।

বিষম শ্বন্ধ ধরে রাক্ষণ বীরে।
গহজে রাক্ষণের মারাতে কোন্জন তরে॥
হেন রাক্ষণ মারিল। তুমি পুইলে থেয়াতি।
যজ্জ ওপে আমাগভার হইল নির্বৃতি॥
হর্জন ইক্রজিৎ তিভূখনে জানি। এ
আর জত রাজকুমার তাহা নাহি গণি॥
ইক্রজিতের তরে কেহু নহে হিরু।
তিভূবন জিনিএল কুন্তকর্ণের শরীর॥
মাথা কাটিলে না মরে দৈরী না ধরে টান্।
হেনবীরথাকিতেক্রিলে ইক্রজিতের্বাথান১০
কোন তপ ক্রিলেক কাহার পাইলেক বর।
সভা থাকিতে বাথান কেনে রাবণ কোত্র
ইক্রজিত সনে আমার নাহি দরশন॥
জিত মারিলেক জীর ল্মাণ্॥

মুনিবলেত্ব রাম তৃমি সংগারেরজ্ব বিকারী ।১৫
তোমারে অবিক লক্ষার সংগ্রাম প্রশ্বরী ॥
হর্জর ইক্ষজিৎ কৈল লক্ষণ করিলনে প্রশ্বরী ॥
হেন ইক্ষজিৎ মারিঞা লক্ষণ করিলনে আবাহতি ।
তোমারকে মুবিতেরহিলতিনলাকে পুজিত \*২০
ইক্ষজিৎ অতিকায় মারিলেন লক্ষণ ।
লক্ষণ বীর বাখানেস্ত সকল মুনিলণ ॥
অপত্তা মহামুনি বৈস্তের দক্ষিণে।
রাক্ষণের কথা মনি ভাল মতে জানে॥
মুনিবলেন রাম তুনি লক্ষণহ্ছে ম্বারীর ২৫
লক্ষণের বাণে শত্তে অতিকায় ইক্ষ্কিং।

\* (वान इस एक लाई—गाउँ L

(1)

বার বংসর যে কন মূল নাহি ভকে। বার বংসর জে দ্রীর মুগ নাহি দেখে ॥ ভিতেশিয় মহাপুক্ষ করবে অনাহার। হেন জনার হাথে গুইার স'হার। তাহার যজ্ঞ ভঙ্গ করে যেই জন। ৫ ८म्डे जना माद्र इंडे वादन नमन॥ মুনির কথা গুনিয়া শ্রীরামের তরাম। ভাক দিঞা আনিল লখাণ আগনার পাশ। तांभवत्ल ह जारूमा कथा कहित्तन मनि। জুমি কথা কহ ভাই হোমান মুখে গুলি॥১০ ছত হুঃখ পাইল আমি দওকারণো। তত ছঃখ পাইল আনি তোমার কথনে॥ ল্লামের বচনে লক্ষ্মণ জ্যোভ কৈল হাথ। মুনির কথা মিখা। নতে ওন রগুনাথ। শীতার মুখ দেখিতে আমার কোর অধিকার নিত্য চরণ নেহালিজা হই নমন্ত্র ॥১৬ হার কেয়ুর সীভার কিছু নাহি চিহ্নি। ত্রই পাছ নুপুরের শব্দ মাত তনি।। কল মূল আনি ঞা দিএ তোমার আগে। ধর বলিজা ফল মূল দেহ মোর আগে॥২০ ধর বলিঞা ভাক দেহ ধরিএ ততক্ষণ। খাঁইবারে না বল কেমতে করিব ভক্ষণ।। শক্তাপের বোল গুনিঞা জীরাম ব্যথে। লক্ষণকে কোলাদল প্রভু পদারিকা ছুইহালে রাক্ষ্যের বুরাত ক্রেন্থগন্তা মহামুনি। २ « মুনির কথা ভনিতে রাম হৈল দাবধানি। কভিত্রস পথিতের সরস পাঁচালী।

প্রাকাতে গাইকা দিল প্রথম শিকলি॥

(8)

গ্রীরাম বলেন মূনি তুমি সহা ভগোধন। কাহার তরে কৈল ব্রন্ধা লঙ্কার স্ক্রন ॥ শাববানে ওম রাফ্স বানবর্গণ। भावधारम एन कथा खीडाम नप्तन ॥ एन अधीद विভीषण देशका मान्यास्माद ব্সিঞা কথা গুনহ ভৱত শক্তম্নে॥ পুরাণ কথা কহে অগন্তা তপোধন। সাবধানে কথা গুন প্রভু কমল্লোইন। मनि यत्वन अन दाम श्रांग छेखते। লঙার স্থান হেডু কহেন মুনিবর॥১० अरमक भवत्म वाम यापि मध्य वरमत । প্রন বজিতে নাবে স্থানক শিখর। তিন শুলে পর্যাত জুড়িল গগনা छ (नक भारत) हक अर्गात नार्हिक भेमन ॥ সকল পৰত জিনিঞা উভেত শামীণ 1১৫ নিতা নিতা সুগাঁ লাম করিঞা প্রদক্ষিপ য विमानवनिमनी कविमां भार्का ही। তাঁহাকে বিভা করিতে গেলা দেবপ্রপূপতি " শঙ্কর আরাধিকা তপ কৈল তপোবনে। মহাদেবে পার্বাতীএ হৈল শুভ দর্শনে গংক কাহার গুহিতা ভূমি কাহার নারী। তেন সংশয় স্থানে তুনি কেনে একেখরী। হন্তী নিংহ মহিব ব্যাগ্র শুকর। সংশয় স্থানে কেনে আইলা একেশ্বর॥ महास्तित कथा छनिका करहन उउपनास কহি কথা গুন তাতে দেই মন॥ रियानग गनिनी आिय गाम शांकिशी।

<sup>\*</sup> এই জানে ক চিন্তিত আদৰ্শ পুণিৰ একগানি পতের অভাব। একতা গাটি ছিত পুনি দৃষ্টি
৮, ১ ত কি জন্ম ও ১৯ ছাজের ১৯ শাকি পরাস্ত মুক্তিত হইব।

্টিফালয়ের নজিনী আমি ওন মহাশয়। **स्टबाटनटमें उ**र्भ कति काटत स्मान उग्र ॥ এ বচন শুনি হাসেন দেব শূলপাণি। মিলির শক্ষর বর ভনত ভবানি ॥ श्विभिन हमा तब अलिन जिला हुव। व শি**ৰ গোঁলা** নিজ পুরে দেবী আইলা ঘর॥ **ভ্ৰমাকে ক**হিলা শিব এগৰ উত্তর। **সোর কাজে জাহ তুমি হিমা**লরের ঘর॥ ব্রহ্মাবিষ্ণু চলিলা আর কুবের বরুণ। ষ্ঠিক্ষয়ি চলিলা আর জত দেবগণ॥ ১০ একর হই কা গেল। হিমালয়ের ঘর। হাহির হৈলা হেমস্ত ঋষি হরিষ অস্তর॥ রাসিতি আমন দিল পাদ্য অর্ঘ্য জন। **জেভি ক্রাথে** দেবগণকে পুছেন কুশল। **ইংমন্তবলেন কেন** তোমাসভার আগমন।১৫ ৰ্ভ ভাগ্য মানি আজি সফল জীবন। **প্রসাকে বলেন পর্নত এতেক উত্তর।** ্বনিঞাছইলা বড় আনন্দ অন্তর।। ক্রমারিকেন তন মোর কথার প্রবন্ধ। দ্যামার ভাই শিবকে কর তব কস্তার সম্বন্ধ২০ বিল্ছ না কর দেখ বেলা গুভক্ষণ। 🛪 🎖 কিব কর তুষ্ট হউক দেবগণ ॥ হিমলিয় বলেন মোর জীবন সফল। মহাদেবে কথা দিব বড়ই মঞ্চল।। রিনয় বচনে হেমন্ত করে পরিহার। ২৫ শিবে কন্তা দিব আমি কৈলু অঙ্গীকার॥ রামি যোম মঙ্গল আর বুধ রুহস্পতি। **প্র**ক্র শনি রাছ কেতু নবগ্রহ পতি।

জখন গোরী তপ্তা করিল তপোরনে।
ভবানী শহরে বিভা জানে গ্রহগণে।
ভভকণে গ্রহগণ হইঞা সমবার।
কেহ বিম না হইব গোরীর বিভার
এত বাক্য হিমালয় বৈলা দেবের পালে।
বর আইলে বিভা দিব লয় তার কিসে।
অঙ্গীকার কৈলা হেমন্ত আপনার মুখে।
দেবগণ গেলা ঘর নিজ মনস্থাখ।
কতা দেখি দেবগণ কৈলা আগুদার।
বিভ্বনে হরিধ্বনি জয় জয়কার।
বিবাহের কার্গ্যে তুমি থাকহ শিবাই॥
কালিবিভা হবে তোমার আজি অধিবাস।
শকরের সম্বন্ধ গাইকা ক্তিবাস॥

अधिरारंत्र एउ। मर किता भक्त । ३० नातरात मरा किता जी एक नकती।
अधिरारात एउ। किता का मरा छोत ।
आम कैंगित अछ नातिरकत आभात ॥
शित कता किता भागे भागेष्ठ ।
विश्व कता किता भागे भागेष्ठ ।
विश्व करा निता भागे किता ।
विश्व करा निता और आखा किता ॥
विभावत्रत प्रत भागे निता और आखा किता ॥
विभावत्रत प्रत भागे निता महिला और अधि ।
भार भाग का अधि भागेष्ठ करा भागेष्ठ ।
आर्थ करा निता का की भागेष्ठ करा भागेष्ठ ।
आर्थ का की भागेष्ठ करा भागेष्ठ ।
आर्थ करा भागेष्ठ करा भागेष्ठ ।
आर्थ करा भागेष्ठ का भागेष्ठ करा भागेष्ठ ।
आर्थ करा भागेष्ठ करा भागेष्ठ करा भागेष्ठ ।
आर्थ करा देशा की भागेष्ठ करा स्था ।
स्थार करा। देशा नात्रण करान स्थाय ।

(%)

(20)

ভারীর সঙ্গেতে জায় শিবের নফর। ভীমার পাছু পাছু জায় জত অন্তর। সন্দেশ কলা দেখি ভীমাধরিতে নারে মন মুদা ভেঙ্গে ভাল দ্রব্য করিল ভক্ষণ।। অনেক সন্দেশ কলা করিল আহার। c আম কাঁঠাল খাইল চারি সহস্রভার॥ জাইতে জাইতে পথে খায় হর্ষ হঞা। अक्रीअकि थारेश राखी शृद्ध वानी निका॥ नमनमीटि ट्राट्य अठ नित्रमन वानी। তথানা বালীতে সব পুরিলেক পাতিনী ॥১০ ভুখানা বালীতে সব পাতিলী পুরিঞা। দশ সহস্র ভার পাছ ভীমা আইল ধাঞা॥ নারদ বলেন কেন বাপু বিলম্ব এতকণ। ভীমা বলে মাঠে পাইলমি ঝড বরিষণ ॥ জল বরিষণে আমি বহু ছঃখ পাইল। ১৫ আমাকে এড়িঞা সঁব ভারী পালাইল। তপোৰন ভিতরে আমি সাম্ভাইলীম ধেয়া স্বভাষী পালাইল ভার পেলাইয়া।॥ নারদ বলেন কার্যা না কর উপেক্ষণ। জাহাতে শিবের কার্য্য হয় স্থাপাভন॥ ২০ নারদের বচনে হেমন্তের নাঞি হেলা। আঞ্চিনাতে টানাইল পাটের ছাঙলা॥ ঠাঁদলা টানাল্য তাথে মুকুতা খেচনী॥ আঞ্দিনতে বান্ধা সব সোণার দ্তাথানি(१)॥ মধ্য থানে মাট তার করিল স্থাপন। ২¢ অধিবাসের স্তব্য অনািল্য তথন॥ তক্ষ পতি তক্ষ পাটা অভি পরিপাটী। হা**লে কুশ হৈ**লে হেম্ব লঞা তামবাটী ৷

সম্বল্প করিলা হেমন্ত ৩ভ্যুগ্ বেলে। (रामध्यनि करत्र भूनि खग्न खग्न द्वारम ॥ ততক্ষণে বাহির হটলা চক্রমুখী । (मरीटक (मथिका भव (मव देशना **स्रशी**॥ हार्थि भूष्म रेकना प्रिती भूषा प्रित्रजात। 🗷 গ্ৰা দিঞা কৈলা মুনি জয় জয় কার।। মগল উচ্চারি গন্ধ দিলেন ক্সাতে 🌬 মঙ্গল বিহিত কর্ম স্থত বাদ্ধে হাথে। তবে শঙ্ম পরাইলা অধিক রূপ দেখি। কন্তারে উথিতে তবে আইলা সব স্থী।। ১০ মঙ্গল দ্ৰব্য লঞা আইলা স্থীগণ মেলি। কন্তার অধিবাস করে দিয়া হলাহনী॥ অধিবাস সঙ্গে হৈল সিদ্ধ সৰ কৰি 🖺 হেমন্তে মেলানি করি চলে মুনিরাজা আইহগণে সন্দেশদিতে ভাঙ্গে দ্রব্যালী ১৫ পাতিলী ভিতরে দেখে সব বালী ॥ হাঁড়ীর ভিতরে বালী দেখি সর্বলোকছালে পার্বতীর অধিবাস গাইলা ক্রন্তিবাসে।।

রাত্রি প্রভাত হৈল প্রভাষ বিহানে।
দেশে দেশে কুট্ছকে পাঠাল্য জানানে॥২৩
চারিদিগের পর্বতকে দিলা আমন্ত্রণ।
আনন্দিত দেবগণ এতিন ভ্রন॥
আজি জাবে কালি আসিবে না কর বিশ্ব।
চারিদিগে ধার্যা আন সকল কুট্ছ॥
সভাকে জানান দেহ গৃহ ব্যবহার। ২৫
আমন্ত্রণ পাইলে সুভে করিবেন্ আভ্রেম্বর॥

(55)

(>4)

উদন্ত গিরি অন্ত গিরি আইলা ছইজন। নীল গিরি ময়ভঙ্গ আইলা নারায়ণ॥ আভায়ে মুৰ পৰ্কতি আইলা কলিস কেশরী। ক্ষতিনাদ শব্দাস সহীদাস গিরি॥ বিন্দুমেক আইনা আর কৈনাস শিণর। ৫ পরাসন অজন আর পর্বত শীধর॥ ৰ্দ্ধমান কুমুদ আইলা গ্ৰুমাদন। ঋষ্যুত্থ থবি আর মলয় চলন।। ত্রিকৃট পর্বত আর আইলা হেমকট। চল্লকট্ট ভূৰ্য্যকৃট আইলা বজ্ৰকৃট। ১০ **ধবন গিরি** গোবর্দ্ধন বরাহ বাসত। ৰস্ত্ত শ্ৰীমন্ত আইলা মৈনাক পৰ্বত। ্রিভুর্নের পর্বতের হৈশ আভ্যার। পর্বত চলিতে হৈল সংসার অন্ধকার। আইলা পর্বত সব পরম হরিযে। ১৫ আপুন কাৰ্য্য বুঝি স্থমেক নাহি আইদে॥ লউল। মেনকা আর হিমালয়নন্দন। জাপনে আনিল গিঞা স্থমেক করিয়া যতন। হিমালয়ের চরণে স্থানের হৈশ। নমকার। বসিতে আসন দিল করিল পুরস্কার॥ ২০ মনোগামী পর্বত মুনির ধরে বেশ। মরে ঘরে নগরে কৈল বিচিত্র বেশ। ৰ্ষিতে আসন দিল পাদ্য অৰ্য্য জল। মান ভৌজন করিঞা সভে হৈলা স্থশীতল। मार्रिनेक सिश्चिकिन श्रीय कुन्नरम् । २० কেহে। বেদ পঢ়ে কেহে। পঢ়এ মঙ্গলে।। নানা মঞ্জ নটিগীত হিমালয়ের ঘরে। <u>প্রয়ামশে গোক আপনা পাসরে।</u>

খবিরাজের ঘরে বাদা বাজ এ বাজন। ওথা মহারকে আছেন সকল দেবগণ।। পঙ্গা আনিতে গেলা স্থমন্তের\* ঘরে। গঙ্গ। রন্ধন করিলে সকলদেব ভোজন করে। নিঞা যাবে গঙ্গাকে যতন করিঞা। ৫ রন্ধন করিলে গঙ্গাকে এড়িহ আনিঞা। দেবের বচন আমি করিতে নারি আন। বেলা থাকিতে গঙ্গা আনিহ আমার স্থান। এতেক শুনিঞা হর বোলেন্ত বচন। গঙ্গা বন্ধনকরিলে সকলদেবের ভোজন ॥১० রন্ধন ভোজনের বেলাগেল হইল অন্ধকার। গঙ্গা নিঞা জান হব গুণিঞা অপার॥ কোণে স্থমন্ত বলেন বেলা হৈল অবসান। গঙ্গা নিঞা গেলাইর সমন্তের স্থান। গঙ্গাকে দৈখিতা হুমন্ত রহেন্ত্র কাপমনে 1>৫ এতক্ষণ বিশ্ব হৈল তোমার কি কারণে ॥ তোর রূপ দেখিল যত দেবের সমাঝ। দেবের রন্ধন হৈতে না বাসসি লাজী॥ কেমতে দেবগণের করিলে রন্ধন। তোর রূপ যৌবন দেখিল দেবগুল।। ২০ কেহো তোমার দেখিল ছই গোটা স্তন। কেহো তোমার দেখিলেক যুগল নরম।। অন্ন দিতে গেলা তুমি জার জার পাশ। সেই সব দেবের গেল তোমাকে অভিলাষ।। অপবিত্রশরীর তোমার কেনে স্কৃতিলেন্ডানংক আমার গৌরবে চল নহে করিব অপমান ॥

<sup>\*</sup> পাতমু—গ পুৰিব পাঠ।

(50)

(58)

टकाट्य मृति कतिन शकाद वर्डन । शमिका श्रमाटक भित्त धरिय जिल्लाहर ॥ মহাদেবের শিরে রহিলা গঙ্গা গোসাইনী। গঙ্গা শিরে ধরি কা হাসেন্ত শূলপাণি॥ সর্বাঙ্গে বিভৃতি শিরে শোভে গাঙ্গ। ৫ গুলাতে বাস্থ্যকিনাগ কপালে শোভে চাঁদ।। কথনো থাকেন গ্রন্থ) মহাদেবের শিরে। কথনো পাকেন এলার কমগুলুর ভিতরে॥ স্থৰ্গ হৈতে গঞ্চা আইলা মন্ত্ৰালোকে। গঙ্গার মহিমা লোক জানে হঃখ শোকে॥১० জত তত পাপ গোক করে মহীতলে। দকল পাপ হরে মান করিনে গঙ্গাজলে॥ महास्त्रतत श्रीश्वाम कताहेल (प्रवर्ग। **बन्नात बहरन विभिन्ना दम्बनी**वाराण ॥ প্রাতঃকালে দ্বেলোকের আমন্ত্রণ করি 1১৫ शान मका नामिपूर देकल जिल्लाति॥ यान कतिका अल्प कतिन तक्रमें भारत। मक्य ट्रेमवंशन अकर्र हे एडाजानत त्वरन ॥ গঙ্গার রন্ধন যেন দেব অধিভান। মহাস্থপে দেবলোক করিল ভোজনপান ॥২০ নানা বাদ্য বাজে বাজবাজন। নানা বেশে নাচেন তথা সকল দেবগণ। মহাদেৰের বেশ করেন আপনি নারায়ণ। মহাস্থাথ দেবলোক করিল ভোজন। স্থানপের মুঠুট শিবে বাহেতে কঞ্চণ॥ ২৫ ললাটে চক্র শোভে শিরে মুরেখরী। वृद्ध हो 🏿 का निष्ठ्रना जिथुताति ॥ রাজ্ঞিনে রথ বহে রথে চলিলা প্রজাপতি।

এরাবতে চাপিঞা আইনা দেবস্করপতি। মকরে বরণ চচে মহিয়ে শম্ম। ছাগলে অগ্নি চড়েন হরিণে প্রনা গকড়ে চটিঞা আপনে চলিলা নারায়ণা জার যে বাহনে চটে সকল দেবগুণ। ৫ স্ম্যাসী তপ্সী আর ভড়িতাগড়ি (?)৷ বক্ষচারী নিরাহারী সভেঞি লড়ি॥ মভার আগে যান নারদ কলহ লঞা। সাত গোকড়ি কল্লি কাঁথেত করিঞান নারদ দেখিঞা হর্ষিত হৈলা হিমালয় । ১০ হরিষ বদনে পুছেন তোমার ক্রমল ইয় 🏗 আগু আইনা নারদের কন্দলি ধ্যেক্তি। মহাদেবের যথা আছে খণ্ডর শান্তভী। ভোগার ঝি দেখি জা আমার মনে বড় বাখা। সাবধান হৈ এ। খন জামাতার কথা। ১৫ যরে ভাত নাহি তার চালে নাহি খড়। শুইতে শ্যা নাহি পরিতে নাহি কাপ্তু॥ চিতার ভত্ম অমঙ্গল নেপে সর্ব্ধ গায় 🛦 গলৈতে হাড়ের মালা সাপ কৌফায়॥ তিননয়নে অগ্নিজলে শিরে শোভে গালাং লাসট উন্মন্ত বেশ থায় ধুত্রা ভাঙ্গ॥ घरतत नरुत नन्ती गराकाल जीमा। ঘবে ঘরে বেড়ার তারা ভাতকে কানিয়া॥ ঘবে ঘরে মালিয়া কেবা আনে তওুল। तकरनत (बलाग्र मृद इस्य व्यक्ति॥ २६ জধন বলদ রাখিজা ঘর আইসে ভীমা। অৰ্দ্ধণী তওুণ সে জে থাকা ছিনাঞা। এতেক ওনি ক্লা স্বামীকে পাড়ে গালি।

(54)

(56)

কোণে পর্বাভরাজ মেনকার ধরে চুলি॥

সাত পাঁচ দশ বিশ করি সারামারি।

কাহাকে কে মারেনারদ দেখা টিটকারি॥

মারদ বলেন ভোমরা কেনে কর মারামারি

এ তিন ভ্রনে রাজা দেব তিপুরারি॥

কোনজনা বৃথিতে পারে মহাদেবের কাজ।

মহাধনী বহাদেব দেবের সমাঝ॥

কলনি মুচাঞা নারদ গেলা দেবতারপাশ।

উত্তরকাপ্ত রচিল পণ্ডিত কুত্রিবাস॥

नमञ्ज (मृदर्भेष (भेना हिमानरात घत । ১० বাহির হুইলা রাজা দেখি ঞা মূনিবর॥ বর বেটি রহিলা সকল দেবগণ। ীবসিতে আসন দিল দিল বরিতে বরণ॥ দৃশি হয় খত গলাজণ আগর চন্দন। প্রবাক নারিকেল দিল উত্তম বসন।। ১৫ বরের বরণ কৈল বেলা শুভকণে। ভার মঞ্চল বেদ ধ্বনি শুনি চারিপানে॥ বর বরিঞা হিমালয় গেলা ঘর। কক্সার মাতা আইলা উলতিতে বর॥ বরের পাশ গেলা মঞ্জ সজ্জা লঞা। २० ভোলে পড়িলা মেনকা বরের রূপ দেখিঞা। शाद्य मिव मिल शिद्य जर्की धान। নাখার নিছিঞা পেণেন শত শত পান॥ ব্রেরস্কর্পদেশিঞামেনকাপড়িঞাগেলাভোকে নারদ পুচাইশ পরিধান বাবের ছালে॥২৫ মার্কাস স্থান বর লাখট সমুথে শাশুড়ী। আইছ ভহ পালায় করিঞা হড়াইড়ি॥

छुट हक् छाकि का तानी दिंगे माथा कवि। নারদ মুনি তবে দিল টিটকারী॥ লাভে পালায় ঋষির বিয়ারী বছমারী। হড়াহড়ি করিঞা জায় হাতেকরিঞা ঝারি৷ এতেক দেখিঞা কোপিলা নারায়ণ। ৫ থাট কহা আনহ চাহিল ওডকণ।। বরের বেশ করেন সকল দেবগুণ। আপনার মূর্ত্তি ধরেন দেব ত্রিলোচন॥ ত্রিভূবন মোহিলেক দেব ত্রিপুরারি। পার্মতীর বেশ করে দেবতার নারী॥ ১• विज्वन त्याहित्वक क्राप्त विद्यापती। রূপে ত আলোক কৈলেক সকল অপারী।। वमन जिनित्नक छात्र शूर्वहता कता। বাহির হইলা পাকৈতী হাথে প্রস্থানা ॥ छठे। ए न को हेला (पदी गन्ना द्रांगाहिनी।) व মুকুট উপর শোভে তরি নাগিনী॥ লনাটে টক্স শোভে ডম নৰ্কগায়। অদরেত ভন্ম লেপে নাগ ফোঁপার 🖁 वाम नुकारेना माथ निजारेन बाधनि। বরের নিকট গেলা আগনে ভ্রানী ॥ ২০ শিরে পারিজাত মালা মধুপান করে অলি 👵 বিশ্বকর্মা আনিঞা জোগায় অশোক ভালি॥ সপ্ত সাগর আনিয়া যোগাইল পানী। ওভক্ষণে হরগৌরীর হৈল ছামানি॥ তুন্দুভিব বাদ্য বাজে মধুর তালু এনি।২৫ বেশে ছবেশে নাচে ইত্রের নাচুনী। কতা লুকাইল লইঞা অন্ধকার পরে কল। আনিতে হর দা গ্রাইশা ছ্যারে

(54)

(15)

ডাহিন হাথে পার্বাতী করে কম্বণ ঝন্বানি। হাতে ধরি কন্তা আনিল দেব শ্লপাণি॥ কল্পা লঞা হর ছারাম ওপে বসি। চারিদির বেটিল যব দেব ঋষি॥ हातिनित्र विमाना त्मव हाष्ट्रिका विमान । ब নানা দান দিঞা ঋষি করিল কন্তাদান। মুনি সব বেদ পঢ়েন জয় মঞ্ল। शक्त भूष्ट्र काक्ष्म मिन वर्षा-हम्मन॥ সম্প্রদান করে ঋষি কতা সমর্পণ। সর্বকাল করিছ কন্তার রক্ষণ পোষণ ॥১० জোড় হাথে বলি শুন সকল দেবগণ। ক্ষামারকস্তারপালনতোমরা করিবেসর্ককণ। এ বোল শুনিয়া হাসেন ব্রহ্মা নারায়ণ। তোমার ঝিকে বল সভাৰ করিতে পালন। কুশতিকা লাজ-হোম করিল সাবধানে।১৫ माना मान करतने अब दमस्यत विमामारन ॥ খণ্ডর শাভ্ডী সব করিঞা অমুমান। নানা প্রকার পাঠাইল গুরা পান। নানা রঙ্গে দেখে লোক নাচন গীত। উত্তরকাঞ গাইল কুভিবাস পণ্ডিত ॥২০

মহাদেবী বলে রাজা\* তুনি অগেয়ান।
বি জামাতা ভোগে মরে করাহ ভোজন পান ..
পাদ প্রক্ষালন করে রাজা ভূঙ্গারের জলে।
বি জামাতা লঞা বদিলা দেবগণে ॥
সোণার পিড়িতে বণিলা বি জামাতা লঞা।
দুৱে থাকিঞা বলে ঘরের নফর ভীমা॥২৬

'दमनका दलन बाका' न भूगित गीठ।

জামাতা লাজ বাসে খাশুড়ী দেখিঞা একবারে দেহ ভাত ব্যঞ্জন আনিঞা। সোণার থাল ঘুচাহ পরস্পাত পাত। পিটুক প্রমার আনিঞা তাহাতে দেহভাতা দ্ধি ছগ্ধ শ্বত দিতে না করিছ হেলা। গ ঘনাবর্ত ছগ্ধ দেহ মর্ত্তমান কলা।। জল লঞা চই জনাতে করিল পঞ্চাদী। হরের নিকট বসিলা দেবরাজ ঋষি॥ ভোজন করেন্ত দেবরাজ ত্রিপুরারি। হরের সন্নিকটে বসিলা দেবী গৌরী॥১॰ হেঠে গোমর উপরে আলিপন।। ছই পাশে করিল স্থতার মেল্যা।। কথোক ভোজন করিল দেব ত্রিলোচন। নারদ বলেন ছোঁয়াছি পড়িলা নাকর ভোকন। আলিপনা দেখি জা ভীমা দিল নথৱেখা ১৫ স্তাগাছ দেখাঞা বলে দেখ পরতেখ। দেবাদেবী ছোঁয়াছি পড়িলা করিল আচমন। দোহাঁরপাতে যতছিল ভীমা করিল ভোজনা আচনন করিঞা ছই জনা হৈলা একস্থান। মহাস্থ্যে ভীমা তবে করিল ভোজন ॥২০ সমস্ত ভাত থাঞা ভীমা পেটে বুলায় হাথ। হাসিঞা ভীমা বলে আন পিঠা ভাত॥ রাণীবলেভীন তোমারপেটেলাগিল আগুনি। ভीমার পাতে আনিঞা দিল চাড্লানী (१)∗। পোড়াভাত দিল দিল আর খুদ কুঁড়া।২৫ কেহ ভীমাকে মারে বাঁটার মূঢ়া॥

<sup>\* &#</sup>x27;ভীদের পাতে উভাতিল ইাড়ির কেলামি'। গ চিহ্নিত পুথির পাঠ।

(44)

(20)

জীয়ার কথা শুনি<sup>এ</sup>ল সভা খণ্ড হাসে। উত্তরকাণ্ড গাইল সে পণ্ডিত কুতিবাসে

পুষ্প শয্যা করিল গদ্ধে মনোহর। সোণার চৌথঙী তাতে নিশাইল বাসর॥ দোণার খাটে পাড়িল নেতের তুলী।৫ আইহতহ মেলিএগ দিল মন্ত্ৰল ছলাছলি॥ চারিদিগ রন্থদীপ নারীগণেত শোভিল। বরের রূপ হৌবন মেনকা নেহালিল। সোণার খাটে শয়ন করিল দেব পশুপতি। পরম স্থাথে কোনে করিল পার্বতী।১০ চারিদিকে বেচিল ঋবির ঝিয়ারি বছয়ারী। মানারক্ষত করেন লাজ বাসেন গৌরী॥ বিবস্ত হঞা হর করিলা শয়ন। লাজ পাইল তবে সকল স্ত্রীগণ। সভে লাজে পলাইল খতন্ত্র হৈল ঘর।১৫ নানারকে রাত্রি পোহাইলা হর॥ নানারকে রাত্রি পোহাইলা তিলোচন। রাত্রি পোহাইলে বেচিল সকল স্ত্রীগণ। বিৰয়ে দাওাইলা দেবের দেবরাজ। আন্তেব্যম্ভে পালাইলা গুরুজনা বাদেন লাজ श्रीन मुक्ता कर्तिण इत ब्येकार विशास ।२১ দেবগুণ লঞা হর বসিলা দেখানে॥ ব্ৰহ্মা বলেন পৰ্বতিরাজ দেহত মেনানি। ছারামণ্ডপে ববিলা শূলপাণি॥ बोर्नांबंब मानाधन पिन वावशत ।२६ দেরগুণের আগে পর্কত মাগেন পরিহার ॥

হাতিল। দেবগণ পরম সানদে। গৌরীকে কোলে করিঞা রাজা রাণী কান্দে র্ষতে চাপিঞা লড়িলা শূলপাণি। সিংহে চড়িঞা লড়িলা আপনে ভ্ৰানী॥ পরম হরিষে লডিল সকল দেবগণ ।৫ চড়িঞা চড়িঞা লড়িলা সতে আপন বাইন॥ ত্রনা বিষ্ণু লড়িলা দেবপুরস্বর,। দেবরাজে মেলানি করি সভে গেলা ঘর॥ আপনগণ শঞা হর গেলা আপন পুরী। নানারঙ্গে গেলা হর আপনার পরী ॥১০ যতেক লোক তাকে দিলেত মেলানি। ঘরের সেবকভীমা ডাক দিঞা আনি। গোদাঞির বচনে ধাঞা আইল ভীমা। কুধাএ শরীরদহে কিছু থাবার আন গিঞা। গোরী লঞা হর করেন ভোল বিশাস ১৫ উত্তরকাত গাইল পতিত কৃত্তিবাস॥ অগন্তা বলেন রাম কথাতে দেহ মন।

তবে জে বহিল ঘরে দেবপঞ্চানন ।
সভাকে বিদায় দিল দেব জিলোচন।
ঘরে রহিলা তবে দেবপঞ্চানন ॥২০
তথা হেমস্ক ঋষি কহিল কাহিনী।
বিদলা হেমস্ক ঋষি মেনকা রাণী॥
হেনবেলে পর্বত সব মাগিল মেলানি।
রহাইতে পর্বত অনেক বলিল প্রেরবাণী॥
মান সন্ধ্যা করিঞা সভে করহ ভোজন ।২৫
তবে তোমরা সব ঘরকৈ করিহ গ্রমন॥
মান সন্ধ্যা করিল পর্বতিসব ভাগীই নীর জলে
এক ঠাঞি হৈলা সভে ভোজনের বেলৈ ॥

(25)

(२२)

ক্রবর্ণের থালে অন্ন বিস্তর পরিপাটী। মারি দিঞা বদিলা পর্বত তিনকোট। মধ্যে বসিলা স্থমেক করিতে ভোজন। সভাতে বসিলা স্থমেক তাহা দেখিল প্ৰন॥ সম্বর্ত আবর্ত্ত ডোণ মেঘ পুছর।৫ চারি মেঘ হাঁকারিঞা আনিল পুরন্দর॥ আগে প্রন মাঝে ইন্ত পাছেত বরুণ। স্থমের শুঙ্গ দেখিঞা করিল রাড়বর্ষণ।। স্থামক কাঞ্চন শৃঙ্গ শতেক যোজন। শুঙ্গ ভাঙ্গিয়া পেলেন দেবপবন ॥১০ পর্বতের শঙ্গ লঞা ধায় বাতকুমার। কাঞ্চন শৃঙ্গ মাথাএ সাগর হৈলা পার॥ স্থমেক চটিলা পর্বত ত্রিকৃটের চুচ্চে। ছুই পর্বত চূড় সাগরে লঙ্কা এড়ে॥ বিশ্বকর্মা লঞা গেলা দেবপুরন্দর।১৫ মধ্যে পুরী নিশাইল চারিদিগেতে সাগর॥ সপ্রগোটা পাঁচির তাতে কৈল সভ্য । লোহতে গঢ়িল পাঁচির উপরে কাঞ্চন। শতেক্ষরোজন পরিথাগঢ় লঙ্গিতে নাপারি पन दशक्रम व्यमत **ए**तम (१) हर्डेती ॥२० স্থবর্ণে গঢ়িল আর অষ্টাদশ পুরী। নাট্শাল পাঠশাল বিচিত্ৰ চউরী। খাট পাট নিমাইল দোণার আওয়াস। স্থবর্ণের পুরী নির্মাইল ব্রন্ধার উঠে হাস। স্থবর্লে বাজুল ঘাট দীঘী পোধরী।২৫ রা**জার** ঘর গ্রেজার ঘর গঢ়িল সারি সারি॥ য়ৰ কৰিছে। গঢ়িব রাজার অন্তঃপুরী। ষাহিত্র ভিতর মব কাঞ্নোর পুরী ।

চিত্রে নিশাইল ঘর বিজ্ঞতের ছটা। অন্তঃপুর নির্মাইল দশ সহত্র কোঠা॥ সহস্র স্তম্ভে নির্দাইল দেখান চৌতারা। নানা রক্ত লাগে তথি মণি মাণিক্য হীর ঘরের উপর শোভে সোণার বাহরা। চারিভিতে লাখে গ্রুমুক্তার ঝারা॥ স্থবর্ণের আআতন গটিল সিংহাসন। চতুদোল সিংহাসন জেহু রবির কিরণ। রতে নির্দাহিল ঘর করে বালমলি। সোণার নির্মাইল পাথী পাথী আলি ।।। স্থবর্ণে বাদ্ধিল গাছের গুড়ি।১১ সোণার নির্মাইল ঘর চৌথভী।। সোণার পতাকা উড়ে দেখিতে রূপম। ঘরের উপর শোভে স্থবর্ণের কল্ম।। সোণার বান্ধিল গাছ পুকরিণীর ঘাট। ১৫ সোণার নির্দাইল ঘরের কপাট ॥ সোণাতে নিৰ্মাইল কনক লক্ষাপুরী। (मानाग रुकिन अठ मीघी (भाषती ॥ অদুত পুরীখান দেখিতে হন্দর। সপ্ত কোটি আছে তাতে ইটার ঘর॥২• নবকোটা কৈল তাতে আশ্রম আলয়। চারিলক্ষ কৈল তাতে পর্বত হর্জয়। হেনমতে নিশাইল কনক লক্ষাপুরী। **८** त तो नव शक्त विषय ना शाजि॥ সমুদ্রের মাঝে পুরী করিল নির্মাণ।২৫ ইলের অমরাবতী জিনি তার বাখান।

<sup>\* &#</sup>x27;হ্বৰ্ণে নিশ্বিত নানা পাণী সাৰি মারি। গ চিহ্নত পুথির পাঠ।

(२७)

পরী দেখিতা হর্ষিত দেবগণ। না জানি হেন পুরী পায় কোন জন। মহাদেবের বরে পুরী পাইল স্থকেশ। কথোদিন বাস করিল স্থকেশের বংশ।। বিষ্ণুর শাপে তেহোঁ গেলাত পাতাল।৫ ভবে লক্ষা পাইল কুবের লোকপাল। ভবেত রাবণ হৈলা বিক্রমে বিশাল। কুৰের খেদাড়িকা নিলেক ঠাকুরাল। রাবণ মারিতে ভাপনে জন্মিলা নারায়ণ। রামের প্রসাদে পাইল বিভীষণ ॥১০ অগ্নস্ত্য বলেন বেলা হৈল অবসান। হান সকা। কর আর ভোজন পান। নানা ফলগুল আইল নানা উপহার। নানা দ্রব্য আনিঞা করিল পুরস্কার॥ রাক্ষণে বানরে করে ভোগ বিলাস 15৫ স্ক্রী পোহাইন হৈল অরণ প্রকাশ। মান প্রা। করিণ রান প্রত্যুষ বিহানে। স্ভাকরিঞা ব্যিল রাম মুনির কথা ভুনে ॥ প্রগক্তা মূনি কথা কছেন প্রবন্ধ প্রবন্ধ। মুনিবর কথা কহেন সভেই আনন্দ॥২० মুনিবর কথা কছেন শুনে বানরগণ। **নাবধানে কথা ওনেন** রাক্সস বিভীবণ॥ বর্শিষ্ঠ বামদের শুনেন কুলের পুরোহিত। জীৱাম বেচিঞা বসিলা সকল পাত্র মিত্র॥ অপূৰ্বী প্ৰস্তাৰ কথা কহেন মূনিবর।২৫ আনন্দিত মনে গুনে রাক্ষ্য বানর।। ক্লবিশ্য পণ্ডিত বাজ পুজিত। স্কৃপাপ হয়ে ওনিশে রামের চরিত।

(28)

ভোজনে বদিবা স্থমের হিমানায়ের ঘরে। ধাঞা বার্ত্ত। জানাইল স্থমেকর অতুচরে ॥ বসিকা আছু রাজা তুমি কিছু নাহি জান। তোমার কাঞ্চনশূল নিল দেব প্রন 🖽 চরের মুথে স্থমেক দারণ বার্ত্তী পাঞা। হাথে গণ্ডি প্ৰমেক আইলা ধাইঞা\* 🛊 হিমানর কহেন কোথাভাহ অবোদ শেখর। লেউটিলা পর্বাতরাজ দেখিঞা সাগর॥ আক্ষমা। করেন স্থমক্তাপনাকে নিন্দে। স্থােক আক্ষমা দেখি সকল পৰ্বত কালে। তবে পর্বত গেলা মহাদেবের স্থান। ১১ দেবরাজ স্থানে কহেন আপন অপমান। স্থমের সম্বোধিতা। বলেন দেব ত্রিকোচন। এড়াইতে নারিকভু দৈব নির্বন্ধন। কোন্জনা ব্ঝিতে পারে ব্রহ্মার কাজ।১৫ বচন ভুন ঘর তুমি জহি গিরিরাজ।। এতেক বচন ভাবে বলিল শুলপাণি। বিরস বদনে স্থমেক গেলাত আপনি মনে মনে গুণেন পর্বত আপনার গতি। নিরপেক্ষ বচন বলিল দেব পশুপতি॥२० দেবের বচন শুনিঞা স্থমের শেখর। অপমান পাঞা পর্বত গেলা আপ্ন ঘর ৷ মনতঃথে ঘনে ঘনে ছাড়ে নিখাস। কান্দিঞা রাত্রি পোহাইল নিতাউপবাস।

 <sup>\*</sup> হাথে গাওিবাৰ করি চলিলা পুরিইয়া ।
 র পৃথির পাঠ।
 র প্রাক্ষেশ গাপুথির পাঠ।

(२७)

সকল ইক্স নিল নাহিক পরিজ্ঞান।
প্রয়েক্ষ বলেন ইহার নাহিক আপদ।
প্রয়েক্ষ বলেন ইহার নাহিক আপদ।
প্রয়েক্ষ সন্তাবিতে আইলা সকল দেবগণ।
হার প্রসারিঞা নারদ দিল আলিঙ্গন॥
নারদ কোলে করি স্থমেক জুড়িল ক্রন্দন।
প্রারেধ বচন বলেন নারদ তপোধন॥৬
না কান্দ না কান্দ তুমি স্থমেক শেপর।
প্রয়েধ বচন বলেন স্থমেক বিদ্যমান।
প্রের্ধ বচন বলেন স্থমেক বিদ্যমান।
পর্বতরাক্ষ হৈঞা কেনে কর আপন
তপ্রান্ধ হৈঞা কেনে কর আপন

এক এক পর্বত তোমার সহস্র বোজন।
পর্বত থাকিতে চিন্তা করহ কি কারণ।
তোমার প্রসাদে হৈল লক্ষার হজন।
ক্রেন্দন রাখিল নারদ করিয়া যতন।
মান সন্ত্র্যা করাইল করাইল ভেক্তান।
চতুর্দ্দিগের পর্বতকে পাঠাইল নিমন্ত্রণ।
পাত্র মিত্র বন্ধু বান্ধর সকল পরিজন।
ভাহা সভাকে বলিহ আসিতে এখন।
আমার কার্য্যে সভে করহ যতন।
ইল্রে দিগের দ্বত সব গেলাত ধাইএল।
নানা দিগের পর্বত সকল আইল

এক হঞা।

মতে মতে,পবিবার সকল নিয়োজিঞা।

মতিলা পর্বত সকল রাজ আজ্ঞা পাঞা<sup>।</sup>

মাত্রা প্রিঞা চলিলা স্থমেক সন্তায়ণে।২৫

মতোগামি পর্বতিরাজের অল্প্যা বচনে॥

চলিলা পর্মত পশ্চিম পূর্ম উন্তর দক্ষিণে ,
সভাকে দেখিঞা স্প্রেমক হর্মিত মনে ॥
অগস্ত্যের কথা গুনি হাসেন্ত প্রীরাম।
সভাখণ্ডে শুনিল পর্মতের গুণগ্রাম ॥
ভূত ভবিষ্যং বর্তুমান ভোমাতে গোচর।
তোমার কথা শুনিলে মোর হরিষ অন্তর ॥
কোটা কোটা পর্মত আছিলা দেশে দেশে
সকল পর্মত আইলা স্থ্যেক সন্তারে ॥
অগস্ত্য মুনি বন্দিঞা গাইল ক্কন্তিবাস।
শুনিলে মধুর গাঁত পাপের বিনাশ ॥১০

অগন্তা বলেন রামচন্দ্র শুনহ বচন।

সকল পর্বত আইল স্থমের সন্তাবণ॥

বন্দাস ধর্মদাস গৌনকদাস।

বন্দাস বিষ্ণু আর পরীক্ষিত দাস॥

অব্বৃদ শিধর দাস স্থভাল প্রভাস।১৫

গ্রন্দ্রদাস বাসব দাস আর কৈলাস॥

কৈলাস সিংহ আইলা সিন্ধু গিরিরাশ।

তীবংস প্রুরাজ সপ্রকীর্ফি রাজ॥

অব্দুজ আসন গিরি আর বন্ধুরাজ।

সিন্ধবিদ্র ইন্দ্র চক্র গিরিরাজ॥

প্রামহাপদ্ম স্থ্রেক্র মহারাজ॥

স্বরণিরি বিশ্বগিরি বিপ্রাণিরির সমাঝা।

উদর গিরি রাজ গিরি আর চক্ত গিরি।ইং কাঞ্চন গিরি নীল গিরি বিখামস্থ অফা গিরি।

(24)

ত্রিপুর কনক6 ড় ভঙ্গুর গোআরি। বিনোদ কামোদ গিরি কায় অমরি ॥ কুমারি কেশ গিরি বেহারি নিরাহারি। কুমারী বিশ্বারী আর গৌরী গিরি॥ नीशक्ष मिठकर्श त्कोश काशन। বিহ্যত দীপ্ত আর সমূদ কাঞ্ন॥ শরাসন বরণ স্থবন স্থদর্শন। হেম দ্রোণ প্রন আইল গ্রুমাদন।। रक्षना डि पर्धि पुर्व प्राप्त । কামতাজ মিতজানি বড়ই আতঃ ॥১০ স্থাষ্টিধর শ্রীধর আর শ্রীগদাধর। স্থানর স্থবল সরাজ মহেশ্র॥ কালসর কলাবন আর চলাচল। द्रमां हल ख्रंनाम कूनन मनन॥ রাজমওল মেঘমগুল চক্রমগুল 1১৫ হলিহল কুলাচল স্থাক আটল ॥ ধরামৃতি বৃড়ামৃড়ি আর গিরিবর। চিত্রকুট জটাজুট মোরঙ্গ কেদার॥ **लाशवत वी**तवत कनिष्म स्थाकत। কামেশ্বর কলাবন মহেন্দ্র শিথর ॥২০ আদরস থেদারস আর সর্কেখন । **তুরদ খরল খুবদ নথু**র। বর ॥ ছিত্ৰান বিষিধান মাধ্যবান চত্ৰবান। শ্ভাবীন শুপ্রবান আর বছ্রবান ॥ মারেম্বন গোবর্জন বছরাজ কেতা।২৫ সৈদাক অ্বচাকর বরাহ স্থাতি ॥ সাতাৰি সভোলি গড় কামাক লড়।। व्यनंगी दिनको स्वाधी छहड़। विहड़ा

নাটুভালা তেহড়া বতড়া গৰুড়া।
লীলা মালা বালানী উভড়া গিরি বড়া।
জন্মখ নামে পর্কাত পৃথিবীর মুড়া।
খ্রা খ্রা এক ধারা নামে পদঝাড়া।
শাহড়িয়া সগাড়িয়া আমড়া আমড়া।
বলহরা নাটামুড়া নহ বিরাইনা।
মহানাদ মেঘনাদ হ্রেস ভ্রার্জ।
খ্রাজ মহারাজ নিরাজ আর অধিরাজা।
হিমালয় মহালয় কার্ত্তিক রাজ গিরি।
এক অমৃত পর্কাত আইল কতেক
লেখা করি॥\*১০

আইল পর্বত সব স্থমেক আখাসে †।
আইলা পর্বত সব ধরিঞা মূলি বেশে।
স্থমেক সন্তাবে কাইলা পর্বত কোটা কোটা
একমেলি হঞা অহিলা পর্বত গোঁটা গোটা
উর্মুথ করিঞা পর্বত করি উদ্ভে ।১৫
কাহার খবাহিত নাছি যথা গিঞা পত্তে
উড়িজা আইলা পর্বত সারিঞা ছইলাখা।
জাহা চাপিঞা পড়ে তার নাই রক্ষা।

<sup>•</sup> জন্য কোন প্ৰিতে প্ৰতিগণের নামোন লেগ নাই মতরাং আমরা এই নামারলী নংশোধনে বিরত বহিলাম। ব চিক্তিত প্ৰিতে এইরূপ পাঠ আছে—

হৈছে হৈছি বহিল পর্বত শেখন।
্নির বেশ ধরিঞা পেলা স্থমেকর ঘর॥
দুরে থাকিয়া পর্বতি লব স্থমেক চরণবন্দে।
ক্রেট মাথা করিঞা পর্বতি রাজ কান্দে॥
পর্বতি সব বলে রাজা সমর ক্রন্দন।
আমারা সব সাধিব তোমার প্ররোজন॥
সাগর পরিথা হইল লম্বার পর্বন।
ব্রহ্মার বরে প্রীথান করিল স্কন॥
রাজা বলেন নিমন্ত্রণ গেলাহোঁ হিমাল্যের ঘর।

আমার অবস্থা করেন প্রন প্রন্তর ॥১০
আমার শৃঙ্গ ভাঙ্গিঞা নিলেক প্রন।
কাঞ্চনের শৃঙ্গ ভাঙ্গিঞা নিল শতেক

্যোজন ॥

চারিদির্গে সাগ্র াধ্যে লম্বার স্থান। ব্রহ্মার ব্য়ে পুরী লফিতে না পাতু। কোন জন॥

ষদি নিমন্ত্রণে না যাই হিমালয়ের ঘর। ১৫
থেঁগল করিতাহোঁ পবন পুরন্দর।
শুক্ত ঘর দেখি জা শুদ্দ ভাগিল পবন।
তোমা সভা আনাইল ইহার কারণ॥
তবে সব পর্ব্বক্তে করিল অপীকার।
সঙ্গা চাপি জা শাড়িব করিব চ্রমার॥২০
আন্ডেম্বর করিব তবে ভরিব সাগর।
ভবে চাপি জা পড়িব লঙ্কার উপর॥
মুনির বেশ ধরি জা বহিলা স্থানে ভানে।
দুনির বেশ ধরি জা বহিলা স্থানে ভানে।
দুনির বেশ ধরি জা বহিলা স্থানে ভানে।

বিস্তর সজ দিল আতিথা ব্যবহারে।
কোন কোন পর্কত করিল ফলাহারে।
আন সন্ধ্যা করিল পর্কত প্রভাষ বিহানে।
সকল পর্কতি মেলি বিদিলা দেআনে।
দেআন করি বিদিলা রাজা স্থমেক শিথর।
সভাধতে বলে রাজা বিনয় বিস্তর ॥৬
সভেঞি:দরা করিলে হয় আমার উদ্ধার।
নানা দ্রব্যে তাহা সভায় করিল প্রস্কার।
ফ্রিবাস গাঞা দিল উত্তর কাতে সার।
ভিজতে জে জন শুনে তার রাম করেন
নিস্তার॥১০

প্রীরান বলেন মুনি কহ বিবরণ করিঞা।
কিকরিল পর্ফাত সব রাজার আজ্ঞা পাঞা।
অগস্ত্য বলেন শুন আমার উত্তর।
ক্রিভূবনের মত কথা তোমাতে গোচর॥
সকল পর্ফাতের জানিঞা সারা ভারি।১৫
ক্রেক জানিঞা নারদ গেলা স্বর্গপুরী॥
ভোমার পুরী নাশ কৈল না জান কারণ
ভাঙ্গিয়া স্থ্যেক গিরি কৈলেন কোন

শুনহ বাউ রাজা আমার বচন।

সত্তরে চিন্তহ আপনার রজগ ॥২৩

এবে পুরী নাশ কইলে কাহারো নাহি বজা।

সকল পর্বতি একত হৈল, কতেক করিব

जल्मात्न जानित तकात नाहिक अक्रण । तार्व भूती निर्माहित अभा अन्य वेहन ॥

#### উত্তরাকাণ্ড। ইন্দ্রসহ নারদের ব্রহ্মলোকে আগমন।

নিদ্রা তেজি ছই ভাই মুথে দিল পানি। হেঁন কালে গেল তথা সব বৃদ্ধ মুনি॥ চারি দিগে বসিলা সকল মুনিগণ। তাহাদের মধ্যে বৈদে ভাই হুই জন॥ যুক্তি হেতু বৈদে ছই কুমারের পাদে।৫ ত্বজনারে বুঝান মূনি অশেষ বিশেষে॥ শ্রীরামের রাজ্যে বসি রাম মোর রাজা। নানা মতে রাম করে সভাকার পূজা॥ স্থ্য সমতেজে রাম মহা ধহর্দ্ধর। জার তেজে বন্দি হৈল অলজ্যা সাগর॥১০ বালিরাজা মালা রাম না করিল রণ। রাক্ষ চউদ সহস্র থর দূষণ॥ মায়ার মারীচ মালা দেবতার বরে। ত্রিভূবন হুর্জন্ম মারিল লক্ষেশ্বরে॥ কুম্বর্ক শ্রীরাম সংহারি।১৫ লক্ষণ মারিল ইন্দজিত দেব-অবি॥ মৈল দশর্থ দিল বামে দ্রসন। রামের প্রসাদে জিল মরা কপিগণ॥ পালিতে বাপের সত্য রাজ্যভোগ্তাজে। कोक्तवश्मत्र वनवाम मूनि मंव शृक्त ॥२० দেশে আসি শ্রীরাম মুনির করে পূজা। পদতলে থাটে ক্লামের উনকুটা রাজা॥ বিষ্ণু অবতার রাম লোকে হিতকারী। তেজিল লোকের বোলে দীতা হেন নারী॥ সীতা হেন স্ত্রীকে দিলেন বনবাস।২৫ হেন রাম লজ্ফিলে মুনির সর্কনাশ। ব্রিনম বলেন মুনি হাত কুরি জোড়া। দর্বনৈত্য ছাড় রামের আর যক্ত ঘোড়া।

রামের তেজে বিভীষণ পালা মন্দোদরী। রাজপাট পাইল কনক লক্ষাপুরী॥ মুনির গৌরব রাখ তেজহ সংগ্রাম। বজ্ঞ ঘোড়া সৈত্য দিয়া তোষহ শ্রীরাম।। আমাদের না করিছ বচন লঙ্ঘন। ৫ নহে বা মেলানি দেহ ছাডি তপোবন ॥ সত্যবাদী রামচন্দ্র মুনির হল ভ। গুণবান ধর্ম্মণীল সংসারে বল্লভ । বসিরা রামের রাজ্যে রাম সনে বাদ। ছাড়িলাঙ বিষ্ণুপদার বসতের সাধ॥১० আপন মহন্ত্র লোক রাথএ আপনি। স্থথে থাক দোঁহে মোরা মাগিব মেলানি॥ এত সব মুনিগণ কহিলেন কথা। স্থনি লব কুশ দোঁহে হেট কৈল মাথা। তপোবনে বিদ হইলুঁ তোমার কুর্পর।১৫ তোমাদের হেথা হইতে জাব অন্ততর॥ মায়ের সনে আগে গিয়া করি অনুমান। তোমাদের পুরী থাকি জাব অগ্রন্থান। এতবলি গেলা ছুই সীতার কোঙর। তপোবন ছাড়িয়া মায়ের গেলা ঘর॥২০ মুনির বচনে হুই ভাই কোপে জলে। কোপ মুখ হইয়া উঠিলা সভাতলে। এতেক রহস্য কথা সীতা নাহি শুনে। ত্রই ভাই প্রণমিল মার্ট্যের চরণে॥ কুত্তিবাস পণ্ডিত কবিত্বে বিচক্ষণ।২৫ শ্লোক ভাঙ্গি রচিল উত্তর রামায়ণ।

(00)

(98)

শুমেরুর শৃঙ্গ ভাঙ্গিঞা নিলেক প্রন।
সদ্য শৃঙ্গ ভাঙ্গিল তার শতেক যোজন॥
সেই কাঞ্চন শৃঙ্গে লঙ্কার নির্মাণ।
সাগরের মাঝে পুরী হইল নির্মাণ॥
কাহার তরে করিলে পুরী কৈলে কোন
কাজ।
৫

**এবে পু**রী নাশ গেল শুন দেবরাজ ॥ তোমা হৈতে স্থমেক পাইল অপমান। সংসারের সার হৈল উত্তম স্থান। রাজমণ্ডল পর্কাত প্রনের বাস। আগু তাহা ভাঙ্গিঞা করিব বিনাশ ॥১• তবে ভাঙ্গিবেক বরুণের মেঘমগুপ গিরি। তাহার অস্তরে ভাঙ্গিবেক অমরাবতীপুরী॥ আমার বসতি তোমার স্থাতব্য। উত্তম লোক তাহাতে অছিএ অবগু॥ তোমার নগন চাপিঞা করিল বসতি।১৫ ব্রনার পুরীর তরে করিবেক বিতথি। সকল স্বর্গবাসীর তবে করিবেক স্কর্গতি। দেবতা নহিলে তুমি কিসের স্কুরপতি॥ তুমি আমি চল জাব বন্ধার স্থান। এ সব কহ গিঞা ব্রহার বিদ্যমান ॥২० ইন্দ্রে নারদে দোঁহে করিল যুগতি। ব্রনার ঠাই হুঁহে গেলা শীঘগতি॥ ব্রহ্মার ঠাই দোঁহে প্রণাম করে। ছইজনা দেখিকা ব্রহ্মা হরিষ অস্তরে॥ তুইজনা শৈখিঞা ব্রন্ধার হর্ষিত মন।২৫ বসিতে স্থাসন দিল কহ প্রয়োগন॥

ु " नागरेतत मारेज निर्माण देश शृतीथान।" हेराहे मञ्चल शार्छ। পৃথিবী রাখিতে ছহেঁ করিলা আগমন।
নারদের বচনে হাসে দেব নারায়ণ॥
আছিল স্থমেক সভার হিতকারী।
স্থমেকর বিনাশে পত্তন হৈল লঙ্কাপুরী॥
তিনকোটা পঞ্চলক্ষ পাঁচইশ সহস্র শিখর।
পর্বত চাপিঞা নাশ হইবেক পুরন্দর॥
পর্বত চাপিলে তবে কোন্মতে তরি।

আপনি আপনার সৃষ্টি রক্ষা কর।
সংমেকর বিচার দেখিঞা বড় লাগে ডর ॥১০
পবনের ঝড়া বকণের বরিষণ।
পর্কাত চাপিলে হব লোকের সরণ॥
কেনে দেবরাজে গোসাঞি দিলেক আরতি।
এবে নাশ গেল গোসাঞি লোকের বসতি॥
স্থমেকর প্রবোধ করাহ দেবগণ।১৫
সৃষ্টি রক্ষা পাউক বলেন নারারণ॥
এতেক বোল বলেন বিষ্ণু ব্রন্ধার বিদ্যামান।
দেবগণের মাঝে কিছু বলেস্ক ঈশান॥
জাদি শক্তি করিতে পারহ পুরন্দর।
এবার এড়াব ছঃখ কাহাকেহো নাহি ডর॥
মহাদেশের বরে সকল দেব হর্ষিত।২১
উত্তরকাও গাইল ক্তিবাস পণ্ডিত॥,

অগস্ত্য বলেন অপূর্ব্ব কথা শুনহ প্রীরাম। চলিলাতো দেবরাজ করিতে সংগ্রাম॥२৪

\* লিপিকর প্রমাদবণতঃ এই স্থলের করেক পংক্তি ছাড় হইয়াছে বলিয়া প্রতীতি হয়। সং (04)

ব্রহ্মা বলেন স্থজিল সকল আমার পুরী। দৈবে বিপরীত করে কি করিতে পারি॥ স্জাল সকল পরী অনেক শক্তিতে। সকল পুরী নাশ আমার করিল পর্বতে॥ বারেক ইন্দ্র তুমি যদি কর রক্ষা। হাথে বজ কবিতা পর্বতের কাট পাখা। স্থমেরুর ধরে সব আছেন নানা বেশে। সব এক হইলা কেহ নাহি দেশে॥ ব্রহ্মার বচনে ইন্দ করিল অঙ্গীকার। সকল দেবগণে করেস্ত আগুসার ॥১• हेक्त यम कूरवत वक्रण शवन। অষ্টলোকপাল লডিল সকল দেবগণ॥ মাতলি রথ সাজে চঢ়েন পুরন্দর। আবর্ত্ত সামর্ত্ত আর দ্রোণ পুন্ধর !! हेट्सन दोल छनि नलन नात्रम मनिनन। १० পর্ব্বতের আগে বৈদে গর্ম্ব কিন্নর॥ হাথে অন্ত করিঞা জাত গন্ধর্গণ। যুদ্ধ করিতে সব হৈলা একমন॥ উড়িঞাং পর্বত চাপিঞা চাপিঞা পড়ে। ঠাঞি প্ৰাণ ছাড়ে কেহ কাণ নাহি নাড়ে ৷ আকর্ণ পুরিঞা বাণ এড়েন পুরন্দর।২১ রণে ভঙ্গ দিঞা পালাঅ গন্ধর্ক কিলর॥ অস্থর না রহে ডরে পালাঅ দানব। সাহস করিঞা রণে প্রবেশে গন্ধর্ব।। ভাহা দেখিঞা অস্থ্রগণ সামাইল রণে।২৫ অস্থ্র দেখিকা পালাঅ দেবগণে॥ উদ্ধয়ুখ করিঞা পর্বত উড়ে গগনে। পর্মতের চাপ দেখিতা পালাম দেবগণে।

(৩৬)

ইক্স দেখিঞা রহিলা সকল দেবগণ।

যম কুনের হহিলা বরুণ পবন ॥
প্রথমে পাথা কাটা গেল পড়িলা মহেক্রশিপর

গাধু সাধু করিঞা বাখানেন দেব পুরন্দর ॥
বাণ বর্ধে ইক্ররাজ অতি অদ্ভূত।

কাটা গেল পাথা পর্বত পড়িল বিদ্যুত॥
পাথা কাটা গেল পড়িল কঁলিঙ্গ কেশরী।
সাগরের মাঝে রহিলা পর্বত বিদ্যুগিরি॥

কোপে পাথা কাটিয়া পেলায় পুরন্দর।
সাগরের কুলে পড়িল† চক্রশেথর ॥১০
তপোবনের ভিতর পড়িল পর্বত মাল্যবান

সহস্র বোজন যুড়িঞা পড়িলা গন্ধমাদন॥
গোকুল চাপিঞা পড়িলা গোবর্জন।
চক্রগিরি ব্রাজগিরি স্র্মেক্র স্থদর্শন॥
বিন্দপর্বত পড়িল কুমুদ অজন।১৬

উদয়গিরি অন্তর্গিরি হেমগিরি ক্লফাগিরি। পাথা কাটা গেল সভার লড়িতে না পারি॥ জতেক পর্বতগণ বৈসে কোশে কোশে। তাহা সভার পাথা কাটিঞা ইক্স বেড়ায়

'সাগরের উত্তর পড়িল বিদ্যাগিরি।'
 গ চিহ্নিত পুথির পাঠ।

<sup>†</sup> পশ্চিমে পড়িল' গ, পুঁথির পাঠ।'

‡ স্থনেনের দেশেতে পড়িল স্থাবাদ।

শ্রীহট্টদেশ চাপি পড়িল শ্রীমান।

শ্বির আশ্রমে পড়ে শ্বামুখ পর্বতিশ্ব

যক্ষ পুরে দক্ষিণে পড়িল মরকত।'

অন্ত পুঁথির পাঠ।

(99)

স্থমেক ছাড়িঞা পর্বত পালায় দৈশে দেশে। তথা জাঞা পাখা ইক্র কাটএ হরিষে॥ প্রাণ লঞা পর্বত সব পালায় পবন বেগে। তের কোটা পর্বত রহিলা চারিদিগে ॥ তিনকোটী পর্বতের ইন্দ্র কাটিল পাখ। । ৫ সবেমাত্র চারি পর্বতের পাথ গেল রক্ষা॥ হিমালয় পর্বাত আর স্থমেক কৈলাস। বিষ্ণুদাস ক্ষণদাস ত্রন্ধদাস রোহিদাস। नीलाहल ऋहल त्यांमनाथ। বেহারি কেদারি রহিলা নিপাত ॥১০ ত্রাসে পালায় মৈনাক হিমালয় নন্দন\*। পালাইতে পথে হৈল প্রন্ম সনে দরশন॥ প্রন ক্রেন ঝাটপালাহ আমায় ক্রিঞা ভ্র পাছথেদা করিঞা তেমিকৈআইসে পুরন্দর ছুই ভাইকের পবন হৈঞা গেল স্থা।১৫ ছে যথা পালায় ইন্দ্র তাহার কাটে পাথা॥ সমুখ হৈতা রহে পবন দারুণ ঝড়। ছুই ভাই পৰ্বত পালায় দিঞা লড়॥ জনগিরি পর্বত সমুদ্রে পড়িলা জয়টাক। মহোদধি মধ্যে পডিলা মৈনাক॥২० +পর হইতে ছই ভাইর পাথা গেল রাথ। সাগরে প্রনে হৈতে পাথা গেল রাথ॥ দিগ বিদিগ নাহি পর্বত শিখরে। সকল পর্বতের পাথা কাটে পুরন্দরে ॥২৪

"মৈনীক জয় ঢাক হিসালয় নন্দন ॥"

† "পক্র হৈতে ছই ভাইর রক্ষা হৈল পাথ।

নাগরে রহিল ছ'হে মেনাক জয় ঢাক।"

গ চিহ্নত পু'থির পাঠ।

(96)

পর্বতগণ পড়িল রহিল স্থানে স্থানে। প্রাজয় পাঞা সব পালাইল অপ্মানে ॥ রণজয় করিঞা লডিল দেবগণ। সকল দেবগণ বন্দেন ব্রহ্মার চরণ॥ পর্বতের আগে বৈসে জত মনি।« সকল মুনি মেলি ইন্দ্ৰকে দিল শাপবাণী॥ মেঘনাদ নামে হইব রাবণ কুমার। তার ঠাঞি অপমান পাইবে প্রশার॥ মহাপুরুষ হইবেক রাবণ তন্য। তার ঠাঞি ইক্র তুমি পাবে পরাজয় ॥১০ অযোনিসম্ভবা ক্যা কুলে পতিব্ৰতা। অহলা তাহার নাম ব্লার ছহিতা॥ গুরুর পত্নী হরিবে তুমি শাপ দিব মূনি। তাহার শাপে তোমার গাএ হব সহস্রযোনি মনিগণ শাপ দিল কভু নহে আন।১৫ তেকারণে ইন্দ্রজিতের ঠাঞি পাইল অপ্যান মুনির শাপে ইক্ত হুইলা বিহবল। তেকারণে ইজের নহিল কুশল॥ মূনির কথা শুনিঞা সভাথও হাসে। উত্তরকাপ্ত গাইল পঞ্চিত ক্তিবাসে ॥২০

অগস্ত্য বৰেন শ্রীরাম শুনহ বচন।
রাক্ষপ পুতাস্ত কহি ইহাতে কর মন॥
পৌলস্ত্য মহামুনি ব্রহ্মারনন্দন।
মহামতি মহোদর মহা তপোধন॥
তপ করিতে গেলা তেইো স্থমেক গিরি।২৫
কেলি করিতে আইসে তথা অনেক\* স্থনরী

थात्र मन्त्रवाहे 'ब्यादनक' शांठ पृष्ट इत्र ।

(05)

(80)

দেবকন্তা নাগকন্তা গন্ধবী অপারা। সকল কন্তা কেলি করিতে তংপরা॥ হাসন্তি নাচন্তি গায়ন্তি সন্তরে স্কুদুরে\*। কোপে মুনি শাপ দিল সকল ক্সারে॥ কন্তা হঞা জেই জন আগিবে এখানে।¢ বিনি পুক্ষে গুর্ভ হইবে পাইবেকঅপমানে। অবস্থিত কলা তার নাম কলাবতী। मुनि भाग मिला कंगा देश्वा गर्डवंगी॥ অপার † হৈল কন্তা প্রম রূপধরে। মুনি শাপ দিল কন্তার স্তনে ছগ্ধ বারে ॥১० মুনির শাপে ক্তা পাইল অপ্যানে। বাপ মোর তৃণবিন্দু কিছু নাহি জানে॥ অপমান পাঞা কলা রহিলা তপোবনে। একেশ্বরী আছে ক্সা সেই তপোবনে। স্তনে তথ্য দেখিঞা সত্তরে গেলা ঘর।১৫ গর্ভবতী কন্তা দেখি বাপ মাএ ডর॥ তৃণবিন্দু দেখি গেল আপন আশ্রম। তোমার ‡ ক্ঞা মোর পাইল অপ্যান॥ আপনি বিভা করহ কন্তা আমি করি দান। তবে সে যুচে মোহার অপমান।। ২০ ব্রনার নন্দন পৌলন্তা মহামূনি। কলাবতী বিভা করিল পরম কামিনী॥ विভা করিঞা তুষ্ট হৈলা কন্যার গুণে। বরদানে তুট্ট করিলা কন্যা ততক্ষণে॥ মোর বীর্য্যে প্রসবিবে উত্তম কুমার।২৫ পিতৃ মাতৃ কুলে কীর্ত্তি বাঢ়াব বিস্তর ॥

\* :'গীত গায়ন্তি স্বৰরে' গ পুথির পাঠ। † 'গঠৰতী' ‡ 'তেমুমা হৈতে' সঙ্গত পাঠ। বিশ্বপ্রবা নামে পুত্র প্রস্ববিশ স্থানরী।
তপে মহাতপা তেঁহ মহাগুণ ধারী॥
তপ কৈল বিশ্বপ্রবা চৌদসহস্র বংসর।
জল পবন জাহার কৈল উপবাসে ভর॥
ব্রহ্মা বলেন পৌলস্তা শুন আমার বচন।
ভরদ্মাজ নামে মুনি মহা তপোধন॥
তাহার কন্তা আছে ধরে সর্কা স্থলফণ।
বিশ্বপ্রবার তরে তাহার করহ বচন॥
বাপের বচনে তপোবন গোলা মুনি রাজ।
পাদ্যুঅর্ঘ্য দিঞা প্রণাম করিল
ভর্মাজা।১০

দেবতার পুত্র তুমি ব্রশার নদন।
আমার ঠাই আইলা কহ কোন প্রয়েজন
পৌলস্ক্য বলেন জেমার কন্যা আছে
শুণবানে।

আমার পুত্রকে তুমি কন্যা দেহ দানে॥
ভরদাজ ইনি কহেন তুমি পরন পিতা।১৫
তোমার পুত্রকে দিব আপন ছহিতা॥
বৈশাজী নামে কন্সা আছে পরম স্থলরী।
বিশ্বরা বিভা করি গেলা স্থমেক গিরি॥
রাত্রি দিনে কন্সা লঞা করএ বিহার।
কন্সা লঞা ক্রীড়া করে বিনিধ প্রাকার॥২•
ধনের অধিকারী পুত্র হৈল দেবতারবরে।
শুভক্ষণে কুবের নাম খুইল তাহারে॥
বিশ্বরার পুত্র হৈল মহা তপোশ্বন।
তপ ছাড়ি তাহার আর নাহি মন্॥
কঠোর তপ কৈল চৌদ্দ সহস্র বৎসর।২৫
জল পবন আহার উপবাসে ভর॥

(85)

লোক পাল কৈল তারে ধনের ঈশ্বর॥ ইক বকণ যম সনে হইল সমান। প্ৰপ্ৰকৰ্ত্ত সাজিঞা ব্ৰহ্মা তাহাকে দিলদান। ব্রন্ধার বরে ভৃষ্ট হইল। বাপেরে নমক্ষরি। জত বর পাইল তাহা বাপকে গোচরি॥ ত্রলভ বর ব্রহ্মা মোকে দিল দান।৫ ত্রহ্মা না দিল মোকে বসিবার স্থান॥ বাপ হঞা পুত্রকে কর বসিবারে স্থিতি। লোক স্থানে যুক্তি আইসে আমার যুগতি॥ 'বিশ্বপ্রবা বলেন শুন ধনের অধিকারী। বিশ্বকর্মার নির্মাণ আছে লক্ষাপরী ॥১০ রাক্ষসের রাজা ছিল রাক্ষসের অধিকার। বিষ্ণু সনে রণ করিঞা রাক্ষস সংহার। মণিমাণিকা নির্মিত রত্ন মিশাল। হেন লক্ষায় তুমি কর ঠাকুরাল॥ বাপের আজ্ঞাতে কুবের বৈসে লঙ্কাপুরী।১৫ গন্ধর্ক কিরুর যক্ষ সভে সেবা করি॥ স্থমের পর্বতে বাপ মাএ নমস্করি। পুষ্পক রথ চাপিঞা গেলা লক্ষাপুরী॥ লঙ্কা দেখিঞা হৈল সভে হর্ষিত। লক্ষা চাপিঞা রহিলা কাহারো নাহি ভীত। অগ্তামুনির কথা হটল অবসান। ২১ মুনির কথা শুনিয়া পুনঃ পুচেন্ত শ্রীরাম। পৌলস্তা হটতে হৈল রাক্ষ্যের প্রচার। সর্বাকালের রাক্ষ্য লোক কৈল ঠাকুরাল। রাক্ষ্ম কাহা হৈতে হৈল মনে বিস্ময় করি। সে রাক্ষস কোথা গেল কেবা বা সংহরি ॥২৬ (8२)

তোমা হৈতে শুনি পূর্ব্ব রাক্ষস কাহিনী।
কথাতে উত্তম তুমি কহ মহামুনি ॥
কাহার বরে তাহা সভার বাঢ়িল ঠাকুরাল।
বিষ্ণুর সনে রণ করিঞা গেলা গাতাল॥
কি কারণে বাদ কৈলেক নারায়ণে।
অগস্ত্য মুনি কথা কহেন শ্রীরাম শুনে॥
কৃত্রিবাস উত্তরকাণ্ড গাইল রামায়ণ।
শুনিলে অধর্ম থণ্ডে পাপ বিমোচন॥

অগস্তা বলেন স্প্টিকর্ত্ত। আগে স্প্টিল আগনি। প্রাণী রাখিতে আগে সাজিলেন আগনি॥ সকল প্রাণী গেলা ত্রমার স্থান। কোন কার্গ্যে করিলে আমা সভার উপাদান ব্রদ্ধা বোলেস্ক প্রাণি রাখিতে তোমা সভার উৎপতি।১১

হিড়িম্বা নামে রাক্ষী রাজার ছহিতা। ক্থুনামে শৃজ্যু রাজা তাহার বিবাহিতা॥\*

<sup>\*</sup> এ স্থানে গ চিচ্চিত পুণির পাঠ এইরপ :—
"অগন্তঃ বলেন স্প্টি কথার স্থানি পানী।
পানী রাখিতে ব্রক্ষা স্থানি অনেক প্রাণী ।
প্রাণিগণ সেলি সভে গেলা ব্রক্ষার স্থান।
কোনি কার্য্যে আমা, স্থার কৈলে টুপাদান ॥

(80)

প্রতি দিন পানীর ভিতর করএ শুঙ্গার। হেতু প্রহেতু নামে হৈল ছই পুত্র তাহার॥ উগ্রতপ কৈল প্রহেতু বাতাস ভক্ষণ। নারায়ণ চিন্তিঞা তেঁহ করিল স্বর্গকে গমন হেতৃ নামে হৈল রাক্ষসের রাজা। বিহাৎকেশ নামে পুত্র রাক্ষদের পুজা। বিছাৎকেশ বিভা কৈল সন্ধা কুঙরী। সমান্তা নামতার প্রম স্থল্রী॥ মন্দার পর্ব্বতে স্ত্রী লঞা করে রঙ্গকেলি॥ ক্রীড়া রসে তেঁহ পর্বতে পর্বতে বুলি॥১० পুত্র এড়িঞা জীড়া দোহে করেন্ত সানন্দে। ক্ষ্ধায় ব্যাকুল শিশু আঙ্গুলি চ্ষিঞা কান্দে॥ **८२८**र्घ छा ७ शांग कात्म (मरी कान छे পর গগনে ।

শকর পার্কাতী জাস্তি রুষভ বাহনে॥ অনাথ হেন বালক কান্দে মা বাপ দারুণ। বলদ রহাঞা দেবী শুনস্তি ক্রন্দন ॥১৬ দেবীর ববে পুত্র হৈল অজর অমর। তথনি অমৃত শিশু বাপের শোষর॥

ব্রহ্মা বলেন ভোমা সভার পানীতে উৎপত্তি। পানী রাথ গিয়া সভে করিয়া শক্তি॥ কেহ বলে ফুধা শোকে পানী রাখিতে নারি। পানী থেয়া পানী রাখি পানীতে সাঁতরি॥ কেহ বলে অনেক শক্তিতে রাথিতে পারি পানী। তার কথা গুনা৷ ব্রহ্মা তাহাকে বাথানি ৷ যে বলে রাথিব পানী সে হউক যক। যেই বলে পানী খাব সে হউক রক্ষা कालिम नाम्य कना दिल क्रवम्छिट्छ। । কুভনামে শথু কৈল তারে বিবাহিত।।

(88)

আকাশে হইল পুরী মহাদেবের বরে ৮ আকাশে হইল পুরী স্থথে রাজ্য করে॥ সংসারের ছর্লভবর তাকে দিলেন্ত পার্ববতী।¢ তাহার হেন গর্ভে ধারা ধরিহে স্ত্রী জাতি(?)॥ ততক্ষণে বাঢ়িঞা হৈল পৰ্বত প্ৰমাণ। দেবা দেবীর বরে হৈল রাক্ষস থরসান॥ মহাদেব নাম তার থইল স্থকেশে। অনেক তপ কৈন সেই ব্রত উপবাসে॥ ১০ ববদান শুনিল তার সকল দেবগণ ৷ গামলীলা নামে কন্যা গ্রুকে দিল দান ॥ ছুই জনা মেলিলা পরম পিরীতি।১৫ মহাবল পুত্ৰ হৈল তিন বেকতী॥ यानायान मर्काष्ठार्ध स्वर्भागी यानी। তিন ভাই মহাবল সক্তিণ শালী ॥ তিন ভাই সহোদর তাড়কা বহিনী। মাংস খাইঞা বুলে সেই পিএ বধিনী\*॥২• धुक्रमानी ताजात शृख धुक महाख्गी। তাহাকে বিভাঞা দিল তাড়কা বৃহিনী॥ ধুন্ধুসনে তাড়কা থাকে রাত্রি দিনে। প্রাণিগণ খাঞা বুলে কাহো নাহি গণে॥ কথোক দিন স্বামীর সনে নানা রঙ্গকরে। তবেত তাড়কার গর্ভ হইল উদরে॥২৬ গৰ্ভবতী তাডকা নাডিতে মাৱে না পায় আহার। ২৫

আহার না পাঞা থাইলেক আপন ভাতার

थि = थिया विधनो = नामिनी।

(8€)

(8%)

অনেক তঃথে বৈদে তাড়কা বনের ভিতরে।
মারীচ নামে পুত্র হৈল নানা মায়া ধরে॥
মায়া মারীচ লঞা বেড়ায় তাড়কা রাক্ষণী।
মাতাপুত্রে থাঞা বেড়ায় জত মুনি ঋষি॥
কালাদিত্য নামে রাজার বেটা নাম
কুলাচার।
৫

তাহারে বোলে মোকে করহ শৃঙ্গার ॥
তোমার সঙ্গে রাজা নানা শৃঙ্গার করেঁ।
শৃঙ্গার না কইলে তবে সবংশে থাকোঁ॥
কালাদিত্য রাজারপোলা নানা শৃঙ্গার জানে
তাহার বীর্য্যে তাড়কা গর্ভধরিশ কথোক
দিনে॥১০

তাহা হইতে হইশ ছই সহোদর। ছইজনে বেড়ায় তপোব**শে**র ভিতর ॥ মায়ারূপে বেডায় মারীচ তপোবনে। মুনি মুনির পুল বেড়াএ স্থানে স্থানে॥ শিশুকালে বেড়াহ তুমি শ্রীরাম লক্ষণ।১৫ মুগরূপে বেড়ায় মারীচ তিনজন। তোমার তেজ বিক্রম মারীচ নাহি জানে। তাহারা ছুই অনুজ পড়িল তোমার স্থানে॥ তপ করে মারীচ আরাধে প্রজাপতি। ব্রহ্মা বলে রাজা হবেতোমাকে করিব নুপতি তপোবনে জত ছিল রাক্ষ্য কোটা কোটা गाबीरहर देमच त्मलिल जिनरकां है।। १२ তিনকোটী সৈত্র মারীচ পরিবার। ষজ্ঞনাশ করে রাক্ষস না করে বিচার॥ মাএ পুত্রে তাঁড়কা সব করিল সংহার।২৫ ক্ষত্রিবাস গাঞা দিল উত্তরকাণ্ডের সার॥

কথা ভ্রনিঞা শ্রীরাম হর্ষিত মন। আর সব রাক্ষ্যের কহত কথন॥ অগস্ত্য বলেন শ্রীরাম কথাতে দেহ মন। মাল্যবানের কথা শুনহ বিচিত্র কথন॥ তিন ভাই মাল্যবান তপে দিল মন Ic কভু উপবাস করে কভু ফল মূল ভক্ষণ॥ স্থমেরু পর্বতে তপ করয়ে চন্ধর। তুষ্ট হঞা একা তাকে দিতে আইলা বর॥ হর্জয় শক্র জিনিবে না পাবে পরাজয়। চিরঞ্জীব হৈতে তোকে নাহিক সংশয়॥১• তিন ভাই তৃষ্ট হৈলা শুনিঞা ব্রন্ধার বাণী দেবপুরী স্থজিতে বিশ্বকর্মা আনি॥ দেবের তুনা পুরী সাজাহ অতি মনোহর। \* আমার পুরী সাজাহ সত্তর॥ বিশ্বকর্মা বলেন পুরী স্থজিল ব্রন্ধার বরে। লক্ষা নাম পুরী স্থজিল অতি মনোহরে ॥১৬ স্থমেক ত্রিকৃট হই পর্বাতের তলে। শতেক যোজন আড়ে শতেক যোজন দীঘলে সোণার আওয়াস সোণার চোরী। তাহাতে নিৰ্মাণ কৈল কনক লঙ্কাপুরী ॥২০ গঢ় পরিথা তার লঙ্খিতে না পারি। বিশ্বকর্মার বোলে তেঁহ গেলা লঙ্কাপুরী॥ লঙ্কাপুরী স্থজিল অতি মনোহর। नकार्युती (प्रशिन उक्ता शतम स्मात्।। লকাপুরী দেখিঞা রাক্ষস হর্ষিত।২৫ লঙ্কা লঞা রাক্ষস করে কারো নাহি ভীত॥ লড়িলা বিশ্বকর্মা করিঞা মেলানি। ক্রতিবাস গাঞা দিল উত্তরকাণ্ডের কাহিনী (89)

অগন্ত্য বলেন শ্রীরাম শুনহ বচন।
কহিব বিচিত্র কথা তাতে দেহ মন॥
লর্মাদা নামে কন্তা গন্ধর্ক ঝিআরি।
তিন কন্তা আছে তার পরম স্মুন্দরী॥
তিন জাতাকে তিন কন্তা দিল দান।
তেন পত্নী ছাড়িঞা তিনের গতি নাহি আন
মাল্যবানের ভার্য্যা পরম স্থন্দরী।
প্রশ্র প্রস্বাল সেই দেব দানবের বৈরী॥
বজ্রমৃষ্টি বিরূপাক্ষ যজ্ঞ কোপন।
মত্তা উন্মতা \* বীর তপন॥১০
সপ্তহ্য সম্পত্তি জার কন্তা স্থ্রেশা।

মাল্যবানের দশ বেটা বলে মহাবল।

স্মানীর ভাগ্যা নামে কেতৃমতী ।১৫ বীর প্রসবিল সেই রাবণের সেনাপতি॥ প্রহন্ত অকম্পন ধুয়াফ বিকট। কালিকামুখ মেঘমালী বলে উৎকট॥ তাস্বক পার্শ্বকর্ণ ঘদ প্রেঘম। স্মালীর দশ বেটা বীর রাক্ষম॥২০

\* তারা চিহ্নিত স্থানগুলিতে গ পুথির পাঠ এইরূপ:—

"বজুমুষ্ট বিরপাক্ষ যজকোপ নাম।
মাতা আর উমাতা মিত্রতপন আখ্যান॥
সপ্তম সম্পাতি হৈল আর মহাবল।
মাল্যবানের পুত্র সব হইল প্রবল॥
দশ পুত্র প্রসবিল কন্যা একখানি।
নিক্ষা তাহার নাম অতি স্কাণিনী॥"

(85)

নিক্সা নামে কন্যা হৈল পরম স্থল্নরী। রাবণ তিন ভাই সেই গর্ভে ধরি॥ রাবণ তিন ভাই হৈলা জাহার উদরে। সীতা লাগিঞা সেই বুঝাইল বিস্তরে॥ মালীর ভার্যা হইল নাম কলাবতী। ¢ নল আনল প্রস্বিল ভীম সম্পাতি॥ চারি মন্ত্রী লঞা মন্ত্র করে বিভীষণ। আর যত মন্ত্রী ভাগ নিলেক রাবণ।। স্থকেশের তিন বেটা স্থাথ রাজ্য করে। তিভুবন জিনিঞা বেড়ায় ব্রহ্মার বরে॥১० মুক্তি ব্রহ্মা মুক্তি বিষ্ণু মুক্তি মহেশ্বর। कुरवत्र वक्षण यम (मव श्रवन्मत ॥ হেন সব রাক্ষস করে অহন্ধার। দেব দানব জিনিঞা নিলেক অধিকার॥ রাজ্য হারাইঞা দেবগণ দিলেক ভঙ্গিআন রাক্ষ্যের ভরে মহাদেবের ঠাই পশিলা শর্ণ রাক্ষস শারহ তুমি করহ সংহার।১৭ রাক্ষদ মারিঞা দেবগণের থণ্ডাহ ভর॥ স্থকেশের পুত্র না মারেন মহেশ্বর। কেমনে মারিব তাকে দিঞাছি বর ॥২০ \*অসমর্থ অসাহস না ধরি মনে। এ সব রাক্ষস মারিতে শরণ পশিলা नातात्रां ॥

জয় করিঞা সকল দেবগণ হরষিত। নারায়ণ শরণ পৈশহ হবেক মূনোহিত॥

"আমায় উপদেশ' দেব, মারিব কেমনে। রাক্ষম মারিতে শরণ পৈশ নারায়নে॥" স পুথির পাঠ। (88)

(00)

এই মতে গেলা সভে বৈকুণ্ঠপুরী।
রাক্ষসের বিবরণ সকল গোচরি॥
নারায়ণ বলেন স্থকেশ আমি ভালে জানি।
মহাদেবের বরে সে ত্রিভুবন জিনি॥
বংশক্ষর করিবোঁ তার যদি দেবগণ হিংসে।
আক্ষসের শ্রেণ্ঠ সেই মালাবান্ শুনে।
মন্ত্র করিতে হুই ভাই ডাক দিঞা আনে॥
আমা সভা মারিতে দেবগণ বেড়াস্ত

মহাদেব পরিহরি বিষ্ণুতে কৈল ভবে ॥১০ আমা সভা মারিতে নারায়ণের অঙ্গীকার। হিরণ্যাক্ষ হিরণাকশিপু জাহার সংহার॥ ছই ভাই বলে আমাদের বাদ নাঞি বিষ্ণুর

সনে।

দেবগণে বিষ্ণু আনে আমা মারিবার মনে।

দেবগণ উপর আজি সাজিবোঁ ধণ্ডি।১৫

দেবগণ মারি প্রলয় না বাহুড়ি॥

হস্তী ঘোড়া রংগ কৈল আরোহণ।
গাধা গকতে চড়িল কেছো সর্পবাহন॥

সিংহ বাাঘ্র কেহ শৃকর বাহন করি।

কুন্তীরে মকরে কেহো ধাঞা অন্ত্রসারি॥২০
জলচর স্থলচর ঘোড়ার উপরি।

আপ্তজাএ মাল্যবান্ বীর অহক্ষার করি॥

যুঝিবারে গুলা রাক্ষস নারায়ণ গিরি।

শুনিঞা আইলা নারায়ণ গকড় বাহন করি॥
বিষ্ণুর স্থানে দৃত পাঠাইল তুরিত।২৫
গর্গড়ে চড়িয়া বিষ্ণু আইলা আচ্মিত॥

নারায়ণে রাক্ষমে হইল দরশন।
ততক্ষণে হুঁহাতে হইল মহারণ॥
নারায়ণ উপরে করে অস্ত্রের ঝন্ঝনি।
পর্বত উপরে জেন বর্ষ এ পানী॥
নারায়ণের শভ্জনাদে ত্রিভ্রন জোড়ে।
হস্তী ঘোড়া রাক্ষম সব নোহিঞা পড়ে॥
রাক্ষম উপরে অস্ত্র করিল অবতার।
বাণে ফুটিয়া রাক্ষম সংভ্রম অপার॥
মালী রাক্ষম হইল রণে আগুজান।
বিক্রুর বাণে রাক্ষম হৈল থান খান॥১০
মাল্যবান্ মালী স্থ্যালী তিন জন।
তিন জনার রণ একা সহিল নারায়ণ॥
মালী রাক্ষম গরুড় উপরে মারে গদার
বাড়ি॥

রণে বিমুথ হৈলা গরুড় বিষ্ণু লঞা উড়ি। গরুড় উড়িঞা বেড়ায় রাক্ষ্য দিলা টিটকারী।১৫

লেউটিঞা চক্রবাণ এড়িল শ্রীহরি॥
চক্রবাণ এড়ে হরি কি কহিব কথা।
এক চক্রে কাটা গেল ভিন ভাইর মাথা॥
মুণ্ড কাটা গেল লোটার ভূমিতলে।
রণে ভঙ্গ দিঞা পলার রাক্ষসগণে॥২•
কোপে গরুড় বিষ্ণুকে নিঞা উড়ে।
পৃষ্ঠোপরি হঞা বিষ্ণু চক্রে রাক্ষস মারে॥
চক্রবাণ এড়ি বিষ্ণু রাক্ষস লণ্ড ভণ্ড।
মহাদেবের বরে রাক্সের লাগে মুণ্ড॥
তিন ভাই রণে যুবো হক্ষ্ম ধন্ত্র্রির ,২৫
দেবগণ ভঙ্গ দিল রহিলা গদাধর॥

(03)

বিষ্ণু এড়িঞা পালার সকল দেবগণ।
ইক্স চক্র পালার যম পবন ॥
সকল দেবগণ পালার এড়িঞা নারারণ।
গরুড় উপরে বাণবর্ষে রাক্ষসগণ॥
তিন ভাই বাণ মারে বিষ্ণুতে গিঞা বাজে।
বাণে বাণে ফুটিলা গরুড় পক্ষরাজে॥৬
নারারণ বাণ মারে তিন ভাইকে বাজে।
বিষ্ণুর বাণ সহিঞা তিন ভাই যুঝে॥
হাথে শেলপাট নিল বিষ্ণু মারিবার তরে।
দৃঢ় মুষ্টি মারিলেক গরুড়ের শিরে॥১০
ছইজন মারিঞা বহিলা ধন্তুক আপে (?)।
সকল রাক্ষস গরুড় ঝাপিলেক পাথে॥
গরুড়ে আরোহণ করি বাণ মারিল
জগলাথে।

তিন ভাই মেলিঞা বিফুকে জোড় কৈল ছাথে॥

ডাক দিঞা বলে মাল্যবান শুন দেব হরি।
রণে বিমুণ হৈলে যোদ্ধে নাহি মারি ॥১৬
ব্রহ্মার বরে আমি ইইলাহোঁ অমর।
না মরিব তোনার বাণে শুন নারায়ণ॥
বিষ্ণু বলেন মাল্যবান্ শুনহ সাববানে॥
প্রতিজ্ঞা করিল আমি দেবগণের স্থানে॥২০
রণ সহিতে না পার পৈশহ পাতাল।
তোমাকে মারিঞা দেবগণের যুচাইব শাল॥
বিষ্ণুর চরণে রাক্ষ্স হৈলা নমস্কার।
তিন কোটা দেখিল রাক্ষ্স স্থলুক্ষ ভ্যার॥
বিষ্ণুর ডরে রাক্ষ্স পশিল পাতাল।২৪
বিষ্ণু হৈতে এড়াইল অষ্ট লোকপাল॥

(৫২)

বিষ্ণু হৈতে রাক্ষস পশিল পাতাল।
বিষ্ণু হৈতে দেবগণ এড়াইল জ্ঞাল ॥
দে সব রাক্ষস তুমি মারিলে বাণে।
ততোধিক রাক্ষস শুনিএ সংগ্রামে ॥
বরের তেজে রাক্ষস তিভুবন জিনে।
বর্গেস জিনিতে নারি বিনি নারায়ণে॥
তথন নারায়ণ তুমি এখন নারায়ণ।
শুনিজ সে মারিলে তুমি লঙ্কার রাবণ॥
অজর প্রতাপ তুমি বিষ্ণু অবতার।
তে কারণে কৈলে তুমি রাক্ষস সংহার॥১০
শুনিঞা মুনির কথা সভাধণ্ডে হাস।
উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

বিষ্ণুর তেজেতে রাক্ষম গেলত পাতাল।
লক্ষাপ্রীতে রাজা হৈল কুবের লোকপাল।
পুষ্পক রথ জার কুনেরের সন্তাষণে।>৫
দশদিগ আলো করে বর্ণের কিরণে।
দশদিগ দীপ্ত করে জ্যোতি জার অঁপ্তরীকে।
স্থলুপ্প দ্বারে থাকিঞা স্থমালী সকল দেখে।
লক্ষা ছাড়িঞা রাক্ষম গুণে প্রমাদ।
কুবেরের সম্পদ দেখিয়া ছাড়ে নিশ্বাদ।
ক্বারের নাম্মদ দেখিয়া ছাড়ে নিশ্বাদ।
নিক্ষা নামে কন্যাকে ডাক দিঞা
ভাবে॥\*

\* তুমি যদি কর মাগো রাক্ষ্য পরিত্রাণ। বেশ ধরি জাহ তুমি বিখ্যাবার স্থান॥ গ পুথিতে এইটুকু অধিক পাঠ আছে। (c o)

জেই পুত্র উপজিবে বিশ্বশ্রবার বীজে।
লক্ষা উদ্ধারিতে পারে আপনার তেজে॥\*
রাক্ষসী দেখিঞা বিশ্বশ্রবার হৈল হাস॥
আপন বেশ করি গেলা বিশ্বশ্রবার পাশ॥
বিশ্বশ্রবার পাশ গেল বেশ অভরণে।
জেই বেলে বিশ্বশ্রবা অগ্নিতে স্বত হনে॥
কন্যা দেখিঞা পুছে তুমি কোন জন।
কোন কার্গ্যে আইলা তুমি আমার সদন॥
স্কমালীর বি আমি জাতি রাক্ষমী।
বাপের ঠাঞি আজ্ঞা পাঞা তোমার
ঠাঞি ভাসি॥১০

মুনি বলেন পুত্র ইচ্ছ অতি উগ্রবেলে। কোপ যুক্ত পুত্র হবেক উচিত নহিবেক কুলে॥

প্রণাম করিঞা বলে কন্যা না আইসে যুগতি।

তোমার পুত্র বলবান হবেক কুলেুর খেন্সাতি॥ মনি বলেন সর্ব্ধকনিষ্ঠ পেসবিহ কঙৰ ।১৫

মূনি বলেন সর্ব্বকনির্গ্ন প্রসাবিহ কুওর ।১৫ কুলোচিত কর্ম্ম করিবেক হৈনেক গুণের সাগর॥

শাগ্র। সকল বৈরি মারিঞা করিবেক নিঃসস্তান। তাহাকে মারিঞা সাধিবেক আপন মান॥

\* বিনয়ে পিতাকে কন্তা দিলেক আখান।
দিব্য বেশে জায় কন্তা বিধ্যাবার পাশ।
গুপুথির পাঠ।

† 'অগ্নিহোত্র বেলে' পাঠান্তর।

‡ মারিতে আসিবে বৈরি করিতে নিঃসন্তান।

্তার পাত্র হঞা তার বাঢ়াব সন্মান।

পাঠান্তর।

(48)

রাক্ষম হইঞা মেই রাক্ষমপুজিত। বিভীষণ ন।ম হবেক ভুবনে বিদিত॥ আমার উচিত পুত্র কুবের লোকপাল। ব্রনার বরে চির্যুগ করিবে ঠাকুরাল ॥\* कुष्ठे देश्य कना। ज्या भूनित वहरन । व গর্ভ ধরিল কন্যা মুনির সঙ্গমে॥ জােষ্ঠ পুত্র উপজিল নাম রাবণ। দশম্ভ বিশ বাছ বিকট দর্শন্॥ উল্পানির্ঘাত পড়ে ঝড বরিষণ। পৃথিবী সমস্ত লড়ে সাগর জঙ্গম ॥১০ কুন্তকর্ণ প্রেসবিল অতি খরসান। হৈলে মাত্র দেব দানব নাহি ধরে টান॥ স্থূপনথা নামে কন্যা হটল কর্কুসা। ধাৰ্মিক পণ্ডিত হৈল বিভীষ্ণ জশা ॥+ তিন ভাই সহোদর এক বৃহিনী।১৫ পুত্র ছহিতা দেখি হর্ষিত হইলা মুনি॥ স্থরেখা: নামে কন্যা মাল্যবানের ছহিতা। কাকে কন্যা দিব মাল্যবানের হৈল চিন্তা॥ তপ স্থান তপ করিতে জায় মালাবান। त्गामभ नारम महामृनिदक देकल कन्गानाना २०

<sup>†</sup> বিভিন্ন প্রস্থিত সকলের শেষা।

<sup>‡ &#</sup>x27;श्वना' श, भूशित्र शार्छ ।

<sup>§</sup> পাতালে তপ করে মূনি গেলা তার স্থান। পাঠান্তর।

(00)

তপোবনে সেই তপ করে রাত্রি দিনে। রাত্রিকাল হৈল শৃকার করে ছই জনে॥ ছুই জনে কেলি করে পাতাল পুরে। কথোক দিনে গর্ভ রহিল তাহার উদরে ।। গাছের বাকল পরিধান মাথায় ধরে জটা।৫ আগে কুন্তিলাসী \* হৈল পাছে ত্ৰিজটা॥ তবেত স্থরেশার হৈল পঞ্চ পুত্রবর। বিতাৎজিহা থর দূষণ মহাপাশ মহোদর॥ ধর্মশিলা গন্ধর্ম পাতালপুরে জানি। তাহাকে বিভাঞা দিল কন্যা রোহিণী ॥১০ বজ্রকণ্ঠ শোণিতাক্ষ প্রাক্তর শাজ্যোপন। চারি মহাবীর হৈল ত্রিজটার নদ্দন ॥ পাতালপুরে রাক্ষম আছে পরিবারে। তিন ভাই রাবণ বাঢ়ে ব্রহ্মার বরে॥ ব্রহ্মার বরে রাবণ বাড়ে দিনে দিনে।১৫ দেব দানব গ্ৰুক্ কাছো নাহি গণে॥ বাপের আদেশে কুবের গেলা লক্ষাপুরে। পিতৃসন্তাষণে গেল স্থমেক গিরিবরে ii বাপের চরণে কুবের হৈলা নমস্বার। বসিতে আসন দিল করিল পুরস্কার ॥২০ ্ধন্য ধন্য বলিঞা সভে করেন্ত প্রশংসা। হেন বেলে তিন পুত্র লঞা গেল নিক্ষা॥ বাপের ঠাই চারি ভাই বসিলা এক ঠাই। উঠিয়া বন্দেন কুবের সত্যাই॥ রাজরাজেশ্বর গেলা কুবের বাপ সম্ভাষণে। কুবের সম্বোধিঞা নিক্ষা বুঝাএ বিবিধ বিধানে ॥২৬

(65)

বৈমাত্র ভাই দেখ বাপু ঐশ্বর্যতেজে। জেই বীর্ণ্যে জন্মিলা তুমি রাবণ সেই বীর্ষ্যে। রাবণ বলে মাতা তুমি না পাত জঞ্জাল। কুবের জিনিঞা নিবুঁ লন্ধার ঠাকুরাল॥ গোকর্ণ তপোবন বিশ্বশ্রবায় বিদিত।৫ তপোবন জাতা করে সহোদরে বেষ্টিত॥ অগস্ত্য মূনি কথা কহেন রাক্ষ্যের বাখান। কেমন তপ করিল তাহারা পুছেন্ত শীরাম।। তন তন শ্রীরাম কথায় দেহ মন। জেমতে তপ করিল তাহারা তিন জন ॥১০ কঠোর তপ করিল রাবণ কথোক দিনে। তপের কথা কহে মুনি শুনে জনে জনে।। কেমন তপ কৈল তাহারা জনে জনে। কুত্রিবাস উত্রকাও গাইল রামায়ণে ॥

রাম বলেন কতেক তপ কৈলেক রাবণ।১৫ বিস্তারিয়া কহ মুনি শুনিউঁ কথন॥ কুম্বর্ক তপ করিল অগ্নি চারিপাশে। গ্রীপ্মকালে মাথার উপর\* স্বর্গ্য আকাশে॥ বর্বাকালে কুন্তকর্ণ থাকে একাসনে। বরিষণের পানীতে বিরতি রাত্রিদিনে ॥২০ রাত্রিদিনে শীতকালে থাকে পানীর ভিতর। হেন তপ করিল দশ সহস্র বৎসর॥ বিভীষণ তপ করিল এক পাএ ভর। প্রন আহার পঞ্চ সহস্র বৎসর॥ আর পঞ্চাহন্র বংগর স্থা্য উদানে (१)। উভকরি হুই বাহু লাগিল গগনে॥২৬

<sup>\* &#</sup>x27;এীমে অগ্নি চারি পাশ' অস্তু পাঠ।

(49)

(er)

**দিশ সহস্র বংসর তপ কৈল রাক্ষস বিভীষণ** গন্ধর্ক গীত গায় দেব করে পুপাবরিষণ॥ দশ সহস্র বৎসর তপ কৈলেক রাবণ। সহস্র বংসর গেলে একমুণ্ড কাটে ততক্ষণ॥ নবমাথা কাটিল নব সহস্র বংসরে।৫ -ব্রুগা বর দিতে আইলা দশসহস্র বৎসরঅন্তরে বর মাগ রাবণ বোলস্ত পরিহার। যত বর মাগ দিব করিল অঙ্গীকাব॥ রাবণ বলে মরণ বহি আর নাহি ডর। তোমার বরে হব আমি অজয় অমর॥১০ ব্রন্ধা বলেন অমর বর দিতে বডই ত্রুকর। ইহা ছাঢ়িঞা রাবণ তুমি আন মাগ বর॥ বাবণ বলে দেব দানব রাক্ষম যক। ইহার ঠাই মরণ নাঞি আমার বিপক্ষ। ব্রহ্মা বলেন যেই বর বাহির হব তুণ্ডে।১৫ অস্থি সরিতে মাথার স্বন্ধে লাগুক মুণ্ডে॥ নর বানর বহি তোমার নাহিক মুর্ণ। রাবণ বলেন নর বানর আমার ভক্ষণ॥ তবে গেলা ব্রহ্মা বিভীষণের স্থান। জেই বর চাহ সেই না করিবুঁ আন॥২• বিভীষণ বলেন ধর্ম ছাডি আন বর না কহি সর্বাল বিষ্ণুতে ভক্তি এই বর চাহি॥ সদয় হৃদয় হৈলা দেব প্রজাপতি। জন্মে জন্মে হইবে তোমার নারায়ণে মতি॥ ব্রহ্মা বলেন তুষ্ট ইইলাহোঁ তোমার বচনে। অমর হই রহ তুমি আমার বরদানে ॥২৬ বিনিশ্রমে ব্রহ্মঅন্ত জানিহ ভাল মতে। তবৈ বর দিতে গেলা ব্রহ্মা কুস্তকর্ণের ভিতে।

দেষগণ বলেন ব্রহ্মা প। ড়িলে প্রমাদ।

জিভুবন সহিতে নারিবে কুস্তকর্ণের প্রতাপ।
দেবগণ বলেন ব্রহ্মা শ্বরণ করহ সরস্বতী।
ততক্ষণে আসি দেবী হৈলা উপস্থিতি॥
ব্রহ্মা বলেন জ্থন বর ম। গিবেক নিক্ষাকুঙর
রাক্ষসের দেহে থাকিঞা তুমি মাগিহ বর।
সরস্বতী বলেন নিদ্রা জাব দিরস্তর।
নরস্বতী বলেন নিদ্রা জাব দিরস্তর।
নরস্বতী বলেন নিদ্রা জাব দিরস্তর।
নরস্বতী ছাড়িলেক কুস্তকর্ণ পাইলেক চেতন
কুস্তকর্ণ বলে তপে নাহি কলেবর।
১১
তপস্তা করিল আমি নহিলাহোঁ। অমর\*।
হেনমতে ব্রহ্মা রাক্ষসে দিল \*।
ভরিল সভাতে \* \*।

\* গ-চিহ্নত পু'ণিতে এই স্থানে আরে৷ কিছু বেণী আছে।— 'এত বলি কুম্বকর্ণ মনছঃখে কালে ॥। ভূমে গড়াগড়ি দিঞা আপনাকে নিন্দে॥ অচেতনে কুম্তকর্ণ ভূমেতে লোটায়। তাহা দেখি বড় ছঃখ রাবণ হিহ্মায়॥ রাবণ বলে কুম্বর্ক সম্বন্ধেতে নাতি। তপ কৈল নাদিঞা বর শাপিলে প্রজাপতি ঃ তোমার বর থওন নহে বাকা নহে আন। निया जात्वक जिम कत्र त्राव विधान ॥ কুম্বকৰ্ণ নিদ্ৰা জায় হঞা অচেতনে 1 তুষ্ট হৈলা প্রজাপতি রাবণ বচনে। রাবণের বাক্যে ব্রহ্মা তৃষ্ট হঞা মনে। ছয় মাদ নিজা এক দিন জাগরণে॥ ব্রহ্মা বলেন বর দিলাম মনের বাঞ্চিতে। বর দিঞা গেলা ব্রহ্মা আপন আলয়েতে 🛭 দেবের শাপ রাক্ষ্যের তপে নাই ছাডে। ব্ৰদাৰ বৰে কুম্বৰণ নিমা ভোলে পড়ে "

(45)

(60)

রাবণের বর শুনিঞা সভাথত নিশবদ। কুবের সম রাজ্য করিব নানা পরিচ্ছদ আপনাঝাপনি বসিঞা আছে রাক্ষমরাজ। রাবণ রাক্ষমরাজে প্রহন্ত ব্ঝায় কাজ॥ ভাই প্রক কবিঞা কোগান্ত নাহি প্রনি।৫ ত্রিভবন জিনিঞা ভাই বিরোধিঞা জানি। দেব দানৰ বাক্স চিক্তে আন কাৰ্যা। ভাই মারিঞা ভাই নেই তার রাজা॥ ইন্দ্র শুক্র শনি তিন সহোদর ভাই। ভাতবিরোধে তিনে হইলা তিন ঠাঁই ॥১০ ভক্ত হইলা দৈতাগুরু ইন্দ্র লোকপাল। শুনিঞাছ শুনিবে তাহা সভাব বিবরণ॥ বিষ্ণুর বিরোধে বলি গেলা পাতালভূবন। সে সব কহিতে হাদয়ের শাল। মহাপুরুষ হইলা দক্ষ প্রজাপতি।১৫ কশ্রপবনিতা হইল দিতি অদিতি॥ চারি কন্তা প্রজাপতি কশুপে কৈল দান। চারি বংশ হৈল চারি মহাবলবান। অগ্নিতপা দান হৈল ভান্ন ভান্নর। দিতীয় তনয় হৈল রবি পুরন্দর॥२० বিনতা তন্য হৈল জতেক কলাবর। উত্তরকাও রচিল কুতিবাস কবিবর॥

রাবণ রাজা বর পাইল রাক্ষস হর্ষিত।
তপোবন হৈতে রাক্ষস উঠে কারো
নাহি হিত॥
পাতাল হৈতে উঠে রাক্ষস লঞা পরিবার।
প্রাহস্ত মহাপাত্র আর জ্বতেক যুঝার॥২৬

মাল্যবান উঠে জতেক সেনাপতি। নৈতা সামস্ত উঠে জতেক ঘোড়া হাথী রাবণে কোল দিঞা বোলে স্থ্যালী তোমার তেজে রাক্ষসের ঠাকুরালী॥ জ্থির তরে তোমার বাপে করিল ক্সাদান। তুমি নাতি সর্বভাবে করিলে পরিতাণ ॥৬ দেবের ভয়ে সভেট ছটলাহোঁ পাতালবাসী। তুমি বর পাইলে এবে নির্ভয়ে বসি ॥ রাক্ষদের রাজ্য ছিল এই লক্ষাপুরী। বিনয় বোল বিরোধ কর জেমতে উদ্ধারি॥ রাবণ বোলে মাতামহ হেন নাহি বলি।১১ জোৰ্চ পিতৃত্বা সৰ্ব গুণশালী॥ কুবের বিরোধ মোর না জাবেক ভালমতে। কোন বোল মুখে বঁলিলে আমাতে॥ গরুড় সঙ্গে ছুই ভাই বুলি ঞা বুলি ঞা খেলি বৈরি বলিঞা সাপ খায় গরুড পাখী॥১৬ আমা সভা দেখিঞাও রাথ ভাইআল। পর রাথ আমা সভার কিসের ঠাকুরাল।। বিবাদ দরশনে সভার লাগে মন। কবের ঠাঞি প্রহন্ত পাঠায়ে রাবণ॥২० দূরে থাকি ঞা প্রহন্ত কুবেরে নোঙায় মাথা। ভরিল দেআনে রাবণের কহে কথা ॥ সিংহাসনে বসিঞা আছে রাজরাজেশ্বর। সাবধানে শুন গোসাঞি রাবণ উত্তর॥ রাক্ষসের রাজ্য ছিল এই লক্ষাপুরী।২৫ রাক্ষস ছাড়ি কুবের হইল অধিকারী॥ রাক্ষদের রাজ্য লক্ষা সংসারে বিদিত। রাক্ষস ছাড়িল দেবের পাঞা ভীত॥

(55)

এনেত রাক্ষণ সব হৈল উপনীত।
একুঁ রাজ্য করহ তুমি নহেত উচিত।
কেনে ভাই রাবণে নাহি রাজ্য করদান।
রাজরাজেশ্বর তুমি জাহ আপনস্থান ॥
এতেক বচন শুনিঞা ধনের ঈশ্বর\*।
মুনিজনার আগে তাকে ভচ্ছিব বিস্তর ॥
বলদর্পে কাহো না মানে না মানে বাপ ভাই
আপনদোষে রাবণ হবেক অলাই॥
কৈলাস পর্বতে বাপু বহে ভাগীরথী।
তোমার অনু পাঠাইব হও তুমি তথি †॥১০
উত্তম জনা পাইবে থাইবে উত্তম ফল।
ভোমার তরে পুলস্ত মুনি করিঞাছেপ্ত

ञ्ग ॥

কুবের ক্রীড়া পর্বতে বৈদে দেবগণে।
চিরযুগ রাজ্য করহ পরম কল্যাণে॥
বাপের বচনে কুবের মানিল যুগতি।>৫
রাবণের ঠাই প্রাহস্ত পাঠাইল পিরীতি॥

\* 'হেট মাথা রহে কিছু না দেই উত্তর ॥
কুবেরের ঠাঞি প্রহন্ত মাগিল মেলানি।
বাপের ঠাঞি কহিতে কু'বর চলিল আপনি ॥
প্রহন্ত কহিল জত রাবণের উত্তর।
বাপের ঠাঞি গিয়া সব করিল গোচর ॥
বাপ সন্তাবিলা গিঞা হুমেরু শিবরে।
প্রণাম করিঞা নাপে সকল গোচরে ॥
রাবণ দৃত গাঠাইল আমার সন্নিধানে।
লক্ষা ছেড়ে যেতে আমার বলে জন্যখানে ॥
বিধ্যাবা বলে শুন ধনের ঈধর।'

এই অংশ টুকু আদর্শ পুণিতে ছাড় বলিয়া বোধ হয়। ইহা গ চিহ্নিত পুণের পাঠ। † 'ভোমার যোগ্যস্থান বটে বঞ্চ গিঞা তথি।' গ পুথির এই পাঠই সমীচীন। (65)

লক্ষা লঞা রাজ্য করহ নাহি কোন কাঁটা।
ভাইএর বলে ভাইএর ধনে নাহি ভাই বাঁটা॥
কোঁটা কোঁটা বক্ষে ক্বেরের ধন বহে।
লক্ষা ছাড়িঞা কুবের কৈলাসে রহে॥
কুবেরের বচন শুনি জা রাবণ হর্ষিত।
কেষাপরে রাজ্য করে রাক্ষসে নেষ্টিত॥
প্রাহস্ত বলেন কুবের রাজ্যাজেশর।
হেন পুরী ছাড়িঞা কৈলাসে কৈল ঘর॥
স্বর্ণের ঘর সব বিশ্বকর্মার নির্মাণ।
চির্যুগে\* রাজ্য করিব প্রম কল্যাণ॥১০
ত্রিভ্বন জিনি জা ধনের অধিকারী।
হেন কুবেরের চরণে কুত্রিবাস নমস্বরি॥

অগন্ত্য বলেন রামচক্র কথাতে দেহ মন।
লক্ষাপুরী পাইল জবে রাজা দশানন ॥
সকল রাক্ষসের রাবণ হইল রাজা।১৫
ভিত্রনের লোকে কৈল রাবণের পূজা॥
কালকের কুলে জন্ম বর বিহ্যাজ্জহ্বা জানি।
তাহাকে বিভাঞা দিল স্থর্নথা বহিনী॥
মৃগী মারিতে গেল রাবণ গহন কানন।
ময়দানব সনে পথে হৈল দরশন॥২০
কন্সারত্ব পাশে তার পরমন্তব্দরী।
ভিত্রন মোহিনী তার নাম মন্দোদরী॥
রাবণ বলে কন্সা লঞাকেনে তুমি দশুকবনে
আপনে দানবরাজ কহিল কারণে॥

'চির যুগ' সর্বতেই 'চারি যুগ' গ পুণির পাঠ। (৬৩)

(68)

যুবতী কন্তা আমি থোব কার স্থানে। রাত্রিদিবা চিস্তি এই মনে মনে॥ কন্তা দেআইলে ব'পে মা হয় ছঃখিত। কন্তা কাকে দিব মনে আমি এই চিন্তিত রাজশী ধর তুমি অতি মহাশয়। কোন বংশে জন্ম তোমাব দেহ প্ৰিচ্য। রাবণ বলে আমি বিশ্বপ্রবার নন্দন। লঙ্কাপরীর রাজ। আমি নাম দশানন॥ দানবরাজ বলে আমি এবে সে ভোমা জানি তোমাকে কন্সা দিব করহ ছামানি॥১০ কন্তা বিভাঞা দানব দিলেক যৌতুক।\* তল্পে মল্লে শেল পাট দিলেত যৌতুক। যে শেলের তেজে ত্রিভুবন চমকিত। সেই শেলে লক্ষণ তোমার হইল মুর্চিত। রাবণের পিতৃশাপ আছে ময়দানব না कारन ।ऽद

কন্তাদান দিঞা পাছু বিষাদ ভাবে মনে ॥
বিরোচনের ঝি † নামে বিগ্রাং মালা।
কুস্তকর্ণে বিভা দিল নাম চক্তকলা ॥
সরমা নামে কন্তা গন্ধর্ককুমারী।
বিভীষণ বিভা করিল পরমস্থলরী ॥২০
মন্দোদরীর পুত্র হৈল অতি সে গুর্জয়।
জাহার ঠাই ভূমি পাইলে পরাজয়॥
সেঘ গর্জানে গর্জে লক্ষাকাঁপে ডরে।
মেঘনাদ বলিঞা ভার বাপে নাম ধরে॥

\*্কনা। দান করিঞা ময়দানৰ কৌতুক।' † 'বিরোচনের নাতিনী' খ পু'থির পাঠ।

রাত্রি দিন কুন্তকর্ণ নিজাতে চলে। নিদোঘর সাজাইতে রাবণ রাজা বোলে॥ বার যোজন ঘর কৈল আড়েত প্রায়র। যাটি যোজন ঘর কৈল দেখিতে স্থানর। ঘরের সমুথে রুপিল পুষ্প পারিজাত। নানা পুষ্প বিকসিত স্থগন্ধি বহে বাত॥\* স্থবর্ণ থাটে নিদ্র। জায় পর্ম স্থথে। + ব্ৰহ্ম শাপে নিদ্ৰা জায় কাহো নাহি দেখে ব্ৰহ্মশাপে বুস্তকৰ্ণ নিদ্ৰা জায় অচেতনে কুন্ত নিকুন্ত হৈল কুন্তকর্ণের নদনে ॥১০ ইন্দুজিৎ তপ কৈল দশ সহস্র বৎসর। **জল প্রন আহার উপ্রাসেই ভর** ॥ আগু ইন্সজিং সভাতে হইল বিদিত। তবেত তাহার নাম হৈল ইন্দ্রজিৎ॥ বন্ধার বরে সে পাইল জাগ্য মালা Ise যজ্ঞ করিতে স্থান পাইল নামে নিকুস্তিলা॥ নিকুন্তিলা ষজ্ঞ করিবেক রাত্রি দিনে। বিভীষণ তপ করে একাসনে॥ রাবণ আনিতে গেল পরের স্কী। **इन (वरन राज मधुरेन हा नका भूती ॥२०**:

\* ইহার পরে থ পুঁথির পাঠ—
'রত্নময় হেমঘর উপরে হেম বেড়া।
চারিভিতে নাম্বে তার গলমুকুতার ঝারা।'
† 'ছর মাসে উঠিল বীর নিলা ভাঙ্গিআ।
নানা কেলি করে স্ত্রী বিহাৎমালা লঞা।
কথোছিনে বিহাৎমালা হৈল গর্ভবতী।
মহাবীর প্রস্থিত হই বেক্তি।'
থ পুঁথির পাঠ।

(७८)

(৬৬)

অন্তঃপুরে রাখ থাকে সকল রাক্ষসী। মধুদৈতা বিভা করিল কন্তা কুম্ভিলাসী॥ রাবণ রাজার কুন্তিলাসী হএত বহিনী। মধুদৈত্য বিভা করিল রাবণ নাহি জানি॥ কুন্তিলাসী লঞা ক্রীড়া করে রাত্রি দিনে। মধুদৈত্যের পুত্র হৈল নাম লবণে॥ कुछिनामीत वि नात्म कुछिनिनामिनी। থর বিভা করিল তাহার বার ভগিনী॥ कुछ विवाभिनी रेनका की ए। करत थत । মকরাক্ষ পুত্র হৈল তাহার মহা ধরুর্দ্ধর ॥১० বাপ তার গো থর মাতা কুম্ভবিলাসিনী। ইন্দ্রজিত সমান তাকে ধমুকে বাখানি॥ তপের ফলে রাক্ষস ত্রিভূবন জিনে। হেন সব রাক্ষ্য প্রভিল তোমার বাণে॥ সবংশে রাবণ তুমি করিলে সংহার।১৫ লম্বাকাণ্ডে উত্তর কাও গাঞা দিল সার॥

ভাগস্তাবলেন শ্রীরামচন্দ্র শুনহ বচন।
তবে জে কহিল শুন কমনলোচন॥
বন্ধার বরে রাবণ রাজা কাহো নাহি গণি।
ধাড়ি দিয়া রাজা সবে ধনভাগুার আনি॥
পুষ্পক রথে চড়িঞা বেড়াএ রাবণ।২১
সভার আগে ভাঙ্গিলেক ইন্দ্রের নন্দনবন।
হেন বেলে গেলা কুবের ইন্দ্রের ঘর।
কুবের লঞা ইন্দ্র গেল নন্দনবনের ভিতর॥
নন্দনবন ভাঙ্গিল রাবণ সকল ডালে মৃলে॥
কুবেরের হাথে ধরি ইন্দ্র দেখাঞা বুলে॥২৬

জ্ঞানে গন্থীর তুমি দেব অবতার। তোমার ভাই রাবণের দেখ ব্যবহার !! कूरवत वर्णन हेन छन् वहन। আমি দৃত পাঠাইব বুঝাব রাবণ॥ সদয় হাদয় কুবের ভক্ত বংসল। ¢ রাবণ বুঝাইতে দৃত পাঠাইল কেৰল। বিভীষণ প্রহন্তকরিঞা রাবণে নোঞায়মাথা ভরিল দেখানে কহে কুবেরের কথা।। বিশ্বশ্রবার পো তুমি দেব অবতার। তোমাকে করিতে বুঝি উত্তম আচার॥১০ দেবগণ হিংস তুমি দেবতা অস্ত্রখী। ঋষি তপস্বী মার তুমি কোন কার্য্যে লেখী॥ জোষ্ঠ হৈ জা কনিষ্ঠের করিএ পালন। বারে বারে বলি তোমাকে না শুনহ বচন॥ ক্ষদ্রের তপ করিতে গেলা কুবের হিমালয়ের घत । ১৫

ক্রীড়ারসে বুলেস্ত তথা ভবানী শহ্ব ॥
পরম রূপ ধরিল দেবী ত্রিভুবনের সার।
মহাদেব লোভাইতে দেবী বাঢ়াইল শৃঙ্গার॥
আর রূপে ছিল দেবী চিহ্নিতে না চিহ্নি।
বাম চক্ষুর কোণে নোকে চাহিল ভবানী॥২০
আমার অলোকিক দেখিঞা কুপিঞা
গেলা মনে।

বাম আঁথি পুড়িঞা পিঙ্গল হৈল ততক্ষণে॥ তবে কঠোর তপ কৈল সহস্র বৎসর। তুঠ হৈলা মহাদেব আমাকে দিলা বর॥

উগ্রতগ--গ, পুথির পাঠ।

(७१)

অষ্ট সহস্র বৎসর আমি শুধিল কলেবর। কোনজনা কৈল হেন ত্রৈলোক্য ভিতর॥ আজি হৈতে মিত্র মোর রাজ রাজেশ্বর। তোমার ঠাই আমি বসিব নিরম্ভর ॥ বাম চক্ষু পুজিল দেবীর কোপানলে।৫ তেকারণে নাম হৈল আঁথি পিঙ্গলে॥ আপনে বর দিল পার্বতী বড় কুতৃহলে। মহাদেবের বরে চক্ষু হইল নির্মালে ॥ দেবগণ হিংস তুমি দেবতা অস্থা। দেবগণে অপরাধ ভাল নাহি \* দেখি॥১০ দেবগণ মনিগণ হই এগ এক ঠাই। তোমার বধ চিস্তেন গুনহ রাবণ ভাই॥ কোন বংশে জন্ম তোমার কাহার নন্দন। আজি হৈতে সোজগু তুমি করহ দশানন।। জ্যেষ্ঠ হৈঞা বলিল তোমাকে নিষেধ বচন! আজি হৈতে দেবের হিংসা না করহ রাবণ॥ এতেক নিরিপেক জবে বলিল বচন।১৭ দস্ত কড়মড়াঞা উঠিলা রাবণ॥ ্হাথে হাথ মেচড়ে ওঠ কামড়াঅ দত্তে। সভাথও অপমান চাহে রাবণ ভিতে॥ রাবণ বোণে দৃত তোমার শুনিল বচন। আগু তোমা পাঠাইব বনের সদন ॥২২ পাছে তাহারে মারিব জে পাঠাইল আমার ভিতে।

মহাদেবের মিত হইল বড়াই গুনাইতে॥

(৬৮)

জ্যেষ্ঠ গৌরবে আমি তেকারণে সহি। বড়াই শুনাইলি যম আজি জাবে কঁহি। লোকপাল বুলিঞা আজি না থুহবোঁ এথা। হাথে থাণ্ডা করিঞা দুতের কাটে মাথা॥ দৃত কাটা গেল সভাথণ্ড বিশ্বিত॥৫ রাবণের জত চর খাইলেক শোণিত॥ মুনির কথা শুনিক্রা সভাখণ্ডে তরাস॥ উত্তরকাও গাইল পণ্ডিত ক্লতিবাস।

অগস্ত্য বলেন রামচন্দ্র কথাতে দেহমন। কুবের জিনিতে তবে চলিলা রাবণ॥১० কুবের জিনিতে চলিলা লক্ষেপর। কুবেরের অস্কুচর করিল গোচর॥ জ্যেষ্ঠ গৌরব ছাড়িঞা যুঝিতে আইল লক্ষেশ্বর।

মারীচ মহাপাশ লড়ে লড়ে মহোদর॥ মার মার করিঞা প্রবেশ কৈল কুবেরের নগর।১৫

শুনিঞা কুবের তবে আইলা সত্তর॥ কুবের বলে রাবণ জবে জুঝিবাকে আইসে। রাবণের বিদ্যানানে মারহ রাক্ষদে॥ হাথে অন্ত্র করিঞা সব যক্ষ সাম্ভায় রণে। সকল রাক্ষ্য উদ্যত হৈঞা সাম্ভাইলা রণে। পালাএ রাক্ষন কটক রণ নাহি সহে।২১ রণে আগুসরি রাজা সংগ্রাম সহে। শেল জাঠা ঝগড়া মুদগর মুসল। যক্ষগণে অন্ত বর্ষে রাবণ উপর॥

 <sup>&#</sup>x27;নাহি' শব্ধতে সর্বত্রই নাহি লিখিত ष्यां एइ।

(৬৯)

(90)

ন্যাকুল হৈল রাবণ অন্ত নারে সম্বরিতে।
সংগ্রামে প্রবেশ করিঞা যুরে ভাল মতে
কুপিল রাবণ রাজা শীন্ত বাণ এড়ে .
রাবণের বাণ দেখিঞা যক্ষ ভঙ্গ পড়ে ॥২৪
আগুসরিঞা যুরে মারীচ প্রহন্ত মহাবল।
ফক্ষমৈন্ত মারিঞা সব করিল বিকল॥
\* \* \* শ কোলাকুলি হইল ছুর্মাতি।
যক্ষগণ একত্র হৈঞা রাবণের কটক দলে।
থাকাণ একত্র হৈঞা রাবণের কটক দলে।
বাক্ষসের ভঙ্গ দেখিঞা রাবণ কোপে জলে।
সকল কটক সিরাইঞা যক্ষগণ দলে॥
যক্ষগণ বলে শুন যক্ষ ভাবিপতি।
আপনে রাবণ আইসে লঞা সৈন্ত

যোগদণ্ড নিন্দ্যক\*নামে কুবেরের সেনাপতি কুবের পাঠাইল যুঝিতে শীপ্রগতি ॥
বিফুর চক্রের সমান তার চক্রের প্রহার ॥
মারীচের উপরে করে অস্ত্রের প্রহার ॥
চক্রের ঘাত্র রাক্ষ্য মোহ গেল রগে।১৫
মারীচ দেখিঞা ভঙ্গ পড়িল যক্ষগণে ॥
যক্ষগণ যুঝিতে তার নাহিক আঘাসে।
খেদাড়িঞা যক্ষগণ রাক্ষ্যকে তাইসে॥
আঁথির নিমিষে মারীচ আপনা সম্বরে।
কৃষিঞা মারীচ আইসে যক্ষ পালায় ডরে॥২০
আসে হইল গিঞা মারপালের আড়।
যুঝিবারে মারপাল হৈলা সভাড়॥

\* যোগবিন্দ্ থ, পৃথির পাঠ।

স্থ্যতান্ত্ব নামে আছে তাহার জ্আরে।

দার এড়ি না দের রাবণ মহাবীরে॥

দার এড়ি না দেম দারী মহাবলী।

দারী ঠেলিঞা রাবণ জায় পেলাপেলী॥

দার বন্ধ পাথরখান্দারী উপাড়ে

হাথের টানে।

ব

হাথের টানে।৫ ছই হাথে পাথর তুলিঞা মারিল রাবণে॥ রক্তে রাঙ্গা হঞা পড়িল রাবণ। প্রোণে না মরিল ব্রহ্মার বরের কারণ॥ সেই পাথর তুলি গা বক্ষের ছিণ্ডে মুও। পড়িল স্থ্যভান্ন হৈঞা খণ্ড খণ্ড ॥১০ দ্বারী পড়িল সকল যক্ষ পলায় ডরে। পালাইঞা মান্তাইল গুহার ভিতরে ॥ যক্ষের ভঙ্গ দেখিঞা কুবের কোপে জলে। মন্ত্রিভদ্র স্থাপতি পাঠার রণস্থলে॥ মন্ত্রিভদ্র বলি গুনহ বিক্রম্পাগর।১৫ রাবণ মারিঞা যক্ষের বুচাহ ভর॥ ষাটি সহস্র সেনা লঞা মন্ত্রিভদ্র লড়ে। মন্ত্রিভদ দেখিঞা রাক্ষণে ভঙ্গ পড়ে॥ দেবদানৰ জত আছস্তি আকাশে। যক্ষ রাক্ষদে যুদ্ধ দেখিঞা পড়িলা তরাদে। এক সহস্র যক্ষ প্রহস্ত সংহারি।২১ ছই সহস্র যক্ষ মহোদরে মারি॥ তিন সহস্র যক্ষ মারীচ বীর দলি। একলা মন্ত্রিভদ্র রহিলা রণস্থলি॥

\* গ পুঁথিতে পার্থমালী, ভদ্রমালী, এবং মালা ভদ্র এইরূপে পাঠ আছে। আদর্শ পুথিতেও মণিভদ্র ও মন্ত্রীভদ্র এই চুই প্রকার পাঠ দেখা যায়।

প্রকার ।

(93)

বড় বড় যক যুৱে চটিঞা আইসে বলে। তাহা দেখিঞা মারীচা আইসে মহাবলে॥ गातीहात मूटछ गात शमात वाड़ी। পড়িল মারীচ বীর জায় গড়াগড়ী॥ মারীচ দেখিঞা পলায় সকল রাক্ষসগণে। কুপিল রাবণ রাজা যক্ষগণ হানে॥ রুষিল মন্ত্রিভদ্র রাবণের অহঙ্কারে। শেলপাট তুলিঞা মারে রাবণের উপরে॥ মাথা কুটিঞা রাবণের রক্ত বহে ধারে। রণে চেতন হার।ইল রাবণ আপনা পাসরে॥ মেরুভন্ত ভূম্যে যুঝে রাবণ যুঝে রথে।১১ কুপিল রাবণ রাজা গদা লৈল হাথে॥ গদার বাড়ী রাবণ তাহাকে মাইল নির্জাস। মাথার মুকুট তার হৈল এক পাশ। পাষমুনি গুনিলেক মণিভদ্রের নাম। পাষ্মনি রাবণে বাজিল সংগ্রাম ॥১৬ কোপে রাবণ বাণ এড়িলেক ধনুকের গুণে। বাণে ফুটিঞা মণিভদ্র মোহগেলা রণে॥ মণিভটে দেখিঞা পালার যক্ষগণে। পালাঞা সকল বাৰ্দ্তা কহে কুবের স্থানে॥ ক্লভিবাস পণ্ডিত কবিম্বে শিঅলি।২১ অমৃত অধিক গাইল উত্তরকাণ্ড পাঁচালী॥

অগস্ত্যবলেন রামচন্দ্র কণাতে দেহমন। ক্রোধ করিঞা কুবের যুঝিতে আইসে ততক্ষণ॥

পূপক রথে চঢ়িক্তা আইলা লোক পাল।২৫ যক্ষ রাক্ষণে হুইতে হৈলা মিশাল॥ (92)

রণস্থল আইলা কুবের পাত্রে বেষ্টিত।
ডাক দিঞা বলে, রাবণ নহেত উচিত।
দৃত পাঠাইল আমি না থাক প্রবাধে।
আমার দৃত মার তুমি কোন অপরাধে।
তপ করিঞা তোমার অস্থি চর্ম্ম সার।
অমর বর না পাইলে তবে এত অহন্ধার।
আমরা সব অমর হইলাইো তপের

অমর বর না পাইলে আমাকে কর অহস্কার॥
অমর যদি না হইলা অবশ্য মরণ।
মরণ বেলে স্মরিবে আমার বচন॥১০
আমাত্য মান্ত পুত্র বাঢ়ে পুণ্যবলের তেজে\*।
অধার্শ্মিক পাপিন্ঠ সবংশে মজে॥
বাপ মান্ত সোদর ভাই গৌরব নাহি রাখি।
হেন ছার চাণ্ডালের মুখ নাহি দেখি॥
কোন্ ছার সনে মোর হৈল সন্তাষণ।১৫
আপন পাপে নাশ তুমি হৈবে রাবণ॥
এতেক ভাকিঞা বলে কুবের মহারাজে।
রাবণের মামা প্রাহন্ত পলাইলা লাজে।
জ্যেন্ঠ গৌরব ছাড়িলেক হৈল পাম্বন্তী।
ছার পালের মুণ্ডে মারিলেক দোহাথিয়া
বাড়ি॥২০

দোঁহে নিরপেকে করে অন্ত্রের প্রহার ! নানা বাণ নানা অন্ত্রে করে অবতার ॥ অগ্নিবাণ রাবণ রাজা করেন অবতার । বক্ষণ বাণে কুনের তাহা করিল সংহার ॥

> \* ধনধান্যে পুত্রপোত্তে বাঢ়ে ধর্ম তেজে— খ, পুথির পাঠ।

জাতে ৷

(9 P)

(98)

ব্রহ্ম অস্ত্র বিষ্ণু অস্ত্র কৈল অবতার।
দেব দানব গন্ধর্কে লাগে চমংকার॥
রাক্ষস মারা ধরে রাজা রাবণ।
নানা মারা করিঞা কুবের সনে করে রণ
ব্যাহ্র হৈঞা কাহাকেহো কামাড়াঞা মারে।
রুম্ররূপ ধরিঞা কাহাকেহো চিরে॥৬
মেঘরূপে রাবণ কাহাকেহো ফাঁফর করে

পর্ব্ব রূপে কাহাকেহো রাবণ চাপিঞা পড়ে॥

থাল ডোভ হৈঞা রাবণ ফক যুঝিতে নারে আচস্বিতে গদার বাড়ী মারিল কুনেরশিরে॥ পুষ্পকরথে হৈতে কুবের পড়িল ভূমিতলে। ১১ কাটিল অশোক্বন জেন পড়ে ডালে মূলে॥ কুবের কান্ধে করিঞা নিলেক অমুচরে। কুবের থুইল নিঞা নন্দনবনের ভিতরে॥ ল্কাঞা থুইল নিঞা ধনের অধিকারী। কটক সনে রাবণ সাস্তাইল অন্তঃপুরী ॥১৬ ধন্তমালী নামে কন্তা কুবেরের ছহিতা। এতেক অগস্তা মুনি কুবেরের কহেন কথা।। সেই কন্তা লঞা রঙ্গরতি করে লঙ্কারনাথে। লাজে বিভীষণ হেঠ কৈল মাথে॥ সেই কন্তাতে উপজিল অতিকা কুঙর ।২১ ভন কথা জীরঘুর কুঙর ॥ সেই অতিকায় বীর ধর্মস বীর। হেন অতিকায় মারিল লক্ষণ মহাবীর॥ পুষ্পকরথ বন্দি হৈল ভাগুার লোড়ে। পুষ্পকরথে চঢ়িঞা রাবণ দিগবিজয় করে॥২৬

ম্নির কথা শুনিঞা সভাএ লাগিল
চমৎকার।
ক্তিবাস পণ্ডিত গাঞা দিল সার॥

অগস্তা বলেন রাম কথাতে দেহ মন। দিগবিজয় করিতে লডিলা রাবণ॥ পুষ্পকরথে চটিলা রাজা রাবণ।৫ রথে চটি ঞা জায় সোণার শরবন॥ কার্ত্তিকের জন্ম জথা সোণার শরবন। দিগ আলোক করে রত্তের কিরণ। রথখান ঠেকিল গিঞা নাহি আগু সরে। মন্ত্রিগণ লংগ্রা রাবণ নানামন্ত্র করে॥১० মারীচ মহাপাত্র রাবণে কথা কছে। দানবের রথখান তোমাকে নাহি বহে॥ হেন রথে সভে আছে রথ নাহি লড়ে। হেন বেলে মহাদেবের দূত আইল রড়ে॥ না জাহ রাবণ রাজা কহিল তোমারে।১৫ গৌরী লঞা মহাদেব নানারঙ্গ করে॥ হেন পর্বত আইলা তুমি মরিবার তরে। আপনা চিহ্নিঞা ঘর জাহ নিশাচরে॥ • দেব দানব গন্ধর্ব জাকে ছর করে। একলা নির্ভয়ে রহে চক্রশেখরে॥২० কোপিল রাবণ রাজা দূতের বচনে। রথে হৈতে নাম্বিঞা জাএ মহাদেবের স্থানে মহাদেবের দারী মহাদেবের স্মান। বানরের হেন মুখ ঘারীর বানর হেন ঠান॥ মুখ দেখিঞা রাবণ দিলেক টিটকারী।২৫ মহাদেবের দ্বারী মো নন্দী নাম ধরি॥

(90)

আমাদনে বাবণ তোর কিসের চামালি। নৰ বান্য তোৱ কৰিবেক আউলী। আমাকে দেখিসি বানর ছেন ঠান। সবংশে রাবণ তোর করিব নিঃসন্তান॥ মন প্রন জিনিঞা আমার গমন।৫ সবংশে মারিব তোকে সেই বানরগণ॥ তোমাকে রাখিঞা মোর কোন প্রয়োজন। আপন দোষে অল্লায়ঃ হৈবেক দশানন। কোন ছার সনে মে। করিবোঁ সম্ভাষণ। আপন পাপে নাশ যাবেক বাবণ॥১০ কোপিল রাবণ রাজা নন্দীর বচনে। ছুই হাথে পর্বত তোলে মারিবার মনে॥ রাবণে পর্বত তোলে মহাদেব হাসে। পাও চাপিল পর্বত রাবণে তরাসে॥ ত্লিতে নারে পর্বত চাঁকরাই করে\* ১৫ স্বর্গ মর্ত্ত পাতাল উফড়িঞা পড়ে। মহাদেব বলেন শুন দশানন। তোর রাএ উফড়িল এ তিন ভবন॥ বিপ্রীত শব্দ তোর শুনিল রাবণ। রাবণ বলিঞা তোর থাকিল ঘোষণ॥২০ পুষ্পাকরণ মুক্ত হৈল মহাদেবের বরে। রথে চড়িঞা চলে রাবণ দিগবিজয়ের তরে॥ কুত্তিবাস পণ্ডিতের সরস আলাপ। উত্তরকাও গাইল রাবণে নন্দীদিল শাপ॥

\* 'হাথে বেথা পাঞা রাবণ পর্বত গোটা ছাড়ে
—গ পুথির পাঠ।
বুকে বাথা পাঞা রাবণ চিকরাই পাড়ে—
থ পুথির পাঠ।

(95)

অগস্তা বলেন রামচন্দ্র কথাতে দেহ মন। দিগবিছয়ে চলিল ভবে রাজা দশানন॥ ননীর শাপ নাহি শুনে রাজা লক্ষেশ্বর। রথে চটিঞা যায় রাবণ হৈঞা বীরবর॥ হিমালয় পর্বত গেল লঙ্কার অধিকারী। ¢ তথা গিঞা কন্তা দেখিল পরম স্থন্দরী॥ জটা বাকল ধরে ক্ষচর্ম পরিধান। মূর্ত্তিমান দেখি জেন দেব অধিষ্ঠান॥ স্থা্যের ছায়া জেন সাবিত্রী বেদমাতা। ইক্রাণী রন্তাণী জেন প্রত্যক্ষ দেবতা॥১০ অতিথি ব্যবহারে ক্সাদিল আসন পানী। কামভাবে ক্যাকে ক্ষেত্ৰ কাহিনী॥ রূপ যৌবন কেনে না কর বিলাস। কাহার তরে কঠোর তপ কর উপবাস॥ কাহার ভার্যা। তুমি কাহার বহুআরী ।১৫ কোন কার্য্যে মর্ক্তালোকে তপ করিঞা মবি॥

কন্তা বলে আদ্য উপাস্ত কহিতে বিস্তর।
জাহার তপ করি শুন আমার উত্তর॥
কুশধ্বজ বাপ আমার মা বৃহস্পতী\*।
কুশধ্বজের বি আমি নাম বেদবতী॥২০
বেদ পঢ়িতে বাপের মুথে আমার উৎপতি।
তেকারণে বাপে নাম গুইল বেদবতী॥
বিষ্ণুকে দান দিতে আমা বাপ চাহে।
দান না করিল কন্তা পাঞা রজ মোহে॥

\* কুশপজে পিতা পিতামহ বৃহস্পতি— গ পুঁথির পাঠ। (99)

(96)

কাহাকেহো না দিব কন্সা বাপের অঙ্গীকার শন্ত\* নামে দৈত্যহাথে বাপ গেল মার॥ বাপ মরণে মাএ নিরাপ পাব কহি †। বিষ্ণুর উদ্দেশে তপ করি গৌবন নাহি চাহি মরিল বাপের জবে সিদ্ধ করিব অভিলাষ IC বিষ্ণুর উদ্দেশে তপ করি উপবাস।। কল্পার বচন শুনিঞা রাবণে উঠে হাস।২৫ বথে হৈতে গোলা বাবণ কন্সার পাশ।। তৈলোকামোহিনী কলা পর্ম রূপ ধরে। হেন কল্পা কেনে তপ করিঞা মরে॥১० আমি ব্রহ্মা আমি ইন্দ্র আমি নারায়ণ ‡। পাইল তোমাকে কন্তা ছাড়িব কোন কারণ কন্তা বলে হেন বোল মুথে নাহি আনি। তৈলোকাবিজই নাম কোন দোষে হানি॥ এবোল শুনিঞা রাবণ কলার হাথে ধরি।১৫ হাথে ধরিঞা শৃঙ্গার করে রাবণ অধিকারী হাথ পা আছাড়ে কন্তা রাবণ ধরিলেক চুলে। শৃঙ্গার করিঞা রাবণ এড়িলেক চুলে॥ কলা বলে জাতিনাশ কর কিসের কারণে। অগ্নিতে প্রবেশকরিব তোমার বিদ্যানানে॥২৫ ব্রন্ধার বরে রাবণ তোমাকে ত্রিভুবনে নারি কি করিতে পারি আমি নারী অকুমারী ॥১২ তপের তেজে ভম্ম করেঁ৷ তপ জাবেক নাশ আপনার সতীত আমি করিব প্রকাশ।

'নিকু' পাঠান্তর।
 † অনুমৃতা হৈল মাতা বাপ পাব কহি।
 অন্য পুশির পাঠ।
 ‡ 'কহি হরি কহি বিকু কহি নারায়ণ।'
 ৰ, পুথির পাঠ।
 ৰ, পুথির পাঠ।
 ৰিকু কহি নারায়ণ।'
 ৰ, পুথির পাঠ।
 ৰিকু কহি নারায়ণ।'
 ৰিকু কহি নারায়ণ।'
 ৰিকু পুথির পাঠ।
 ৰিকু পুথির প

নানা কার্চ্চ আনিল কন্তা উঠিল অগ্নিরাশি অগ্নি প্রদক্ষিণে বৃলে কন্তা রূপনী ॥ দানবকুমারী আমি বিস্তর কৈল সেবা। উত্তম কুলে জন্ম হইবেক অবোনিসম্ভবা॥ বিষ্ণুর রমণী হৈব জন্ম জন্মান্তরে। ৫ আমার লাগিঞা বেন রাবণ রাজা মরে॥ রাবণ লাগিঞা মরি আমি দেবগণ দেখি। আমার লাগিঞা রাবণ মরিবেক তোমরা হৈহো সাক্ষী॥

পতিব্ৰতার শাপ নামানে আপন অহঙ্কারে।
পূপাবৃষ্টি ছন্ত হইল স্বৰ্গপুরে॥১০
হাল ধরিঞা জনক রাজা বজ্জভূমি চিষি।
লাঙ্গলে উপজিল কন্সা রূপসী॥
ইহার লাগিঞা তার নাম থুইল সীতা।
বিষ্ণু অবতার তুমি সীতা পতিব্রতা॥
পতিব্রতার কঠোর তপে হএ বিপরীত।১৫
সীতা হাগিঞা রাবণ মরিল সংসারে বিদিত॥
সীতার জন্ম রহস্থ কহেন অগন্তা মুনিবর
উত্তরকাণ্ড গাইল ক্তিবাস কবিবর॥

অগস্তা বলেন রবুনাণ কথাতে দেহ মন।
দিগবিজয় করিঞা বুলেন লক্ষার রাবণ॥২০
ব্রহ্মার বরে রাবণ কাহো নাহি গণে।
শাপ গালি জত পাড়ে কিছু নাহি শুনে॥
জত জত রাজা বৈসে পৃথিবী ভিতরে।
সকল রাজা জিনিলেক আপন বাহুবলে॥
মরুৎ রাজা যক্ত করে বলে মহাবলী।২৫
উত্তম ব্রাহ্মণ যক্ত করায় মহাক্তানী॥

(95)

(bo)

যজ্ঞভাগ নিতে আইলা সকল দেবগণ।
আচিধিতে রথে চড়িঞা গেল রাবণ॥
বিদ্ধ্য পর্বাত \* উপরে যজ্ঞের অমুবন্ধ।
রথে চড়িঞা উঠিলা রাজা দশস্কম॥
দেবগণ চমকিত দেখিঞা রাবণ।
গেলের ভিতর লুকাইল সভে হৈলা অদর্শন॥
ইন্দ্র মানুর হৈলা কুবের কেকলাস।
যম কাক হৈলা বক্লণ হৈলা হাঁস॥
মক্ষত রাজা যজ্ঞ করে বেড়িঞা লোকে।
সংগ্রাম দেহ সংগ্রাম দেহ রাবণ রাজা

মকুত বলে আমি তোমা নাহি জানি। পরিচয় দেহ যেন আমি চিত্রি॥ রাবণ বলে ত্রিভুবনে আমি পরিচয়। ত্রিভ্বন জিনিয়া বুলি আমি মহাশয়॥ সব দেব বড়াই করে ধনের অধিকারী। ১৫ তাহাকে জিনিয়া নিল লঙ্কাপুরী॥ অষ্টলোকপাল কুবের ধনের ঈশ্বর। হেন কুবেরের রথ আনিল সত্তর। আপনে বড়াঞি করে ভরিল সভাতলে। রাবণের বড়াঞি দেখিঞা মকত কোপেজলে জ্যেষ্ঠ ভাই মারিঞা কহে অপূর্ব্বকাহিনী৷২১ হেন কথা কহিতে লাজ না বাস আপনি॥ ধার্মিকের অপমান ধার্মিক নাহি করে। ধার্মিক শুনিলে তার কিছু নাহি সহে॥ বিক্রম করিয়া বেড়াসি কাকেছো নাহি ডর মানুষের হাথে তুমি জাবে যম্মর ॥২৬

েণ্ড হাবেশ ত্রাব আবে বলব: 'উটিববীর্যা পর্বতে' পাঠান্তর।

ধরুক বাণ লইঞা আইসে যুঝিবার মনে।\* হাথপ্রসারিক্রা আমা লক্রা বৈসি সভাতলে। যজ্ঞ সজ খাঞা রাক্ষস সব বলে॥ সংগ্রাম জয় করি ঞা চলিলা রাবণ। আপন মূৰ্ত্তি দেবগণ হইলা ততক্ষণ॥ ময়ুর হৈতে বাহির হৈঞা ময়ুরে দিলা বর। আমার সহস্র চক্ষু হউ তোমার পুচ্ছেরউপর॥ পূর্ব্বে ময়ূর ছিল নীল আকার। ইন্দ্রের বরে সহস্রলোচন হৈল তাহার॥ আমার বরে হউক তোমার নীল কলেবর। गत्नत ऋरथ हेक्त भग्नुदत मिल तत्र ॥>> মেঘ পাতিতা জখন করিব বর্ষণ। লেজ প্রসারিঞা তুমি করিহ নাচন॥ বরুণ বলেন হংস তোমাকে দিল বর। চন্দন হেন হউক তোমার কলেবর। বরুণ বোলে আমি জলের অধিপতি।১৬ জলে থাকি তোমার বাঢিএ পিরীতি॥

\* হত্ত পদারিক। রহায় সকল বাদ্দণে ।
পরামর্শ যজ্ঞ করিতে কে।প নাহি করি।
মারকাট কৈলে যজ্ঞে সবংশেতে মরি ।
পুরোহিত বাক্য ধর কোপ কর দূর।
পিরীতে প্রবাধি পাঠাও রাক্ষ্য নিষ্ঠুর ॥
যজ্ঞ পূর্ণ না হইলে হয় বড় দোষ।
পরাজয় মেন্ডা কর রাবণে সজ্ঞোষ ॥
পরাজয় মানিল রাজা সকল সভাতলে।
যজ্ঞের সামত্রী ধেয়ায় রাবণ কটক বুলে ॥
থ ও গ, চিহ্নিত পুথিতে এইরূপ অধিক
পাঠ আছে।

(b)

(b2)

নীলবর্ণ ছিল হংস হৈল ধবল।
বক্তণের বরে হৈল শরীর নির্মাণ ॥
কেঁকলাসে বর দিল ধনের ঈশ্বর।
স্থবর্ণ হেন দেহ হউক তোসার কলেবর
স্থবর্ণ হেন হউক তোসার পা থণ্ডে।
ধ
ঘন মাথা নাড়িছ মুক্ট ধরিহ সুত্তে॥
বম বলেন কাক তোমাকে দিল বর।
আমার বরে হহ তুমি অজয় অমর॥
বোগ পীড়াতে তোমার কিছু করিতে নারি।
মান্ত্র্য বদ্ধি কাক মারিবেক তবে সে মরি॥১০
তোমার বন্ধু বান্ধ্র তোমাকে যোগাবে
ভাহার।

ষম করণে তার তৃপ্তি হবেক আপার॥
যজ্ঞ সংপূর্ণে পক্ষে দিঞা বর।
ভাষ্টলোক পাল গেলা আপনার ঘর॥
গৌড়ে পূজিত ক্তিবাস পণ্ডিত।১৫
মকত রাজার যজ্ঞ সাম্প সংসারে ,বিদিত॥

প্রতিঃসান করি রাম বসিলা দেখানে।
সভা থপ্ত লঞা রাম মূনির কথা শুনে ॥
অগস্ত্য বোলেন রামচন্দ্র কথাতে দেহ মন
দিগবিজই করিঞা তবে বেডায় রাবণ ॥২০
পূপক রথে চঢ়িঞা বেড়ায় ত্রিভ্বন।
সৈত্যশব্দ রথশব্দ শুনি ঘনে ঘন॥
বড় বড় রাজা রাবণ জথা জথা শুনে।
কাহার কথা না জানে সকল রাজা জিনে॥
সংগ্রাম চাহিঞা বুলে দেহ মোরে রণ।২৫
রণ না দিহ বোল হারিল স্বর্জন॥

হারিল বুলিঞা ছাড়িএ নিশ্চয়। আপনার মুখে সকল রাজা মাগিলপরাজয়। কণনো জদি আমাকে করহ অহঙ্কার। তবেত আমার ঠাই তার নাইক নিস্তার॥ ব্ৰহ্মার ব্যুর রাবণ রাজা নানা মায়া ধরে Ic পরাজয় মানিল তবে সকল নুপবরে॥ সমন্ত রাজা বলে সর্বলোক লেখে। পরাজর মানিল সেই আগনার মুখে॥ পুরোরবা স্থরথ আদি জত মহাশয়। আপন মুখে দব রাজা মানিল পরাজয়॥ ১০ সকল রাজা জিনিলেক আপনার বলে। অধোধা। জিনিতে জাএ জয় জয় রোলে॥ অনারণ্য রাজ্য করে অযোধ্যার রাজে। রাবণ রাজার বার্তা পাঞা যুক্তিবারে সাজে॥ রাক্ষম কটক লাগিল গিঞা গঢ়ের ছুআরে॥ দারী ভিতর গিঞা রাজাকে গোচরে ॥১৬ রাবণ রাজা আইল সংগ্রাম চাছে। তোমার অনারণা রাজা ডরে গেল কছে। কুপিল অনারণ্য রাবণের অহস্কারে। কটক লঞা বাহির হৈল যুঝিবার তরে॥ অষ্টকোটী পাইক তিন কোটা ঘোড়া ৷২১ কোটী সহস্র হস্তী জেন পর্বতের চূড়া॥ স্থ্যবংশে অনারণ্য বীর অবতার। দিনে স্থা অস্ত গেল হৈল অন্ধকার॥ তাজি অষ্ট ঘোড়াতে বহে কাঞ্চনরণথান। রুখে চড়িঞা অনারণ্য করিল প্যান ॥২৬ জন্মেজয় মহাবীর রাজার নন্দন। বাপের চরণ বন্দি ঞা বলএ বচন ॥

(50)

(88)

আমি হেন পুত্র থাকিতে তুমি করিবে রণ। মোকে আজ্ঞা কর মারিবোঁ রাবণ॥ এ বোলগুনিকা অনারণ্য পত্র কৈল কোলে পুত্রকে রাজা সমর্পিল ভরিল সভাতলে॥ পুত্রকে কহিল করিহ প্রজার পালন।৫ নানা অস্ত্র লঞা রাজা করিতে জাত রণ॥ পাত্র বোলেন তুমি কথা শুন মহাশয়। তুমি থাক আমরা সব করিব পরাজয়॥ পাত্র ভাগের কথা শুনিঞা হর্ষিত মনে। ভত দৃষ্টি করিঞা চাহে পাত্রভাগপানে ॥১٠ জন্মেজয়ে দিল রাজা কনক নবদও। সমর্পিল পত্রকে রাজা সকল রাজ্য খণ্ড ॥ রাজ্য করিহ বাপু হইঞা স্থন্থির। আমার আজ্ঞা লজ্মহ যদি হছ গঢ়েরবাহির বিদির্গের চরণে রাজা হৈল। নমস্বার ।১৫ রথে চঢ়িঞা রাজা করিল আগুসার॥ ক্ষত্তিবাস পণ্ডিত সকল শাস্ত্র জানে। আশ্চর্য্য গীত করিল উত্তর রামায়ণে॥

अशंख्य तलन तामहत्व कथाट एनश्मन।

यूकिवाद लिएला তবে ताका अनात्रण ॥२०

ताम ताम कित्रका ताका मामाहेल तल।

ममिन बालाक कित्रका वाल शांति॥

इहे कठेटक एन्या एमि इर्ब्य वाक्षिल त्र।

मञ्च পঢ়ি वाल मट्ड कित वित्रमण॥

इहे कठेक यूकिया मद्य तलत विवानी।२०

तक्त भूनिक हका वह मन नमी॥

হস্তীর মুণ্ডে মারে খরদান অস্কুশে। দত্তে ধরি কা হস্তীর ঘড় মারে রাক্ষদে॥ এক চাপে হঞা চাপে জতেক ঘোড়াযুড়ী। লেঞ্চে ডাবুস মারে কাণ্ড চিআড়ি॥ ধুরুকী সব যুঝে লইঞা ধুরুক। ৫ বড় বড় রাক্ষদের বাণে বিদ্ধে বুক॥ এক চাপ হঞা কটক করে মহারণ। রাক্ষস কটক ভঙ্গ দিল সহিতে নারে রণ॥ আকাশে থাকিঞা দেখে সকল দেবগণ। রাবণ এড়িঞা পালায় রাক্ষস নাহি সহে রণা রহিল অতিকা মকরাক্ষ যোদ্ধপতি।১১ বড় বড় বীর যুঝে সামস্ত পতি॥ সেনাপতি সব যুঝে ধন্তকে দিঞা চঢ়া। যুথে যুথে যুঝিঞা মরে পর্ববিতয়া ঘোড়া॥ তিন বীরের বাণ বর্ষণে ত্রিভূবন ফাটে।১৫ त्राकरम मान्यस्तिका शिल गाउँगाउँ॥ কটকের হুর্গতি দেখিঞা রাজা বড় হুঃখী। তিন কোটী পড়িণ রাজার যুঝার ধন্থকী॥ কুড়ি সহস্র পড়িল রাজার ধন্তক যুঝার। চৌরাশী লাথ পড়িল ঘোড়ার উক্মাল॥২০ হস্তী ঘোড়া পড়িন রক্তে ভাসে পালান। একশত কাটা কান্ধ উঠিঞা মাগে দান॥ ডালে বসিঞা রক্ত পিএ শগুনি গৃধিনী। থাপর ভরিক্রা রক্ত পিএ ভবানী॥ স্বমন্ত সার্থী কছে হাথ করিঞা জোড়া।২৫ পড়িল সকল সৈত্য রথের সব ঘোড়া॥ স্থম স্থ বলে ইন্দ্রাজা করহ স্থরণ। শকভেদিবাণ এড় মকক রাক্ষসগণ ॥

(re)

(bb)

শব্দভেদিবাণ রাজা জুড়িল ধন্থকে। বজু হেন বাণ বাজিল মকরাক্ষের বুকে। বাণে ফুটিঞা মকরাক্ষ হৈল অচেতন। আপনে সাম।ইল রাবণ করিতে রণ॥ অগ্নিবাণ রাবণ রাজা করিল অবতার।৫ বরুণ বাণে অনারণা করিল সংহার॥ অনারণ্য বাণ এড়ে রাবণ রাজা ফুটে। বাবণরাজার সানাটোপর বাণের তেজেকাটে অনারণা করিল নানা বাণ অবতার। রাবণের কটক পালায় সম্ভ্রম-আপার ॥১• মারীচ মকরাক্ষ পালায় রহিল রাবণ। মায়ামই বাণে রাবণ যুঝে ততক্ষণ॥ বাণে খান খান হৈলা রাজা অনারণা। বাণের ডাহে রাজা হইলা অচেতন ॥ থান থান হইল রাজার সানাটোপর ।১৫ সর্বাঙ্গ ফুটিঞা রাজা হৈলা জর্জর। অনারণাের মুণ্ডে মারে গদার বাঙ্টি। রথ সারথি রণে পড়িল জায় গড়াগড়ি॥ বিরথী হইঞা রাজা পড়িলা ভূমিতলে। রাজা এড়ি সৈতা সব পালায় রণস্থলে ॥২০ অনারণ্যের মুণ্ডে রাবণ মারিল চাপড। ভূমি পড়িলা রাজা করে ধড়ফ়ড়॥ হাসিঞা রাবণ গেল অনারণ্যের নিকট। রাবণ বলে অনারণা পড়িল শঙ্কট।। সামার সনে রণ কর জাবে যমগর।২৫ পরাজয় করি তোমে আপন মুথে বল। ত্রিভুবন জিনিল আমি আপনার তেজে। অনারণ্য রণ করে আমাতে নাহি রঞ্জে।

অনারণা বলে রাবণ বোলসি অহঙ্কার। কর্তুঁ হারি কর্তুঁ জিতি রণের ব্যবহার ॥ বিক্রমে টুটিলাঙ আমি বৃদ্ধ বএস বেলে। ভোমাকে শাপ দিব আমি সংগ্রাম স্থলে॥ দান পুণ্য বিস্তর করিল আমিম্বারি সম্ভর্পণা বিস্তর স্কুবর্ণ দিঞা তুযিল ব্রাহ্মণ॥৬ এতেক তপ মোর জানিদ ভালে ভালে। তোর বধের তরে রাজা জন্মিব মোর কলে॥ জতেক শাপ দিল রাজা কিছু নহে আন। তেকারণে তোমার হাথে তেজিল পরাণ॥ জন্মেজয় পুত্রকে রাজা রাজ্য করিল সমর্পণ বিষ্ণু স্মরণে রাজা তেজিল জীবন ॥১২ জম্মেজয় পুত্র তার করিল সৎকার। রণে পড়িঞা রাজা গেলা স্বর্গ চুআর॥ রথে চটিঞা রাজা গেল স্বর্গ ভুবন। পৃথিবী দলিতা বেড়ায় রাজা দশানন। তোমার পূর্ব্বপুরুষ মারে অযোধ্যা জিনে।১৭ হেন রাবণ রাজা পড়িল তোমার বাণে। পূর্ব্বপুরুষের শাপ শুনিক্রা শ্রীরামের হাস। উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

রাত্রি প্রভাত হৈল প্রভ্যুষ বিহান।
মুনি রাক্ষস লঞা শ্রীরামের দেখান॥২২
রাম বলেন সেকালের রাজা বলে টুটন।
তেকারণে মারিঞা কাটিঞা বেড়ায় রাবণ॥
বীর শৃক্ত পৃথিবী ছিল সে সব কালে।
তেকারণে রাবণ রাজা মারিঞা কাটিয়া

वूःन ॥

(r9)

(66)

সে কালের রাজা ত্রমহান্ত নাহি জানে। তেকারণে রাবণ ঠাই পরাজয় মানে। অগস্তা বলেন সেকালের রাজা মায়া জানে সভারে রাক্ষ্যের মায়াতে কাহো নাহি জিনে॥ রাক্ষণের মারাতে মানুষের অনেক অন্তর (৫) তেকরিণে পরাজয় না মানে লক্ষেরর॥ জে জে বড় রাজা ছিল বিষ্ণু ঘবতার। তাহার ঠাই রাবণ রাজার নাহিক নিস্তার সেই কথা কহি রাম তাতে দেহ মন। জে জে রাজারঠাই অপমান পাইল দশানন কার্ত্তিকবীর্য্য অর্জ্জুনরাজার জন্ম চন্দ্রবংশো১১ সহস্র বাছ ধরে রাজা জন্ম বিষ্ণু তাংশে॥ অর্জুন মহারাজা সহস্র বাহ ধরে। মান্তবের কার্য্য দেবে নাহি পারে॥ সহস্র যোজন ডাকাচুরি নাহি বলাবল। প্রত্যেথ হঞা তার করে ফলাফল॥১৬ দানপণা করিঞা সভাখও রাথে। প্রতাপে আগল রাজা সর্বলোক রাথে॥ জাহা স্মন্তরণে হারাইল ধন পায় লোকে। মানুষ হঞা রাজা প্রতি তুল্য দেখে। জলকেলি করিতে গেল নর্ম্মদার কুলে।২১ স্ত্রীর শব্দে হড়াছড়ী বড়ই কলোলে॥ মাহেশ্বতী নগরী ছাড়িঞা তৎপর। তথা গিঞা জিজ্ঞাদে রাবণের অমুচর॥ লক্ষার রাবণ আমি সংগ্রাম চাহি। তোমার অর্জুন রাজা এখন গেল কহিঁ॥२৬ রাক্ষস কটক দেখিতে ভয়ঙ্কর। অর্জুন রাজার গোক না করে উত্তর।

লোক বলে কি চাহ শৃত্য নগরে। নর্ম্মদা গেল রাজা জলক্রীডা করিবারে।। নর্মদা জায় রাজা অর্জন উদেশে। বাটে বিদ্ধাপর্কতে রাবণ বসিল হরিষে। নানা পুষ্প ফুটে তাতে গন্ধে মনোহর।৫ নানা পক্ষ কেলি করে শোভিত সরোবর ঃ (पर पानर शक्तर्स किन्न विमाधती। পর্বত উপর কেলি করে পুরুষ স্ত্রী॥ ময়র পেখন ধরিঞা নাচে ভ্রমর গুঞ্জরে। সিংহ শার্দ্দল রা কাড়ে উচ্চস্বরে॥১০ নর্মদা নদীর জল পর্বত জেন বছে। সকল কটকে বাবণ বাজাকে চাহে। বিদ্ধা পর্বত দিঞা গেল নর্মদার কল। জলকেলি করে মহিষ সিংহ শার্দ্ধল ॥ पृष्टे कृत भृग्र देश्त गकत खलु (मथि।) c হংস সারস তথি জলচর পাখী॥ স্থান করিতে রাজা করিলেন মন। সকল কটক লঞা তথা রহিলা রাবণ।। মহাদেবের পূজা করিব রাজা লক্ষেশ্বর। অস্তরীক্ষে রথে তাহা দেখিল দিবাকর ॥২০ রাবণ পূজা করিবেক দেব শূলপাণ। মন্দরশ্মি হৈলা ঠাকুর দিনমণি॥ ছই প্রহর বেলাতে পোড়এ পৃথিৱী। রাবণ দেখিঞা মন্দতেজ হৈঞা গোলা রবি॥ কোনজনা বুঝিতে পারে রাবণের মায়া।২৫ রাবণরাজার উপরে হৈ এ। গেল ছায়া॥ নর্মদার কূল হৈঞা গেল অতি স্থগোভন। ধীরে ধীরে বাত বহে স্থগন্ধি চন্দন।।

(64)

স্নান করিল রাবণ রাজা নশ্মদার জলে। গাএর রক্ত পাথালে জত লাগিঞাছিল রণে॥

সাঁতরিঞা যায় রাবণ নর্মদার জলে।
স্থান করিঞা রাবণ চাহে চারি পানে॥
স্থবর্ণের শিবলিঙ্গ আনিলেক রাজা।
নানা ধূপ ধুনাতে তাহার করে পূজা॥
সোণার শিবলিঙ্গ পূজে তৃই প্রহর বেলা।
বাবণের গ্লাতে শোভে মাণিক জাপ্য

भोला ॥ মর জপে রাবণ রাজা লএল জাপ্যমালা। মৌনব্রত করে রাবণ পূজিবার বেলা॥১० জতেক মহাপাত্র চারি ভিতে সাজে। শঙ্খ হুন্দুভি শিঙ্গা চারি পানে বাজে॥ শিঙ্গা ডমুর বাজে কাংশু করতাল। পাত। মাদল ভেক দোসরি কাহাল॥১৪ এতেক বাদ্যকা বাজে অৰ্জ্জন নাহি জানে। ঢাক ঢোল মাদল বাজে কটকের্মিশালে॥ করড়া করড়ী বাজে কুওলা কুওলী। (तर् तांनी मत्रभक्षन वाद्य हक्तावनी॥ नाना वाष्ठ वाटक छनि मधुत ध्वनि । মোহন বাঁশী কবিলাস বাজে বেণু বেণী ॥২০ এক ছন্দে বাদা বাজে নর্মদার জলে। ত্রিভূবনে রাজা নাহি রাবণের সমতুলে॥ সহস্রেক ভার অইল কপুরি মধু জল। इहे कून ठाशिया तट नर्यामात अन ॥ ফল মূল স্থান হইল কেবলে।২৫ क्व भूव ताभि ताभि ভारে नर्यनात करव ॥

(00)

म्भ अक धून धूना छातीन जला। স্থবর্ণের শিব লিঞ্চ ভাসিলেক জলে।। স্থগন্ধি চন্দন ভাসে শুনি কলকলী। পুপ निर्वा जारा जाशानि भाशानी॥ কুড়িহাথ প্রসারিকা নাচে ভঙ্গে বিভঙ্গে।৫ দণ্ড প্রণাম করে সোণার শিবলিঙ্গে॥ দণ্ড প্রণাম করে রাবণ পূজি ত্রিলোচন। রাবণের দেবার্চন না জানে অস্থর ব্রাক্ষণ। মহাদেব পূজে রাবণ বিস্তর ফল ফুলে। পুষ্প রাশি রাশি ভাগে নর্ম্মদার জলে॥১০ হেন মত দেবার্চন করে লঙ্কেশ্ব। তথন অর্জ্বন রাজার শুনহ উত্তর॥ বারহ বংগরের লৈঞা যুবতী। রাবণের ভাটী কেলি করে লইঞা স্ত্রীজাতি॥ नमीत मात्य इटे टाथ शमातिल मीघल 126 জাতবাল বাধিকা রাথে নর্মদার জল।। কাঁকালেক পানী ছিল হইল পাথার। সহস্র যুবতি তাতে এড়িল সাঁতার॥ হাথ কুঢ়াইলেক রাজা নিকলিল পানী। শুখানাতে লোটায় রাজার সহস্র রাণী॥২০ হাথ প্যারিলেক রাজা রাণী সব ভাসে। দেখি ঞা অৰ্জুন রাজা কৌতৃক হেনবাসে। হাথে হাপ প্রসারিল লাগিল কান্ধে। ছই কুল বাহিঞা জল উচ্ছাল বান্ধে॥ রাবণের ফল মূল পর্বত আকার।২৫ ভাটি এড়ি উজান বহে রাবণে চমৎকার ॥ আপনে গীত গায়ে রাবণ আপনে জে নাচে পানীরবার্ত্তা জানিতেরাজা শুক্সারণপাঁচে॥

(55)

মৌন নাহি ভাঙ্গে রাজা হাথে দেয় থুড়ি। পানীর বার্ত্ত। জানিবারে শুক্সারণ লড়ি॥ ভক্ষারণ মৃত্তি ধরে মাহুষের বেশ। জলক্রীড়া স্থান গিঞা করিল প্রবেশ। মামুষ রূপে প্রবেশ কইল শুক সারণ।¢ বার্ত্তা উদ্ধারিঞা আইল না জ্ঞানে কোনোজন বার্দ্ধা উদ্ধারিঞা রাবণের আগে কহে। না জানিএ নদীর তীরে কোন জনা রহে॥ স্থানর পুরুষ নাহে স্থানর আরুতি। তাহার সঙ্গে স্নান করে সহস্রেক যুবতি॥১০ সহস্রেক হাথে বান্ধে নর্মদার পানী। ভাট পানী উজানি ধরে অপূর্ব্ব কাহিনী 1 নদীর মাছ মকর কুম্ভীর উপলে। গাছের কানে যাবডি ভাঙ্গে তাহা দেখিলে॥ বসস্তের নদী হৈল হেমস্তের নদী।১৫ তেকারণে ভাসে তোমার প্রত্থা গাদিগাদি॥ রাবণ বলে জা চাহিঞা দেশে দেশে বুলি। হেন রাজা স্নান করে আউদড় চুলী॥ জোড় হাথে বলে শুক সার্ণ। আমার বচন শুন রাজা দশানন ॥২ • সহস্রেক কন্তা মান করে স্বর্গ বিদ্যাণরী। সভা বন্দি কর গিঞা লঞা জাব লঙ্কাপুরী॥ ক্তক সারণের গোলে রাবণ হর্ষিত। রথে চটিঞা পাত্র মিত্রে লড়িল। তুরিত॥ व्यस्ति वास्त्र हिन्छ। शिन तोका नाइयत । অর্জন রাজা দেখে স্ত্রীগণের ভিতর ॥২৬ অজ্জুনের দারী দেখিঞা বলে ছরাক্ষর। বাঁট জাঞা অজ্জুন রাজাত্ম করাহ গোচর॥ (\$2)

ন্ত্ৰী লঞা তোর রাজা কোন স্থগে নাহে। লম্বার রাবণ আমি সংগ্রাম চাহে॥ এতেক বচন জবে লক্ষের বলে। উঠ উঠ এঁত বোল গোদ্ধ সব বলে॥ ताजा इका खी नका करत जनरकि। द হেন বেলে রণ চাহে কোন ছারে বুলি॥ রণের বেলা না জান জাতি নিশাচর। অর্জনের সেনাপতি তোকে না করে ডর ॥ সহস্রেক স্ত্রী লঞা হাস পরিহাস। হেনবেলে আমি কেনে জাব রাজার পাশাত কুড়িখানা হাথে তোঁ করিন অহঙ্কার। সহস্রেক হাথের বার্ত্তা না জান আমার॥ মরা হেন সংসার জিনিলি অহন্ধারে। পরের বল না জান ব্রহ্মার বরে॥ অর্জুন রাজার ঠাই আইলা মরিবার তরে 1১৫ দশমুগু চুর হবেক অর্জুনের শরে॥ চুর করিবেক দশমুগু ভাঙ্গিবেক হাড়। হেলায়ে মরিবে কেনে কর অহস্কার॥ আগে আমা সনে করহ সংগ্রাম কেলি। এড়াইঞা গেলে দেখিহ অৰ্জুনমহাবলী ॥২০ দেব দানব গন্ধর্ব জিনিলে সব সর্প। তেঁ সি বাঢ়িল তোর এত বড় গর্বা॥ অর্জ্জন রাজাকে না করিছ মানুষ গেতান। মাত্র্য মূর্ত্তি রাজা হএ বিষ্ণুর সমান॥ অশেষ মায়া না জানসি বরে লক্ষেশ্র ।২৫ তোমা হৈতে মোর রাজা মায়ার সাগর॥ অশেষ মায়া জানে রাজা দেখিতে না দেখি মেঘ হঞা জল বর্ষে উড়িঞা হয়ে পাখী॥

(ca)

উচ্চকে উচ্চ রাজা বঙ্কে বন্ধ। যাহার বাণে চন্দ্র সূর্য্য পড়ে জয়ভন্স॥ অর্জ্বন ঠাই আইলিদ মরিবার তরে। আপনা চিহ্নিঞা ঘর জাহ নিশাচরে॥ আমা সভার ঠাই যদি পাসি অবাাহতি।৫ তবে গিঞা জিনিস তোঁ অর্জুন নুপতি। রাক্ষদে মানুষে রণ বড় ভয়প্র। অস্ত্র বরিষণে কটক পড়িল বিস্তর॥ রাক্ষদে মান্তবে রণ দেখিতে ভয়ন্কর। রাক্ষদ কটক লঞা ঘর জাহ নিশাচর ॥১০ ছই কটকে যুদ্ধ হয় অতি ঘোটতর। ভাঙ্গিল রাক্ষম সেনা পড়িল ফাঁফর॥ শুক সারণ প্রাহস্ত মহাবীর। সর্কাঙ্গে ফুটল কেহ রণে নহে স্থির॥ পঞ্চপাত্র ভঙ্গ দিল এডিঞা লক্ষেশ্ব 1১৫ মানুষের বাণে হৈল রাক্ষস ফাঁফর॥ একলা রাবণ রাজা সভিলেক বণ।। মনে মনে করে রাজা অস্ত্র বরিষণ॥ অষ্টপাত্র রাজার বড়ই যুঝার। রাবণের উপরে করে অন্ত্র প্রহার ॥२० কোপে রাবণ রাজা এডে নানা বাণ। বাণে পাত্র বিদ্ধিকা করিল থান খান॥ রাবণের বাণ বর্ষণে মামুষ কটক পড়ে। পালায় অর্জ্জনের কটক গগনে ধূলা উড়ে॥ অর্জুনের কটক ভঙ্গদিল রণ সহিতে না পারি রণের বার্ত্ত। রাজার ঠাই জানায় গুমারি॥२ রাবণ নামে রাজা গোসাঞি পুলস্তোর নাতি বাণে পোড়ায় গোসাঞি নগর মাহেমতী।

(86)

ক্রীড়ারসে থাক তুমি না জান কারণ। সেনাপতি অষ্টপাত্র সহিতে নারে রণ॥ পাত্র মিত্র ধাঞা আইসে ডরে। ত্রনিঞা অর্জন রাজার স্ত্রীগণে ভঙ্গ পড়ে॥ স্ত্রীগণে কেয়ন্ধার উঠিল গভিঁর।৫ অভয়দান দিঞা রাজা সভায় করিল থির॥ স্ত্রীলোকের বোল শুনিঞা রাজা অর্জ্জন। পেলাইঞা তিতা বস্ত্র পত্রিলা শুখান বসন॥ প্রাধিদিঞা স্ত্রীলোক পাঠাইল অন্তঃপরী বাহির হৈল অর্জ্জন রাজা সংগ্রামকেশরী॥১০ রথ সার্থিকে রাজার প্রভিল হাঁকার। সাজিঞা রথ যোগাইল রথকার॥ যুগাস্তের অগ্নি জেন সংসার পোড়ে। হাথে কাঞ্চনগদা রাজা যুঝিবারে লড়ে॥ দোহাথিকা গদার বাড়িতে রাক্ষদের মুগু ছিত্তে।১৫

স্থেটার কিরণে জেন অন্ধকার থণ্ডে॥
গকড় মৃত্তি ধরে রাজা দেখিতে আপার।
গদার বাড়ীতে রাক্ষসের মুগু করে চুর মার॥
পশিল সংগ্রাম রাজা লঞা কাঞ্চনগদা।
হাথে গদা লঞা রাক্ষসে করে থেদা॥২০
জাহার উপরে রাজা গদার মারে বাড়ি।
চারিদিগে রাক্ষস পড়িল জায় গড়াগড়ি॥
খর দ্বণ আর প্রহস্ত মহাবল।
অর্জুন রাজার বুকে মারে লোহার শাবল॥
হাথে গদাম রহিল রাজা প্রহস্তেরআগে।২৫
গদায় হৈতে অগ্নি বাহিরায় আলোক
দশ্দিগে॥

(54)

মারিশ গদার বাড়ি অর্জ্ন নৃপতি।
রণে পড়িল মোহ গেল প্রহস্ত সেনাপতি।
প্রাহস্ত ধীর পড়িল সংগ্রামের ভিতর।
তা দেখিক্রা অর্জ্ন রাজাকে বলে মহোদর।
হাথে মূল্যর করিক্রা সাম্ভার সংগ্রামের
ভিতর।
ং

দেথিকা অর্জুনের সেনা হয় কাতর।
অর্জুনকে মূলার মারিলেক রোষে।
বুকে বাজিকা মূলার ভাঙ্গিল অর্জুন রাজা
হাসে॥

मः शास्य क्षिओ ताक। तल धत धत । গদার বাডি মারিলেক পডিলা মহোদর॥১٠ রণে রুষিল মকবাক্ষ শুক সার্ণ। গদার বাড়িতে রাজা মারিল তিনজন॥ পুষ্পকরথে চড়িঞা আইলা রাবণ। অর্জুন উপরে করে বাণ বরিষণ। সহস্রেক হাথে গদা লইল নুপতি।১৫ রাবণের বুকে মারিলেক প্রাণ শক্তি॥ ব্রহ্মার বরে তার রহিল পরাণ। গদার বাড়িতে রাবণ রাজা হারাইল গেফান সোহ গেল রাবণ রাজা গদার আঘাতে। ধুরুক না পাতে বসিল ফোঁফাইতে ॥২০ লাফ দিঞা ভার্জুন ধরিল লক্ষেশ্বরে। গরুড় পক্ষ জেন সাপ জাঞা ধরে॥ সহস্রেক হস্ত প্রসারিঞা চাপিনেক কাঁকানে নারায়ণ জেন বলি বান্ধিঞা থুটল পাতালে সূর্প বাস্থ্যকি জেন বেটিল মহেশ্বরে ২৫ অর্জুনের হাথে বন্দি হৈল লক্ষেখরে॥

(৯৬)

হস্তী ধরিক্রা সিংহ জেন ছাড়ে সিংহনাদ।

মৃগ মারিক্রা শ্রম জেন পাত ব্যাধ ॥

হাথে হাথে বান্ধিক্রা চাপিল কাঁথতলে।

বান্ধিক্রা ঘরকে আনিলা অর্জুন মহাবলে ॥

রাবণ বন্দি করিক্রা ভূমিতে বাট বহে।

অর্জুনের কাঁথে রাবণ লাম্বে স্বর্গলোক চাহে

সাধু সাধু করিক্রা দেবগণ বাখানে।

অর্জুন উপর করে পুপা বরিষণে ॥

তক সারণ মারীচ \* মহোদর।

রাজা রহাইতে রণ করিল বিস্তর ॥১০

অস্ত্র বরিষণ রাজা করে চারিভিতে।

রাজদের বাণ রাজা ধরে হাথে হাপে ॥

কথোক হাতে ধরিক্রা কথোক থেদিল

নিশাচর।

পবনে থেদাড়ে জেন আকাশের জলধর॥
রাক্ষসের উপর করে বাণ বরিষণ।>৫
ভাঙ্গিল-রাক্ষস কটক সহিতে নারে রণ॥
চতুর্দ্ধিকে ভঙ্গ পাইল পালার রাক্ষসে।
রাবণ লঞা অর্জুন রাজা সাম্ভায়
আাওয়াসে॥
†

শুক দারণ মারীচ রাক্ষম মহোদর।
 রাজা দনে মুঝে রাখিতে লক্ষেথর ॥
 থ পুথির পাঠ।

† থ চিহ্নিত পুণিতে এই স্থানে নিম্লিথিত পাঠ অধিক আছে।

"কৃড়ি হাথে রাবণের বান্ধিল শিকল।
দশ গলে বান্ধি তার লোহার শিকল।
তেয়জ বিহঙ্গে তারে রাথে বন্দিশালে।
নিয্যাস ৬াডুকা দিল লোহার শিকলে।

विमागांन+॥

পিরীতি॥

(29)

রাবণ বন্দি করি থুইল বন্দি আন ঘরে।
কেলি করিতে সাম্বাইল স্ত্রীর অস্তঃপুরে॥
সহস্র কামিনী লঞা করে হাস পরিহাস।
উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

. অর্জুন রাজা বন্দি করিঞা থুইল রাবণ।
ঘরে ঘরে বার্ত্ত। কহে সকল দেবগণ ॥৬
রাবণের কথা শুনিঞা হরিষ পুবন্দর।
সকল দেবগণে গেল ব্রহ্মার ঘর॥
জোড়হাথ করি জা বোলে দেব স্মরপতি।
অর্জুন বন্দি করিল তোমার পড়িনাতি\*॥
পুলস্তা মহামনি স্বর্গভ্বনে বৈসে।১১
নাতির বার্ত্ত। পাঞা মুনি মর্ত্ত্যাক
আইসে॥

গাঁএর জ্যোতিতে দশদিগ আলোক করে।
আসিঞা বসিলা মুনি রাজার ছআরে॥
সভা সহিতে গেলা রাজা মুনির গোচরে।
পাদ্য অর্ঘ্য দিঞা রাজা মুনিকে নুমস্বার
করে॥১৬

সহস্রেক হাথে বাদ্ধে পঞ্চশত পূটাঞ্জলি।
মূনিকে স্তবন করে অর্জ্জন মহাবলী॥
অমরাবতী ছাড়ি কেনে আইলা বস্থমতী।
মাহেশ্বতী পুরী সোর আজি সে স্কৃতি॥

লোহার শিকল দিয়া বান্ধিল কাকালি।
পামে দড়ি দিঞা বান্ধে দশমাখার চুলি ॥
পুনরপি হাথ সব বান্ধে দড়ি দিঞা।
পাথরের স্তস্তে তারে বান্ধিল চালিঞা॥
পলে দড়ী দিঞা বান্ধে বুকে পা কঠায়।
চাহিঞা অর্জুন পানে ঘন ছাড়ে খাস॥"

\* পড়িনাতি = পরনাতি = প্রেণীতা।

(24)

জাহাকে কল্যাণ কর সেই সম্বক্তি।
হরিহয় বংশে আমি আজি সে নূপতি॥\*
হরিহয় বংশ মোর আজি সে নির্মাল।
তোমার চরণ দেখি মোর জনম সফল॥
পুত্র সহিত আমি আছি বিদ্যান।
কেনে আগমন গোসাঞি কহ

মুনি বলেন রাজা তোমার সফল জীবন। রূপে কামদেব তুমি অভিনব মদন॥ রাবণ দেখিঞা পালাএ মকল দেবগণ। রাবণ উপরে চন্দ্র সূর্য্য না করে গমন ॥১० ৱাবণ দেখি এই কাঁপে অষ্ট লোকপাল। সপ্ত সমুদ্র কাঁপে আর সপ্ত পাতাল॥ তিন লোক নিজা না জায় রাবণের ডরে। রাবণ দেখিলে চেউ না করে সাগরে॥ বাবণ দেখিলে নদ নদী স্রোত না বছে।১৫ রাবণ রাজার বিক্রম কোন জনা সহে। রাবণ রাজার বিক্রম ত্রিভুবনে জানে। মানুষ হঞা জিনিলে তুমি হেন রাবণে॥ অজয় প্রতাপ তুমি বিষ্ণু স্বতার। তোমার কিক্রম রাজা ঘূষিব সংসার॥২• রাবণ রাজা হয় মোর সম্বন্ধে নাতি। আমার নাতি ছাড়িঞা দেহ আমার

\* "হৈহয় বংশে" থ পুণির পাঠ।

† কি কার্যা করিম্ আজ্ঞা কর সরিধান। থ পুণির পাঠ। (66)

নাতি মোর বন্দি আছে তোমার বন্দিশালে। হাথে পদে বন্দি আছে লোহার শিকলে॥ মান্ত গৌরব মোর রাথ একবার। কোপ রাগ ছাড নাতিকে দেহ জে একবার ॥

মুনির বচন রাজা করিতে নারে আন। রাবণ আনিতে পাঠাএ পাত্র প্রধান॥ পাত্র সব দেখি রাবণের ডাণ্ডুকা নিয়লী (१) হাথে গলে বন্দি আছে লোহার শিকলী॥ কুড়ি হাথে লাগিল তাহার জোড়ে জোড়। পাত্র সকলের বচনে রাবণের ঘুচে নিঅড়॥ স্থান করিঞা গাত্তে লেপিল চন্দন।১১ প্রস্প মালা গলে দিল উত্তম বসন। জে জে কাঢ়িঞা নিঞা ছিল রত্ন অভরণ। সে সব আনিঞা তাকে দিল ততক্ষণ॥ জ্ঞথা মূনি বৃদিঞা আছেন সহস্ৰ অৰ্জুন।১৫ সকল পাত্র ভেঠাইল নিঞা রাজা দশানন॥ নানা রত্বে রাবণের বাঢাইল সম্মান। সহস্র হাথে ধরিঞা রাবণ মূনিকে দিল দান। অপমান পাইল রাবণ ভরিল সভায়। মাথা তুলিঞা রাবণ অর্জুন নাহি চায়॥২० দোঁতে নমস্বার হৈলা মূনির চরণে। \* \* \* थीठ रेमज रेश्न छ्रहे ज्ञान ॥ অর্জন রাবণে হৈল মিত মিতালি। মুনির বচনে অগ্নি ততক্ষণে জালি॥ बक्रात्नोक रशना मुनि तावन रशन नक।। সর্বত বিজই অজ্জুন রাজা কাকেছে। नाहि नका ॥२७

(300)

হরিহয় বংশ রাজা হইল নিঃসন্তান"। বিষ্ণুর আরাধনে যজ্ঞ করিল বিবিধান॥ প্রতাক্ষ হঞা বর দিল কমণলোচন। অর্জন রূপে জিমলা দেব নারায়ণ॥ ছোট ছোট জিনিলে আপনা নাহি নিন্দি। বড় বড় জিনিলে আপনা হইএ বন্দি ॥৬ : অর্জুন রাজার ঘর জ্বন গেলা সন্তান।† অর্জ্জন রাজা করিতে গেলা পাত্র প্রধান ॥ অর্জ্রন বলে আপন বলে পালিব পর্বনা ছাত। দণ্ড ধরিএ তবেসি হৈএ রাজা ॥১০ উপবাসে কায়ক্লেশে শোধে কলেবর। দতাতোয় আরাধিঞা ছর্লভ মাগে বর B দতাতোর বরে সহস্র বাহু ধরে। দেব দানব গন্ধর্ব জিনিতে না পারে॥ সোণার থাটে নিদ্রা জায় আপনার স্থথে। নাহি জাহাকে দেখে গুনে তাকে আনিঞা (मर्थ ॥) ७

সহস্রেক স্ত্রী লঞা থাকে নিজ ধরে। সহস্রেক কীর্ত্তি রাজার বেড়ায় সংসারে॥ পথে তেপাতন্তে (?) রাজা করে বলাবল। তথা গিঞা রাজা করে ফলাফল।।

\* হৈহয় বংশে রাজার হইল সন্তান। গ, পুথির পাঠ। অর্জুনের পিতার নাম ধরেন সাস্তান। খ, পুথির পাঠ। † অর্জুন রাজার বাপ স্বর্গ গেলা সে সান্তান। খ পুথির পাঠ।

(5.5)

পরের ধনে জেবা বাঢ়ায় হাথ।
তথন ফলাফল করে চন্দ্রবংশের নাথ॥
রাজার প্রতাপে না হয় ডাকা চুরি।
রাজ্যে কোটাল নাহি আপনে প্রহরি॥
বিষ্ণুর যজ্ঞ করে তপে নাহি হেলা।
কিপ্রাসে বিষ্ণু আরাধে শরীরে না করে
আন্থা।
অর্জ্বন রাজার শরীর নাশ আনের কিবা

তপ করি পুণ্য করি ব্রাহ্মণে দিয়ে সোণারতি।
সে সব পুণ্য পাই স্মরিলে অর্জ্জ্ন নৃপতি॥
বিষ্ণু অবতার রাজা সহস্র বাহু ধরে।১১
হেন অর্জ্জ্ন রাজা পরশুরামে মারে॥
স্বর্গলোক গেল রাজা ঘোষেত সংসারে।
ক্বান্তিবাস গাইল অর্জ্জ্ন রাজার অবতারে॥

শ্রীরাম বলেন তোমার সকল গোচর।১৫
বিভ্বনে বীর নাহি অর্জ্ন রাজার সোঁাসর॥
বিজ্ব বরে রাজা সহস্র বাহু ধরে।
কোন অপরাধে তাকে পরশুরাম মারে॥
চন্দ্র স্থ্য বংশে নাহি এত শুনে।
হেন অর্জ্জুন ভৃগুরাম মারিল কি কারণে॥
মহাদেবের বরে বীর ত্রিভ্বনের সার।২১
নিঃক্ষরী করিল (পৃথ্বী) তিন সাত বার॥
বড়ই কৌতৃক কথা কহ মুনিবর।
ভোমার কথা শুনিতে মোর হরিষ বিস্তর॥

(502)

মূনি বলেন রামচন্দ্র শুন সাবধানে।
পরশুরামে অর্জ্জুন মারিল যে কারণে ॥
মন দিঞা শুন তুমি দশরথের নন্দন।
অপূর্ব্ব কথা কহি শুন রাক্ষ্য বানরগণ॥
অমৃত থাই জত সস্তোয় পাই মনে।
তেতাধিক তৃপ্তি পাই এ কথা শুরণে॥
দিগবিজয় করিঞা বেড়ায় অর্জ্জুন নূপতি।
সকল রাজ্য জিনিয়া রাজরাজচক্রবর্তী।
বিদ্রুনগরী নদীর কূলে নগর রত্মাবতী।
বিদর্ভ নগরে রাজা ভোজ নূপতি॥\*১০
তাহারে জিনিঞা গেলা করিঞা শকতি।
জিনিতে নারিলে রাজ্য ভোজ নরপতি॥
নানা টাট করে ভোজ করে নানা মায়া।
মেঘাগম কোথাহোঁ করে কোথাহোঁ।

আগু অন্ধকার করে মেঘ গর্জনে ।১৫
তবে টাটক দিল অগ্নি বরিষণে ॥
আগে ভঙ্গ দিলেক জত ঘোড়া হাণী।
তবে ভঙ্গ দিলেক জতেক সেনাপতি॥
তবে পাছে ভঙ্গ দিল সহস্রঅর্জ্জুন।
রণে হারিঞা আইল মৃনির তপোবন ॥২০
নিদাব সময় সেই জাও মাস।
তপোবনে বহিলা রাজা করিঞা উপবাস॥
ঘোড়া হাথী রাজার জতেক পাওদল।
তপোবনে পাইল কটক সরোবরের জল॥২৪

\* সিন্ধু নদীর তীরেতে নগর রক্নাবতী। বিদর্ভ নগরে বৈশ্য ভোজ নরপতি॥ গ, পুথির পাঠ। (500)

(308)

উপবাসে কটক বহিলা শুতিঞা।

যমদ্যিমুনি আইল রাজার শব্দ পাইঞা
পাদ্য অর্ঘ্য দিল মুনি ঘরের ব্যবহার।
মুনির চরণে রাজা হৈলা নমস্বার ॥
কুশল বার্ত্তা পুছে মুনি রাজার বিদ্যামানে ৫
রাজা বলেন সকল কুশল তোমার বরদানে॥
দিগবিজাই করিঞা আনি নেড়াই
দেশে দেশে।

ভোজ নামে রাজা রত্নপুরীতে বৈদে॥ জিনিতে নারিল তাকে মায়ার বিশেষে। তোমার তপোবনে আসিঞা করিল প্রবেশে তোমার তপোবনে বুদি করিব উপদেশ ।১১ ভোজ রাজানা জিনিলে কেমতে জাব দেশ॥ মুনি বোলেন্ত আলি তুমি করহ বিশ্রাম। ভোজ রাজার সনে কালি করিছ সংগ্রাম दिना अवर्गिष देशन मिवम अवमान ।: ६ আমার ঘরে অতিথ হয় করহ ভোজন॥ মুনির বচন ভনিঞা হাসিলা নুপবর। এক। কেমতে ভূঁজিঁব ছাড়িঞা অমুচর॥ কটক উপবাসে আছে আমি করিব ভোজন। একাকী ভোজন করিলে নরকে গমন॥२० মুনি বলেন রাজা জতেক কটক তোমার। কটক সহিতে তুমি অতিথা আমার॥ মুনির বচন রাজ। করিতে নারেন আন। রজেপাত্র লঞা রাজা করিছেন অনুমান॥ রহাইল কটক মুনি দিক্রা আশোমাস।২৫ নিশ্চয় জানিঞা গাইল পণ্ডিত কুত্তিবাস।

পাত্র মিত্র যোদ্ধ সব যতেক সেনাপতি সভেঞি বদিয়া করেন যুগতি॥ মভার কথা গুনিঞা হামেন মুনিবর। রাজা সন্তাযিকা মুনি গেলা আপনার ঘর কপিলার চরণে গিঞা কৈল নমস্বার।৫ রাজা অতিথ করিল তোমাবে দিল ভার॥ শুনিঞা মুনির কথা গাবীতে উঠে হাস কুড়িআ বেঢ়িঞা হৈল বিচিত্র আওফাস রাজা বোলেন্ত ভোমার পুণ্যস্থান তপোবন। পালিব তোমার বাক্য স্থরূপ বচন ॥১০ সপ্তসাগর বলিঞা করিল ধেয়ান। তাদে সপ্তদাগর আইলা মুনির বিদ্যমান গব্য ন্বত দ্ধি হ্রগ্ধ আনিল আপার। মুনির চরণে আধিঞা করিল নমস্কার॥ অস্থ লবণ রত্নাকর জলনিধি অমৃত \* 1১৫ মুনিকে বেড়িঞা সভে রহিলা চারিভিত॥ মুনি বোলেন্ত সপ্তসাগর আইলা আমার हाई।

জাহাকে জে চাহি তা ততক্ষণে পাই।
বিজয় করি রাজার ঠাই গোলা মুনিবর।
মুনি বলেন শুন তুমি রাজরাজেশ্বর॥২০
তপোবনের বৃক্ষছোয়া বড় স্থানীতল।
জেই জার যোগ্য সেই করুক আপন স্থল
তৈল্যাগরে তৈল স্থান জল্যাগরে।
নানা ফল খাত জে জতেক পারে॥

<sup>\*</sup> লবণ ইকুকীর নীর আ দি দধি যুত। দ—গ, পুঁথির পাঠ।

(500)

মুনির বরে তপোবনে হৈল নানা ফল।
ফল থাঞা লোক সব হৈলা স্থানীতল।
হেন বেলে রাজার ঠাই মুনি গেলা।
স্নান সন্ধ্যা কর হৈল ভোজনের বেলা।
রাজাকে বেঢ়িঞা বসিল সৈত্য কোটি।
কোটি।
কোটি।
কোটি।

মুনির ঘারর কথার শুন পরিপাটি॥

অগ্নি আরাধন করিল মহামুনি।

দশ সহস্র কন্তা আইল পর্ম কামিনী॥

মুনির আগে দাগুইলা জোড় করিঞা হাথ

মুনি বলেন সকল কটকে আনিঞা দেহ

ভাত॥১০

অষ্টসহস্র কন্তায়ে অন দেস তুরিত। আর সহস্র কন্তাকে বলেপ্ত আনিঞা দেহ ম্বত॥

আর সহস্র কন্তাকে বোলেস্ত থাকহ আম।র •পাশে।

দধি ছগ্ধ আনিকা দিবে ভোজন অবশেষে॥
ভোজন করিতে বসিলা পাত্র প্রধান।১৫
হাসিকা হাসিকা কন্তা দের শাল্যন॥
পরমান পিষ্টক দেস্ত সোণার থালে।
অমৃতের ভাগু কন্তা সব ঢালে॥
লবণ সমৃদ্রে আনিকা যোগা এ লবণ।
ঘত লবণে জড় করি সভার ভোজন এ২০
পরমান সিন্ধান লাড়ু পিষ্টক।
চিনি নবাতথণ্ড দের মর্ত্তমান কদলক॥
শাক হৈতে দিল উনপ্রধাশ ব্যঞ্জন।
নানা উপহারে কটক করিল ভোজন॥

(505)

পালাইল দারিন্ত্র্য জালা পাইল পঞ্চনিধি।
কদলক মন্ত্রমান দিল হুগ্ধ দধি॥
মহান্ত্রথে সকল কটক করিল ভোজন পান।
আঁচমন করিঞা সভে গেলা রাজার স্থান॥
সর্বলোক কোলাহলে পরম সানন্দে।
পোণা রূপার থাল নেয় কেহো বাটাবাটী
বাস্কে॥

নানারত্ব নিঞা মূনি গেলা রাজার স্থান। রাজাকে কল্যাণ করিল শাস্ত্র বিধান। রাজমন্ত্রী স্থুখী হৈল সকল পাত্রভাগে। সভা পরিভাষ করিঞা মূনি পরিহার মাণ্ডে॥১০

রাজা বলে গোসাঞি আমি বড় ভাগাবান।
নানা স্থপে ভূজিল পাইল নানা দান॥
রাজা পুরস্করিঞা মুনি গেলা নিজ স্থান।
মান সন্ধ্যা করিঞা মুনি ক রিল ভোজন পান
রেণুকা সনে মৃনি কছেন্ত সব বাণী।১৫
বুচিল সব আওয়াস রহিল কুড়িআ থানি॥
নদনদী উপাইল সপ্তসাগর।
তপোবনে রহিল মাত্র মুনির কুড়িআ ঘর॥
কুড়িয়াতে ভিতর আছে কামধের গাই।
জেই জ্পন মাগিএ তাই তথন পাই॥২০
কটক বলে সেবা করিল রাজার অনেক
বৎসর।

ইহা ধন বসিঞা থাব এহো জন্মান্তর ॥ সোণার থাল সোণার গাড়ু সোণার বাটাবাটী।

উভালিঞা চাহে কটক নাহি এক গোটাঃ২৫

(309)

ধনের তাপে কটক গুণিল হাতাস। উপগারে শত্রু হইল গাইল ক্তিবাস॥

পাত্র মিত্র জে জত সব গেলা রাজার স্থান মন্ত্রিগণ লঞা রাজা করেন অমুসান॥ মাথায় জটা ধরেন মুনি পরিধান বাকল। ৫ তপের প্রসাদে স্জিল মুনি মধুর ফুল ফল॥ একথানি কুড়িমা দোদর নাহি আর। এতেক কটকের মোর করিলেক পুরস্কার॥ রাজার অমুচর কুড়িআতে দিল উগি। লক্ষী অধিষ্ঠান আছে এক গোট গাবী।।১০ রালার আগে বার্ত্তা কহে সকল ভূতাগণ। সর্বাঙ্গে স্থনর গানী অতি স্থলকণ। চক্রের হেন তেজ গলার জ্যোতি। ত্বই চক্ষু দেখি যেন প্রভাতের স্থাকান্তি॥ ছই কর্ণ জেন প্রবালের ঝারা।১৫ নানারত্ব ছই শৃঙ্গী মণি মাণিক হীরা॥ ठक्तवननी शावी (ठोत्रम ननाउँ। কালবর্ণে স্থরেগ ক্রহি ছই পাট॥ উক্ন নিতম্ব সব দেখিতে স্থব্দর। লেঞ্চের লোমাবলী ষেন খেত চামর॥২০ চারি পাএর খুর জেহু স্বর্ণের কান্ডি। দেখিতে স্থানর গাবী মোহন মুরুতি॥ চারি বাটে গাবীর সদায় ক্ষীর ঝরে। যাহার ক্ষীরের তেজে ত্রিভূবন তরে॥ এক বাটের ফীরে জীএ সপ্তপাতাল ৷২৫ আর বাটের ক্ষীরে জী এ অষ্ট লোকপাল।

(304)

তৃতীয় বাটের ক্ষীরে জীএ ব্রহ্মা বিষ্ণু মহেশ্বর চতুর্থ বাটের ক্ষীরে ভরে ক্ষীরোদ সাগর॥ नहे गानी खी त्गामािक यात एक वत । ধনপুত্র পারে সে হর অজয় অমর॥ মন্ত্রীভাগ বলে রাজা কি চাহ অমুমান। c সভেই বলিল গাবী মাগিঞা নেহ মুনিস্থান॥ পাত্রভাগ বলে রাজা জবে কটক। তিঃ। সভার ভরণ করিবেক কামধেমু গাই॥ অর্জুন রাজা চিস্তে বসিঞা সভামাঝ। মুনির গাবী মাগিঞা লব এহো বড়লাজ ॥১০ পাত্রবলে রাজা শুনহ বচন। কামধেনু গাবী বটে বড় স্থলকণ ॥ জে চাহিলে তাই পাই গাবী দেঅ দান। হেন গাভী নিতে তুমি কেন ভাব অনুমান ॥ यिन ना दमग्र भावी जत्त दम्द्रभ नाहि दर्शावा ३६ প্রীতে না দেয় তবে বলে কাঢ়িঞা লব॥ সভাকার বচনে রাজা মানিল যুগতি। গাবী মাগিঞা নিব আমার লইলেক মতি ॥ মূনির ঠাই পাঠাইল রাজা পাত্র প্রধান। রাজার আজ্ঞাতে মুনি আইলা রাজার স্থান । মুনির চরণে রাজা হৈলা নমস্বার ।২১ একদান মাগি মূনি জদি করঅঙ্গীকার॥ জোড় হাথে বলেন মূনি রাজার সন্নিধান। না জানি আমাকে তুমি মাগ কোন দান॥ তোমার ঘরে আছে গোসাঞি কামধের গাই দেই গাবী গুটী আমি মাগিতোমারঠাই॥२৬ প্রীতে দেহ অপ্রীতে দেহ অবশ্র নিব গাই, মুনির পৌরবে আমি মাগি তোমার ঠাই॥

(600)

(>>0)

রাজার বাক্য শুনিঞা মুনি কহে বিদ্যানা।
রেণুকা সঙ্গে গাবী স্থানে করিঞা অনুমান॥
চিত্তে হুঃথ ভাবেস্ত মুনি শুনিঞা রাজারকথ
বিরদ বদনে ঘর গেণাহ ঠকরিঞা মাথা॥
রেণুকা বলেন প্রেভু কেছে বিরদ বদন।
লোহে ভরিল নয়ন কেনে করহ ক্রন্দন॥
মুনি বলেন প্রিয়ে না জান কারণ।
কামধেমু মাগেস্ত রাজা অর্জুন॥
কুড়িআতে সামাইঞা গাবীর চরণ বন্দে।
ধরিঞা গাবীর চরণ মুনির পত্নী কান্দে॥১০
রাজার কটক অভিথা করিল তোমার

ভালর তরে অতিথ্য করিল হইল প্রমাদ॥
রাজা হঞা দান মাগে মনে বিশ্বর করি।
উহার রাজ্যে বসতি করি কোন বৃদ্ধে তরি॥
গাবী বলে মুনি জদি দিলে তুমি দান।>৫
ইচ্ছা স্থেথ তবে আমি জাব রাজার স্থান॥
মুনি বলেন মা গো নাহি করি দান।
বলে নিতে চাহে রাজা করিঞা অপমান॥
এতেক বলিল মুনি গাবীর চরণে।
কুপিল কামধেরু রক্ত লোচনে॥২০
কামধেরু বলেন বাছা না করিহ ডর।
কাহার শক্তে নিতে পারি আমি কাহার
কুপরি॥

গাবীর কণা শুনিঞা মূনিতে উল্লাস। উত্তর কাণ্ড রচিল পণ্ডিত কৃতিবাস।। মুথ হৈতে তেজঃপুঞ্জ হুজে রথখান !
সহস্র ঘোড়া বহে রথ বিচিত্র নির্মাণ ॥
নানা অন্ত রণের উপর দেখিতে ভয়ন্ধর ।
জাঠি বাগড়া গদা টাঙ্গী মুঘল মুদগর ।।
গায়ে সাক্রা মাথাতে টোপর হাথে ধন্ধক
বাণ। ৫

রথে চাপি ঞা মুনিরাজ করিল পয়ান।। যজ্ঞ আরাধিল মূনি পশুপত দেবা। স্থন্দর শরীর হইল জেন পুনরবা (?)।। দশ সহস্র মত্ত হক্তী জত বল ধরে। তত বল হৈল যমদ্গ্রি মূনির শ্রীরে।।১০ হাপে গাণ্ডি লইল মুনি যুঝিবার মনে। সহস্র বাণ পুরিঞা লইল উনে\*। গাবী প্রদক্ষিণ করিঞা মূনি রূপে গিঞা চচে याजा मन्नन कतिका मृति युविवादत नए ॥ মুনিরাজ রথে চড়ে জেন স্থরপতি।১৫ চক্রমণ্ডল জিনিঞা মাথাতে ধরে ছাতি।। চতুরঙ্গ বল যোদ্ধ দেনাপতি। চিত্র গতি নামে রণের সার্থি॥ মুনিরাজ যুঝিতে গেলা গাবী চিস্থিত। গাবীর মথে হৈতে ক্ষেত্রী বাহিরায় চারি-ভিত্যা২০

উদরে হৈতে বাহির হৈল জাতি উলান।
চক্ষে হৈতে বাহির হৈল জাতি চৌহান।
পাএ হৈতে বাহির হৈল জাতি পাঠান।
খুরে হৈতে বাহির হৈল জাতি গোরাসান।

(\$ 0 5)

(>><)

ললাট কৃটি ঞা গানীর বাহির হৈল কাল
ঘাম।
ললাটি আ বলি ঞা কেত্রীর হৈল নাম।
কাণে হৈতে বাহির হৈল তাহার নাম

কণলাল । শুহু বার হৈতে বাহির হৈল তার নাম গল\* ।

জিহবা হৈতে বাহির হৈল জাতি জিবনা। গোনি দ্বার হৈতে বাহির হৈল তার নাম জোনা॥

নাকে হৈতে বাহির হৈল জাতি নিসাবলী।
কঠে হৈতে বাহির হৈল জাতি সিবাকুলী॥
লেঞ্জে হৈতে বাহির হৈল জাতি নিগড়।
পাশে হৈতে বাহির হৈল জাতি পাশড়॥১০
মহাবংশে জন্ম হৈল জাহার জন্ম হৈল শৃঙ্গে
বান্ত্বকী বলিঞা তাহার বসত তেলেকে॥
কুলে শীলে রূপে গুণে বলে রূপে অভুতা
ছয়কুল ছত্তিশ জাতি হৈল রূজপুত॥
কুড়িআতে ভিতর আছে গাবী নহেত

চৌরাশি লাথ হৈল ক্ষেত্রী রণে মহা বীর॥
বাজনদার সিলইদার আর সানীদার।
চিণ্ চণ্ডা গাছল বন্ধল ভাটি কয়বার॥
ফলাকার ফরিকার থাণ্ডার চিকিমিকি।
অউনিঞা পাইক যুঝার ধন্ধকী॥২০

মল ছারে বাহির হৈল জাতি মোগল।
 গ পুশির পাঠ।

রাউত্বড় চলিল চাপিঞা ঘোড়াখু ছী।
হাথে অন্তের রণস্থলে জাএ রড়ারড়ি ॥
ঘোড়া সব জাইতে বাজে কিন্ধিনী।
হস্তীর ঘড় জাইতে বাজে ঘণ্টার চন্ চনী॥
কোটি সহস্র চলিল পর্ব্বতীয়া ঘোড়া।
কোটি সহস্র মত হস্তী জেন পর্বতের চূড়া॥
সিংহনাদ ঢাক ঢোল নানা বাদ্য বাজে।
একচাপে কটক জাএ সংগ্রামের মাঝে॥
রথের উপর মুনিরাজ জেন পুরন্দর।
তিনির বিনাশিতে জেন উঠিলা ভাদ্রর॥১০
শুনিঞা মুনির কথা শ্রীরামে উঠে হাস।
উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

রথের উপর মুনিরাজ আবে ক্ষেত্রীগণ।
ছই কটকে দেখাদেখি ছুর্জ্জর বাজিল রণ॥
মান্ন্র্য কটক মারিঞা বুলে ক্ষেত্রী বল।১৫
ভার সহিতে নারে পৃথিবী করে টলবল॥
ক্ষেত্রী সব যুদ্ধ করে মান্ত্র্য না ধরে টান।
ছই কটকে বল করিঞা হৈল শরীরখানখান
পালায় মান্ত্র্য সব ছাড়িঞা তপোবন।
ক্ষেত্রীর চাপ দেখিঞা কুপিল রাজা অর্জ্র্ন॥
আকর্ণ পূরিঞা রাজা এড়ে নানা বাণ।২১
রণ সহে ক্ষেত্রী সব অশঙ্ক পরাণ॥
সহস্র হাথে করে রাজা বাণ বরিষণ।
ভাগিল ক্ষেত্রীগণ সহিতে নারে রণ॥
যাদগ্রি মৃনি করে বাণ বরিষণে।
জারে জারে বাজে বাণ তার না রহে জীবনো

(250)

ছুই কটকে যুঝিঞা মরে রণের বিবাদী। त्राकु शूर्व इ.का वर्द्धन गर्मामा नमी ॥ शिविनी भुशानी करत भाश्य छक्त। তুই হাথে মুঞ্জ করিঞা নাচে ভূতগণ॥ সুনি রাজাতে দেখা হৈল এই জন। ৫ ছুই জনের বাণ বরিষণ সহে ছুই জন॥ ্নানা বাণ এড়ে মুনি মন্ত্র স্থরণে। বাণে ফুটিঞা রাজা মোহ গেলা রণে॥ ভ্ৰিতে প্ডিঞা ৱাছা হৈঞা অচেতন রাজাকে এড়িঞা পালায় সকল সৈন্তগণ।। কথোকণে বাজা পাইলেন স্থিত।১১ সার্থি রথ জোগায় ত্রিত॥ লাফ দিঞা অর্জুন রাজা রথে গিয়া চঢ়ে। সহস্র হাথে সহস্র বাণ ধন্তকে যোড়ে॥ একবারে এড়ে রাজা পাঁচশত বাণ।১৫ মুনির গ্রের সাহাটোপর করে থানথান খান খান করিয়া পেলে সাহল টোপর। সর্ব্বাঙ্গে ফুটিলা মূনি হৈলা জর্জ্বর॥ সর্কাঙ্গে ফুট জা মুনি হারাইল স্থিত। মুনি এড়িঞা ক্ষেত্ৰীবল পালায় চারিভিত। পালায় ক্ষেত্ৰীয়ল সাম্ভাইল তপোৱনে ২১ বেথা সম্বরিঞা মুনি পাইল চেনে আপনা সম্বরি গু। মুনি রথের উপর চড়ে। অর্জ্ব, ন রাজার উপর মূনি নানা অন্ত এড়ে ব্ৰহ্ম অন্ত এড়ে মহাধ্যি। রাজার কটক পোডাইঞা করে ভত্মরাশি॥ বরুণ বাণ রাজা করিল অবতার ৷২৭ নিভাইল অগ্নিরাশি হৈল জ্লাকার॥

(8:4)

নিজ মারা ধরে রাজা সহস্র অর্জ্জুন ।
সেই মারাতে রাজা হৈলা অদর্শন ॥
সহস্র বাহুতে বাণ বর্ষে ধন্তুকে দিঞা চঢ়া।
বাণে কাটিঞা পেলে রপের অন্ত ঘোড়া ॥
ব্রহ্ম অন্ত এড়ে রাজা সহস্র অর্জ্জুন । ৫
সর্কাঙ্গে ভূটিঞা মুনি হৈলা অচেতন ॥
সহস্র হাথে মুনিকে মারিল গদার বাড়ী।
পড়িলা জমদল্লি মুনি যার গড়াগড়ী ॥
গড়াগড়ী জান মুনি ঘাএ অচেতন ।
মুথে রক্ত উঠে ঘন বহে পবন ॥১০
তপোবনে সামাইল ক্ষেত্রী কোটা কোটা।
ঘাএর ডাহে সবেঁই করেন ছটকটী ॥
গুনিঞা মুনির কথা সভাগতে চমৎকার।
কৃত্তিবাসে উত্তরকাও গাঞা দিল সার॥

বিরথী হৈঞা মৃনি লোটার ভূমিতলে। ১০
হাথে ধন্থকে মুনি লোটার চারিপানে ॥
সর্কাঙ্গ পুডিল মুনির বাণঅগ্রিজালে।
মূনিকে ধরিঞা নাম্বাইল নম্মদার কূলে ॥
তীরে মুনির শরীর জলে ছই পা।
প্রাভূ প্রাভূ করিঞা ধাইলা রেণুকা ॥২০
সতী পতিব্রতা নারী ধাইল আইদড় চুলী।
মূনির চরণ ধরিঞা লোটাইঞা বুলে ধূলি ॥
ভূগুবংশে জন্ম পুত্র তোনার মহাতপোধন।
মাত্রে মাথা কাটিঞা বাপের করিলেক
আজ্ঞা পালন॥

ছইজন মহাগুরু জানি মাতা পিতা।২৫ বাপের মত্যুপালিতে মায়ের কাটিকেক মাথা (550)

(335)

মাকে কাটিঞা বাবের মতা করিলে পালন রাজত্ব ছাডিঞা তপস্থা করিলে তপোধন।। তপ করিলে মুনির বাচে পরমাই। তথের প্রসাদে পাইলে কাম্পের গাই । জে গাইর প্রসাদে বাজাকে আতিথা।« সেই গাই নিতে রাজার বড হইল চিত্র॥ এতেক বিলাপ করেন মুনির ব্রাহ্মণী। হোথা সকল কটকে রাজার বেচিল কুটিসা भ! नि ॥

আতি ব্যথে ব্রান্ধণী সাম।ইল কুড়িআ ঘরে কুড়িআতে ভিতর গাবী আছে বসিঞা क्रजादि ॥५०

গাবী ধরিঞা আন রাজা ঘন ডাক ছাড়ে। পাত্রমিত্র সব আমাত্য মুনির কুড়িআ বেচে॥ পাইক রাউত ধাইল জতেক অনু হর। িনিয়ত হৈতে নারে কেই সভাকে লাগে ভর शाबी आम शाबी यान तांका वरल वारत वाद्य । ३६

মুনির ব্রাহ্মণী দারে কেই আসিতে না পারে ্হীরামণি মাণিক জ্তু মুনির কুডিআ থানি। ংহন কুড়িআতে হৈতে গানী বাহির হৈলা তাপনি

বাহির হঞা গাবী চারিপানে চাহে। পর ধর বলিঞা রাজা অর্জন ধাত ॥>० ठळिकिता धाय करेक शतम इतिता। অন্তরীক হৈলা গাবী উঠিলা আকাশে॥ সকল কটকে দেখে গাবী উঠিল গগনে। অর্জ্জন রাজা রুপে চটিঞা ধার পবন গমনে প্রন গ্রমন জিনিএগ গাবীর গ্রমন আকাশে না পাইঞা গাবীর লাগ রাজা নেওটিঞা আইসে॥ গাবী না পাইঞা রাজার বিরুম বদন।

আপন কটক লঞা রাজার দেশকে গমন॥ অনেক কটক পড়িল অনেক ঘোড়া হাথী। মৈন্ত সামন্ত প্রিল অনেক বোদ্ধপতি॥ অপমান পাঞা রাজা গেলা আপনার দেশ। মাহেশ্বতী নগরীতে রাজা করিলা প্রবেশ। সিংহাসনে বসিলা রাজা সহস্র অর্জন। স্থান সন্ধ্যা করে রাজা অমূত ভোজন॥১০ সহস্র স্তব্দরী লঞা রাজা করে উপহাস। উত্রকাও গাইল পণ্ডিত কুভিবাস॥

তপোৰনে জত পড়িল ক্ষেত্ৰীগৰ। কেহো প্রাণ ছাড়ে কেহো ঘাত জচেতন। তুই কটক খুৰিঞা পড়িল কোটা কোটা। যাএ জর্জন করে ছটপটি \* ॥১৬ কাথে করিঞা লইল সব অমৃত কল্মী। জেখানে পড়িঞা আছে কটক রাশি রাশি॥ সভার মুথে অমৃত দিঞা বলে ঋষির রাণী। ঘা বেথা পালাইল জুড়াইল পরাণী॥

\* ঘাএ জর্জারিত সভে করে ছটপ্রী॥ कारथ कता। दिलल (तनुका अमुक्कलमी। রণ করিয়া কেত্রীগণ পড়াছে রাশি রাশি॥ সভার মুখে অমৃত দিল মুনির রমণী। বেদনা হইল দূর জুড়ালা পরাণী। श श्रृंभित भारे।

(>>9)

(224)

মতীর বচন বার্থ নহে তিনশোকে জানে। নিতে নারে যমে সভে জীলা পরাণে ॥ অন্তত তপোৰন নানা ফল ফুলে। ফল থায় ঘা পালায় সভেই হর্ষিত মনে॥ এতেক বলিয়া রাণী গেলা মুনির পাশ।¢ ঘাত জর্জন মুনি ঘন ছাড়ে নিখাস।। পরম ভক্তি করিঞা রাণী স্বামীর চরণবন্দে । त्रामीत हत्। धतिका आयत्नसारन कारन ॥ প্রেত পিচাস গন্ধর্ম বিদ্যাবর। মহারৌরব হৈল মূনিএ ভরন্ধর ॥১০ রক্তমাংস থাঞা বলে স্থগনা স্থগনী। গায়ের মাংস শুগাল করে টানাটানি॥ ধর্মানতা পাল প্রভু মহাতপোধন। আর ভৃগুর সনে তোমার নাহিক দরশন॥ মরিবার তরে করিলে অর্জ্জন সনে সংগ্রাম 150

ভাৰত থাকুক তোমার প্রাণ যবিত না আইদে ভূগুরাম॥

পতিবতা ধর্ম মোর কভু আন নহে।
আইস্থক ভৃগুরান তবেদি প্রাণ জাইহে॥
ভূমি না শাপিলে অর্জুনকে ধর্ম প্রতিভএ
আমি শাপ দিব তাকে ফলিব নিশ্চএ॥২০
ভৃগুরামের বংণে অর্জুনের কাটিবেক মাধা।
ভাহার সহস্র বাহু আমাকে সাজ্ঞিগ দিবেক

রেণুকা জন্ম হৈল আমার নাম বেদমাতা। রেণুকা নাম ধরিল আমার আমি জার ছুহিতা॥

চিতা ৷

স্বাদীর সঙ্গে মরিঞা আমি স্বর্গপুরি জাব।
কত ধনের তরে বাপু তুমি মহাদেব সেব॥
তুমি খেন মহাপুক্ষ জন্মিলা আমার উদরে
তোমা হেন পুত্র থাকিতে তোমার বাপকে
মারে॥

পুত্র হঞা মা বাপের তুমি ছঃথ নাহি জান। হেন পুত্র তবে থাকে কি কারণ॥ ঠাকুরাল কবিলে তুমি না পুষিলে মা বাপ। তুমি মোর যুড়াহ বাপু হৃদয়ের তাপ॥ তপোবনে থাকিব আমি কাহা সনে করিব যুগতি।

মহাভয়ন্বর বন আইল কাল রাতি॥১০ তপোবনে কাহা সনে কহিব কাহিনী। সন্ধিত দেহ প্রভু থাহ আহার পানী॥ ফল থাহ প্রভু মোর হয় স্থাতিল। চেতন করহ সন্ধিত দেহ প্রাণ মোর কান্দিঞা বিকল॥

ক্ষেত্রীর ভিতর ভৃগুরাম মুনিতে মহামুনি। হেন পুত্র ভৃগুরাম তাহার না পাইলে আগুনি॥১৬

কিদের তরে দেব বাপু উমা মহেশ্বর।
বৃদ্ধ বাপ দেখিতে তুলি আইস সত্তর।
এতেক বলিঞা দেবী ছাড়িল নিশাস।
উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত কুতিবাস॥২০

হা কান্দনে কান্দে রেণুকা বুক নাহি বান্ধে ভৃগু ভৃগু বলিঞা দেবী উচ্চশ্বরে কান্দে॥

(666)নশ্দার কুলে দেবী করিছেন জন্দন। ্হোথা কৈলাস পৰ্কতে ভৃগু দেখিল স্থপন নিদ্রাভঙ্গ হৈলে ভৃগুরাম পাইল গেফান মনে মনে চিন্তে ভৃগু করেন অনুমান। আমার বাপকে মারিল সহস্রবাহ অর্জুন। আমাকে নিশিঞা মা আমার করিছে ক্রন্সন মহাদেবের ঠাই ভগু করিল গমন। মহাদেবে মেলানি করিঞা জাব তপোবন॥ রাজদারে ভৃগুরান উচ্চশ্বরে কান্দি। ভগুর জন্ম ভনিঞা কপাট ফেড়িল নন্দী আমার হঃথের কথা শুন নন্দী ভাই।১১ মহাদেবের দেখা আমি কোন মতে পাই। এতেক বলিঞা আর দার জাএ শীঘ্রগতি। সে দ্বারে আছেন দ্বারী হৈঞা গণপতি॥ গণেশে ডাকিঞা বলে ভৃগু আগন উত্তর। আমার বচন গিঞা কর গোসাঞিগোচর॥ আমার বচনে ভৃগু কর অবধান।১৭ কেমতে জাইব আমি মহাদেবের স্থান॥ বাপ মা আমার নিদ্রা যায় স্থবর্ণের থাটে। এতেক রাত্রি কেমতে জাব তাঁহার নিকটে॥ হাস পরিহাস করিতেছেন গুই জনে। পুত্র হৈঞা আমি যাইব কেমনে ॥২২ রাত্রি প্রভাতে হব অরণ প্রকাশ। তবে জাইব ভৃগু, মহাদেবের পাশ॥ এতেক কহিল জবে হরের নন্দন। ভনিকা কুপিলা ভৃগুরাম গণেশের বচন ॥

महिरंड नातिल इंश रहन निमारे।२१

লাথির যাএ যুচাইল দারের কপাট॥

(>>)

কপাট ভাঙ্গিঞা ভুগু করিল গ্মন। গণেশে ভৃগুরামে বাজিল মহারণ॥ তুই বীরে রণ করে তুঁহে রাজার কুমার i চড় চাপড় মৃটুকা মৃটুকী দাকণ প্রহার॥ কেহো পড়ে কেহো উঠে রণ বাজিলগুইজনে অদ্তুত সংগ্ৰাম হৈল সেই স্থানে॥৬ মহা বীর ছাই জন রণের প্রচেও। ছুই বীরের বাণে ছুই বীর হৈলা খণ্ড খণ্ড॥ ভৃগুরামের রণের কিবা দিব সিদ্ধান্ত। রণের তেজে উপাড়িল গণেশের দাঁন্ত॥\*১০ যাএ অচেতন গণেশ পড়িলা ভূমিতলে। হাথে দন্ত করিঞা ভুগু গেলা মহাদেবের আগো ৷

আধর দাবে সামাই ভুগু রাজবিছনে। বাপ বাপ বলিঞা ভৃগু উচ্চস্বরে কান্দে।

রোদন করিঞা ভূগু আপনাকে নিদে॥১৬ ভৃত্তর ক্রন্দন শুনিঞা জাগিল। ত্রিলোচন। মহাদেব বলেন ভৃগু কান্দ কি কারণ॥ ভুগু বলেন শুন গোসাঞি আমার বচন। নিদ্রাকালে দেখিল কুম্বপন॥

ঘাএর ভাহে গণপতি হৈলা অচেতন। মুথে রক্ত উঠে ঘন বহেত প্রন॥ যাএর ডাহে ভূমে পড়ি ছাড় এ নিখাস। হাথে দন্ত ভৃগু জায় মহাদেবের পাশ 🛭 অন্ধকারে ভৃগুরাম সাম্ভাল্য ভিতরে। বাপ বাপ বল্যা ভৃগু কান্দে উচ্চস্বরে॥ গ, পুঁষির পাঠ।

(525)

আমার বাপকে মারিলেক সহস্র স্কুন

\* \* \* \*

সকল তত্ত্ব জানিঞা বলেন্ত শূলপাণি।

নানা অন্ত মন্ত্র শিখাইল তথ্নি॥

মহাদেব দিল পরগুরামকে নানা সন্ত্র-াশফা : ৫

তুমি অন্ত জুড়িলে কারো নাহিক নিন্তার ॥
ভূগুর কাণে কথা কহেন্ত ত্রিপুরারি।
জিনিলে মরণ তুমি নানা অন্তবারী ॥
অজর ধরুক দিল টাঙ্গি থবসান।
ছুই টন পূরিঞা দিল নানা বর্ণের বাণ ॥১০
ভূগুর কাণে মহাদেব কহেন অন্তব্ম ঝরণ।
অন্তব্দ হবে তুমি জিনিবে বিভূবন॥
সকল শাস্ত্র জানিল আদি জন্ত।
হন বেলে দিল ভূগু গণপতির দন্ত॥
বড় দারুণ কর্মা করিল গোসাঞি বড়ই
প্রমাদ।১৫

আনে খণ্ডিতে নারে গোচাঞি আঁমার অপরাধ

ভৃগু বোলে শুন গোসাঞি ত্রিদশের নাথ
অপরাধ ক্ষেম মোকে জ্রোড় করেঁ। হাথ।
মহাদেব বলেন্ত ঝাঁট পালাহ ভৃগুপতি।
জাবত জাগেন নাহি দেবী পার্ক্বতী॥২০
সেবক বৎসল দেব শূলপাণি।
ক্ষেমিলেন সকল দোষ দিলেন্ত মেলানি।

\* আমা স্বাভরিয়া সাজা করিছে ক্রন্দন।
শোকে কাতর হয়া রাত্রে আসার গমন॥
শোকেতে কাতর আসি কিছুই না জানি।
কোন কাষ্য করি গোসাঞি শুন শ্লপাণি॥
গ, পুঁথির পাঠ।

(১२२)

মেলানি করিঞা ভগুরাম জায় ঘর পুত্র দেখিতে আইলা ভোলা মহেশ্বর ধূলা ঝাড়িঞা পুত্র করিল কোলে। পদা হস্ত বুল।ইল পুত্রের কুছস্থলে॥ মত্রে পুত্র দঢ় করিল পশুপতি।« পুত্রের বার্তা পাইঞা ধাইলা পার্ক্তী॥ কোনজন করিল এতেক প্রমাদ। আমার পুত্র মারিকা জীবার বড় মাধ॥ আমার পুত্র মারিতে কাহার অহস্কার। আজি ত্রিভুবন মুঞি করিবোঁ সংহার॥১০ মহাদেব বলেস্ত শুন দেবের গতি। ইহার দম্ভ উপাড়িলেক ভগুপতি॥ তাহার বাপকে মারিলেক সহস্রবাহ অর্জুন দার এড়িঞা না দেয় গুই ভাইতে রণ॥ শুনিঞা দেবের কথা জতেক আদি অন্ত। এক মুণ্ড এক শুণ্ড রহিল একদন্ত ॥১৬ একদন্ত উপাড়িলেক ভৃগুরাম। একদন্ত বলিয়া গণেশের হৈল নাম॥ একদন্ত মহাপুক্ষ বীর মহাকায়। আগু গণেশের পূজা তবেসি আনে পায়॥ আগু গণপতির পূজা পাছু দেবের সমাঝ। একমনে পূজিলে সিদ্ধি হয় তার কাজ॥२২ সিন্দুরে ভূষিত গণেশের তিনয়ন। অবিমেশ্বর দিব নাম গজানন॥ ক্তিবাস গাইল উত্তর রামায়ণ।\*

এগানে 'গ' পুথির পাঠ এইরূপ— "একভাবে দেবে জেই দেব গ্রানন। অবিল্লেখাকয়ে বিল্লনা হয় কথন॥ (52.9)

দুরে হৈতে শুনে ভুগু মারের ক্রন্দন॥

বাপ দেশিকা ভুগু করে হাহাকার।

রেণুকা কথা কহেন ভগুরাম শুনে।৫

অনেক ক্ষেত্রীগণ পড়িল মহারণে।।

मृशांग कुकुत शृथिनी यक किन्नत ॥

বাণের ভাহে কেহ করে ছটপটি।

মায়ের চরণ বন্দিঞা রথের উপর চটি॥

বাহির হৈল ভৃগুরাম সঙ্গে ক্রেতীগণ। চলিল কটক ছাড়িঞা তপোৰন।

রেণুকা বলেন শুন বাপু ভৃগুরাম।১৫

বাঁট অর্জ্রন মার করিঞা সংগ্রাম॥ উহার সহস্র বাহুতে চিতা সাজিঞা।

সতী স্ত্রীর সাজ্ঞা কভুনহে আন।২১ অর্জ্জান মারিতে ভৃগুরাম করিল গয়ান।

বাণের মুখে ভৃগুরাম করিল লিখন।

আমার স্থান নর্মার আইস দোঁহে

মায়ের চরণে ভৃগু হৈলা নমস্বার।

হ'থে গণ্ডিবাণ ভৃগুরাম গেলা তপোবন। রক্ত মাংস খাঞা বেডায় প্রেত বিস্তর। মন্ত্রের তেজে কুঢ়া কৈল সৈন্ত কোটি কোটা সম্বের তেজে দঢ় কৈল ঘোড়ার সার্থ।>: ম। বাপের অগ্নি দেহ তুমি সংযোগ করিঞা ভুগু বলেন ভাল আজ্ঞা করিলে জননী। তোমারআজ্ঞা পালিব অর্জুন মারিঞাআনি

> কৃতিবাস পভিতের জন্ম শুভক্ষণ। জাহার প্রসাদে লোক গুনে রামারণ।"

করিব রণ

(\$\$\$)

আমার রাপকে মারিলে গানীর ছলে। আমি আজি দেখিব তোমার কত বলে॥ আজি বিনা সংহরে কভু না রহোঁ অর্জুন। এতেক বচন লেখে পত্র করিঞা তর্জন॥ खान ७ क विनिका वार्यत धात नाम । « সংবাদ পত্র পাঠাইল ভৃগুরাম। এড়িলেক বাণ ভৃগু জুড়িঞা ধন্তকে। পড়িল আসিঞা বাণ অৰ্জুন সমুখে॥ রাজার সম্মুখে বাণ পড়িল আচ্ছিত। বাণের শব্দে সভাথগু হৈল চমকিত।।১০ হুৰ্দ,র শব্দে পড়িল বাণ জেন বজাঘাত। বাণের মুখে পত্র পাইল লিখনসঞ্জাত॥ রাজার নিকটে বসিঞা আছেন জত পাত্রগণ !

ন জানি হেন বাণ এড়িল কোন জন।। পত্র পঢ়িঞা গুনাইল মূনি সান্তন I>¢ সাৰবানে শুন গোসাঞী সহস্ৰ অৰ্জুন॥ জ্ঞানগুরু বলিঞা বাণের ধরে নাম। তোমাকে পত্র পাঠাইল ভৃগুরাম। রণ হারিঞা তুমি আইলা তপোবনে আতিথ্য করিঞা আমার বাপ রাখিল যতকো ॥২৫

আমার বাপ তোমার করিল পুরস্কার। তাহার সনে রণ কর নহে ব্যবহার॥ বুদ্ধ মূনি মারিলে তোমার মুখে নাহি লাজ। আমার সনে রণ করিতে আইস মহারাজ। ব্রহ্ম বধ করিঞা তুমি লুকাইলিস ডরে 1২¢ তোমার অপয়শ ঘূরিব সংসারে॥

(324)

(:२७)

এতেক বচন শুনিঞা কুপিল অৰ্জুন। क्लाल ताका मूथ देश्न ताका त्वाहन ॥ পুনরণি দিলেক রাজা পত্রে লেখন। তাহার আমার অবগ্র করিব রণ ॥ তাহার আমার রণ নর্মদার কলে।৫ সেই বাণ এড়ে অর্জুন মন্ত্রের বলে॥ বাণের মুখের পত্র পটিঞা ভুগুরাম। নর্থদার কলে আইল করিতে সংগ্রাম। রণ সার্থি ঘোড়া হাথী সৈত্য অপার। দিনে হার্যা অস্ত গেলা হৈল অন্ধকার॥১० রণধূলি উড়ি কা লাগিল গগনে। নশ্বদার কুলে রাছা রহিল অর্জুনে ॥ ছই কটকে দেখা দেখি সংগ্রাম আপার। নানা অস্ত্র গাছ পাথর করিল অবতার॥ ছুই কটকে জুবিঞা মরে রণের বিবাদী।১৫ त्राक्त शूर्व ३००। वर्ष्ट्र नग्यमानमी ॥ পরশুরাম জানে নানা অস্ত্র শিকা অর্জুনের কটক পোড়ে কারো নাহি রকা। অর্জন রাজা বাণ এডে অগ্নি অবতার। ব্রুণ বাণে ভ্রুরাম করিল সংহার ॥২০ ব্রহ্ম সম্ভ এড়েন ভৃগুরাম তপস্বী। অর্জুনের কটক পোড়াঞা করে ভন্মরাশি॥ অশ্বাণ এড়ে অর্জুন তারা হেন ছুটে। প্ৰন বাণ পেলে ভ্ৰন্ত অশ্বাণ কাটে॥ অগ্নিবাণ এড়ে ভৃগুরাম মহামুনি।২৫ চতুৰ্দিগে ছুটে বাণ জলস্থ আগুনি॥ বরুণ বাণ এড়ে অর্জুন মহাবলে। ভৃগুরামের অগ্নিবাণ নিতাই ঞা জ্লে॥

ব্ৰহ্ম অন্ত কেন্দ্ৰের বড়ই প্রতাপ। জত বাণ ওড়ে রাজা সকল হয়ে সাপ।। গগনে ফেণা ধরে মাথাতে ধরে মণি। মুখে হৈতে ধিকি বিকি জলে বিষ আগগুলি। তপোৰনে সামাইল জতেক ক্ষেত্ৰীগণ ic তাহা দেখিঞা হাসে সহস্র অর্জ্জ,ন॥ ভ্রন্থরাম বাণ এডেন নামে পশুপত। স্তবর্ণের গরভ পক্ষ হৈল জেনক পর্বত॥ উধা করিঞা বুলে বাণ গগনমগুলে। অর্জুন রাজার বাণ ধরিকা পরিকা গিলে। তই জনে বাণ বর্ষে নাহিক বিশ্রাম।১১ বিষ্ণুর বাণের তেজে গর্জেন ভৃগুরাম।। গহস্র হাথে বাণ বর্ষে সহস্র অর্জুন। পালায়ে কেত্ৰীণণ ছাডিঞা তপোৰন। কটক রহাইতে ভগুরাম আইসে।১৫ অর্জুন বলে ভৃগুনা পালাহ তরাসে॥ কুপিল ভণ্ডৱাম লেউটিঞা আইসে। অজ্ঞার বচনে ভৃগুরাম রোধে।। হাথে গাণ্ডি করিঞা ভুগু সামাইল রণে। মহা সংগ্ৰাম বাজিল ছুই জনে॥ ছট নীরে বাণ বর্ষে বাণের ঠনঠনি।>> ছই বাণে কাটাকাটী বাহির হয় আগুনি॥ জাঠি কগড়াএ টাঙ্গী মুকার I থাওা কাটি কাকেহ মারি শর॥২৪ স্চীমুথ বজ্বতি অগ্নিমূথ বাণ। উক্কাবাণ মেঘগর্জন বাণের ঠান॥ বিহাত ছটা বাণ নিকলে নানা জ্যোতি। বাণের শব্দ শুনিঞা কম্পিত বস্তুমতী॥

(529)

ছুই জনে বাণ বর্ষে অগ্নির উচ্ছাল। চন্দ্র সূর্য্য ত্রাদে কম্পে সপ্ত পাতাল॥ বাণের চটচটি ধমুকের টকার। শুনিঞা ত্রিভূবনে লাগিল চমৎকার॥ বাণ বৰ্ষে অজ্জুন রাজা সহস্র বাহুধরে। ৫ ভুগুরাম রণ করে মহাদেবের বরে॥ कम्भाग नाञ्चिक मश्रमाभवत जल। ইচ্ছের সিংহাসন করে টলবল॥ বাণের শব্দ কটকের রোলে। নাগলোক কম্পমান সব পাতালে॥১০ ছুই জনে মহাবীর করে বাণ বরিষণ। আকাশে থাকিতা দেখে সকল দেবগণ। ছুই মহাবীর রণে ধরুকী প্রচও। ছুই বীরের বাণ বর্ষণে ছুই বীর থও থও। আকর্ণ পুরিঞা বাণ এড়ে ভৃগুপতি।১৫ কাটগেল অর্জুন রাজার রথের ঘোড়ার সার্থি॥

নানা বাণ এড়ে ভৃগু ধন্ধকে দৃঢ় চঢ়া। রণের ধ্বন্ধ কাট গেল সহস্রেক ঘোড়া॥ আকর্ণ পূরিঞা ভৃগু এড়ে নানা বাণ। অর্জুন রাজার সানা টোপর করে খান

বজ্র সমান বাণ মারে অর্জুনের বুকে।
ছর্দুর শব্দে ডাকে বাণ আস লাগে লোকে।
বাণবর্ষে ভৃগুরাম নামে পশুণত।
ফুটিল অর্জ্জুন রাজা ধারে বহে রক্ত॥
দশ অক্ষরে বিষ্ণু সহস্রেক নাম।
হেন বাণ ভৃগুরাম প্রিল স্কান॥

(১২৮)

চক্রবাণ কোপে পেলে ভৃগুপতি।
কাটা গেল রাজার চৌরাশী লাথ হাথী॥
সহস্রেক রথ পড়িল পর্ব্বত প্রমাণ।
সর্ব্বাপে কৃটিল সৈন্ত শরীর থান থান॥
বাণবর্বে ভৃগুরাম শুনিএ চটচটী।
বাণে কৃটিঞা পড়িল পাইক কোটি কোটি
চৌরাশী লাথ হাথী পড়িল জেন পর্ব্ব-

তের চূড়া। তাজি মইকোটি পড়িল পর্মতীয়া। ঘোড়া॥

আউনিঞা পাইক পড়িল যুঝার ধহকী। র.উত্থড় পড়িল সোণার চুম্ব্কী॥১০ গাহল নৌম্বল পড়িল চিল চণ্ডা জাতি। কোটি কোটি রথ পড়িল কোটি কোটি সার্থী॥

তার্বা দেখিকা মারা ধরে সহস্র অর্জ্বন।
মেঘে লুকাইকা রাজা হৈল অদর্শন।
নানা মারা ধরে রাজা দেখিতে না দেখি।
কলে জীব জন্ত হক কণে হক পাখী॥
বক্স সম দের রাজা ধলুকে টক্ষার।
মারামই বাণ রাজা ক রম অবতার ॥
সহস্রে বাণ কড়ে ভৃত্ত বংশের নাথ।
সহস্রেক বাণে কাটে সহস্রেক হাথ॥২০
অর্জিচন্দ্র বাণ কড়ে ভৃত্তরাম কি কহিব কথা
বাণের তেজে অর্জ্বনের কাটিকা পাড়ে
সাথা॥

মারামই বাণ ভূও কৈল অবতার, গ-পুথির পাঠ। (88)

(500)

নীৰ বিহতে গড়ে বাজা নৰ্মদান জনে।
সহতেক কথি বাজাব ভাগে চারি পানে।
সহত্রনাত জড় করি টানিনা ধন্তকের তলে।
নারি দারি করিবা এড়ে নর্মদার কলে।
গাঁডারিয়া জানে ভৃগু অর্জ্নের শরীর

নশ্বদার ক্লে এড়ে পর্বতপ্রমাণ।
শক্ত মন্ত্রশিকা পাইল ভৃগুরাম।
শহু অভ্জুন পড়িল করিয়া সংগ্রাম।
শারু সাধু প্রশংসে সকল দেবগণ।
ভূগুরামের মুণ্ডে করিল পূপ্প বরিষণ॥১০
ধঞ্জ ধন্ত পরগুরাম বিক্ষু অবতার।
ক্তিরাশে উত্তরকাও গায়া দিল সার॥

পড়িলা কর্জুন রাজা পর্বত প্রমাণ।
ছই উরাত কাটিঞা করিল হইপান।
কটিতে কাটিঞা হইথান করিল ধড়ে।১৫
চারিখান শরীর কাটিঞা মেলাইল গড়ে॥
শিক্ষর ব্রিঞা এড়ে অর্জুনের মাথা।
কহল বাহু প্রসারিঞা মেলাইল চিতা॥
রক্ষার সদন গেলা সহজ্র মর্জুন।২০
প্রের কোলে জামদগ্য তেজিল জীবন॥
নর্মার জলে মুনিকে স্নান করাইঞা।
চিতার উপর মুনিকে এড়ে শোজাইঞা॥
বার্ধনা জার মাপো তোমার বচন।
বার্মার জহুগড়ে কর স্বর্গ গমন॥২৫
ভিনিঞা প্রের বেগল রেণুকা বান্ধনী।
বন্ধ ধন্য করিঞা ভ্রুরামকে বাধানি॥

চিতার উপর বসিএল পুরে দিল আশীক্ষার অতিজ্ঞা সভা বহিল বাপু ভোমার প্রসাদ্ধ মনের হথে হুখী বেণুকা পুত্তে দিল বারু স্থ্য সমান তেজ হৈছে তেমার কলেবল সভী পতিবন্ধ। স্ত্রী সভ্যে করে ভর। 🚓 💽 সর্বো রাজ্য করে আউট কোটি বৎদার 🕵 यामी गरन अध्यवत् भरत (क्या ही। (भरवत तरण 5 ज़िला जार अर्गभूती । তাহার উপর যমের নাহিক অধিকার স্বৰ্গলোক যাইতে পড়ে জয় জয় কার 🗱 তোমার দীকা থাকিবেক আমর্ত্ত ভ্রন্তে সঙী স্ত্রীর গতি নাহি স্বামী বিহমে 🕮 वी रक्षा याभीत (गवा देव जान नाहि जातन যশ পুণা ধর্ম পাত্র লোক ভাকে বাধানে याभी मत्न गरत (य खी व्यापन माइरम् ।) ছইকুৰ উদ্ধাৰে দে চৌদ্দ পুৰুষে। আন জঞ্জাল ছাড়িঞা শুন সাবধানে 🞼 কতিবাদ গাইল উত্তর রামায়ণে 1

ন্নন করিল রেণুকা রাণী নর্মদার করে।
রাম কদলী বৃক্ষ নারী কপিল ছই কুলোংও
নদীর কুলে নারী পুতিল ছই সারি কলা
ইন্দ্র আসিঞা যোগাইল পারিজ্ঞাভ্যালা
বক্ষ আসিঞা যোগাইল চন্দ্র আগর।
পবন আসিঞা দিল খেত চামর।
চক্র আসিঞা বোগাইল শুবাক

नोतिरकत्ता । शका व्यानिको स्वाभाष्टिन सामाजीस्वर्ध सर्वे (101)

ভপোবনে বৈদেন জত ঋষি তপন্ধী। তাঁহারা আনিয়া দিল ভিল তুলনী॥ সর্পিন সাগরে যোগাইল স্বত। কীরোদসাগরে আনিঞা যোগাইল অমত।

কাঠ আনিয়া দিল সকল ক্ষেত্রীগণ।৫

শবিহোত্র দ্রব্য আনিয়া দিল ব্রাহ্মণ।
দৈবতা সকলের স্ত্রী আইলা দেখিবার তরে
ভিনলোক আইল কেহ না থাকে ঘরে॥
ক্ষিত্রিবাদ গান গীত দেবতার বরে।
উত্তরকাণ্ডের গীত বুঝান সংসারে॥১০

নারায়ণী বন্ধাণী দে শিবানী ভবানী। রেবতী রোহিণী আদি আইলা ইন্দ্রাণী॥ শর্কাণী সাবিত্রী পদা আইলা কৃত্যিণী। ব্লতি সতী জামুবতী আইলা পদ্মিনী॥ অক্সনতী দীলাবতী আর মধুমতী।১৫ মাহেশরী স্বধা শ্রদ্ধা আকৃতি প্রকৃতি। জাইলা অদিতি দিতি কক্ৰৱ বনিতা। শজাবতী পুষ্টি ধৃতি আল্যা বেদমাতা॥ বাটী অসা বিজয়া কমলা ভাতুমতী। তিলোভমা শীলাবতী বস্তা সরস্বতী। আইলা গায়ত্ৰী গঙ্গা যামিনী মালতী .২٠ মানাবতী কলাবতী সন্ধ্যা ভগবতী। অমতি কুমতি বিষহনী সত্যবতী। जाता थिवा हल्कना कमा हेन्मजी॥ ভাগীরথী বহুমতী লক্ষী মূর্ত্তিমতী। **उत्ती** मनमा जाना। जात गागावली ॥२० (302)

স্বৰ্গকন্যা মৰ্ত্তাকন্যা হঞা এক মেলি मत्त सूर्ध करत्र महन हनाहिन ॥ সিঁথাতে সিন্দুর দিল মাথে মুড়ালা। इकुरन ध्रमीन निया क्रनिरलन कना ॥ कूरवत आनिया मिल विलावात धनाद মন্ত্র পড়ি আনলে করিল আরোহণ। শত পল স্বর্ণেন্ডে সূর্য্যে অর্ঘ্য দিয়া। পতি কোলে কৈল বামা আহির বলিয়া চিতাতে শোয়ায় ভৃগু জনক জননী। घुठ वज निया मूर्थ नित्नन आ छनि ।>० মাতা পিতা হইজনে ছোআলা আগুনি। তবে সহে অগ্নি দিল ভৃগুরাম মুনি॥ স্বামীর সহিত মরি চডি দিবা রথে। ছই জনে ত্ৰন্ধলোকে গেলা স্বৰ্গ পথে। অর্জুনের শরীর পুড়িঞা ছারধার ৷১৫ রথে চড়ি গেলা রাজা অর্গের ছয়ার॥ বিষ্ণু বাণে পড়ি রাজা দহত্র অর্জুনে। মুনির সংহতি গেলা বৈকুণ্ঠ ভুবনে॥ স্বর্গবাদে গেলেন ভৃগুর মাতা পিতা। নর্মদার জল দিয়া নিভাইলা চিতা 1২০ স্বৰ্গলোকে দেবগণ করিলা প্রান। কন্যাগণ গেলা সভে জার জেই স্থান ! নর্মদার জলে মুনি পাখালিল ফিল। পুরোহিত হঞা আলা মুনি বালাখিল।। বালির পিণ্ডিকা বান্ধি দিল কেতিবল ৷২৫ **ठ**कृतित्क द्रट् यथ। नर्यमात्र खन ॥ উড়ির ততুল হগ্ধ আনিলেন হাতি। পঞ্চবৰ্ণে বান্ধিল তখন শতকাতি চ

(200)

शत्रमात्र आमात्र मित्तन शिखनान। মাতা পিতা উদ্দেশে দিলেন স্থানে স্থান॥ মা বাপের পিও দিল কৈল বুষোৎদর্গ। দকল কর্ম্মের পার হৈলা মুনি ভার্গ। गहायुक कतिया मूनित्क निल नान। ० সর্ব্ব মূনি বলে ভ্রু মহাপুণ্যবান ॥ নর্মদার তীরে ভুগু দিল। পিওদান। ক্ষেত্রিগণে বসিবারে দিলা স্থানে স্থান॥ হাতে গণ্ডি বাণে ভৃগু বেড়ায় সংসারে। যেইখানে শুনে কেত্রী তথা গিয়া মারে ॥১। ক্ষেত্রী বলি পৃথিবীতে না থুইল আর। নিক্ষেত্রী করিল ধরা তিন সংধ্যার n শ্রীরাম বলেন মুনি করি নিবেদন। কেমনে বাঁচিল মোর বাণের জীবন। मूनि वर्ण तामहन् कत्र व्यवधान। १९ বাঁচিল যেরূপে দশরথের পরাণ॥ আচহিতে আল্য ভূঞ অযোধ্যা নম্বর। ভূপ্তরে দেখিয়া রাজা হইল দত্র॥ ভয়ক্ষর মৃত্তি ভৃগু বলে মারমার। দশর্থ সুবৃদ্ধি না করে অহন্ধার ॥২০ সম্ভ্রমে বন্দিল রাজা ভগুর চরণ। (मवरक मात्रिया इव (कान् श्राटाकन। विनन् विना ताका करतन अवन। তোমার সেবক আমি রাথহ জীবন। ज् क वटन अप मा शोक अकम् ।२c তোমা মারি ত্রাহ্মণে দিব রাজাথও। দশরথ বলে প্রাভু গুন নারায়ণ। रमदरक मात्रिश कि माथित श्रासाकन ॥

(806)

তুমি দেব নারায়ণ অনেকগুণ জানে। তে কারণে এড়।ইল ভগুরামের স্থানে॥ দশরথ রাজা ছিলা মহাগুণবান। পাইল অনেক রাজ্য ভৃগু ঠাঞি দান ॥ মরণ এড়াল রাজা স্তবের কারণে।৫ অনেককাল বেড়াইল ভগুরাম সনে। ছুধান ধহুক পালা শঙ্করের বরে। একথান থুল্য তার জনকের ঘরে॥ আজগৰ ধন্ত্ৰক সদাই থাকে হাতে। যাহা হাতে করিয়া আগুলা ছিল পথে ॥১• আর ধন্তক আপনি ভাঙ্গিলে বাহুবলে। চমৎকার থুইলে সকল ঋষিকুলে॥ অযোধ্যা আসিতে পথে আগলিল রাম। হাতে দিল শরাসন না কৈল সংগ্রামা আভগব ধনুক দিলেন হাতে হাতে।১৫ ভুগুরাম স্তবন করেন দশরথে॥ ধনুকে মারিলে বাণ দেখি চমৎকার। লইলে ভাপন তেজ ভুগু মাত্র সার॥ সেই বাবে স্বর্গপর্থ করিলে রোধন। বিদায় মাগিয়া ভুগু গেলা তপোবন ॥২০ ত্রিভুব**ন জিনে** ভৃগু সংগ্রামে শুর। হেন ভৃগুরামের তুমি দর্প কৈলে চুর॥ মহাদেবে সম্ভাষিতে গেলা দশানন। ভৃগুরাম সনে তথা হৈল দরশন॥ ভগুরামে রাবণ করিলা নমস্বার।২৫ পরিচয় দিল তারে বিনয় বেভার॥ দংশার জিনিল আমি বিক্রমে ছজীয়। ণৌলস্ভোর নাতি বিশ্বশ্রবার তনয় #

(500)

কুবের বরণ যদ জিনিল পবন।
লক্ষার ঠাকুর আমি নাম দশানন।
বড় উপকার কৈলে মারিলে অর্জুনে।
ঘূষিব তোর যশঃ দকল ভূবনে।
ভূগুবংশনাথ ভূমি মহাবলবান।
ত্রিভূবনে বীর নাহি তোমার দমান।
অর্জুনেরে জিনিতে আমি গের জয়রোলে
আমারে করিয়া বন্দি রাথে বন্দিশালে।
হেন জনে মারি প্রভূ বড় কৈলে কাল।
তোমা হৈতে থণ্ডিল আমার দব লাজ।
ম্নির বচন শুনি হাদে রঘুমণি।
কুত্বাদ পণ্ডিত রাজসভায় পূজিত।
উত্তরকাও গান ভৃগুরামের চরিত।

স্থান সন্ধা করি রাম প্রভাষ বেহানে।১৫
সভা থণ্ড লইয়া বসিলা সিংহাসনে॥
টোন পাশে বসিল যতেক মুনিবর।
বাম ভিতে বৈদে যত রাক্ষ্য বানর॥
শ্রীরাম লক্ষ্য আর ভরত শক্র্যন।
পূর্ব কথা কহেন অগস্ত্য তপোধন॥২০
শাস্ত্রচিস্তা রাজ্যচিস্তা প্রজার পালন।
স্থাথে রাজ্য করেন রাম কমললোচন॥
জোড়হাথে মুনিরে করেন নিবেদন।
কহিবে কেমনে বাগী জিনিল রাবণ॥
শুনিতে মুনির ক্থা রামের আনন্দ।২৫
অগস্ত্য কহেন ক্থা বিচিত্র প্রবন্ধ॥

(১৩৬) .

ইন্দ্রের তনয় বালী কগ্রপের নাতি। কিম্বিরার নপতি বানর অধিপতি॥ বড় বড় রাজ। জিনি বুলে লক্ষেশ্র। জিনিতে গেলেন যথা বালী নুপবর॥ ত্রিভ্রনজয়ী রাজা বরের কারণে। বানরের বিক্রম রাবণ নাছি জানে॥ বীর চাহি লক্ষেশ্বর সংসারে বেড়ায়।৫ শুনিরা বালীর কথা কিফিন্ধ্যাতে যায়॥ সকল কটকে রাজা প্রবেশে কিছিরা।। ঘরে নাহি বালী রাজা করিছেন সন্ধা। দেখিল বালীর দারে অনেক বানর। তাহাকে জিজ্ঞাদে বার্ত্তা রাজা লক্ষেপর ॥১০ তারা বলে জিনি বুল বিধাতার বরে। কিষিশ্ব্যা আইলি কেন মরিবার তরে॥ বালী দনে তোর যৰে হবে দরশন। অহলার চুর্ণ হবে সঙ্কট জীবন॥ বলদৰ্পে যেইজন যুঝিৰারে আদি ১৫ হেরে দেখ তা সভার হাড় রাশি রাশি॥ পাইয়া ব্রহার বর হইলি অমর। পডিলি বালীর হাতে যাবে যমঘর॥ দেখিতে স্থন্দর বালী সংগ্রামে সাগর। বালীর বিক্রম কহি শুন নিশাচর।।২• প্রভাত যথন হয়ে অরুণ উদয়। চারি সাগরেতে সন্ধ্যা করে মহাশয়॥ উপাড়ি আকাশে পেলে পর্বতিশিখর। তুই হাত পাতি লোফে বালী মহাশয়॥ জমুদীপ থান বালী ক্লণমাতে যায় ৷২৫ আছুক অন্তের কার্য্য প্রন না পায় 🛭

नानि। १

श्रव ॥> •

(১৩٩)

সদ্ধা করিবারে গেলা দক্ষিণ সাগর।
থানিক থাকিলে দেখা পাবি লক্ষেশ্র॥
বিলম্ব নাহিক আলি মরিবার তরে।
বালী রাজা দেথ গিআ দক্ষিণ সাগরে॥
ধর্ম্মেতে ধার্ম্মিক বালী জগতের মিত।
যাহার বিক্রম সব সংসারে পৃঞ্জিত॥
কুপিয়া রাবণ সে তারকে পাড়ে

দক্ষিণ সাগরে যায় যথা আছে বালী॥
স্থানের পর্বত যেন সাগরের কূলে।
স্থ্যের মণ্ডল খেন সাগরের জলে।।
দূরে থাকি বালী রাজা নেহালে রাবণে।
গক্ত দেখি সিংহ যেন মনে নাহি

সর্প দেখি গরুড় যেমন হয়ে জ্ঞান।
রাবণ দেখিয়া বালী করে আর্দ্ধধান॥
নিঃশক্তে বালীর পশছে গেলেন রাবা।
কিংহের নিকটে যেন গেলেন পবন॥
চিত্তে গুণে দশানন মনে মনে হাসে।১৫
বালী বলে করুক যেমন মনে আইদে॥
নির্জীব করিব আজি রাজা লক্ষেশ্বর।
লেজে বান্ধি ফিরাইব সাহটা সাগর॥
কাকতলি চাপিআ রাখিব দশানন।
কৌতুক দেখুক যেন স্আল ভ্বন॥
বালীর নিকটে রাজা যায় ধীরে ধীরে।২০
বিড়ালের পাছু যেন বেড়ায় ইল্রে॥
বালী বলে দশানন মায়ার সাগর।

(504)

गत्न मत्न हारम दीत वामव-नम्मन। পায়ে পায়ে ধীরে ধীরে আসিছে রাবণ।।২৫ পিছে গিয়া দশানন ধরিল কাঁকালি। প্রাণ শক্তে নাডিতে নারিল রাজা বালী ॥ ছই বাছবলে ভোলে যেই কৈলাদশিপর। সে জন নাড়িতে নারে বালী কপিবর।। হাসিয়া রাবণে বালী ধরে কাঁকতলি।৫ কাঁথে চাপি আকাশে উঠিল রাভা বালী॥ ছই পদ কুড়ি হাত করে লড় বড়। দর্প ধরি গরুড় যেমন দিল রড়।। বালীর ভরঙ্গে রাজ। হরিল স্থিত। সর্বাবেশ বৈশ লাঙ্গুড়ে জড়িত॥১० চলিলা প্ৰন বেগে কাঁথে দশানন। পশ্চিম সাগরে গেলা তিন লক্ষ যোজন।। বাথিবারে নিশাচর ধার চারিভিতে। মেঘ যেন ধাঞা যায় সুর্য্যে আচ্ছাদিতে॥ বালী কোপে ধাইতে পর্বত হয় চির।১৫ রাক্ষদ কি ধায়ে রক্ত মাংদের শহীর।। অবসাদে রাক্ষদ ধাইতে নারে লগে। तांवन कें। त्य भाग वाली भवत्नत (वर्ण ॥ নড়িতে না পারে রাজা চাপা কাঁথতলি। শাগরে আপন প্রথে সন্ধা করে বালী ॥২০ গলে লেজ রাবণেরে পেলায় সাগবে। তরাতরি রাবণ সাঁতরে আথান্তরে।। উত্তর সাগরে গেলা লেজে দশানন। পশ্চিম সাগর হইতে সহস্র বোজন।। লেজে বান্ধা আছেন নুপতি লক্ষেশ্বর ৷২৫ ভথাতে ভপস্থা কৈল বালী কপিবর॥

(202)

দশমুখে দেখে রাবণ জলন্ত উলুকা। লেজের উপরে দেখে যেন ধ্বজ পতকা।। शृर्क निकु (शन ठांत्रि महत्व (याजन। তথা গিয়া সন্ধ্যা কৈল বাস্ব নন্দন।। হরিষে করিলা সন্ধা বালী কপিবর। कथन एवान खरल दोखा लक्ष्यंत्र ॥ লেজ সনে ড্বাইল জলের ভিতর।৫ জল থাঞা দশানন হৈলা ফাঁফর॥ আকট বিকট করে পাইআ তরাদে। কুজ়ি হাথে টানে তমু বন্ধন না খদে।। পূর্ব্বেতে করিআ সন্ধা বাসব নন্দন। লেবে লড বড করে রাজা দশানন ॥১০ চারি সাগরে সন্ধা কৈল বিন্দু নাহি উলে बावत्न लहेशा वाली निष्क तन्त्रम हत्त्र।। সমাপ্ত করিয়া সন্ধা চলিলা আকাশে। লেজে বান্ধা দশানন দেখি লোক হাসে॥ দেবগণ হাসে নাচে রাবণে দেখিয়া।১¢ অহন্ধার চূর্ণ হৈল বালী ঠাঞি গিয়া।। छेपञ्जितित शृक्त कीट्याममांगत। করিয়া সামাত্র সন্ধা বালী আলা ঘর ।। চারি সিন্ধু গেলা চৌদ্দ সহস্র যোজন। কি ফিল্বা আইলা কাঁথে দেখি দশানন ॥২٠ श्वीत्नारक पिरमन मञ्जन हमाइनि। निःशंगत्न विनवा वानव वाका वाकी ॥ मत्नत हतिरय वाली निःशामत्न विन । রাবণ লেম্বড়ে থাকি করে উনিমুনি।। বালীকে দেখিয়া পাত্ৰ নোভাইল মাথা ৷২৫ मह्मित्र करह वाली बावरवंत्र कथा।।

(86)

শুনিঞা বালীর কথা হাবে পাত্রগণ। ছাড কাঁথতলি গোসাঞি দেখি যে রাবণ॥ পাত্রের বচনে বালী তারে কৈল ছাড়।। হাসি বলে কোথা হৈতে আইলি বাপুড়া। বান্ধা থাকি পাণি পিয়া নাহিক চেতন। व्यत्नकक्ष वहे भूर्थ निकल वहन।। বাবণ বলেন শুন বাস্ব-নন্দন।৫ পৌলস্থের নাতি আমি নাম দশানন।। সংসারে বেডাই আমি বিপক্ষের পক্ষে। ভোমা হেন বীর নাহি দেখি নিজ চক্ষে।। পবন গরুড় আর তুমিত বানর। সভার বিক্রম দেখি একই সোদর।।১০ চারি দিন্ধু গেলে তুমি পৃথিবীর অন্ত। তোমার ঠাঁই হৈল মোর পশুর রুতান্ত।। আমা হেন বীর তুমি নিলে কোলে। তোমা হেন বীর নাহি পৃথিবীমণ্ডলে।। প্রনের বেগে যাই আমি কাথতলে ৷১৫ সন্ধ্যা অপ কর তুমি মন কুতৃহলে।। বলে টুটা হৈলা আমি আছাড়িয়া মারি। বলের অধিক হৈলে মৈত্র তারে করি।। আজি হৈতে তুমি মোর ভাই সহোদর। মোর যত ধন তোর ভোগের ভিতর ॥২• বন্ধনে তোমার ঠাঁঞি পাল্য অবসাদ। বালী বলে তোরে দিল অভয় প্রসাদ।। ছই জনে মিতা কৈল অগ্নি করি সাকী। সর্ব ভোগ ভূঞ্জিব সকল লোকে দেখি॥ আর না মারিষ তোরে গুনহ রাবণ।২৫ আপন ইচ্ছার দেশে করহ গ্রন।।

(585)

নানা অলক্ষার দিয়া করিল বিদায়। বালীকে মেলানি করি নিজ দৈন্যে যায় হেন হই বীরেরে তুমি মারিলে বাণে। বিষ্ণু অবতার তুমি কীর্ত্তিবাদ ভণে।

ভনিয়া মুনির কথা রামচন্দ্র হাদে। হাসিতে ২ রাম মৃনিকে জিজ্ঞাসে॥ জোড হাতে বলে রাম কমললোচন।e বালীকে হারিয়া কোথা গেল দশানন।। श्वि मूर्ति विलिलक त्रावन वृत्त त्राथ। মুনিকে দেখিয়া সন্তাষিল ব্যোমপথে॥ ত্রিভুবন জিনিঞা বেড়ায় দশানন। নারদ সহিতে পথে হৈল দরশন ॥১० চড়িয়া পুষ্পকরথে রাজা দশানন। মেঘে থাকি নারদেরে কৈল সম্ভাষণ।। মুনি বলে বর পাঞা হইলি অমর। তিনলোক জিনি বুল কারে নাইি ভর॥ ব্রন্ধার নিকটে বর পালে। বড তপে ।১৫ দেবতা দানব কাঁপে তোমার প্রতাপে॥ বেংগে শোকে অনুক্ষণ মনুষ্য পীড়িত। কেহ হাদে কৈছ কান্দে দেখি বিপরীত।। অলংঘা মরণ বটে দেখিয়া না দেখি। वसू भारक कानिया मःमात्र देश्न क्रःशी ॥२०

পড়িল যমের মুখে সকল সংসার।
যমে ছাড়ি নরে মার এনহে বিচার।।
তোমার সংগ্রামে ধম হবে পরাজয়।
যমে মারি সর্বলোকে করহ নির্ভয়।।

(>8<)

দৈতা দানৰ মরে বিষ্ণু নহে স্থা ।২৫
লোকেরে রাখিতে সূপ খারে গক্ত পাখী।
ছটেরে দলিয়া তুমি বুল ত্রিভ্বনে।
দেখিয়া তোমার পরাক্রম নানাস্থানে।।
বিধাতার বরে তুমি জিনিলে মরণে।
কি করিতে পারে তোর যত দেবগণে।।
যম জিনি দূর কর লোকের তরাস।৫
ইহা ছাড়ি লোকে মার করি উপহাস।।
বনেরে জিনিতে তুমি কর আশুসার।
আর কার সঙ্গে যুদ্ধ নহে ব্যবহার।।
হাসিয়া মুনির পদ বন্দিল রাবণ।
অইলোকপালে জিনি স্থেও দেখ

সর্ব্ব আগু কিতি জিনি জিনিব পাতাল। তবে সে জিনিব ইন্দ্র অষ্টলোকপাল।। ছোট জিনি বড় জিনিব রণে পরিপাটী। বড় জিনিয়া ছোট জিনিলে পৌক্ষবে ঘাটা।।

এখন যম থাকিতে অন্ত নাহি গণি।১৫
জগতে বুচাহ ভূমি মরণ কাহিনী।।
কূড়ী পাটী দস্ত শোভা দশমুথে হাসে।
চতুর্দ্দিগে কেয়া যেন ফুটে ভাজ মাসে।।
রাজা বলে ধরা জিনি কোতৃকের ভরে।
লড়িল্প ভোমার বোলে যমে জিনিবারে॥২০
মূনিকে প্রণাম করি চলিলা দ কণে।
দেখিয়া নারদ মূনি মনে মনে গণে॥
রাবণ চলিল যুদ্ধ হবে যম সনে।
যম রাজা ঠাঞি বেটা ভেজিব জীবনে॥

(580) রাবণের মৃত্যু আমি করিল উপায়।২৫ মরিবার তরে বেটা যমপুরে যায়। হেন জন নাহি যে যমের নহে বশ। হেন যম জিনিবারে করিল সাহস।। ধাতা কর্ত্তা যম বটে জগত ঈশ্বর। ত্রিভুবনে জত কথা যমের গৌচর॥ তুই বীরেরে জিনিবে যুঝিতে না পারি।৫ त्रण (पश्चिवादत्र यांच यरमत्र नगती ॥ স্থাথে থাকি বিসন্থাদ উপস্থান স্থাথে। खेलिकिल महोत्र मन मार्थ (मर्थ।। যমরে শিনিতে যায় লোকের তরাস। উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্ততিবাস ॥১০ স্থাথে থাকি বিসম্বাদ ভেঙায়ে নারদ। যে জনে ভেজার তার সঞ্চারে বিপদ।। শনি দৃষ্টি হৈলে যেন লোক পড়ে হুথে। রাবণে বলিয়া গেলা যমের সম্মুথে।। যমেরে জিনিতে **দাক্তে রাজা** লকেখর।১৫ আগুআন যমের ঠাঞি গেলা মুনিবর।। অগ্নি দাক্ষী করে যম সংসার বিচার। নারদে দেখিমা যম কৈল নমস্কার॥ আচন্বিতে মুনিবর কৈল আগমন। আইলে আমার ঠাঞি কোন প্রয়োজন।২ মুনি বলে নিচিত্তে আছহ কি কারণ। তোমা সনে যুদ্ধ হেতু আসিছে রাবণ।। হাতে দণ্ডে মার আজি রাজা লক্ষেশর। আইমু দেখিতে তোমা দোঁহার সমর।। নারদের বোলে যম হইলা চিন্তিত।২৫

যুঝিতে রাবণ কেন আইসে আচ্নিত।।

(\$88)

উচ্চেতে উঠিয়া যম দেখে সতি দূব। রাক্ষদ কটক দেখে বিশেষ প্রচুর।। পুষ্পক রথে চড়ি আদে রাজা দশানন। রাক্ষদ কটকে বেড়ে যমের ভুবন।। যমের ভবন খান দেখিতে স্থন্দর। মারিং দেখে তথা নানা চিত্রঘর॥ नानावर्ष देवचा राष्ट्र यरमञ्जनगरत ६ নানাবর্ণে পরিচ্ছদ দিব্যসূর্ত্তি ধরে।। পুরীথানে চারিদ্বার অতি মনোহর। লেখা পড়া করে তথা কায়েত বিশুর॥ চিত্রগুপ্ত আসি তথা বৈসয়ে অপার। ভাল মন্দ ফলাফল করিছে বিচার ॥১০ ক্ষিভিতলে জন্মে যেবা পাপ নাহি করে। মধুর বচনে য**ম সন্তা**ষে তাহারে॥ আদর গৌরবে দেন বসিতে আসন। কুটুম্ব সমান ভারে করে সন্তাধণ।। ধর্মাধর্ম বুঝি তার বাড়ায় সন্মান ।১৫ উত্তর নগর দেব বসিবার স্থান॥ তপধর্মে যেই জন পাপ না পরশে। পশ্চিম ছয়ারে যম তাছারে সন্তাষে॥ श्रुवाक्त श्रुवावन कत्राय विठात । তা সভার মত হএ পশ্চিম তুআর ॥২० ধর্ম্মেতে ধর্মা যার একই শোসর। অমৃত মধুর তাকে করস্তি উত্তর।। ধর্মাধর্ম বুঝি তার না করে অপেকা। পূর্বাধারে থাকি যম তারে দেন দেখা॥ ষতি সতি সমান সন্ন্যাসী যেই জন।২৫ উত্তর হয়ারে তারে করে সম্ভাষণ ॥

(280)

আর জন্মে পাপ করে পুরা নাহি জানে। দক্ষিণ চয়ারে তাকে করে সভাগণে। ভয়ক্ষর মূর্ত্তি সেই দ্বারে দরশন। দশন বিকট বন পিঙ্গল লোচন। লোহার মূলার হাতে চর্ম্ম পরিধান। ৫ ज्यक्ष त्नामांवनी त्यन थारधन मधान । বাম পদে গোদ যম পর্বত আকরে! বিশ্বস্তর মূর্তি যম অতি ভয়ফার। বিষম বিকট মৃত্তি বড় ভয়ক্ষরী। দেখিলে সকল লোক কাঁপে থরছরি ॥১০ এমন আশ্চর্যা তথা দেখে দশানন। আপন ভক্ষণ মত করুয়ে ভক্ষণ ॥ গোদান করিল জেবা তুলদী ব্রাহ্মণ। য়ত হগ্ধ ভক্ষ্য তার দেখে দশানন।। ভোজ্যে অন দিলা জে তৃষাতে দিল পानि।ऽ६

তাহার ভোজন পান দেখিল আপনি।
বস্ত্রদান করে জেবা নানাবস্ত্রধারী।
গৃহদান কৈল যে পাইল রমাপ্রী।
মণি মৃক্তা প্রবাল কাঞ্চন দিল দান।
অলঙ্কারে ভূষা সেই অধিক স্থান ॥২০
নানাদান দিল জে সংসার অধিকারী।
নৃত্য গীত বসিআ দেখতি সারি সারি।।
দানপুণা সংসারেতে জাহার শবদ।
তারা সব বসিআছে নানা পরিচ্ছদ।।
মধা তেপাস্তরে জেবা দিল

থাইছে শীতল জগ বদি তক্তল।।।

(389)

थाउँ भाउँ मान (खना फिला (माडा प्राला। থাটেতে শ্যুন করার গন্ধরের কলা।। ইটাতে বান্ধিশ জেনা অশ্বথের তলা। ছায়াতে বসিয়া সেই করে নানা খেলা।। অধ গজ ভূমি কতা জেবা দিল দান।¢ সারি দিআ ব্যিআতে জত পুণাবান॥ প্রভিল্পমূর্ণ যুদ্ধে আপন সাহসে। বিদ্যাণরী চামর চলাএ ভার পাশে॥ জে জন জাজাল দিল মণ্ডপ দেউল। বিলক্ষণ পুরে দে বভাছে নিরাকুল। ১০ জে জন করিল এতরাজ একাদশী त्म जन को उत्क रहेग अर्गलाक वामी।। শ্রহমী উপাদ করি ছে প্রজিল চণ্ডী। তারা দব বদিখাছে স্থবর্ণ চৌখণ্ডী। মেয় মুকর স্থান করে প্রাকৃষ বিহানে ১৫ ভারা দৰ ব্যিআছে রত্ন দিংহাদনে ॥ স্বামী গনে জে নারী হইয়া নরে শতী। করিছে অমৃত্যান পতির সংহতি॥ যতি সভা সন্যামী ভ্ৰম্বী ব্ৰন্ডান্ত্ৰী। তা সভার সেবা করে অর্গবিদ্যাধরী ॥২০ নানা দান দিল জেবা হর্ষিত মনে। नाना ख्रथ जुङ्ध (गरे यरगद्र भत्त ॥ গোনা দানে জেইজন ভূষিণ বাহ্মণ। বিদিল সোনার খাটে দৌখল রাবণে॥ মৃত্তিকাতে গড়ি জেবা পুজে পভপতি।২৫ নানাভোগ ভূঞে দেই খনেক বিভৃতি ॥ অতিণি দেখিলা জেবা করায় ভোজন। শ্বীতল গাছের তলে করএ শয়ন।।

भगामाना २०

(181)

নানা তীর্ব ভ্রমি জে শরীরে দেই হুধ।
পরকালে যমপুরে ভূঞে নানা স্থুখ।
বৈশাধ মকর ভূলা করে নিরামিষে।
সেই পুণ্যে তারা সব রম্যস্থানে বৈসে।
শরীর সাধিল জেবা করি নানা-যোগ।
কর্পারে বিস্মা করয়ে নানা ভোগ।
গঙ্গাস্থান করি জেবা গায়ে লেপে মাটী।
তারা সব বসিআছে নানা পরিপাটী।
জত রাজা রাবণ জিনিল নানাদেশে।
দেখিল দেসব রাজা যমের সকালে।।১০
দেখিল থমের পুরে সকল ভূবন।
দক্ষিণে রৌরব দেখে রাজা দশানন।।
রথে চড়ি রাবণ দক্ষিণ দিগে জায়।
রচিয়া উত্তর কাওে ক্তিবাসে গায়।

জে ভিতে লোকের রোল স্থনিল

বিস্থার।১৫
সেই ভিতে রথে চড়ি গেলা লক্ষেম্বর।।
বৈতরিণী নদী বহে অগ্নির উথাল।
ধীরি ধীরি লোকে পেলে গায় নাহি ছাল।
ভাহার স্থতপ্ত পানি অগ্নি হেন পুড়ি।
চুলে ধুরি কারে তাহে পেলারে

ছেঁছজি॥২০
বজ্ঞানত পোকা খায়ে কামজায় জাঁদ।
তথ্য করি সাঁজাসী গায়ের টানে মাস॥
নাজী ঝাজি খায়ে পোকা গায়ের মাসছিতে
লো হার মুন্গর কেছ মারে কার মুতে॥

(386)

মারএ কাটার বাড়ী কোন পাপীর মুখে।
বজ্ঞশিলা পাথর চাপায় কার বুকে॥
কার বুকে শেল শূল মারে টাঙ্গি জাঠি।
কার বা কাটএ হাত কার মাথা কাটি॥
তাত্রের সিচিকা কার মুখে ঢুকাই।
করাতের ধারে কার কাটী পাড়ে বাই॥
সম্মুথে বসিমা আছে বক্রনথা পাথী।
তারে বলি পাপীর উপাড়ি থায় আঁথি॥
বেটে অগ্নি উপরেতে রবির কিরণ।
তাতে নিঞা কোন দৃতে পেলে পাপী

তপ্ত তৈল কুণ্ডে উঠে অগ্নির উথাল।
ধরিআ পেলায় পাপী গায়ে নাহি ছাল॥
নরককুণ্ডে কোন পাপী ভূবাইয়া মারে।
বিষ্ঠাতে ফাফর হৈঞা উভু ভুবু করে॥
পর দ্রব্য লৈয়া জেবা করি ডাকা

• চুরি ।১৫
মহাঘোর অন্ধকারে তারে নিঞা মারি॥
নরবধ করে জে ধনের পাঞা আশ।
বাঘে তার গায়ের ছিণ্ডিআ থায় মার॥
সর্বমার থায় তার অস্থি মাত্র সার।
নির্মাহ নরকে তার নাহিক নিজার॥২০
মন্থারে থায় জেবা হইআ ডাকিনী।
ভাহার শরীর ভাজে তপ্ত তৈল আনি॥
জে জন ভাজিলেক পরেয় আসাল।
চিত্ত করি পাড়ি তার বুকে মারে খাল॥
ইপ্ত বন্ধু না মানে না মানে বাপ মায়।২৫
ঘোর নরকে যম তাহাকে পাঠায়॥

(282)

পরস্ত্রীকে জে জন করয়ে আলিজন।
সেইরূপ লৌহস্ত্রী করিল গঠন॥
অগ্রিতে পেলায়ে তাহে অগ্নি হেন অলে।
দেই তপ্ত নারী নিজা দেই ভার কোলে॥
অগ্নির জালাতে ভার দর্ম অঙ্গ পোড়ে।৫
পরম যাতনা পাজা করে ধড় ফড়ে॥
পরের স্ত্রীকে জেই জন দেখে কাম চিত্তে।
ছই চক্ষু তাহার উপাড়ে যযদূতে॥
রাজা হঞা জে জন প্রজার করে দণ্ডে।
হাতে গলে বান্ধি তারে পেলে নরক-

কুত্তে ॥১০

সেন্সান ছই আ জেবা উদারেরে ভাণ্ডে।
শিলে মুথ ঘসিআ মুলার মারে মুণ্ডে॥
দেবতা করয়ে চুরি চুরি করে পুথি।
দশনে চিবাআ তারে মারে মত্ত হাথি॥
পরস্ত্রীকে দেখিয়া ভেজন ধরে বলে।১৫
তপ্ত তাম্রখোল যম্বদেন তার কোলে॥
পরদার করি জেবা বেড়ায় কৌতুকে।
খাণ্ডাতে কাটিআ তারে পেলে কুভীপাকে
বিবস্ত্র করিয়া স্ত্রীকে কেইজন দেখি।
কাক পক্ষী তাহার উপাড়ি খায়ে

পর নারী দেখিআ জে জন ধরে জন।
কাটয়ে তাহার হাত যমদ্তগণ॥
পুত্রের বনিভা হরে আপন হহিতা।
থান ২ করি তার কাটি পাড়ে মাথা॥
বট অশ্বথ নিম বুক্ষের প্রধান। ২৫
ইহা জেই কাটে তার নাহিক কল্যাণ॥

(500)

এই বৃক্ষ উপাড়য়ে জেই জেই নর।
কোটাকল্প থাকে সেই নরক ভিতর।
ধর্মকথা ছাড়ি জে অধর্ম কথা শুনে।
লোহার সাবল তাতাইয়া দেই কাবে॥
গুরুপত্নী হরে জেবা হরয়ে আক্ষণী।৫
করাতে চিরিয়া তারে করে থানি থানি॥
আইবড় স্ত্রীকে জে জন করে বল।
হাতে পায়ে বা লি তাকে পেলায় অনল।
তাম হরে জে জন হরয়ে সোমা রপা।
সবে মেলি মারে তারে নাহি করে
কুপা॥১০

পর ধন হরে জে পরের হরে ধান।
গলে দড়ি দিআ তারে সভে দেই টান॥
পাত্রে কন্তা দিআ জে কন্তার লয়ে কড়ি।
ভাহার মাথাতে দেন মাংদের চুপড়ী॥
নাক মুধ বাহিআ মাংদের জল পড়ে।>৫
মাংস নিবে মাংস নিবে ঘন ডাক ছাড়ে॥
ধিকাধিক বলে জেই গুরুকে বচন।
ভার পায়ে বড় গোদ দেধরে রাবণ॥
সভাতে বসিআ জেবা দেই মিথ্যা সাধী।
জিহ্বা কাটি থায় তার বজ্ঞনথা

শুক্র গর্বিত ছাড়িয়া অধর্মে করে পূজা।
তার দাক্ষী দেন আপনি যম রাজা।
বিশ্বঘাতী করিয়া জে জন স্থাপ্য হরি।
গলে দড়ি দিআ দৃত তার তরে মারি।
কুধার্ত্তিকে যে জন না দিল অন্ন পানি।২৫
গলে দড়ি দিআ। তারে পাড়ে টানাটানি॥

भाशी॥२०

(>a2)

গৌবধ প্রাক্ষণবধ করে জেই জন।
নরককুণ্ডে পেলে তাকে দেখরে রাবি ॥
পরস্ত্রী লইয়া পর করে জেই জন।
যিন্তির্ব সহস্রাণি নরকে গসন॥
তাহাতে অপন্তঃ জাহার হয় পরিবার।
কোটী কল্প নরকেতে নাহিক উদ্ধার॥
বধু ঝিয়ে সপ্তমায়ে হররে ভগিনী।
তাহার প্রহারের কথা বিষম কাহিনী॥
ডাবুদ্ মুদল লোহা আনে গোটা ২।
দেই সব ডাবুদে সকল ঠাক্রি কাটা॥১০
হাতে গলে বান্ধিআ ছেদিআ চর্মা দাড়ি।
মাথাতে তুলি আ মারে মুদ্পরের বাড়ি॥
মস্তক ফুটিয়া তার বক্ত পড়ে গারে।
খান খান করি মাংস ছিওেরে কুকুরে॥
মাথা ভাঙ্গি খানি খানি কয়ে তার

খুলিরা খুলিয়া পোকা থায় তার মান।
দেখিয়া রাবণ এত পাপীর বাতনা।
ভাহা হৈতে অষ্টপ্তণ পাইল বেদনা।
নর হঞা মারে জেবা লইল পরাণ।
করাতে চিরিআা তারে করে থান

नाम 13 व

থান ॥२०
পরিতাহি ডাক ছাড়ে বুক ফাটি শোষে।
পানি যদি চাহে দৃত তাহে অতি রোষে।
পরে দান দিতে জেবা করিয়াছে হাতা।
তার বুকে বিষম লোহার দিল জাঁতা॥
সভাতে বসিয়া জেবা করয়ে নাবড়ি।২৫
ঝলে দড়ি দিলা দৃত তাহাকে ছেচুড়ি॥

ত্রান্দণে অধিক বলে মারে জ্যেষ্ঠ ভাই। মুদলে দলয়ে বুক ভাকে পরিত্রাই। বিদ্যা পাঞা নাহি করে গুরুর সেবন। कर्ष कति पिक्ति। ना (परे (करे जन। তাপন। বাখানে যে পরের নিন্দা করে।৫ ইহাকে অধিক পাপ নাহিক সংগারে ৷ জীয়স্থেতে কাঁট পোকা করয়ে ভক্ষণ। তাহার প্রহার দেখে রাজা দশানন॥ মহাভয়কর নাদ ছাড়ে চিক্রাই। তরাদে অনেক লোক সন্বিত না পাই।১০ যমের কিন্ধর দেখি উভূয়ে পরাণ। করাতে চিরিমা পাপী করেখান থান॥ অতিনাদ করি পাপী কালে ভোক পোষে পানি খাতো চাহিলে অধিক মারে রোধে প্রাণ দান দেহ দুত দেহ অন পানি।১৫ । কুধাতে ভুঞাতে মরি না রহে পরাণী॥ নাগট উন্তে পাপী নাছি বানে চুলি। গোছ। গোছা কুটা নিক্রা করমে বিকলি। ধূলাতে ধূদর মর্কা গায়ে পড়ে মলি। তপ্ত তেলে পেলৈ তারে ধরি তার চুলি॥২० অন্ধকারে নাহি দেখি বাকা মাত্র গুনি। কোথ। কাঁচ ঢাল কোথা সোন। ৰূপা পানি॥ আর্তনাদ করে পাপী নাহিক এড়ান। দেখিয়া রাবণ বলে করি পরিত্রাণ।। হাতে বাড়ি করি দূত ডাকে মার মার।২৫ দূতে মারি করে রাজা পাপীর উদ্ধার। वनी मुक देवन बाजा आहिन विस्तत। भङ्कारत राजन शलाका याह पत्।

(200)

(308)

বার বার বলে সভে যাতো চাহে ঘর ! আকুল হইআ বুলে পুরীর ভিতর॥ হামাগুড়ি পালাইতে বাট নাহি দেখে। নয়ান থাকিতে কেহ চক্ষে নাহি দেখে॥ রাজা বলে বন্দী কেন পালাইতে নারি।৫ মারীচ বলে ধর্মে বন্দীকে থণ্ডাইতে পারি॥ রাক্ষনের হাতে অস্ত্র অতি থরুসান। যমদূতে মারি সব লয়েত প্রাণ॥ যমদূত বলে ভাই মোরে কেন গঞ্জি। ত্মাপনার পাপ পুণা আপনারা ভুঞ্জি ॥১० ় দুত বলে কর্মহতে সভে হয় বন্দী। বাড়িলে ভ্রনার বরে নাই জান দক্ষি॥ দূত বলে এখন করিবে যত পাপ। মরিলে এথাই আদি ভুঞ্জিবে সন্তাপ। পরলোকে তোমা সনে এথা হব দেখা।১৫ তথন তোমার হবে এমন পরীকা!! যমদূত জত বলে রারণ না ভনে।• সভাকারে মারে কোপে আপনার মনে॥ ক্ষিল যমের দূত নানা অস্ত্র হাতে। জাঠি শেল শূল মারে রাবণের মাথে 120 কুপিল যমের দূত রণের প্রচণ্ডে। নানা অন্ত পেলি মারে রাক্ষ্যের মুভে॥ মুদ্গর মুসল মারে গাছ জে পাথর। রথের মণ্ডল ভাঙ্গে আওআন চাতর॥ বিধাতার বরে রথ অক্ষয় অব্যয়।২৫ জত ভালে তত হয়ে নাহি পরাজয়। রাবণের সেনা সব বলে বিচক্ষণ। সর্বাঙ্গে কুটিল তমু নাহি ছাড়ে রণ॥

যমের কিন্ধর সব জুঝে ভগন্ধর। জোড়ে জোড়ে জাঠা মারে রাবণ উপর 1 ফুটিল রাবণ রাজা অঙ্গে রক্তে তিন্তে। অশোক কিংশুক বেন ফুটিল বসস্তে॥ সেই যা সম্বরি জুবো রাজা দশানন। ৫ দূতের উপরে করে অন্ত বরিদন।। যমের কিন্ধর সব বড়ই চতুর। রাবণের অন্ত জত দণ করে চুর॥ রাবণে মারিআ বাণ দানা তার ছিড়ে: ফুটিল রাবণ রাজা অঞ্চেরক্ত পড়ে ঃ. • পুষ্পক রথ হইতে পড়িল অঞ্চ ডাহে। সন্ধিত পাইআ পুন চারি পানে চাহে॥ থাক থাক বলি তৰ্জ্জে রাজা দশানন। পশুপতি নিবা অস্ত্র জুড়িল তথন॥ আকর্ণ পুরিতে হৈল পুনে অন্ধকার যমের কিন্ধরগণে কৈল ছারখার॥ পড়ে ব্মদূত দব সেই অন্ত্র তেজে। রাক্স কটক মাঝে জগবাদ্য বাজে॥ ক্রতিবাদ পণ্ডিতের কবিত্ব স্থপার। উত্তরকাও গান যমদূতের সংহার॥२०

রাক্ষসের হাতে যম দুতের মবন।
রথে চড়ি জানু যম রবির নন্দন॥
সাজিআ আনিল রথ বিচিত্র নির্মাণ।
রথে চড়ি যম কৈল জুবিতে পদ্ধান॥
যাত্রা কৈল মহা মহা মূর্ত্তি আগুয়ান।২৫
হাতে জাঠী শেল টাঙ্গি অতি থরদান॥

(344)

চে মূর্ভিতে যম করে সকল সংহার। হেন মূর্ত্তি নিঞ্ছ য় কেল আগুসার॥ कालम्ख अब श्रम देश्न मृर्खिमान। व्यानिया यस्पत्र लात्म देश्ला व्यक्षित्र ॥ যম রাজা কালদও মৃত্যু তিন জন। তিন অনা মৃৰ্ত্তি দেখি কাঁপে ত্ৰিভ্ৰন। त्राका वर्त् (वाड़ा त्मरे तथ थान बरह। রাৰণের আগে গিআ ক্রতগতি রহে॥ यम तांका कांगमण मृजा निन कारक । পালায়ে রাক্ষদ সেনা কেশ নাই বান্ধে॥১-বড বড পাত সব রাবণ সোমর। তিন জনার তেজ দেখি হইল ফাঁফর॥ সে তিন জনের তেজ কার প্রাণে সহি। সভে বলে পালায় কাহার বাট চাহি॥ পাত্র মিত্র পলাইল এড়ি দশানম।১৫ একেশ্বর রণ সহিলেক রাবণ।। জুঝিবার কাজ থাকুক রাবণের তেজে। হেন বীর নাঞি জে সন্ম হৈ আ জুঝে।। নির্ভন্ন রাবণ রাজা করে নাঞি ডর। যমেরে মারিয়া বাণ করিল জর্জর ॥২• দশদিক ছাইল রাবণ বাণ বরিসনে। রাবণের অন্ত্র যম কিছু নাহি গণে । (भन भून अक्ष) विज्ञास देववच्छ। ফুটিআ রাবণ রাজা হৈল নিরকত 📳 ব্ৰহ্মা আদি দেবতা গৰাৰ্য মুনিজন ৷২৫ (पिथिया (पाँशांद युक्त विश्विष्ठ वपन ॥ কোপিল ৱাবৰ রাজা অতি ভয়ন্তর ৷ बरमत्र छेनत्र मारत हाथ हाथ मत ॥

(500)

বাবে অন্ধার বৈল রাজা দশানন ॥

যমের সার্থি বিশ্বি পড়িল তথন ॥

চারি বাণ এড়ে রাজা মৃত্যুর উপর।

যমেরে সহস্র বাণ এড়ে লক্ষের ॥

নিকলে যমের মুথে কোপে আগুনি।

দশ নিগ আলো করে অপূর্ব কাহিনী ॥

দেখিআ যমের কোপ মৃত্যুহর্ষিত।

হজনার সিংহনাদে ত্বনকম্পিত ॥

মৃত্যু বলে বৈবম্বত শুন এক মনে।

তোমার অস্তের মধ্যে আমি সে

প্রধানে ॥১০

দৈত্যরাক হিরণাক শিপু ভরকর।
বলি বিরোচন ত্রিভ্বনের ক্রমর॥
মধু কৈটভ আদি জাহারে বাধান।
আমার কর্ষণে করি নাহি পরিত্রাণ॥
মধু কৈটভ জন্মিল ত্রজার কর্ণমূলে।১৫
তাহাকে হানিতে জাহ আপনার বলে॥
তাহারে বলেন বিষ্ণু স্থনহ উত্তর।
আমার হইতে বল ছই সহোদর॥
দৌহার সংহার কৈল কমললোচন।
দেই ছই জন ধরি বধিল জীবন॥২০
আমা দরসনে করি নাহিক পরাণ।
দরসন মাত্রে মরে কহিল নিদান॥
ছোবা মাত্রে সংহারিয়ে এ তিন ভ্বন।
এখনি করিব নাই ছরিয়ে রাবণ।
মারিব রাজ্য বেটা কোন কার্ব্যে

গণি।২৫ : হেলাতে রাবণ মারি দেহ আজা বাণী ॥ (549)

4)

যম বলে দেখ আগে সংগ্রামের রস। দণ্ড হত্তে মারি পাড়ে বাবণ রাক্ষ্য। प'छ भद्र समाप्त मुक्तंत धवनांन। ভার দরসনে কার নাহি পরিত্রাণ। চারি দিকে কালসর্প অন্তুত আকার।৫ হেন দণ্ড নিল যম লোকে চমৎকার॥ সেই দণ্ড ধম রাজা তুলি নিল হাতে। দও হৈতে সর্প বারি হয়ে যুথে যুথে ॥ অজগর কাল সর্প শংখিনী চিত্রিণী। বিষমুখে নিকলে মাথাতে জলে মণি॥১০ সাপের বিকট দস্ত দেখি ভর করি। দস্ত দরসনে লোক কাঁপে পরহরি॥ জাঠা ঝগড়া যেন গায়ের লোমাবলি। জাহার তরাদে থদে পারের অঙ্গুলি। **ছুইৰার কার্য্য থাকু দরসনে মরি।১৫** में एति बिज्वन काँ भि भेत हिता। দওমুথে অগ্নি জলে ।লাকের তরাদ। मर्छ वर्ष जावरणज इहेल विनाम।। पिथिया यस्त्र पण क्रिन जात्व। ময় স্থানবের শেল নিল ততক্ষণ॥२• (महे (मन पिक्षि मद (पद हमकिछ। হেন শেল তুলিয়া লইলে আচম্বিত। দেবগণ নিঞা ব্ৰহ্মা সংগ্ৰাম দেখে। यरमञ् इाटक मेख दम्थि नामिन मभूर्य।। कि कांद्रत कालम् कतिल मद्रग ।२१ (मराश के कि नां कि जारतक महा ॥ দওকে হকিল আমি মৃত্যুর মিশালে। में जार रार्थ मरह नकन में बना।

(>0)

मदम्य मृजू इत्र भद्रम कि कथा। হেন দণ্ড এড় তুমি দেখি লাগে ব্যথা॥ দণ্ড মিথ্যা নাহি হব মারিব রাবণ। আমার বচন শুনি তুমি ত্যজ রণ ॥ ত্রিভুবনে মোর বোল কেবা করে আন।¢ সংসারে ভাহার নাঞি কোন থানে স্থান॥ মরিব রাবণ যদি দণ্ড বাজে মুখে। ত্রিভুবনে মোর বাক্য কেহ নাহি খণ্ডে॥ দণ্ড রাথ রাবণ আমায় পাইল বর। পরাজয় মানি তুমি জাহ নিজ ঘর ॥১• ষম বলে তুরা বরে মোর ঠাকুরাল। ৰজ্মিলে তোমার **আ**জ্ঞা কিসে লোকপাল। ভূমি বর দিলে জারে করে ভূতে মারি। সমূখে রাবণ জুঝে কোন মতে ভরি॥ তোমার চরণে প্রভু আমি করি গড়।১৫ সংগ্রামে ছাড়িআ আমি হের দিল রড়॥ রথে চড়ি বমরাজ হৈল। অদর্শন। যমেরে জিনিল বলি ডাকে দশানন।। প্রবেশি যমের ঘরে করি শওভও। উদ্দেশ করিআ চাহে বাণ কালদণ্ড ॥২० পাইল অনেক কন্যা রূপে বিদ্যাধরী। त्रत्थ ভति পাঠाই या पिन नका भूती ॥ অগন্তা কছেন কথা রামচন্দ্র শুনে। ক্তিবাস রচিল উত্তর রামায়ণে।

রাম বলে মূনি আমি জিজাসি কারণ ৷২৫ স্থানিবাম বিপরীত ব্যের তাড়ন 🖟 (505)

পাপের প্রহার স্থানি মোরে চমৎকার। এগব পাপীর কিছু নাই প্রতিকার॥ মনি বলে রামচক্র কর অবধান। তুমি অবতার কৈলে পাপী পরিত্রাণ।। জে জন গুনিবে তব যুদ্ধ রামায়ণ।৫ সেই জন নাহি জাব যমের করণ।। চারি বেদে সহস্র নামে জত হয় ফল। তব নাম নিতে মুক্ত পাপিষ্ট সকল।। সংদার নিস্তার হেতু তব অবতার। লইলে ভোমার নাম নরের উদ্ধাব। ১০ অগস্ত্যের কথা শুনি রামচক্র হাসে। হাসিতা হাসিতা রাম মুনিকে জিজাদে॥ यम मत्न युक्त देकल वाका नगानन। তবে কোথা গেল তাহা কহ তপোধন।। অগস্তা বলেন রাম কথামে দেহ মন 1১৫ পাতাল জিনিতে গেলা রাঞাত রাবণ। ত্রিভুবন জিনিঞা লঙ্কার অধিকারী। সর্ব সেনা লইআ রাজা গেল অধাপুরী॥ পুষ্পকরথে চড়ি জিনিল নান।দেশ। কটক সহিতে কৈল পাতাল প্রবেশ ॥২٠ नाना लाक (मर्थ नाना পরिচ্ছ मधाती। নাগলোক জিনিল করিআ মারামারি।। শতশির সহস্রমস্তক কেহ ধরে। ভার দৃষ্টে পড়িলে তথনি লোক মরে। শিরে মণি ধরে মুখে বিষ অগ্নি জলে। ১৫ হেন সব নাগরাজা জিনিল পাতালে।। जिज्रान इहाँ छ **(मिश्राना नाना श्रुती।** छन्दर्गां नारभन्न अन्य अधिकाती॥

(>%)

সকল নাগের রাজা অনন্ত বাহুকি i মহাদেবে ছাড়িসা কোথায় নাহি থাকি॥ কেহ দেশে নাই রাবণ গেল শৃত্য পুরে। নাগগণে জিনিতে সন্তায় লক্ষেখরে॥ কুপিল অনন্ত রাজা জুঝিতে সজাড়।৫ উন কোট নাগ আসি দিল পাটো মাড়॥ আছিল জতেক নাগ করিল সউরণ।। সুৰ্গ মন্ত্ৰা ছাড়ি সা আইল নাগগণ। যত নাগ নিবদয়ে অবনীমণ্ডলে। অনস্তের আজ্ঞা পাঞা আইল পাতালে॥১০ পৰ্কতে যতেক বৈদে সমুদ্ৰের কুলে। সুলঙ্গ বাহিমা সভে গেলা রদাতলে।। দশ সহস্র নাগেতে আইল মেঘবাল। দশ সহস্র নাগ সঙ্গে আলা উদয় কাল। দাদশ সহত্রে নাগ আইলা বান্ধল।১৫ দশ সহস্র নাগে আলা নাম মহিদল॥ चानग महोस्य जाना बात धहेहजा। দশ সহস্র সাপ সঙ্গে আল্য ইড়াই বোড়া 🛭 দশ সহস্র সাপ সঙ্গে আল্য মধুমতী। অষ্ট সহস্ৰ নাগে আইল বজ্ৰচিতি ॥২০ আইল আদিত্য নাগ সুর্য্যের প্রতাপ। নিঃখনি আ মেঘাবলি আলা রাজসাপ॥ মোমজিহা দাপ আলা হরিতাল জুতি॥ হিঙ্গলিয়া নাগ আলা ভরিয়া জগতি॥ পারনিয়া মুরলিয়া কালিয়া কোঙর ২৫ কুচিলিয়া মধুলিয়া আর অজগর॥ আলানিয়া লাগলিয়া কাল্যা কাঞ্জিনরা। থরিস ধুলিয়া চিতি মুথরা গুখুরা॥

(5%5)

বেতাল বেতাল আল্য কাঞ্নি পাটাড়। চক্রভাগা নাউডগা কৃহিয়া আছাড়॥ কালিয়া সেমাড় চান্দা ধল্যা বিগতিয়া। আছুটা কাছটা কালকেয়া কেউটিয়া॥ ব্লাঙ্গাবৰ্ণে নাগ আল্য অশোক

কিংশুক।৫

মণিনাগ পাভুনাগ নাগের তিলক॥ আইল বাস্থকি নাগ দাপ চুড়ামণি। শত সহস্ৰ নাগ সাল্য কালিনী নাগিনী ॥ বড় বড় নাগ আলা রসাতলপুরী। তক্ষক আইল দৰ্ক নাগ-অধিকারী ॥>० উনকোটি নাগ আসি করে পাটোআডে। নাগগণ দেখি রাক্ষসের প্রাণ উডে॥ সারি দিয়া দাওাইলা যত সব নাগে। মাথা নোঙাঞিআ রহে অনস্তের আগে॥ রায়নাগ <del>জামুনাগ আ</del>লা গুই ভাই।১৫ জারে থেদাড়িকা খার তার প্রাণ-নাই॥ তেঁতলিয়া নাগ আলা গাঠে গাঠে বহা। পাৰ্কতিয়া নাগ দেখি মনে লাগে শঙ্কা॥ নাগরাঞ্চা বলেন সভার বিদামান। ছার নিশাচর বেটা করে অপমান ॥२० প্রবাম করিয়া নাগ বলে ভার আপে। भातित ब्रांक्रम-रम्ना रकान कार्या लारम ॥ পুষ্পরথে চড়িয়াছে রাজা দশানন। वावर्ण प्रथियां कार्ण खर्म नागगण ॥ কুয়া বোড়া উলা বোড়া মণ্ডলিয়া

বোড়া ৷২৫ রাবণেরে ধরি গিলে লক্ষ জাতি বোড়া॥

(393)

আড়ই ভুক্সরাজ মণিবজ্র চিতি। রাবণের চৌরাশি সহস্র গিলে হাথি॥ পর্বত দ্যান নাগ স্বর্গে লাগে মাথা। উভ কনে চন্দ্রের মণ্ডলে ধরে ছাতা॥ বিষধর নামে নাগ গাল নাহি নাডে।৫ ধরিয়া রাক্ষনগণ গিলে আতে আতে ॥ পর্বাতীয়া নাগ উঠে উভ করি ফনা। বারি হয়ে তার মুথে আগুনের কণা ॥ বাহির হইছে অগ্নি ঝলকে ঝলকে। প্রভ্যা মরে নিশাচর দশানন দেখে ॥১০ বিষের জালায় সর্ব দেনাগণ পোড়ে। সকল কটকে রাজা পুষ্পর্থে চড়ে॥ মহোদর প্রহন্ত মারীচ মহাপাশ। রথে চড়ি উঠে রাজা উপর আকাশ॥ বাজনার ঘোড রথে চডিতে না পায়।১৫ বেড়িয়া তক্ষকগণ সভাকারে খায়॥ বড় বড় হাথিকে নাগ ভরিলেন পেটে। মরিল নাগের বিষে করি ছট ফটে॥ চারি পা আছাড়ে হাথি আর শুও দন্ত। বাহির হইল হাথি ফুটি নাগ অস্ত ॥২০ ঘোডা পেটে সাম্ভাইয়া চারি পা আছাডে। পেটের ভিতরে পদাঘাতে অন্ত্র ছিঁড়ে॥ হাথি ঘোড়া লাথি মারে নাগে ছিঁড়ে অন্ত। মহাবল নাগ পড়ে নিকটি আ দন্ত ॥ त्रत्थ हिं वान भारत ताका म्यानन ।२० বাণ থাঞা ব্যাকুল হৈল নাগগণ ॥ ভঙ্গ দিল ভূজাঞ্গ সহিতে রণ নারি। थनाहेबा श्राटम कतिना अर्थाभूती॥

(১৬৩)

সান্তার রাবণ রাজা গডের ভিতর। রাবণে দেখিরা সাপ ধাইল সম্বর ॥ क्रवित नार्शित दोका नाना अक्ष धति। র্থ নিঞা পালায় লঙ্কার অধিকারী॥ ভরাদে রাবণ হৈলা গডের বাহির।৫ সর্পবল দেখিয়া রাক্ষদ নহে ভির॥ অরম্ভ নাগের রাজা সর্পচ্ডামণি। তাহাকে ডাকিয়া বলে পাত্র মহাগুণী॥ खप्र नदर म्मानन chares त नाजि। মোর বোলে উহা সনে করহ পীরিতি ॥>• জনপ মুনির এত গুনিঞা কাহিনী। হৃদরে মানিঞা সর্পরাজ বলে বাণী॥ ভাল কথা আপনে বলিলে নাগেখর। ত্রিভুবন কৈল জয় রাজা লঙ্কেখর॥ রাবণেরে ডাকিআ বলে সর্প অধিকারী।১৫ নাগক্তা বিভা কর পরম স্থলরী॥ আছরে হৃদ্ধী কন্তা কুলে পতিব্রতা। ছই কন্তা বিভা কৈল নাগের ছহিত।॥ অনন্ত বাস্থাক নাগ বড়ই সেয়ান। রাখিল পাতাল ছই কল্লা দিআ দান ॥२० ক্সাদান কৈল নাগ মনের কৌতুকে। তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ বিষদান দিলেন যৌতুকে॥ नाश छेशांत्रिका मिल विष दानि वानि। লক্ষাকে পাঠায় রাজা ভরিআ কলসী॥ त्रत्थ विष मिन चात्र महत्र चन्तरी।२० শুক সারণে দিআ পাঠাইকেন পরি॥ (महे विव हेसाबि९ देवन विविधन। क्रेक गहिए कार्थ देशना चारुकन ॥

(3%8)

হত্ন বিভীষণ গেল গক্নড়ের স্থান।
অনিয়া বর্দি ইক্র দিল প্রাণ দান ॥
চলিলা পৌলস্তা মুনি বৈকুণ্ঠ ভুবন।
পাতাল জিনিঞা চলে রাজা দশানন ॥
ক্রতিবাদ পণ্ডিড জানেন নামা রাগ।৫
উত্তরকাণ্ড গাইল রাবণ জিনে নাগ॥

শ্বিনল সর্পের পুরী নামে ভোগবতী। রথে চড়ি চলিলা রাক্ষণ অধিপতি॥ নিবাতকবচ দৈতা অধোপরে বৈলে। নিশা চক্রবর্তী রাজা কারে নাহি

মহাতে জবান দৈতা কারে নাহি ডর। পাইমা ব্রহ্মার বর অক্স অমর 🏾 লক্ষের বলেন নিবাভ গেল কহি। লক্ষার রাবণ জে সংগ্রাম তারে চাহি ॥ ८म सम्भा करत त्र है वा काउत Ise তারে নাহি মারি আমি স্বরূপ উত্তর ॥ न्य वक्ष रेम् त्राकात वीरत महावीत। দৈন্য সনে হৈল রাজা গড়ের বাছির॥ नामा त्राक्यामा वाटक विविध वाक्यना । রাক্ষণ দৈত্যের সেনা বাজে মহারণা ॥২০ শেল काठि अंकड़ा मूनन शमावाड़ी। পড়িল রাক্ষ্য-সেনা জায় গড়াগড়ি ॥ প্রহস্ত মারীচ মহাপাশ মহোদর। দৈত্যগণে বাবে বিদ্ধি করিল ভর্জর॥ दिव छात्र करेक गव गः आस्म व्यव्छ ।२४ वावरणत रमना विकि करत रख बख ॥

(>be)

इहेन्टन युक्त करत तर्गत विवामी। त्रवंदन मर्था वरह र्वात त्रक नहीं ॥ নিবাত দৈতোর হাতে নানা প্রহরণ। অস্ত্র বরিসন করি ছাইল রাবণ ॥ देवका वान माद्र मुश्र ना नाटक जावन । द চতুৰ্দিকে বাণ মারে সব দৈত্যগণ॥ রাবণ ব্যাকুল হৈল অস্ত্র সম্বরিতে। সংগ্রাম সহিত্য। পুন জুঝে ভাল মতে॥ মুলার মুদল এড়ে বজ্র ধরদান। জাঠি শেল শূল টাজি দেবের নির্মাণ ॥১০ রাক্ষস দৈতোর রণ লোকে লাগে ভয়। কেহ কারে সংগ্রামে করিতে নারে জয়॥ বৎসরেক ব্রন্ধে কেছ না পারে কাহারে। দেবগণ নিঞা ব্রহ্মা আল্য তথাকারে॥ নিবাতকে বলে শুন আমার উত্তর।১৫ ভোর প্রাণে জিনিতে নারিব লঙ্কেশ্বর ॥ মোর বাক্য শুনহে রাক্ষ্য অধিপ্রতি। নিবাতে জিনিতে নাহি তোমার শক্তি ॥ মোর বরে তোরা দোঁতে বিক্রমে হুর্জার। থীত করি দর্মকাল থাকহ নির্ভয় ॥২০ कान कान मध्यितक बनात वहन। অগ্নি সাক্ষী করি মৈত্র করে তুইজন। প্রীত কৈল ছক্তনে ব্রহ্মার বিদামানে। সম্বায় করিআ তক্ষা গেলা নিজ স্থানে॥ वर्मादक मुणानन आहिना (भोत्राव ।२४ নানা ভোগে লকেখনে তৃষিলা দানৰে॥ गकांत्र अधिक (जार्ग जुद्धान मान्द्र। वर्मदक वह बाका कान निक भूदत ॥

(344)

কুত্তিবাদ পণ্ডিত বাৰসভায় পঞ্জিত। গাইল উত্তরকাও রামের চরিত্র #

অগত্তোর কথা শুনি রামে উচ্চহাসঃ कर कर विन बाम करतन क्षकान ॥ অগন্তা বলেন রাম কথারে দেহ মন। ৫ বরুণ জিনিতে জান রাজা দশানন॥ वाक्रिकि हिन्ता वक्रव क्रिनिवादत । সেই সৰ কথা রাম শুনেন সাদরে॥ নাগরাতো জিনি রাজা ঠাঞি ঠাঞি বলে। বরুণের পুর রাজা গোলেন পাডালে ॥১• স্থ্রভি দেখিল তথা লক্ষ্যীর সমান। দদাই আপনি ক্ষীর খদে ধর্মান ॥ জার হথ্যে ভরিআছে ক্ষীরোদ-সাগর। জাহাতে স্থতিকা আছে প্রভু গদাধর॥ य कीरबारम कन्मियाह (मर निमानि 1)€ (कहे थात **উ**পজिना नभी नक्छि।। ष ক্ষীরোদে কালকুট হৈল উপনীতি। লা হতে পাইল ইন্দ্র ঐরাবত হাথি।। জেই কীর্মাগরেতে অমৃত উপজে। ट्यां (धर श्रमिक्त देकन तांवनताटक ॥२· স্থরভি দেখিতা হর্ষিত দশানন। তিন বার প্রদক্ষিণ বনিল চরণ॥ বৰুণ জিনিঞা আগে আসি শীঘুণতি । আইবার কালে গাভী লইব সংহতি॥ এত বলি দশানন করিল পজান ৷২৫ वावण रगरन चक्कि देश अवश्रीत ।।

(564)

(364)

यसर्गत श्रुत (पथि मकन धरन। खन जल कुछीत मकत शक्त वन । রত্বের নির্মাণ অন্ধকার- দুর করে। পাষাণের ঘুর বার্মাস পানি ঝরেনা जिमा त्रावन वरन वर्तन (शन कहि।a লক্ষার রাবণ আমি সংগ্রাম চাহি। रांत्रिल विलिया (खवा करत्र भूषाञ्चलि। তাকে নাহি মারি সংগ্রামে সঙ্গুলি॥ পুত্র পৌত্র জত ছিল বরুণের বীর। আপন আপন দৈতে হইলা বাহির।!১০ নানা অস্ত্র পেলি মারে জাঠি জে ঝগডা। সংগ্রাম দেখিতা গায়ে পড় এ সিঞ্চড়া॥ त्रावर्णत रमना करत चल वित्रमन। ভাঙ্গিল বৰুণ দৈত্য নাছি সহে রণ॥ বরুণের পুত্র অস্ত্র করে অবতার।১৫ পালামে রাক্ষদদেন। নাহি দহে ভার।। আপনি রাবণ দেখি সৈত্যের বিনাশ। রথ নিয়া উঠে বীর উপর আকাশ। বর্জণের পুত্র সব শুন্যে তারে দেখে। তারা দব রথ নিঞা উঠে অন্তরীকে॥২० ৰক্তণের পুত্র সব বীরে মহাবীর। আকাশেতে রণ করে গহন গভীর॥ রাবণের বড বীর জাহার বাখান। ৰকণ পুতের বাণে নাহি ধরে টান॥ ষ্মারির উথাল দে বরুণপুত্রের বাবে।২৫ রাবণের সেনারা সন্মুখ নহে রণে।। वकरनत वरन शाय जूनि निन बाठि। त्रावरण विश्व करत (मनागण काणि॥

পালালা অমা ভাগণ রাবণ ফাঁফর। काश (मधि कुशिन त्राक्रम मरहामत्र॥ বঙ্গণের পুতের হাথি ঘোড়া ধরদান। মহোদরের গদা খাঞা তেজিল পরাণ॥ मरहामत जुरल रक्त मनमखशीथ। द গদার বাড়িতে মারে রথের সার্থি॥ ঘোড়া হাথি মারে বীর নাহিক দোসর। বরুণের পুত্র জুঝে শৃন্তে করি ভর॥ বাণরৃষ্টি করে বীর অগ্নির সোদর। বাণেতে বিমুখ হৈল বীর মহোদর ॥১• বরুণ-পুতের বাণে আগুন বরিদে। বাণে বিদ্ধি খণ্ড খণ্ড করিল রাক্ষদে॥ পালায়ে রাক্ষদগণ নাহি সহে রণ। রণ সহি অভিনরে রাজা দশানন॥ কুপিল রাবণ রাজা অতি ভয়ঙ্কর।১৫ नान। श्रञ्ज भारत वरूग-वः रमत छे भत ॥ মুদগর মুদল এড়ে বজ্র ধরদান। (भग चार्रा थाछा हाकि (मृत्यत्र निर्माण ॥ বরুণের বংশের টুটিআ আল্য বলে। আকাশে রহিতে নারে পড়ে ভূমিতলে॥২, সিংহনাদ ছাড়ে রাজা বলে মহাবল। বাণবৃষ্টি করে যেন মেঘে পেলে জল। মোহ গেল বরুণের বংশ বলধর। করিআ পাথালি কোলা পাত্র নিল ঘর ॥ ভাহারে ক্রিনিঞা রাজা বরুণেরে চাহে ৷২৫ আগ্রিআ প্রভাস পাত্র দশাননে কহে॥ ব্ৰন্মণোকে গন্ধৰ্ক গাইছে মনোহর। গীত স্থানিবারে তথা গেলা অলেশ্বর।

(694)

ক্রধান না থাকে যদি শৃষ্ণ সেই পুরী গু
জিনিলে কুমারগণে জাহ নিজপুরী ॥
বক্রণ জিনিল বলি সিংহনাদ ছাড়ে।
পুষ্পারথে চড়ি রাজা লক্ষেশ্বর লড়ে॥
বক্রণের পুরী লুঁটি নিল নাগপাশ।
উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

অগস্ত্যের কথা স্থানি হাসেন জীরাম। তবে কোথা গেলারাজা করিতে সংগ্রাম। অগন্তা বলেন রাম কথায়ে দেহ মন। व्यथ्येती किनिवादत हिन्न त्रावन ॥>• অশ্বনগরী নামে পাতালপুরে বৈদে। দৈল্পানন তথাকারে আইদে॥ দেবের নির্মাণপুরী রত্ব বিভূষিত। দেথি আ রাবণ রাজা হইল বিস্মিত। আভিআস চাতর দেখে রত্নে ঘরম্বার।১৫ ঝল মল করে যেন রত্ন অবভার দ স্মবর্ণের গাছ সব স্মবর্ণের লতা। জিনিঞা অমরাবতী অন্যে কিবা কথা॥ সেনাপতি প্রহন্তে পাঁঠিল জানিবারে। বিহন্দে বিহন্দে বার সাস্তাইল ভিতরে ॥২০ षाती शहती नारे तमानत अकबन। দেখিল পুরুষ এক রবির কিরণ॥ রত্বময় আওমাদ পড়্যাছে চারিভিতে। প্রবাদ মুক্তার ঝারা অপূর্ব্ব দেখিতে ॥ পৰন বহিতে বাজে চৌদিগে কিফিনী হৈ थाश्य तमिया करह तांवरन काहिनी॥

(390)

নাহিক আঁথির তারা ধল হুই ডিম্বা। ত্পাটী দশন ধল জেন মর থান্তা॥ পর্বত স্মান বীর গিরি পারা বুকে 🎼 वाश्राम्रं अधि अत् यगरक यगरक ॥ চাঁচর চিকুর ধরে নাহি দাড়ি লেশ। ব ভূবনমোহন বীর অতি চিত্তবেশ।। পাকা তেলাকুচা জেন ৩ঠে শোভে রাজ। পর্বত প্রমাণ বীর হাতে লোহার ডাঙ্গ ॥ রাবণে বলেন তুঞি জাতো চাহিস কহি। রাবণ রাজা বলে আমি সংগ্রাম চাহি ॥১০ যুদ্ধের উত্তর যদি বলেন লক্ষেশ্র। হাসিআ পুরুষ বর দিলেন উত্তর ॥ বীর মহাবীর আমি তপস্থাতে মুনি। জগত স্জিল আমি দিবস রজনী॥ তোর দনে যুদ্ধ মোর লোকে উপহাস।১৫ বলি দনে জুঝ গিআ সন্তাই আওআদ ॥ এত বলি দার ছাড়ি দিলা নারায়ণ। প্রবেশে বলির পুরে রাজা দশানন॥ ক্টক সকল রহে বাহির তুয়ারে। এकला तांवन तांका श्रादिमाना श्रात ॥२० দেখনে বলির পুরী হরষিত মন। ঘোড়ার সহিস সনে হৈল দরসন॥ ডाक मिष्या वरम दावर्गदा (हमानात । কোথা হৈতে আহ্ম বীর কি নাম তোমার॥ রাজা বলে আমি বিশ্বশ্রবার নন্দন।২৫ পোলভাের নাতি মাের নাম দশানন ॥ সকল পৃথিৱী আমি জিনি বাছবলে। विनारन युक्त आदि कतिव পাতালে॥

(293)

(>93)

রবে হৈতে নামি রাজা পুরীকে আইসে।

দার চাপি পুরুষ দাঁড়ার মহারোবে।

এতেক রাবণ লদি বলে অহলার।

বলির নিকটে গিলা কহে চেলাদার।

এক দূতে পাঠাইরা ডাকিল রাবণে।

চলিল রাবণ রাজা বলি দরসনে।

বিহল্প চাড়িআ গেল ভিতর আওআসে।

রাবণে দেখিআন্তন বলিরাজা হাসে।

হাতে ধরি বলি দশানন কৈল কোলে।

জিজ্ঞাদিলা কেন ভুমি আইলে

भारताल ॥) • রাবণ বলেন ভোমা বান্ধিল পাতালে। বিষ্ণু জিনি মুক্ত করিব বাছবলে॥ বলি বলে হেন কথা না বলিহ তুণ্ডে। ব্রিভুবন সাধ্যে মোর বন্ধন না খণ্ডে॥ रक है नीत मत्म देशन चादत मत्रमम 151 रिन्दे नीत शरक मारत मक विज्वन ॥ राष्ट्र राष्ट्र वीत देशन विकास यांगन। বিনিতে না পারে কেহ সেই মহাবল।। তুমি আমি আদি করি জত মহাবীর। তার যুদ্ধে কোন জন হইবেন স্থির ॥২• তাঁহার আগে না করিছ কোন অহন্ধার। नारक भारत जिल्लान करात गःहात ॥ কাৰণ বলেন জন্ম মৃত্যু কাল দও। फिन क्रमा वहे दक्द नाहिक छाउछ ॥ প্লার লোমাবলি বেন দেখি কাল-

দশন বিষ্ঠ বেন কর্যোর প্রভাগ ॥

अध्यदि जिनिम आमि अध्य किया छत्। আর কোন জন হব তাহার সোমর ॥ विन वरन प्रभागम ना जान नकन। তুমি আমি আদি সভে তার করতল ৷ তাহার বিরোধে সভে জার বম্বর ক তাঁর বর পাইলে হই অলম অমর ॥ মধু কৈটভ আদি করি জত মহাবীর। চন্দ্র স্থা হেন দেখি জাহার শরীরা (मवश्रव क्रिनि क्रि वहेना अधिकात्र। হেন মহাবীর সব করিল সংহার ॥১० ইন্দ্র আদি করিআ জতেক দেব চাছি। সেই স্থের সেই মারে তাহা বই নাহি॥ যুথে যুথে ইন্দ্র কত সহস্রেক ব্রহ্মা। সেই স্থান্ধ সেই মারে সেই বিশ্বকর্মা॥ সেই বিষ্ণু সেই ব্ৰহ্মা সেই ত্ৰিপুরারি।১c मद्य ठक शना भग मात्रक दम शांती ॥ যজ্ঞ আরাধন করি জাহারে ভক্তি। ধেয়ানে ভাবিলে তারে পাই মোকগতি। বলির বচন গুনি হইলা বাহির। ना (मर्थ भूक्ष नरत जारमध भनीत ॥२० व्यर्गका यदान तामहता (पर मन। বলির পুরীর বারি হইল রাবণ ॥ বলির বচন ক্ষনি কুপিল রাবণা ডাক্যা বলে কি ক্রিভে পারে নারায়ণ॥ विन वर्त रहन द्वाल ना विनन आहा । १० পাত্র তোমা সনে বৃদ্ধ হইল আমার॥ ষ্ঠাতের নাথে তুঞি নিন্দিস রাবন। ठाँव कार्या थाकू याचा मदन क

(599)

হাথে গতি হাবে ভার জুবিবার মনে। আৰুবাস ভিতরে যুদ্ধ বলিতে রাবণে।। স্বাব্ধের সেনা সব বাহির প্রভারে। ছুই জনে বাজে যুদ্ধ পুরীর ভিতরে॥ ছই জনে সম কেহো জিলিতে না পারে।e বৎশরেক যুদ্ধ করে পাতাল ভিতরে॥ मात्रामस कान এएए टेम्डा नृशवत। তাহে অচেতন হৈল রাজা লক্ষের।। রশ হৈতে দশানন পড়ে ভূমিতলে। খাঁচাতে ভরিআ তারে রাথে বিদ্দশালে॥১• বন্দী হৈল দশানন খাঁচার ভিতর। রাবণে বাদিজা ঘর গেলা দৈত্যেশ্ব॥ (पिंजिनाटन तावरन शृहेन थाँठामरन। ধরুক ছাড়িআ রাজা বৈদে সিংহাদনে ॥ মান সন্ধা করি বলি করিল ভোকন ৷১৫ मात्राभारम बन्ही देशन बाका मनानन ॥ বন্দী হঞা রহে রাজ্য এক সম্বদ্যর। রাবণে বন্ধি আ পাশরিলা দৈত্যেশ্বর ॥ रेम्य मत्त बहित्नक वाहित ह्यादत। বংসরেক বন্দীরাজা খাঁচার ভিতরে ॥২০ नहें जा উष्टिष्ट थाना काय मांगीतन। তাহাকে দেখিয়া অন্ন মাগিল বাবৰ॥ কুণাতে বিকল মোর নাহিক গেয়ান। কিছু আন দিআ সভে রাধহ পরাণ॥ थक अभि बर्णन विणव पात्रीशव ।२० मन्ने पिर नुष्टा कर छन दर बादन ॥ দাৰণ বলেন আনে অৱ দেখি হাথে। চৰে মতা কৰি আমি ব্যবিত চিতে।

(398)

मानीवाम विलय कत्र अक्रन। गत्त्र देश्ट अन जानि कतिर खासन এত তনি দানীগণ গেলা অন্তঃপুরী। আনিল ব্যঞ্জন অন্ন অভি বৃদ্ধ করি। थाल ভति निना यह बाजिए बाअन । রাবণের কাছে সভে করিলা গমন অন্ন হাতে করিআ বলিছে দাসীগ্ৰ। **८**श्त अम (नथ नृष्ठा कब्रहे तावन ॥ হাথ তালি দিলেন বলির দাসীগ্র क्रम दिश्व रिविट्न नाटका ब्रोदन ॥১० থাঁচার ভিতরে নাচে রাক্ষ্যের নাথ কুধাতে বিকল হঞা পাতে কুড়ি হাত রাবণের হাতে অল্প দেন দাসীগ্র মুখ হঞা দশ মুখে করেন ভোজন 🖁 পায়েদ পিষ্টক দিল ভূঙ্গারের পাণি।১৫ কুধা ভূষা দূরে গেল জুড়াল পরাণী অল পাণি খাঞা বল হইল রাজার। नाभीशत्व वरण वाद्यक त्मर मृत्यात ॥ কুপিল বলির দাসী ঝাঁটা নিশ হাতে। यापानि भाषानि मादत तावरनत मादन । বাড়ি হাথে করি খোঁচা মারে কোন ক্রা ৰ্থাচাতে ভরিমা হাত কেহো মারে ঠোল यात्रण कांजते देश्य क्रांका म्यानम । विवासा दगाउदिया कुड़िन कमान ॥ র্ণাচার ভিতরে থাকি কান্দেন করুণে 🚉 সিংহাসনে থাকি ভাহা বলিয়ালা ভনে 🖟 হেনকালে ব্ৰহ্মা আদি কহিল বলিছে। वार्यात नवान बाव हां जिल्लाहरू

340)

ৰণিরাভা বলে প্রভু যে আজা তোমার। ছাড়িব গাবণে তুমি কর আঞ্চার। এত বলি ভ্রমা গেল আপন দদন। विविद्यांका ज्यांना यथा कांट्सन द्रांदण ॥ শীচা হৈতে বাবণেরে করিলা মোচন। জ্যোত হাতে দশানন করে নিবেদন।। জেমার সমান বীর নাহি ত্রিভূবনে। मुक्क क्रि देश दर्भादत द्वापर की तरन ॥ থাঁৱেক আমার তরে কর পরিত্রাণ। আত ভানি রাবণের করিল ছোডান ॥১• ছান করাইআ দিল স্থানি চন্দন। মালা আভৰণ দিল বিচিত বসন। নিরে প্রণাম করি লড়ে অতি ভীতে। কটক নিকট গিলা চড়ে পুষ্পরথে॥ देश हि त्रायन वाकाय क्य (हान 1) व बिटक किनिन र्गा करत श्वराम ॥ ৰ হাল জিনিল বলি সিংহনাদ ছাড়ে। ৰালারপে চড়িঅ। কটক সঙ্গে লড়ে॥ নির্মান হইছা বারি হইলা পাতালে। हैक्सरक किनिए काय जाननाव वर्ण ॥२० প্রথা যথা আছরে বিষ্ণুর অধিঠান। তথা তথা বাবণের হয়ে অপমান॥ বিশ্ব খলি দর্গন গান ফুতিবাস। ক্লাকলৈ ৰওএ পাণ সিদ্ধ অভিনাৰ।

অধ্যন্তের কথা স্থনি শীরামের হাস।২৫ জুল ক্তুবলি:বাম করেন প্রকাশ ॥ अशस्त्र यत्नन त्राम क्षांत्र त्वर मन । বলির ছারীর শাঁঠা থাইল রাবণ ॥ স্থনি সভাগত হাসে রামের সমাজে। नत्व माज विजीवन दिंगे माथा नात्व ॥ তার পর দশানম চড়ি পুষ্পর্থে। क्षत्र क्षत्र नात्म कांत्र उत्तरलांकशय्य ॥ हल बिनिवाद बाब स्ट्रांस मध्य द **(मर्थ এक त्रथ्य छात्र शुक्य छन्त्र ॥** अशकि हन्त्रमाना पिया कल्ववा অপরী বিভাধরী বেষ্টিত বিস্তর । মধূপানে রতিশ্রমে চলিছে নয়ন। ত্ৰীর চুম্ব দানে অঞ্চত অচেতন ॥১ • अश्रुक् दमथिशा मुख्डे आका नदक्ष्यत । পৰ্বজ্ঞমুনিরে দেখি পুছেন উত্তর 🎼 **एश्न गुलाव करव लाक नाहि वास्त्र**। ডরের প্রদক্ষ নাহি দৈল দেখি পাশে। এতেক জিজানা যদি, কৈল লভেশ্বর ١১৫ श्रनिशा भर्तक भूनि विरमन छेल्ड ॥ করিআ অনেক তপ হইলাভ ভপদী। বন্ধলোকে জার বীর বেপ্তিত রূপদী। महाबः म खिम जुल कतिन विख्य। उक्तालां क बार विष नाहि नाक्षत्र ॥२ তার পর আর এক রথে একজন। खात्र भारत अक मृद्धे हारहत द्वांवन ॥ केलम शुक्रव (मधि निवा करणवद्र) शक्तक गार्रेष्ट्र शेंड नाट विद्यादन ॥ व्रावन बटनन युनि एम्ड शविष्ठ ।३० (कान क्रन) कात्र कांट्र कांद्र श्रेताक्ष्य

(>99)

মুনি বলে মর্ত্তা লোকে আছিল জুঝার। সংগ্রামে বিপক্ষ ক্ষয় করিল অপার ॥ আগু রণ সহিআ আপন কার্যা রাথে। পড়িল সমুথ রণে মারিল বিপক্ষে॥ অসম সাহসে পড়ে বিপক্ষের হাথে। ¢ इक्रालाक जाग्र वीत हिं पिया तर्थ ॥ চলিলা উত্তম লোকে আপন সাহসে। হেন জন সহ যুদ্ধ যুক্তি নাহি আইদে॥ রাজা বলে আর রথে জায় কোন জন। সূর্যোর কিরণ অঙ্গে নানা আভরণ॥১० মুনি বলে ছিল অই ধনের ঈশ্বর। नाना मान विश्वशंद्य मित्नन विश्वतः॥ সোনা দান দিয়াছিল সোনাতে ভূষিত। মরা জন সহ রণ নহে ত উচিত।। স্বৰ্গবাদী স্বৰ্গ জায় রণ নাহি চাহে। ১৫ হেন জন সহ রণ সমূচিত নহে॥ রাবণ বলেন তুমি মৌর ধর্ম বাপ। মোর বাপ সনে স্বর্গে তোমার আলাপ। জাহা জাহা সনে আমি জুঝিবারে চাহি। জাহারে নিষেধ কর তার কাছে কহি॥ २० দিগ্বিজয় করি ত্রিভ্বন জিনি। জুঝিব কাহার সঙ্গে কহ মহামুনি॥ নিশ্চিন্তে থাকিতে নারি সংগ্রাম বিহনে ! আজিকার রণ আমি করি কার সনে॥ মুনি বলে স্থ্য বংশে নৃপতি সান্ধাতা। ু২৫ স্থ্য সম তেজ কল্পতক সম দাতা।। বলে মহাবলী রাজা অনেকের ভর্তা। সপ্ত দ্বীপ জিনি হৈল পৃথিবীর কর্তা॥

(596)

আজি এথা আসিবে থাকহ কতক্ষণ। মন্ববোর মধ্যে তারে নারে কোন জন।। এতেক বলিতে তথা আইল মান্ধাতা। রত্বকাঞ্চন রথ মাথে দণ্ড ছাতা॥ স্থানর শরীর অঙ্গে নানা আভরণ। ৫ রাবণ বলে আমা সহ তুমি কর রণ। এতেক শুনিয়া তারে বলেন মান্ধাতা। তোমার সহিত যুদ্ধ করিব সর্ব্বথা। উভয় সন্মত দোঁহে করে মহারণ। আকাশে থাকিআ তাহা দেখে দেবগণ ॥১০-রাবণের সেনাপতি সমরে জুঝার। মান্ধাতা উপরে করে অন্ত্র অবতার॥ সব বাণ কাটা গেল মান্ধাতার বাণে। কুপিঅ: প্রহন্ত করে অন্ত্র বরিদনে॥ কোপেতে মান্ধাতা এক মুদগর এড়ে। ১৫ বাজিল রাবণে গিআ মোহ পাঞা পড়ে॥ রাবণে বেড়িআ বসে জত সেনাপতি। সিংহনাদ ছাড়েন মান্ধাতা নরপতি॥ হাহাকার করে জত রাক্ষ্যের গণ। খনেক সম্বিত পাঞা উঠিল রাবণ॥২० কোপিল রাবণ রাজা অগ্নি হেন জলে। মান্ধাতার রথখান পাক দিআ ফেলে॥ বির্থি হইআ রাজা হাতে নিল শেলে। শেলপাট কাটিতে রাবণ জাঠা ফেলে॥ জাটা-গাছ আসো যেন অগ্নি অবতার। ২৫ ভশ্ম রাশি মান্ধাতার শেল ছারথার॥ কাঞ্চনের রথে আসে অঙ্গে আভরণ। রাবণে মারিতে আইদে অতি কোপ মন।

(595)

(sto)

জল-রাজা জিনিঞা পাইল জেই বাণ। হেন বাণে দশানন পুরিল সন্ধান। শব্দ করি আদে বাণ লাগে চমৎকার। ফুটিল মাদ্ধাতা লোকে করে হাহাকার॥ পুনরপি উঠে রাজা আঁথির নিমিষে। ৫ রাক্ষ্স কটক দেখি ধায় অতি রোবে। বাণ বরিসএ রাজা করে সিংহনাদ। कृष्टिन दाक्रम (मना भाना, अवमान॥ ত্রজনার সিংহনাদে সাগর উলটে। দোহার কটক ধরি হুই বীর কাটে॥ ১০ তুই বীর বাণ এড়ে বাণ করে ক্ষয়। কেছ কারে সংগ্রামে করিতে নারে জয়'॥ ত্ৰজনার বাণে দোহে হৈল খণ্ড খণ্ড। ছই বীর বাণ বরিসে জেন যম-দও॥ ক্রদ্র বাণ রাবণ করিল অবতার। ১৫ মান্ধাতার অগ্নি বাণে করিল সংহার ॥ রাবণ গন্ধর্ক বাণ এড়ে থরশাণ। মান্ধাতার কদ্র বাণে করিল নির্বাণ ॥ কোপেতে মান্ধাতা বাণ এডে পাশুপত। দেখিআ সভার উড়ে গায়ের রকত॥ ২০ স্থাবর জঙ্গম কাঁপে পৃথিবী সাগর। গগন মণ্ডলে কাঁপে চন্দ্র দিবাকর ॥ ব্রহ্মা পাঠাইঞা দিল পৌলস্ত্য তপদী। অন্ত সম্বরিল আসি মান্ধাতারে তুসি॥ वृक्षिमान रूका किन रूप्त अटिंग । २० অস্ত্র নষ্ট নহে তোমার জানে ত্রিভুবন ॥ ব্রহ্মার গৌরব রাথ কোপ তেজ মনে।

ছই জনে প্রীত কৈল মুনির বচনে।
দেখিআ গেলেন মুনি বিধাতার স্থানে॥
ক্ষন্তিবাস পণ্ডিতেরে স্থথী দেবগণ।
গাইল উত্তরকাণ্ড মান্ধাতার রণ॥

অগস্তোর কথা স্থানি রামের উল্লাস। ৫ কহ কহ বলি রাম করেন প্রকাশ। মুনি বলে সেই থানে ছিল লক্ষেশ্র। চন্দ্রের উদয় দেখে গগন উপর॥ চন্দ্রের উদয় দেখি রাবণের হাস। তাহারে জিনিব বলি রাজার উল্লাস॥ ১ রাবণ আকাশে উঠে চড়ি পুষ্পরথে। বিস্তার যোজন দশ উঠে বায়ুপথে॥ সোনা বর্ণে রাজহংস প্রনের গতি। সর্ব্ব গুণ ধরে তারা চরে পাঁতি পাঁতি॥ দোরজ মকত দশ যোগ্রন বিস্তার। ১৫ নানা মূর্ত্তি মেঘ তথা হইছে সঞ্চার॥ তেয়জ মকত পথ শতেক যোজন। সিদ্ধগণ বাস তথা দেখিল রাবণ॥ চতুর্থ মকত পথ গেলা দশানন। ভূত বিনায়ক সহ তথা দর্মন ॥ २० পঞ্চম মক্ত পথ গেলা মহাবলী। আকাশগঙ্গার স্থনে ঢেউ কলকলি॥ দেবগণ ক্রীড়া করে সেই গঙ্গার জলে। সান করে দশানন সব সৈতা বলে॥ সর্য্যের কিরণ গঙ্গা জলের মিসালে। २४ (242)

ষষ্ঠ মকত পথে উঠিলা আকাশে। সবংশে গরুড পক্ষ জেই স্থানে বৈ**দে**॥ সপ্তম মক্ত পথে গেলা লক্ষেশ্বর। দেব ঋষি ব্ৰহ্ম ঋষি তথা নিরন্তর ॥ অষ্ট্রম মরুত পথে গেলা মহারথী। ৫ জেই থানে উজিলা গঙ্গা ভাগীরথী॥ নবম মকত পথ ব্রহ্মার নির্ম্মাণ। দশ সহস্র যোজন তাহার প্রমাণ॥ দশম মরুত পথে দিলা দরসন। চক্রের উদয় তথা দেখে দশানন।। ১০ রণের আরম্ভ দেখি চন্দ্র কোপে রোষে। হইয়া সহস্র গুণ তৃষার বরিসে॥ হিম বরিদনে সব সেনা মরে জাড়ে। প্রহন্ত ফিরিতে বলে রাজা না বাহুড়ে॥ প্রহস্ত বলেন জাড়ে জড়াইল হাল। ১৫ রূপা করি ফির্যা আস্থ রাক্ষ্সের নাথ। বিনা রণে না বাহু জি জানে ত্রিভুবন। চন্দ্রকে বিশ্ধিআ পাডো দেখ দেবগণ ॥ ধমুকে বাছের বাছ বাণ নিঞা জোডে। জর্জর করিল চল্রে বিদ্ধিয়া চেআডে॥ ২০ বাণে চক্র বিশ্বিল অমৃত গলে ধার। সকল দেবতা মিলি করে হাহা কার॥ দেখি ব্রহ্মা চন্দ্রলোকে আইল সম্বরে। রাথ রাথ বলি ব্রহ্মা বলে লক্ষে**য**রে॥ দ্বিতীয়ার চল দেখি সর্বলোকে বলে। ২৫ পূর্ণিমার চন্দ্র দেখি সভার আনন্দে॥ শভার আনন্দ হেতু চল্লের উদয়।

হেন চন্দ্রে বিনাসিলে অপ্যশ হয়।

(244)

কার মন্দ না করে সভার করে হিত। হেন চক্রে মার তুমি এ নহে উচিত॥ জিনিবে বৈরীকে জাহে মহাঘোর রণে। হেন মন্ত্র রাবণ কহিব তোর কানে॥ এক শত মন্ত্র মধ্যে এক মন্ত্র সার। c ব্রহ্মা হৈতে রাবণের মন্ত্রের উদ্ধার ॥ আতা বাথি প্র মারে মন্ত্র সঙ্বি। হেন মন্ত্র দিআ ব্রহ্মা গেলা নিজ পুরী। চন্দ্রলোক হৈতে রাজা নেউটিয়া আইসে 🖟 উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্রন্তিবাসে॥ ১০

এত কথা কহিল অগস্ত্য তপোধন। জোড় হাথে কহে রাম কমললোচন॥ চক্র জিনিঞা কোথা গেল রাজা দশানন। মুনি বলে দিগ্বিজয়ে করিছে রাবণ॥ পশ্চিম সাগরে গেল বিজয়ের তরে। ১৫ দেখিল পুরুষবর দ্বীপের উপরে॥ মূর্ত্তিমান যেন নারায়ণ অবতার। স্থমের পর্বত যেন দেহের আকার। রাবণ বলেন বীর তুমি কোন জন। তোমা সনে ইচ্ছা মোর করিবারে রণ॥ ২• দত্তে ওষ্ঠ চাপি বীর রাবণেরে তর্জ্জে। অজাগর সাপ যেন মহানন্দে গর্জে॥ গ্রহ বা নক্ষত্র সিন্ধু পর্বত কন্দর। সর্ব্ব দেবগণ বৈসে শরীর ভিতর ॥ বাবণে দেখিয়া বীর ডাণ্ডাইল রোবে। ২৫ স্থবৰ্ণ পৰ্ব্বত যেন বেড়িল আকাশে॥

(280)

(268)

কুজি হাতে রাবণ রাজা নানা অন্ত্র এড়ে। মুদ্দার মুদল গিব্সা তার গায়ে পড়ে॥ পুরুষ বলেন রাজা এত কর সাধ। কতেক সহিব আমি তোর অপরাধ। রাবণের বিক্রম কাহার প্রাণে সহে। ৫ কত রাবণের শক্তি সেই জন বহে॥ মূর্ভিমান ধর্ম তপ পুরুষের জাঙ্গে। কামদেব মূর্ত্তিমান আছে তার অঙ্গে॥ বিশ্বদেব বিষ্ণু বৈদে কাঁকালের দণ্ডে। সর্ব্ব দেবগণ বৈদে তার উপর মুণ্ডে॥ ১০ অষ্ট বস্থ বৈদে তার মধ্যম শরীরে। সপ্তম সাগর বৈসে বীরের উদরে॥ মূর্ত্তিমান দিক্পাল বৈদে তার পাশে। শরীর সন্ধির মধ্যে প্রন বইসে॥ হৃদয় খণ্ডের মধ্যে ব্রহ্মার বসতি। ১৫ ছই হাথে বৈদে জে পৰ্বত পাঁতি পাঁতি॥ গোদান কাঞ্চন আদি যত মহা দান। তাহার গায়ের লোমে সবে অধিষ্ঠান। গঙ্গা ভাগীরথী বৈসে বীরের ললাটে। কালাদিত্য বৈদে তার জ্র ছই পাটে॥২০ ধাতা কর্ত্তা বিধাতা গন্ধর্ক বিদ্যাপর। ছুই থান হাথে তার দেবতা বিস্তর॥ তক্ষক বাস্থ্ৰকি আদি যত বিষধর। সর্ব্ব নাগ বৈসে তার নথের উপর॥ মুখে অগ্নি জলে তার রুদ্র বৈদে স্কল্পে। ২৫ ষড় ঋতু বদন্ত দন্তের অমুবন্ধে॥ নাদিকাতে অমাবন্তা তিথি অধিষ্ঠান। অখিনাকুমার দে বীরের হুই কান॥

গ্রীবাতে বৈসয়ে যজ্ঞ সরস্বতী প্লীহে। চারি বেদ বৈদে সেই পুরুষের দেহে॥ বাাল্লিশ রাগিণী রাগ তার অঙ্গে দেখি ৷ চন্দ্র স্থ্য তুই সেই পুরুষের আঁথি॥ বিংশতি যোজন দেখি ছুই থান হাত। ৫ হস্তের চাপনে পড়ে রাক্ষসের নাথ। তাড়নে পালায় সব রাক্ষসের বলে। রাক্ষদে থেদাড়ি বীর সন্ধায় পাতালে॥ শুক সারণ প্রহন্তে রাবণ বার্তা পুছে। আমাকে মারিআ সে পুরুষ কোথা আছে॥১० मत्व वर्ण एमिणाङ स्वाक खादिरम । রাবণ পাতাল চলে তাহার উদ্দেশে॥ কাল পুরুষ তিন কোটা অঞ্জন আকার। নাচএ পরম রঙ্গে গাএ অলম্বার॥ তেমনি পুরুষ দেখে তেমনি আকৃতি।১৫ সকল পুরুষ নাচে একই মূরতি॥ চতুতু জ মূর্ত্তি অংশ তিব্ল কোটী হরি। শঙ্খ-চক্র-গদা-পদ্ম-বনমালা ধারী ॥ তিন কোটী হরি নাচে দিআ বাহু নাড়া। দেখি রাবণের গায়ে পড়এ সিঞ্চা॥ ২০ এডাইল তিন কোটা পরম যতনে। দেখিল পুরুষবর উত্তর শয়নে॥ পরম স্থন্দরী দেখে পুরুষের পাশে। পরে দিব্য আভরণ ধরে দিব্য বেশে॥ নিদ্রা জায় পুরুষ স্ত্রীগণ চামর চালে। ২৫ কামে দগ্ধ রাবণ ধরিতে জায়ে বলে॥ বলে ধরিবারে চাহে পরম রূপসী। মুথে বস্ত্র দিআ সেই পুরুষের হাসি॥

(ste)

(266)

পুরুষের কোপাগ্নিতে দশানন জলে। কাটা বৃক্ষ হেন রাজা পড়ে মহীতলে॥ উঠ উঠ বলিআ পুরুষ ডাক ছাড়ে। উঠিআ রাবণ রাজা অঙ্গের ধূলা ঝাড়ে॥ রাবণ বলেন তুমি কোন অবতার। ৫ পরিচয় দেহ প্রভু জানি বার্ত্তা সার॥ রাবণের বোল শুনি হাসে পুরুষরাজ। আমারে জানিলে তোর হবে কোন কাজ।। ্রত শুনি জোড় হাতে বলে লঙ্কেশ্বর। ব্রহ্মার বরে ত্রিভুবনে মোর নাহি ডর॥ ১० . ত্রিভুবনে জত বীর হৈল উপাদান। হেন বীর নাহি দেখি আমার সমান। বিধাতার বর কেবা করে বিপরীত। সেই দর্পে আমার কাহারে নাহি ভীত॥ তুমি যদি মার মোরে তবে সে মরণ। ১৫ তোমা বই কার শক্তে না মরে রাবণ ॥ পুরুষের অঙ্গে রাজা সর্ব্ব দেবে দেখে। সমুদ্র পর্ব্বত সাপ দেখি লাখে লাখে॥ রাবণের কথা শুনি না দিল উত্তর। তাহারে প্রণাম করি লডে লক্ষেশ্বর॥ ২০ নির্বল হইআ বারি হইল পাতালে। আপন কটকে গেলা রাক্ষসের দলে॥ শ্রীরাম বলেন মুনি কহ বার্ত্তা সার। সেই জে পুরুষবর কোন অবতার॥ त्रावरंगदत रकरन नांहे मिला পतिहत्र। २० ইহার কারণ মুনি কহিবে নিশ্চয়॥ মুনি বলে কপিলেরে শুন্যাছ শবদে। সেই মুনি সহে রাবণের অপরাধে॥

পাপিষ্ঠ রাবণ রাজা জাতি নিশাচর। কপিল বিষ্ণুর অংশ তাহার সোদর॥ তিন কোটী নারায়ণ জার পরিবার। সেই জে কপিল নারায়ণ অবতার॥ শয়নে আছিলা মুনি সেবএ কামিনী। ৫ রাবণের অঙ্গে পাডে কোপের আগুনি॥ না মরিল বিধাতার বরের কারণ। তে কারণে তাঁর ঠাঞি এডালা রাবণ॥ তোমার বধ্য কারণ তোমরা নহ ভিন্ন। তুমি বিষ্ণু তেঁহো বিষ্ণু দোঁহে এক চিহ্ন ॥১• রাবণ মারিতে হব তব অবতার। তে কারণে দশাননে না কৈলা সংহার॥ কপিল আপনে রাম দোঁহে বিষ্ণু অংশ। সবংশে রাবণ তেঁই করিলে নির্বংশ। রাম বলেন অই কথা রাথহ বিশ্রামে। ১৫ তবে দশানন কি করিল পরিণামে॥ অগন্ত্য বলেন রাম কথায় দেহ মন। পুষ্পরথে চড়ি লড়ে রাজাত রাবণ।। ক্বত্তিবাস গাইল কপিল অবতার। স্থনিলে উত্তরকাণ্ড খণ্ডে মহামার॥ ২০

কৈলাদে রাবণ গেলা বেলা অবসানে। বিশ্রাম করিল রাজা সর্ব্ব সেনা সনে॥ ছই প্রহর রাত্রিকালে উঠে দশাননে। চল্রের উদয় দেখে নির্দ্মল গগনে॥ নানা পূপা বিকশিত গদ্ধে মনোহর। ২৫ স্কশীতল বায়ু বহে দেখিতে স্কলর॥ (>64)

(744)

ন্ধীমনে পড়িল রাজা নারী নাহি পাশে। ত্রন কালে রক্ষা জান মনোহর বেশে। রম্ভা নাম ধরে সেই পরমা স্থন্দরী। চন্দন তিলক ভালে শোভিছে স্থসারি॥ আলা করি জায় কনা। যেন চন্দ্রকলা।৫ তার রূপ দেখ্যা রাবণ হৈল ভোলা। স্বাস্থ আস্থ বলি তার ধরিলেক হাথে। কোথাকে সাজিআ জাহ কাঞ্চনের রথে॥ কোন পুরুষের সঙ্গে ভুঞ্জিবে স্থরতি। সেই পুরুষের মানি সফল জীবিতি॥১০ ইন্দ্র চন্দ্র নাহি জানি কোন অবতার। আমা ছাড়ি তার সঙ্গে ভুঞ্জিবে শৃঙ্গার॥ কৈলাস পর্বতে দেখ পাষাণ চিকন। পুপ্র-শ্যা করিআ করিব সম্ভাষণ॥ বিষ্ণুর বিক্রম জিনি দশাননে জানি।১৫ হেন জনে ছাডি কোথা বঞ্চিবে রজনী॥ লজ্জাতে বিমুখ রম্ভা জোড় করে হাত। খুড়তা শ্বশুর তুমি রাক্ষদের নাথ॥ তোমার বহারী আমি না ধরিহ হাথে। আপনা খাইআ কেন আলুঁ হেন পথে ॥২০ রাজা বলে তুমি মোর কোন্পুত্রের নারী। কোন সম্বন্ধে তুমি আমার বহারী॥ রম্ভা বলে বহু বটী করহ বিচার। নলকুবের নামে কুবের কুমার॥ জোষ্ঠ ভাই ভোমার কুবের লোকপাল।২৫ নলকুবের তার পুত্র বিক্রমে বিশাল। তপেতে তপস্বী তেহ ব্ৰান্ধণে ব্ৰাহ্মণ। ক্ষেত্রিতে ক্ষেত্রিয় গণি যদি করে রণ॥

ক্রোধে অগ্নি সমান ক্ষমাতে বস্থনরা। তার ঠাঁই জাই আমি রস্তা অপূছরা॥ পুত্র হেতৃ বেশ কৈলে শশুরে না ভঙ্গে। আমাকে ছাড়িলে তোমা সর্বলোকে পুজে খণ্ডর হইআ কর বছর পালন।৫ মোর লাগি বস্তা তোর ভাইর নন্দন॥ ধর্ম না লজ্বিহ রাজা ছাড় পরিহান। রথ ছাড় জাই নলকুবেরের পাশ। অশেষ বিশেষ বলে কাতর বচন। ধরিআ শৃঙ্গার বলে করিল রাবণ॥১০ রমণ দারিআ ছাড়ি দিলেন তাহারে। জাইআ পতির পাশে কান্দে উচ্চৈঃস্বরে ॥ नलकूरंतत तरल रकन रतन मिलायान। কার ঠাঞি রম্ভা তুমি পাল্যে অপমান। কোপ না করিহ রম্ভা বলে কর জোড়ে।> তব কোপানলে সব ত্রিভূবন পোড়ে॥ বহু বলিআছি আমিশ্বাবণ না ছাড়ে। কহিল কাতর কথা তবু নাহি এড়ে॥ লোকধর্ম নাহি মানে বড় অহঙ্কারী। আমি নারী জাতি তার কি করিতে পারি ॥২০ সাপ অগ্নি এড় যদি তবে নাহি তরি i মরিতে করিলে আজ্ঞা এইক্ষণে মরি॥ ধ্যান করি দেখিলেন রম্ভা সতীরাণী। কুপিল কুবের স্থত হাতে নিল পাণি॥ অসম্মত স্ত্রী হরে নিষেধে নাহি থাকে।২৫ আমার তপের বল দেখুক সর্বলোকে॥ রাজবলে তপবলে সম করি দেখি। মোর শাপ আনল কাহার বাপে রাখি ॥

(545)

(500)

আজি হইতে স্ত্রী যদি করে বলাৎকার। তাকে যদি বলে ধরে পাপী গুরাচার॥ তাহার একেক মাথা হয়ে সাত্থান। মাথা ফুটি রাবণের জাইবে পরান॥ আজি হৈতে থাকুক মোর তপের প্রচার।৫ মাথা ফুটি জাবেক বলে করিলে শৃঙ্গার॥ পুষ্পরৃষ্টি হইল ছন্দুভি ঘন বাজে। ব্রন্ধা হাদে হরিদ হইল দেবরাজে॥ শাপ স্থনি রাবণ করেন হাহাকার। বলে ধরি সেই হৈতে ছাড়িল শুঙ্গার॥১० সতী স্ত্রী হরিতে রাজা না করে অপেকা। নলকুবেরের সাপে সীতার জাতিরক্ষা॥ উত্তর কাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্বত্তিবাস। সতী স্ত্রীর জাতিরক্ষা করিল প্রকাশ॥ জে বাঞ্ছা করিআ জে উত্তরকাণ্ড স্থনে ১১৫ সেই বাঞ্ছা পূর্ণ হয় এীরামের গুণে॥

অগস্ত্যের কথা স্থনি রামের উঠে হাদ।
কহ কহ বলি রাম করেন প্রকাশ ॥
এমন অধম নাহি স্থনি কোন কালে।
ভাইর পুত্রের নারী হরিলেক বলে॥২০
এতেক বলিলা রাম সভাখণ্ড মাঝে।
স্থনি বিভীষণ মাথা হেঁট করি লাজে॥
রাম বলেন কহ মুনি অপূর্ব্ব কথন।
অগস্ত্য বলেন স্থন রাম নারায়ণ॥
সভাখণ্ড স্থনহ হইয়া একমন।২৫
রামের চরিত্রে স্বর্ধ পাপ বিমোচন॥

স্থনিতে রামরে কথা জার অল্পঞ্জান। নরক বাসী হয় তার নাহি পরিত্রাণ ॥ রাম গুণ স্থনিতে পাষ্ড কথা কয়। कां कि कहा नंतरक थारक छेकात ना इस ॥ তোমার চরিত্র স্থনে মজাইআ চিত।৫ বৈকুণ্ঠনিবাসী তার যমের নাহি ভীত॥ সংসার নিস্তার হেতৃ তব অবতার। স্থনিলে রামের গুণ স্বর্গ আগুয়ার॥ জিয়তে আছিল সাটি সহস্র বৎসর। তথন বাল্মীকি কৈল রচনা স্থন্দর ॥১০ সে সব কবিত্ব তুমি করিবে শ্রবণ। পাত্র মিত্র স্থানিব রাজ্যের লোকজন॥ আপন চরিত্র তুমি স্থনিবে আপনে। পুনরপি সে কথা স্থনিব সর্বজনে। বাম্মীকি পুরাণে সব হইব প্রচার।১৫ তা স্থনি নিস্তার পাব সকল সংসার॥ উঠিমা রাবণ রাজা বসিল প্রভাতে। নলকুবেরের শাপে হুঃথ ভাবে চিত্তে॥ রাজা বলে কি করিব পর্বত কৈলাদে। আজি হৈতে দূর হৈল বলের সম্ভাবে॥২• ত্রাতৃপুত্র শাপ দিল থণ্ডাইতে নারি। ত্রঃথ ভাবি লড়িলা রাক্ষ্য অধিকারী॥ জিনিঞা তক্ষক নাগে আনিলেক নারী। নানা দেশ হৈতে আনে রাজার ঝিআরি॥ আনয়ে রাজার কন্সা চাপাইআ রথে।২৫ অমনি চালাঞে দেই লঙ্কাপুর পথে॥ মহোদর মারীচ প্রহস্ত সর্বজন। কটক লইআ নডিলা রাজা দশানন।।

(565)

(>84)

ত্রিভূবন জিনি রাজা কৈল আগুসার। কোথাহ বিপক্ষ বলি নাহি দেখে আর॥ প্রদন্ন বদন জান সব সেনাপতি। নানা রত্ন অলঙ্কারে ভূষিত সার্থি॥ কত রাজকন্তা রথে রূপে অপ্ছরা।¢ গগনমগুলে যেন শোভা করে তারা।। তা সভারে পূজে রাজা নানা আভরণে। কান্দে সব ক্সাগণ বোল নাহি স্থনে॥ কান্দিম। বিকল কন্তা পেলে আভরণ। করিমা পাকল আঁথি চাহে দশানন ॥১০ দিলেন দারুণ শাপ কুবের কোঙর। তাহা ভাবি ক্রোধ সম্বরিলা লক্ষেশ্বর॥ হৃদয়ে ভাবয়ে তঃথ রাজা দশানন। জোড় হাতে বুঝাইল শুক সারণ॥ ত্রিভূবন জিনিঞা তোমার ঠাকুরাল।১৫ বরুণ কুবের যম জিনিল দিকপাল।। হেন রাজা অস্থাী কোথাহ নাহি স্থান। দেশে গেলে কন্তাগণ হইবেক রাণী।। মহোদর বলে রাজা কর কোন কাজ। রুথেতে গর্ব্বিত আছে নাহি বাস লাজ॥২० কন্তা সব লাজ করে মোরা আছি পাশে। দেশকে লড়হ রাজা পরম হরিসে॥ লশ্বার ভিতরে তোমার আছে কত রাণী। স্ত্রীর অভাব নাহি অস্কুথ ভাব কেনি॥ এত স্ত্রী থাকিতে কর এতেক বিষাদ।২৫ কোন কার্য্য রম্ভা হরি পাডিলে প্রমাদ। অশেষ বিশেষ রম্ভা বলিল বিস্তর। জাতি মত তাহার নাসিলে লক্ষেশ্বর॥

দৈবের নির্বন্ধ ছিল দিল অভিশাপ। তেঞি রম্ভা হরিআ পাইলে মনস্তাপ। মহোদর কনিষ্ঠ নাহিক লাজ ডর। স্থনিঞা তাহার বোল হাসে লঙ্কেশ্বর॥ সার্থিকে বলে রাজা জোড ব্রন্মজ্ঞান। ৫ দেশমুথ হঞা রথ করুক প্রসান।। রাবণের আজ্ঞাতে সার্থি হর্ষিত। দেশমুথ করি রথ চালায় ত্রিত॥ সেনাপতি সনে রাজা চড়ে চিত্ররথে। ত্বরিত গমনে রাজা জায় স্থ্যপথে॥১० অনেক রাজার কন্যা নিলা সেই রথে। লঙ্কাকে লড়িলা হর্ষিত মনোর্থে।। তারা হেন ছুটে রথ গগনমগুলে। বাজিল রথের শব্দ কালকেয়-কুলে॥ তিন কোটা সৈন্য জার আছে মহাবল ৷১৫ কার হাথে শেল জাঠা কাহার মুদল।। ইন্দ্র যম কুবের বরুণী দিকপাল। মোর দেশ দিআ জাত্যে নাহি ঠাকুরাল।। আর এক ভিতে স্থনি জয় জয়কার। রথের এক ভিতে স্থনিএ নারীর হাহাকার॥২৫ কালকেয় বলে আমি অবশ্য যাইব। কোন বীর জাএ তারে অবশ্য তুষিব॥ রথে উঠি লড়ে কালকেয় অধিপতি। নানা অন্ত্রে ছাইলেক রাক্ষসের পতি॥ ঝগড়া মুদল জাঠা থাণ্ডা থরদান।২৫ রাবণের সেনাপতি জুঝে আগুয়ান।। হুই জনে রণ বাজে দেখি ভয়ঙ্কর। রাক্ষদের বাণে সৈনা হইল জর্জর ॥

(c & c)

(8&¢)

বাণ সঞা দৈতাসেনা করিল উঠানি। রাক্স কটক বিন্ধি করিল চালুঁনি॥ মুখ নাহি পাতে দৈনা পালাইছে রড়ে। রাবণেরে বেডিলেক কালকেয়ার ঘরে॥ তিন কোটা দৈন্য জুঝে হঞা আগুয়ান।৫ বাছিআ বাছিআ মারে চোথ চোথ বাণ॥ রণ করে কালকেজা মরণ না গণে। কন্যার নিকটে গেলা ছাডাবার মনে॥ তিন কোটি সৈনা জুঝে রণের জুঝার। রাক্ষ্য উপরে করে অস্ত্রের প্রহার ॥১০ লক্ষ লক্ষ সৈত্য মেলি রাবণে আগলে। স্ত্রীগণেরে মুক্ত করে সব সৈনাবলে॥ রাম্স কটক সহিবারে নারে রণ। কন্যাগণে মুক্ত দেখি কুপিল রাবণ। সর্ব সেনা মারে কালকেয়ার ঘরে।১৫ অতি কোপে দশানন ব্ৰহ্ম অন্ত্ৰ জোড়ে॥ ব্রহ্ম অস্ত্র এডিল ব্রহ্মার পাঞা বর। অগ্নির শিথা বাণ দেখিতে ভয়ন্কর॥ হেন বাণ রাবণ তুলিআ নিল বাহে। ত্রিভুবন চমকিত বাণ পানে চাহে॥२० বাণ দেখি সঘনে কম্পিত বস্থমতী। বাণ দেখি ত্রাস পাল্য কালকেয়পতি॥ বাণের শব্দে সৈন্যের হাতের বাণ থসে। তরাদে কাহার মুখে বোল নাহি আইদে॥ রাবণ এড়িল বাণ দিআ ছহুক্কার।২৫ সেই বাণে তিন কোটী সৈন্যের সংহার॥ जिन कां है। देमना পढ़ लाल ठेक ठानित বাছিমা বাছিমা সৈত্যের স্ত্রী করিল বন্দী॥

কৈলাস পর্বত জায় এড়িয়া দক্ষিণে। লঙ্কাকে লডিল রাজা ত্তরিত গমনে॥ দেশে জায় রাবণ বৎসর বারশতে। পুরমুখে জায় অতি হরষিত চিতে॥ দিখিজয় করি জায় বাজে ঢাক ঢোল।৫ রথে স্থনি স্ত্রীলোকের ক্রন্দনের রোল॥ চুল ছিণ্ডে বস্ত্র চিরে কেহ শব্দ ভাঙ্গে। মাথা আছাডিআ কার রক্ত পড়ে অঙ্গে॥ তাহাদের চক্ষু জলে রথথান নাহে। তারা সব গালি পাড়ে কিছু নাহি সহে॥১० সাপ গালি পাডে সভে পাঞা মনস্তাপে। গ্রীভ্রপ্ত হৈল রাজা স্ত্রীগণের শাপে॥ দেব দানব গন্ধর্কের পরম স্থন্দরী। রথে তুলি নিঞা গেল আপনার পুরী॥ রথে হইতে নামে রাজা লক্ষার ছয়ারে ৷১৫ কটকে মেলানি দিআ গেলা অন্তঃপুরে॥ কন্যাগণে ডাকিআ সন্মতি নিল রাণী। একে একে সভাকারে করিল ছামনি॥ জে জন সন্মতি নাহি দিল নিজ মুথে। অমুচর রাথ দিআ অন্তঃপুরে রাথে॥২০ জত দিন তারা নাহি করে অঙ্গীকার। তত দিন তারে নাহি করয়ে শৃঙ্গার॥ মরিল অনেক নারী তেজিআ আহার। তা সভার শাপ গালি এই মাত্র সার॥ ক্রত্তিবাস পণ্ডিত কবিত্বে চমংকার।২৫ উত্তর কাও গাইলেক রাবণবিহার॥

(DGC)

(466)

সতী স্ত্রীর শাপে নাহি রাবণের রকা। পতির মরণ শুনি আল্য শূর্পণথা। শূর্পণথা নামে দশাননের ভগিনী। त्रावरणत आरंग कार्त्म वरण कर्वेवांगी॥ বৃহিনিরে পাড়্যাতে গেল তার পাশ।৫ কোন হঃথে কান্দ ভগ্নি করহ প্রকাশ। শূর্পণথা বলে তুমি প্রাণের বউরী। সোদর হইআ বৃহিনীরে রাও করি॥ কালকেয়ার তিন কোটা দৈনা বিশাল। মোর স্বামী মাল্যে তুমি তাহার মিশাল॥১০ কনিষ্ঠা ভগ্নির স্বামী জামাই সম্বন্ধ। তাহারে মারিলে তুমি নাহি লাজগন্ধ॥ ভাই হঞা কৈলা তুমি বুহিনীর কাজ। ভগ্নীকে করিতে রাও না বাসিলে লাজ ॥ কান্দিতে কান্দিতে রাতি জাব উচ্চৈঃস্বরে। কল্সী বান্ধিআ জায় মরিতে সাগরে ॥১৫ কান্দিতে কান্দিতে রাত্রি জায় করি আত্মঘাই। হাতে ধরি দশানন ভগ্নীকে বুঝাই॥ তোমা লাগি আজি আমি হৈনু রাণ্ডি। সাগরেতে পদিব গলাতে বান্ধি হাতি॥২০ সংগ্রামে পসিলে নাহি জান নিজ পর। জামাতা মারিষা তবু না হও কুর্পর॥ রাজা বলে হাতে ধরি তোমাকে বেওসি। না জানিঞা দোষ কৈল বারেক থেমাসি॥ থর দূষণ মোর মাসতত্য ভাই।২৫ চৌদ সহস্র রাক্ষ্স আছে তার ঠাই॥ দূষণ ত্রিশিরা আদি জত সেনাপতি। সতে মিলি করিবেন তোমার অরাতি॥

আমা হেন লোক তোমার করিব সন্মান। তোমার বচনে কেহ না করিবে আন॥ দণ্ডক বনে গুক্রমুনির পূর্বের আছে শাপ। রাক্ষস ছাড়িআ কার নাহিক প্রতাপ॥ থর অধিকারী হৈল বলে সেনাপতি।৫ চৌদ সহস্র রাক্ষ্য জাহার পদাতি॥ দওকানন চাপি বৈসে মোর থান।। তোমার বচন লংঘিবেক কোন জন।।। এথানে থাকিলে তুমি পাবে যাতনা॥ স্বতন্তর হঞা তুমি রাথ গিআ থান।॥১० রাণ্ড হঞা জেই নারী হএ স্বতন্তর। স্থনি শূর্পণথা হৈল হরিষ বিস্তর ॥ নদ নদী জল যেন বহে থরস্রোতে। শীঘগতি জায় রাণ্ডি হরষিত চিতে॥ কাঞ্চনের রথে চড়ি করিল প্রান।১৫ জাইআ দণ্ডক বনে হৈলা অধিষ্ঠান॥ সেই বনে সভার উপরে অধিকার। শূর্পনথা রাত্তি হৈল হরিষ অপার॥ চাপিত্রা দওকবন হৈল তার থানা। শূর্পণথার বোল নাহি লংঘে কোনজনা ॥২০ স্বতন্তর হঞা রাণ্ডি বৈসে সেইখানে। এতেক প্রমাদ হৈল যাহার কারণে॥ ঘরে নাহ থাকে রাণ্ডি বুলে বনে ভালে। যেখানে মহুষ্য পায় তারে ধরে বলে॥ ধরিয়া তাহার দনে ভুঞ্জেয়ে শৃঙ্গার ৷২৫ শেষে তার রক্ত মাংস করয়ে সংহার॥ হইল থানার কর্তা রাবণের আদেশে। সবংশে রাবণ রাজা মরে তার দোষে।

(1665)

ক্লুন্তিবাদ পণ্ডিতের সরদ আলাপ। উত্তরকাণ্ডে গাইল শূর্পণথার প্রতাপ।

অগপ্তার কথা শুনি বামের উক্তগাস।৫ কহ কহ বলি পুন করেন প্রকাশ। দিখিজয় করি দশানন গেল ঘরে। তবে কোন সময়ে জিনিল পুরন্দরে॥ মেঘনাদ পুল্ল তার সংসারে বিদিত। কোন কালে ইন্দ্ৰ জিনি হৈল ইন্দ্ৰজিত ॥১০ অগন্তা বলেন রাম কর অবধান। ইন্দ্র রাবণের বৃদ্ধ কহি বিদ্যমান ॥ স্থথে ক্রীড়া করে রাজা লইআ স্থন্দরী। আনন্দে আছে রাজা কনক লঙ্কাপুরী॥ পরস্ত্রী আনিয়া ঘর ভরিল রাবণ।১৫ রাত্র দিন ক্রীড়া করে নহে শাস্তমনে। লঙ্কার ভিতরে রাজা আছে সিংহাসনে। আচ্বিতে শূৰ্পণথা পড়্যা গেল মনে ॥ রাও হঞা ভগিনী কেমনে ধরে মন। রাত্র দিন ক্রীড়া করে তবু উচাটন ॥২০ অনুক্ষণ থাকি আমি নিআ নারীগণ যত পাই তত রাখি হেন হয় মন॥ যৌবনের কালে ভগ্নী হীন হৈল পতি। কেমনে বঞ্চিবে বোনে হইআ যুবতি॥ শূর্পণথা চিস্তি কুম্ভনদী পড়ে মদে।২৫ পুছিল তাহার কথা ভাই বিভীষণে॥ বিভীষণ বলে শুন তার বিবরণ। পীড়িত তোমার পাপে রাক্ষ্যের গণ॥

(126)

করুণভাবে বিভীষণ উচ্চৈঃস্বরে কালে। ধর্ম্মের ধার্ম্মিক দশানন রাজে কান্দে॥ বন্ধকুলে জন্মিআ করহ প্রদার। সেই পাপ ফলে নাহি সবংশের উদ্ধার ॥ দেবতা ব্ৰাহ্মণ যত আছে ঋষি মুনি।৫ ব্রহ্মার ব্রের তেজে কারে নাহি গুণি॥ বলাংকারে আন তুমি সভার রূপসী। ঘরে হৈতে পরে নিল ভগ্নি কুম্ভনসী॥ তুমি বলে আন ভাই কত জনার নারী। মধুদৈত্য আসি তোর ভগ্নি কৈল চুরি ॥১০ রূপে গুণে মন্ত্রণাতে স্থবুদ্ধি ভগিনী। আচ্থিতে দৈত্য নিল কিছু নাহি জানি ॥ পাপ কৈলে মিথা। নহে অবশ্য সে ফলে। মধুদৈত্য কুন্তনদী নিঞা গেল বলে॥ মহাধন্তর্দ্ধর দৈত্য মধুপুরে বৈদে।১৫ ছল পাঞা অন্তঃপুরে করিল প্রবেশ ॥ ইন্দ্ৰজিৎ হৈল যথন যজেতে তপদী। জন পাই ব্ৰতে আমি থাকি উপবাসী॥ সন্ধি পাঞা সাম্ভইল পুরীর ভিতর। অন্তঃপুরে রক্ষকে মারিল বিস্তর ॥২০ কি করিতে পারে তার বনিতার বলে। कुछननी मधुरेनजा निका शिन ছल ॥ জननीत (क्या मानावान महावनी। তাহার ঝিয়ের স্থতা কুস্তনদী বলী॥ মাএর ভগীর স্থতা কনিষ্ঠা বৃহিনী।২৫ মোর বিদামানে মধু করিল ছামুনি॥ সৈন্য সনে সাজি গেলে ভগ্নী হয়ে রাণ্ডি। বলে ছলে বিভা কৈল জানে রাজ্য খণ্ডি ॥

(222)

(२००)

जूमि পরনারী আন তথ দি আ মনে। তোমার বুহিনী নিল তোমা বিদ্যমানে এত শুনি দশানন করএ বিষাদ। কোন কার্য্য তরে ঘরে ছিল মেঘনাদ॥ স্থমেরু পর্বত কাটে মেঘনাদের বাণে। এত অপমান মোর তার বিদামানে॥ তোমা হেন আছে জার ভাই সহোদর। বুহিনী রাখিতে নার ঘরের ভিতর॥ কুম্ভকর্ণ ভাই মোর লঙ্কাপুরে জাগে। ত্রিভুবনে কেবা আছে আনে তার আগে॥ হেন ভাই নিদ্রাগত হইল অচেতন। তোমরা লক্ষার মাঝে ছিলে কি কারণ। দিথিজয় করি আমি জিনি ত্রিভূবন। আছুক দৈত্যের দায় নারে দেবগণ।। ত্রিভুবন জিনিঞা আইলুঁ একেশ্বর। ্রতেক প্রমাদ পাড়ে কোলের ভিতর॥ কুম্ভকর্ণ আমি সবে আছি চুইজন। তোমাদের বিক্রম সকলি অকারণ। রাবণ বলিল ভাই কারে নাহি ডর। আগে মধুদৈত্য মারো পাছে পুরন্দর ॥ মধু দৈত্য করিল আমার অপমান। সভাকার আগে তার বধিব পরাণ ॥ মোর ভগী হরে বেটা এত অহঙ্কার। আগু এক বাণে তারে করিব সংহার॥ त्रावरणत रवारन नष्डा भाना विजीय। কার দোষ নাহি ভংর্স অকারণ॥ জোড় হাত করিম। বলেন বিভীষণ। কর্মে বিধম যজ্ঞ তোমার নন্দন।।

আরম্ভ করিল যজ্ঞ বটবৃক্ষতলা। বার সত বংসর অগ্নিপূজে নিকুম্ভিলা॥ যত দিন যজ্ঞ করে নারী নাহে চাহে। অনাহারে যক্ত স্থানে রাত্রি দিন রহে। পঞ্চ লক্ষ যজ্ঞ হেতু করিল নিয়ম। মহাপদ্মশত লক্ষ করিলেক হোম॥ যজ্ঞে পূর্ণা দিতে তার হয়েছে সময়। পূর্ণা দিলে হইবে ত্রিভুবনে পরাজয়॥ যজ্ঞে পূর্ণা না দিআ করিতে জায় রণ। রণের সময় নাহি দেখে কোনজন হেন যজ্ঞ শুনি রাবণের চমংকার। যক্ত দেখিবারে রাজা কৈল আগুসার। নিকৃত্তিলায় যজ্ঞ করে কোঙর ইন্দ্রজিং। তথাকে রাবণ রাজা লডিল থরিত॥ আগু জান দশানন পাছে বিভীষণ। অদত্ত দেখিল গিরা যজ্ঞ আয়োজন।। প্রবাল মুকুতা বান্ধা বিচিত্র পাথর। তিন কোস জুড়ি কুগু আড়ে পরিসর॥ দশ সহস্র ব্রাহ্মণ যজ্ঞকুণ্ড স্থানে। পর্বত প্রমাণ অগ্নি জলে রাত্রি দিনে॥ অগ্নি শব্দ করে যেন মেঘের গর্জ্জন। উঠিয়া অগ্নির শিখা পরশে গগন॥ শরপত্র বোঝা বোঝা স্থতের কলস। কালিয়া ছাগল আনি জোগায়ে রাক্ষস॥ রক্ত কাষ্ঠ ভারে ভারে আনয়ে চন্দন। রক্ত ফুলমালা আনে রকত বসন।। রক্ত বস্ত্র নিঞা সব জোবড়ায় মতে। দশ সহস্র বিপ্র হনে বসি চারি ভিতে॥

(२०১)

(२०२)

নানা জাতি পশু আনে ছাগ কোটী কোটী। আতপ তওুল কুণ্ডে হুনে মুটি মুটি॥ यक আয়োজনে দেখি দেব অধিষ্ঠান। ইন্দ্রজিতে দেখে কৃষ্ণ চর্ম্ম পরিধান॥ হাতে দণ্ড কমণ্ডলু মাথে শিখা ধরে।৫ ইন্দ্রজিতে আলিঙ্গন দিল লঙ্কেশ্বরে॥ কোন যজ্ঞ কর বাপু কহিবে নিশ্চিত। রাবণেরে জোড় হাতে বলে ইক্সজিত॥ অগ্নীধোম রাজস্যু করিল শতেক। গোমেধ বৈষ্ণব যজ্ঞ করিল অনেক ॥১০ যক্ত ফলে বিধাতা হইল অধিষ্ঠান। আপনি আদিআ ব্রন্ধা দিলা ব্রদান ॥ কামগতি রথ দিল আকাশে সঞ্চরে। তামসিক রথ দিল জুঝিবার তরে॥ সেই তামদিক নিঞা ইন্দ্রজিৎ জুঝে।১৫ দেবতা দানৰ তাহাকে নাহি বুঝে॥ নানা মারা অন্ত দিল শত্রুর দলন। যজ্ঞ করি ইন্দ্রজিৎ এ সব সাধন॥ যজ্ঞ ফলে ব্ৰহ্মা দিল এতেক সন্মান। আপনি আইলা ইবে কর অবধান॥২০ রণে অষ্ট লোকপালে আমি দিল সাজি। যজে যজ্ঞ ভাগ দিয়া তারে কেন পূজি॥ যজ্ঞভাগ নিতে আদ্যো যত দেবগণ। দেবতার পূজা তুমি কর কি কারণ॥ मकल (एरवंत्र मर्था हेन्द्र महाताका ।२৫ তাহারে জিনিলে সব দেবে করে পূজা॥ বিপ্রের বচনে কর ছাওয়াল গেয়ানে। যক্ত এড় রথে চড় চল আমা সনে।

মেঘনাদ বলে বাপা কর অবধান। অগ্নিরূপে ব্রন্ধায়ে আনি অধিষ্ঠান। ব্ৰহ্মাপূজা বিনে নাহি পূজি অন্ত জন। কোন সাহদে এথা আসিব দেবগণ।। অগ্নি বর দিলে মো জুঝিব অস্তরীক্ষে।৫ জাহারে মারিব সে আমারে নাহি দেখে॥ এই শিক্ষা পাই আমি যজ্ঞ পূণা দিলে। ত্রিভূবনজয়ী হব এই যজ্ঞ ফলে॥ রাবণ বলে দেখিব তোমার যজ্ঞশিক।। সাক্ষাতে আসিআ অগ্নি যদি দেন দেখা॥১। মেঘনাদ বলেন থাকহ যজ্ঞ স্থানে। সাক্ষাৎ হবেন অগ্নি তোমা বিদামানে॥ শুক্র নামে দিজ বলে কুলপুরোহিত। তাঁহাকে শইয়া যজ্ঞ করেন স্বরিত॥ ধেয়ান করিআ বসি অগ্নিকুণ্ড পূজে 1১৫ কুণ্ড হৈতে উঠে অগ্নি মন্ত্ৰ বল তেজে॥ অধিষ্ঠান হঞা অগ্নি রহিলা সমুখে। যজ্ঞ পূৰ্ণা দিল তাহা দশানন দেখে॥ যক্ত উপহার খাঞা অগ্নির সস্তোষ। মেঘনাদে দিল বর মনে পরিতোষ ॥২০ অগ্নি বলে মেঘনাদ বর দিল তোরে॥ যজ্ঞ করি জোখা জোথা জাবে জুঝিবারে॥ পূৰ্ণা দিআ সংগ্ৰামে জাইবে জেই দিনি॥ পরাজয় না হবে অবগ্র হব জিনি॥ যজের দিবসে আমি হব অধিষ্ঠান।২৫ সংসারে না হৰ বীর তোমার সমান॥ ইক্রজিং বলে মোর মরণে না ভর। কুপা করি প্রভু মোরে করহ অমর॥

(200)

(२०8)

অগ্নি বলে মেঘনাদ না করিহ ভয়। প্রকারে অমর হবে স্থনহ নিশ্চয় ॥ टोफ वर्मत एकरे किছ नाहि थार्व। তত দিন বনিতার মুখ না দেখিবে॥ निम। नाहि होक वश्मत जागत्। । নিয়মে থাকিবে নাহি করিবে শয়ন॥ হেন জন আসি যদি যক্ত ভঙ্গ করে। সেজন মারিতে পারে কহিল তোমারে॥ জখন করিবে যজ্ঞ হব অধিষ্ঠান। এত বর দিআ অগ্নি গেলা নিজ স্থান॥১० তাহা দেখি চমৎকার পালা দশাননে। পুত্রেরে বলিল বাপু আস্তু মোর সনে॥ দৈবতা দানবে আমি জিনি একেশ্বরে। কুম্বর্ক তোমা নিঞা জিনি পুরন্দরে ভোমার অন্তের শিক্ষা করিব পরীকে।১৫ ইব্র সনে কেমনে জুঝহ অন্তরীকে॥ দেখিব কেমন রূপে জিন দেবরাজে। কেমন করিআ ইক্র তোমা সনে জুঝে॥ আপন কটক সাজি লড়হ সত্তর। মধু দৈত্যে আগে মারি পিছে পুরন্দর॥২० ুকুস্ত যে নিকুস্ত দোঁহে লড়হ স্বরিত। মকরাক্ষ বীর লড় বিক্রমে পূজিত॥ বার বৎসর মেঘনাদ আছে অনাহারে। মধুপানে মেঘনাদ সকল পাসরে॥ ত্রী সম্ভাষণে নাহি গেল পিতার লাজে।২৫ যজ্ঞশাল হৈতে বীর জুঝিবারে সাজে। সার্থি জানিল মনে সংগ্রাম গ্রম। নানাবিধ করি আনে রথের সাজন ॥

রথ থান সাজি আনে রথের সার্থি। নানারত মাণিক নির্মাণ আছে তথি॥ কনকরচিত রথ অপূর্ব্ব নির্মাণ। বায়ুবেগে অষ্ট ঘোড়া তাহার জোগান॥ শৈল জাত অষ্ট ঘোড়া রত্বের বিম্বুকি।৫ ক্ষণে দেখা দেই তারা থেনে হএ লুঁকি॥ রথের জ্যোতিতে দশ দিগ পরকাস। নানা অন্ত তুলি নিল বন্ধন নাগপাশ। কটকের মহা শব্দে কাঁপিল মেদিনী। মেঘনাদে বাদ্য বাজে তিন অক্ষোহিণী ॥১০ কাড়াপড়া বাজে ঘন ঢাকে দিল কাঠি। তোল পাড় হইল লঙ্কার সব মাটী॥ বাজিছে গভীর নাদে অনেক মাদল। মেঘের গর্জন যেন আঘোর বাদল॥ দগড়েতে ঘাই পড়ে নাহি অবসাদ।১৫ মেঘনাদ চলিল ছাড়িয়া সিংহনাদ॥ দৈব থোগে কুস্তকর্ণ জাগে সেই দিনে। বার্ত্তা পাইঞা দশানন হরষিত মনে॥ কুম্ভকর্ণ আইল রাবণ সম্ভাষণে। আলিঙ্গন দিআ তারে বলেদশাননে ॥২০ ত্রিভূবন জিনিআ আমি আলু একেশ্বর। তোমার সহায় করি জিনি পুরন্দর॥ कुछकर्न वरम जूमि देवरम थाक घरत। দেবতা সহিত ইন্দ্রে আনি একেশ্বরে॥ তালঙ্গংঘ অতিকায় সিংহ জে বদন ৷২৫ মহোদর মহাপার্শ্বর দূষণ॥ স্থনিয়া ভাইর কথা দশানন হাসে। রাজপ্রদাদ দিল জত মনে আইসে॥

(200)

(२०७)

ত্রিভূবন সানে জত অমূল্য রতন। नाना तरक कुछकर्प किन विज्ञान ॥ রাবণের রথ খান জোগায় সার্থ। ছত্রিশ কোটী সাজিল প্রধান সেনাপতি। অকম্পন প্রহন্ত ধুমাক্ষ মুনিশঠ।৫ মকরাক বিরূপাক রণের উৎকট। ঘণ্টাদর মহাবীর এ শুক সারণ॥ রাবণে বেড়িআ লড়ে সর্ব্ব পাত্রগণ। অমরা জিনিতে রাজা লড়ে পুর সাজে। সাত অক্ষোহিণী বাদ্য রাবণের বাজে।১০ তবল বিশাল ঢাক বাজে জয় ঢোল। প্রলয় সময়ে বেন উঠে মহারোল॥ কটক লড়িল চারি সহস্র অক্ষোহিণী। ধর্ম্ম হেতু বিভীষণ রহিলা আপনি॥ হাতী ষোডা রথ সেনা লডিল অপার।১৫ আখির নিমিষে হৈল সাগরের পার॥ त्रावन वरमन साटि टॅंगना कत जुता। আখির নিমিষে গিয়া বেড়হ মথুরা। ক্তিবাস পণ্ডিত সে জগতমোহন। অমৃতের কণা ধেন উত্তর রামায়ণ ॥২০

রথে চড়ি ছাড়াইল ছ্রাজার দেশ।
মথুরা নগরে গিঝা করিল প্রবেশ।
দেনা সনে বেড়িল দৈত্যের বাড়ী ঘর।
নিদ্রা জার মধুদৈত্য আওআস ভিতর।
স্থেথে নিদ্রা জার বীর থাটের উপরে।২৫
কুম্ভনদী বাহির হৈলা একেশরে॥

কটক দেখিসা মোহ কুম্ভনদী পড়ে। কলার বাড়লি বেন কম্পমান ঝড়ে॥ ডর না করিহ ভগ্নী আমি দশানন। মধুদৈত্য কোথা গেল বধিব জীবন॥ ত্রাস পাঞা কুন্তনসী তার পাএ পড়ে।¢ রাবণের কথা শুনি মুখে ধূলা উড়ে॥ রাবণ বলেন ভগ্নী না ভাবিহ ব্যথা। তোমা বলে আনিল কাটিব তার মাথা। আমি যদি থাকিতাঙ লন্ধার ভিতর। সেই দিনে উহারে পাঠাঙ যম ঘর ॥১০ রাবণের স্থান কথা কুন্তনসী হাসে। ইহা স্থনি স্বামী মোর মরিব তরাসে॥ পৃথিবীতে তোমার ঠাঞি কার নাঞি রক্ষা। সোদর ভগিনী রাও কৈল শূর্পণথা। তার স্বামী মারি তুমি না বাসিলে লাজ।১৫ আমা রাণ্ডি করিবে অধিক নহে কাজ। বলে ছলে আনিআছে তবু মোর পতি। তাহার বীর্যাতে মো র জন্মিল সম্ভতি॥ লবণ নামেতে পুত্র দেথ বিদ্যমান। কোপ তেজ ভাই মোরে স্বামী দেহদান ॥২• ভগিনীর বোল শুনি রাক্ষ্ণের পতি। বুহিনী করিতে রাও না আস্তে জুকতি॥ রাবণে বিনম্ব করে জোড করি হাথ। তাহার বিনয়ে তৃষ্ট রাক্ষদের নাথ। বাজা বলে রাখিলাও তোমার বচনে ৷২৫ ইন্দ্র জিনিবারে সে আস্থক মোর সনে॥ इंश् अनि कुछनभी চলিল ধাইআ। নিদাতে আছিল সৈতা জাগাইল গিআ u

(२04)

ষ্ণিত লোচনে মধু দৈত্য উঠে বৈদে। আসযুক্ত দেখি কুম্ভনদীরে জিজ্ঞাদে ॥ আচম্বিতে পুরীতে কিদের গগুগোল। গড়ের বাহিরে কার কটকের রোল॥ কুম্বনদী বলে দৈতা রাজার কারণ।৫ তোমারে মারিতে আজি আলা দশানন॥ লক্ষা হৈতে আমারে আনিলে অহন্ধারে। সেই কোপে আস্তাছিল তোমা কাটিবারে॥ দৈত্য বলে ঝাট আন মহেশের শুল। সেনা সনে রাবণার করিমু নির্দাল ॥১০ কুম্ভনদী বলে তারে মধুর উত্তরে। দশানন সনে যুদ্ধ মরিবার তরে॥ থাকুক তোমার কাজ না পারে দেবতা। বিধাতা তাহারে হারে অন্তের কিবা কথা।। তোমারে রাখিতে আমি গেন্থ তার পাশ।১৫ .অভয় প্রদাদ দিল করিআ আশ্বাদ॥ গলে খাণ্ডা বান্ধি তুমি জাহ তার পাশে। রাজাকে সম্ভাষ গিয়া মধুর সম্ভাষে। কুম্বনসীর কথা দৈত্য শুনিলেন কাণে। গলে থাণ্ডা বান্ধি গেল রাবণের স্থানে ॥২০ মধুদৈত্য জাইআ রাজার পদ বন্দে। কোলাকুলি কৈল দোঁহে পরম আনন্দে॥ রাবণ বলেন দৈত্য করিলে প্রমাদ। আমার ভগিনী হর এত বড় সাধ॥ অতি বড় কর্ম তুমি করিলে দারুণে I2¢ তোমা নাহি কাটি লড়ি ভগ্নীর কারণে॥ পারে পড়ি কুম্ভনসী করিল রোদন। ভগীর লাগিসা তার রহিল জীবন।।

কত অস্ব আছে তোমার ঝাঠি ঝগড়া। কত দৈল্য তোমার কতেক হাতী ঘোড়া॥ সকল কটক তুমি চলহ সম্বরে। অমরাবতীকে গিয়া জিনি পুরন্দরে॥ জোড় হাতে বলে দৈত্য শুন মহারাজা।৫ দেবতা দানব সতে করে তোর পূজা।। তুমি বদি অপরাধ ক্ষমিলা আমারে। এক রাত্রি বঞ্চ থাকি আমার ঘরে। কুম্বনদী রন্ধন করিল তোমার তরে। ভোজন করিআ আজি থাক মোর ঘরে॥১० রাজা বলে কুন্তকর্ণের আজি জাগরণ। কুন্তকৰ্ণ নিদ্ৰা গেলে জুঝে কোন জন॥ রাতারাতি গিমা অমরাবতী লুটি। আসিবার কালে কালি রব তোমার বাটী॥ ইহা শুনি দৈত্য ধরে রাবণ বচন।১৫ আমার পীরিত রাথ করহ ভোজন॥ ভোজন সময় হৈল বেলা সাত ঘটা। রান্ধিল তোমার ভগ্নী করি পরিপাটী॥ ভোজন না কৈলে তেঁহো ভাবিবেন ছথ। কটক সহিত ভুঞ্জ তবে হয়ে স্থুখ॥২० না থাকিবে আজি যদি জাইহ এথনি। কটক সহিত সভে কর অন্নপানি॥ অলঙ্ঘ্য দৈত্যের বাক্য রাজা না লঙ্ঘিল। কটক সহিতে রাজা ভোজনে চলিল॥ প্রবেশে দৈত্যের পুরী অতি মনোহর।২৫ দেখিতে স্থন্দর যেন ইন্দ্রের নগর॥ সৈত্য সনে ভোজনে বসিলা দশানন। লক্ষেক ব্রাহ্মণে আনি জোগায় ওদন।

(202)

(२३०)

কুন্তনদী ঘৃত দেই সভাকার অলে। মধু দৈতা দনে রাজা ভুঞ্জিল সম্পন্নে॥ মধু দৈত্য রাধণে একোই স্থানৈ বিদ। তাহাদিকে অন্ন আনি দেন কুন্তনদী॥ সকল কটক সনে করিলা ভোজন।¢ ভোজন করিআ সাঞ্চ কৈলা আচমন॥ বসিয়া কম্বলে রাজা থাইল তামূল। ঘরের ভিতরে দেখে মহেশের শূল।। সৈন্যের সহিতে রাজা বৈদে সিংহাসনে মধুদৈত্য ঠাই পূল মাগে দশাননে ॥১০ रिम् डा वर्ण अहे भून मिन जिल्लाहर। আমারই কারণ হে গুন দশানন। তত্ত্বে মন্ত্রে শূল আমি দিয়াছি লবণে। লবণ বিহনে শূল নহে অন্য জনে॥ যগুপি তোমারে দরা করেন লবণ।১৫ ভগিনীর ঠাঁই শূল মাগ দ্শানন॥ কথা শুনি রাবণ শৃংশের ছাড়ে আশ। উত্তর কাও গাইল পণ্ডিত কৃত্তিবাস।।

মান সন্ধ্যা করি রাম প্রত্যুষ বিহানে।
সভাপগু লই আ মুনির কথা শুনে ॥২ ০
শীরাম বলেন কথা কহ মুনিবর।
কেমনে রাবণ গিআ জিনে পুরন্দর॥
অগস্ত্য বলেন রাম শুন সাবধানে।
দশানন ইন্দ্রে বৃদ্ধ হইল বেমনে॥
সপ্ত ঘটা বেলা গেল দ্বিতীয় প্রহর।২৫
মনর জিনিতে জান রাজা লক্ষেশ্বর॥

বিষম অমরাবতী না পারে লঙ্গিতে। বেডিঅ। কটক সব রহে চারি ভিতে। সহ**ন্ধ্রাজন আড়ে অমরা বসতি**। দেখেতে নাহিক ওর প্রনের গতি। চারি ভিতে চারি দার দাদশ বোজন।৫ এক দ্বারে চল্লিশ অক্টোহিণী সেনাগণ॥ সোণার কবাট খিল পর্মতের গোডা। হু চুক। শোভিছে তাহে স্থমেরুর চুড়া ঐরাবত উচ্চৈঃশ্রবা আছে ছই দারে। কাহার সক্তি তাহা লঙ্ক্তিতে না পারে ॥১० ঠাঞি ঠাঞি সোণার রচিত পাট শালা। দেবতা গন্ধৰ্ক তাহে বিদ্যাধর মেলা॥ শোক হঃথ নাহি তথা নাহিক মরণ। অমর নগর নাম ইহার কারণ॥ উপমা দিতে নাহি অমরাবতীর নাম।১৫ সংসারে হল্ল ভ পুরী অতি অহপোম।। তাহাতে প্রমাদ পড়ে ইন্দ্র নাহি জানে। আচম্বিত স্বর্গপুরী বেড়িল রাবণে॥ রাবণ বেড়িল পুরী তাদে পুরন্দর। দেবগণ নিঞা গেলা বিষ্ণুর গোচর ॥২০ আদন হইতে বিষ্ণু উঠিলা সত্তরে। নিবেদন দেবরাজ করে জোড করে॥ চতুভুজি নারায়ণ সভা মধ্যে বৈদে। বৃদ্ধি মাগিবারে ইক্র গেলা তার পাশে॥ রাবণ ব্রহ্মার বরে তিভুবন জিনে।২৫ হেন বীর নাহি দেখি তারে জিনে রণে॥ সভারে জিনিলে তুমি অষ্ট লোকপাল। আপনি রাবণে মার বিক্রমে বিশাল॥

(222)

(२३२)

তোমার চরণ বিনে গতি নাহি আর। রাবণে মারিআ কর দেবের উদ্ধার॥ স্থানিঞা দেবের কথা বিষ্ণুদেব হাসে 🕨 ভয় দেখি সভাকারে করিল আশ্বাসে॥ কহিলেন বিষ্ণু আমি মারিব রাবণ।৫ হেন অবতারে মারা না জায়ে কখন॥ বিধি বর দিয়া তার বাড়াল সম্মান। পিতা পুত্রে ত্রিভুবনে করে অপমান॥ আমা বই রাবণে মারিতে নারে আনে। রাবণের মৃত্যু কথা গুন দেবগণে॥ পূর্ব্বে মোরে কহিলেন দেব ত্রিলোচন।১০ জেমন প্রকারে বধ করিব রাবণ ॥ ছুষ্ট জনে বিধাতা আপনি দিল বর। সবংশে মারিবে তোরে মানুষ বানর॥ পৃথিবীতে হইবে আমার অবতার। বানরে করিআ সঙ্গে করিব সংহার ॥১৫ দেবতার হাতে নাহি মরিবে রাবণ। সংগ্রাম করিমা তারে থেদতে এখন। এখন নারিবে তারে হইআ সন্মুখ। আমিত মারিব তারে দেখিবে কৌতুক॥ এইত শরীর নাহি মরিবে রাবণ।২০ **ধরিআ মনু**ষ্যদেহ বধিব জীবন ॥ ভাহাকে মারিতে বান্ধ বান্ধিব সাগরে। শঙ্কাতে প্রবেশি নাশ করিব সভারে॥ সূর্য্য বংশ জন্মিব হুই চারি অংশ। তবে সে রাবণে আমি করিব নির্বংশ ॥২৫ তারে মারি বিভীষণে করা। দিব রাজা। সংসারের লোক যেন করে তার পূজা।

চিন্তি দেখাইবে নহে আমার বিষয়। সর্ব্ব দেব মেলি কর তার পরাজয়। এতেক শুনিআঁ জান সবে লঘুগতি। দেখিল রাক্ষণে বেড়ে অমরা বসতি॥ সংসারের উপরে ইন্দ্রের অধিকার। পবনে আনিতে দৃত গেলা আগুসার ॥¢ স্থুমেরু পশ্চিম দিগে প্রনের স্থান। আপনগণের সনে আল্যা আগুরান॥ কুবেরের স্থান সেই কৈলাস উত্তর। যক্ষগণ সঙ্গে আল্যা ইক্রের নগর॥ একবার রাবণে হারিআ পাল্য লাজ। ১০ উপরোধে ইন্দু ঠাঞি আইল যক্ষরাজ ॥ পাতালে নাগের পুর জিনিল রাবণ। সেই কোপে জুঝিতে আইল নাগগণ।। বরুণের পুর থান জিনেন লক্ষেখরে। তথন বরুণ নাহি ছিল নিজ ঘরে॥১৫ সেই কোপ বরুণের জাগরণ মনে। দৈন্ত সনে সাজি আলা ইন্দ্রের বচনে॥ দক্ষিণে আইলা যম মৃত্যু ছই জন। যুদ্ধ ভঙ্গ দিল যম এক্ষার কারণ॥ এক বার যমেরে জিনিল দশাননে।২० সেই কোপে আল্যা যম ইন্দ্রের বচনে॥ বস্থগণ মক্ত গন্ধর্ক বিদ্যাধর। পিশাচ পেরেত ভূত আইল বিস্তর॥ শনি আদি নবগ্ৰহ যত যোগগণ i জুঝিতে আইলা সভে সংহতি কারণ ॥২৫ নক্ষত্র আইল আর জত তিথি বার। পিল ক্ষণ মুহূর্ত দণ্ডের আন্তদার॥

(२५७)

(8 < 5)

युक्त দেখিবারে চণ্ডী আইলা আপনি। ব্ৰক্ত মাংস থাইতে আল্য চৌষটী যোগিনী॥ সংহতি আইল তাঁর অনেক কুমারী। ব্রহ্মাণী বৈষ্ণবী আল্য আর মহেশ্বরী॥ नातिभिःशी वाताशी धतन नाना कला। কাত্যায়নী চামুণ্ডা গলাতে মুণ্ডমালা।৫ সংগ্রামে বিজয়ী দেবী অতি ভয়ন্ধর। **(मिथिया (मिरीत मुर्छि (मिरवत नार्ग एत ॥** নিশুন্ত মহিষে দেবী মারিল কটাকে। তেঁহো যুদ্ধ দেখিবারে আইলা অন্তরীকে।। রথে চড়ি ভগবতী অটঅটো হাসে।১০ জেই জন দেখে সেই পড়য়ে ত্রাসে॥ দেবতা রাক্ষসে রণ বাজিল বিস্তর। ত্রই জনে যুদ্ধ করে অতি ভয়ঙ্কর॥ দেবতা রাক্ষ্ম বলে হইল মিদাল। সংগ্রামের শব্দ শুনি কম্পিত পাতাল।।১৫ মহোদর মহাপার্শ্ব আর ঘণ্টোদর। রাবণের সেনাপতি সংগ্রামে প্রথর ॥ দেবতার বাণে পড়ে রাক্ষ্স বিস্তর। রাক্ষদের বাণে কত লোটায় অমর॥ সংগ্রামের রোল যেন সাগরের কলকলি।২। রাবণের মাতামহ জুঝিছে স্থমালী। ভার বাণ বরিষণে দেবগণ পডে। আকাশের মেঘ যেন উড়াইল ঝড়ে॥ থরদান ধারে এড়ে জাঠা আর টাঙ্গি। স্চীমুখ বাণ এড়ে আর শত সাঞ্চি ॥২৫ ভঙ্গ দিআ দেবতা পালাএ রড়ারড়ি। কোপেন সাবিত্র বস্থ হাতে গদা বাড়ী॥

রণে প্রবেশিকা মাথে মারে তারে বাড়ি। চতুর্দিগে রাক্ষ্স পালাএ বডাবডি॥ ছই জনে সংগ্রামে গণনে উঠে ধলি। রাবণের মাতামহ জুঝিছে প্রমালী॥ स्रमालीत तथ थान मर्भगत तरह। व মাথে মণি জলে তার বিষে দেশ দহে॥ স্থমালী সাবিত্র বস্থ দোঁহে বাজে রণ। দোঁহে দোঁহাকারে করে বাণ বরিষণ॥ এড়িল সাবিত্র বস্থু অর্দ্ধচন্দ্রবাণ। স্তমালীর সোনা কাটি করে থান থান ॥১० থান থান হৈল সোনা মাথায় টোপর। বাণে ফুটা স্কুমালী হইল জর জর॥ আর এক বাণে রথ কৈল থণ্ড থণ্ডে। মারিল গদার বাড়ি স্থমালীর মুঙে॥ স্থমালী রাক্ষ্য রণ সহে কোন জন।১৫ সাবিত্র বস্থরে সাধু বলে দেবগণ॥ হাড় গোড় চূর্ণ হঞা স্থমালীয়া পড়ে। ভস্মরাশি হৈল বীর ভস্ম ঘন উড়ে॥ পালায় রাক্ষস সব সমুথ নহে রণে। সাবিত্রের সংগ্রামে হরিস দেবগণে ॥২० দেবতা দানব জত বৈস্ঞ আকাশে। দেখিআ তাহার রণ পড়এ তরাসে॥ কৃত্তিবাদ পণ্ডিত কবিত্ব মহাশয়। উত্তর কাণ্ডে গাইল সাবিত্র বস্থর জয়।২৫

কুপিয়া রাক্ষস সব করিল উঠানি। নানা অস্ত্র পেলে যেন মেঘে বর্ষে পানি॥ (250)

(25%)

শেল শূল সাঙ্গি পেলে জাঠি ঝগড়া। অমরা ছাইল স্থানি ঝন ঝনে সাড়া॥ সকল অমরাবতী রক্তে হইল রাঙ্গ। স্রোতে রক্ত বহে যেন ভাদুমাসের গঙ্গা॥ ঘোড়া হাতী রাউত রক্তে নদে ভাসে।৫ হরিসে পিশাচগণ থল থল হাসে॥ विष्की विष्कृ तक वासिया छेर्ठ एकना। শকুনী গৃধিনী তাহে করয়ে পারনা॥ আকাশে উঠিআ নাগে রক্ত কলকলি।১০ 'যুৱে অন্ত নাহি কেহো যুদ্ধ না সন্ধূলি॥ নাহি স্থনি কোন কালে হেন যুদ্ধ হয়। কল্লান্তে হইল মহা যেমন প্রলয়॥ জত ভূত গন্ধর্ম পিচাশ বিদ্যাধর। লেখা জোখা নাহি জত পড়ে নিশাচর ॥১৫ ইন্দ্র বলেন রাবণ তোমার যুদ্ধ ছল। একে একে জুঝিব কাহার কত বল।। ইক্রের বচনে হাসি বলে দশানন। সব দেব জুঝাছে মোর রণ॥ চন্দ্র স্থ্য বরুণেরে জিনিল মান্ধাতা।২০ জুঝিব আমার আগে কেমন দেবতা।। এই শুনি শনি গেলা রাবণ সন্মুখে। শনিদৃষ্টে দশমুও থসে অন্তরীকে॥ বিক্বত আকৃতি থেন নাড়া মুড়া গাছে। পালায় রাক্ষ্স দেখি নাহি চাহে পাছে ॥২৫ मन **माथा थिमन तावन नाहि ऐटि**। বিধাতার বরে পুন স্কলে মাণা উঠে॥ এক বার বিনে শনিদৃষ্টে নাহি বল। लाइयात (परि भनि श्हेल विकल ॥

মাথা গেলে নাহি মরে বিধাতার বরে। উঠা। রড় দিল শনি রাবণের ভরে॥ শনি পলাইল যদি পাইয়া তরাসে। হেন কালে যম গেলা রাবণের পাশে॥ যমকে দেখিআ রাজা দশানন হাসে।৫ মরিবারে কেনে যম আল্যা মোর পাশে একবার রণ করি পলাইলে ডরে। আর বার কেন আল্যা মরিবার তরে॥ যম বলে রাবণ না কর অহন্ধার। সেই দিন তোকে আমি করিতাম সংহার গ এড়াইলা মৃত্যু তুমি বন্ধার কারণে।১০ আজি তোরে মারিব রাখিবে কোন জনে 4 আছিল যে ষষ্টিরোগ যমের সংহতি। রাবণের দেহে পীড়া করে শীঘগতি॥ জগতের মায়া জানে পাপিষ্ঠ রাবণ। ব্ৰহ্ম নামে অগ্নি দেহে জালিল তথন ॥১৫ পুড়্যা মরে রোগ সব ভাকে পরিত্রাহি। পালাইআ রোগ সব গেল যম ঠাহি॥ রোগ যদি পালাইল দশানন হাসে। মোর ঠাই যম রাজা তোর মায়া কিসে !! যম বলে অহঞ্চার না কর রাবণ।২০ মৃত্যু বাণে আজি তোর বধিব জীবন॥ যম রাজা রাবণে হইছে গালাগালি। হেন কালে আল্য কুন্তকর্ণ মহাবলী ॥ ধাঞা কুম্ভকর্ণ জার যম গিলিবারে। উঠিআ পালায় যম কুন্তকর্ণের ডরে॥২৫ আদে পালাইল যম ইন্দ্রের গোচর। দেখিতা যমের ভঙ্গ বলে পুরন্দর ॥

(259)

(२১৮)

ত্রিভূবন মণ্ট যম তোমা দরশনে। তুমি যদি পালায় জুঝিব কোন জনে॥ দেখিকা তোমার ভয় চিস্তিত দেবতা। যম হইয়া হারিলা অন্তোর কিবা কথা।। হেনকালে পবন দারুণ বহে ঝড।৫ রাক্ষস কটক সব না হয় নিয়ড়॥ কুন্তকর্ণ মহাকায় নাহি উড়ে ঝড়ে। আর যত রাক্ষ্ম পালায় উভ রডে॥ কুম্বকর্ণ ধাইল প্রবন গিলিবারে। পালায় প্রন বীর মনে পাঞা ডরে॥১৫ কুন্তকর্ণ দেখিআ প্রন দিল রড়। দূর হৈল সকল জতেক ছিল ঝড়॥ একে একে দেবতারে জিনিল রাবণে। তবে গিআ বরুণ প্রবেশ করে রণে॥ বরুণ করিল মায়া হৈল জলময়।১৫ জল দেখি রাবণ পাইল বড় ভয়। জেথা জায় রাবণ তথাই দেখে জল। কোন থানে রহিতে নাহিক পায় স্থল। কুন্তকর্ণ নাহি ডুবে হুর্জায় শরীর। আর জত রাক্ষ্য নহএ কেহ স্থির ॥২০ বকণের মায়াজাল জানিল রাবণ। বিশ্ব অগ্নি ধহুকে জুড়িল ততক্ষণ।। শোষক বাণ রাবণ যদি কৈল অবতার তাহাতে সকল জল করিল সংহার॥ বক্রণের মায়া দূর করিল রাবণ।২৫ বিশ্বগণ মাৰুত আইল ততক্ষণ॥ একাদশ ক্রদ্র আইল দোআদশ রবি। খণ স্থল ত্রিভূবন পোড়াএ পৃথিৱী।

এক কালে বার স্থ্য হইল উদয়। রাবণ প্রলয় গণি মানিল সংশয়॥ রাবণ জুড়িল বাণ নামে ব্রহ্মজাল। আকাশে উঠিল বাণ অগ্নির উথাল। রাবণের বাণ দেখি ত্রিভূবন কাঁপে।৫ বার হুর্যা নিবারণ বাণের প্রতাপে॥ একবারে দেবে করে বাণ বরিসন। ভঙ্গ দিল রাক্ষস সহিতে নারে রণ॥ রাক্ষণের ভঙ্গ দেখি কোপে ইন্দ্রজিত। দেবগণে বাণ মারে বিক্রমে পূজিত॥১० ভঙ্গ দিল দেবগণ মেঘনাদের বাণে। সভারে রহায় ইক্র আশ্বাস বচনে॥ ইন্দ্রজিতে দেখি সব দেবতা কাতর। । জয়ন্ত ইন্দ্রের পুত্র নড়িলা সত্বর॥ জুঝেন জয়ন্ত বীর শচীর নন্দন।১৫ তারে দেখি হরিদ হইলা দেবগণ॥ দেবতা রাক্ষ্স রণ হইল অন্ধকার। ছই দলে কাটা কাটা হৈল মহামার॥ সম্মুথ সার্থি রথে মাতুলি নন্দন। বাণে বিদ্ধে জয়ন্ত রাক্ষ্স জনে জন ॥২০ জয়ত্তের বাণেতে সার্থি তার ফুটে। মেঘনাদ নানা বাণে দেবগণ কাটে। তাহা দেখি রাক্ষসগণের বল বাড়ে। মেঘনাদের বল দেখি জয়ন্ত বাহড়ে॥ মেঘনাদে জয়ত্তে হইল মহারণ।২৫ শ্রাবণের মেঘ যেন বাণ বরিসন॥ ছই জনে রাজপুত্র ধন্থকে প্রধান। হুই জনে যুদ্ধ করে একোই সমান 🖟

(२>२)

(220)

় হুই জনে বাণ বরিদে ধারুকী প্রচণ্ড। দোহে দোহা বিদ্ধিতা করিছে খণ্ড খণ্ড। বজ্র অগ্নি জিনিঞা দোহার খর বাণ। माहारक विकित्रा माहि करत थान थान অন্ত্র অবতার করি হুই বীরে জুঝে।৫ লাথে লাখে বাণ এড়ে সমরের মাঝে॥ (माटर वाग उत्तिज माटर ध्युर्कत्। দোঁহাকে বিদ্ধিতা দোহে করিল জর্জার॥ ইক্সজিত বাণ এডে নাশিতে বিপক্ষে। মহাশন্দ করি বাণ উঠে অস্তরীকে ॥১০ শক্রকয় বাণ সে অনস্ত অবতার। জয়ন্তের বাণে তাহা করিল সংহার॥ হেন অস্ত্র কাটা গেল রাক্ষস চিস্তিত। জয়তে মারিতে বাণ এড়ে ইক্রজিত॥ বাণ জোড়ে মেঘনাদ অতি ভয়কর।১৫ বাণের বিক্রম দেখি দেবৈ লাগে ডর ॥ রাক্ষ্য কটকে গিআ জয়স্তেরে বেড়ে॥ রাক্ষদের বাণ দেখি জয়ন্ত বাহুডে॥ পৌলম দানবরাজ সান্ধাইল রণে। হাতে ধরি জয়স্তে পালায় ততক্ষণে ॥২০ লুকাইতে ঠাই নাই রাক্ষসের ডরে। নাতি নিঞা সান্ধাইল পাতাল ভিতরে॥ পৌলম দানব বৈসে পাতাল ভিতরে। পালাইআ জয়ন্ত রহিল তার ঘরে॥ **জग्न अ** शक्ति वित तित कार्य पर वित ।२० রথে থাকি মেঘনাদ সিংহনাদ করে॥ ইক্স ঠাঞি কহে গিআ সব দেবগণ। আচ্বিতে জয়স্ত না দেখি কি কারণ॥

স্থনিঞা ইন্দ্রের পুরে উঠিল ক্রন্দন। ইন্দুৱাজে বলে যম প্রবোধ বচন॥ পরলোক গেলে মোর সনে হয় দেখা 🕒 জয়ন্ত না মরে ইক্র পাইআছে রক্ষা॥ यर्गत्र अर्दार्थ इस कुन्तन महत्व। ६ দেবগণ সঙ্গে নিঞা চণ্ডিকারে বলে ॥ তোমা বিদ্যমানে পুত্র দেবতা সংহার। রাবণে হারিসা কর সভার উদ্ধার॥ সব দেবগণে নিল অভয় শরণ। বিসন্ধটে রাখ দেবী যত দেবগণ ॥১০ তুমি ধাতা তুমি কর্ত্তা তুমি সে বিধাতা। বিদ্যা শক্তি দেবী তুমি দেবতার মাতা॥ তুমি বর্ত্তমানে মরে সব দেবগণ। বারেক রাথহ মাতা লইমু শরণ॥ চও মুও নিশুন্ত মারিলে মহিষাম্বর।১৫ রাক্ষ্স বেটার অহঙ্কার কর চুর॥ **(मरवरत विकल (मर्थि (मर्वी देकल मरा)** । রণ করিবারে জান দেবী মহামায়।॥ সিংহনাদ ছাড়ে দেবী কেশরী বাহিনী। স্বৰ্গ মৰ্ত্ত্য অধোপুর কম্পিত মেদিনী॥২० জুঝিবারে চণ্ডিকা গেলেন রণস্থলে। কোটা কোটা যোগিনী নাচিছে কুতৃহলে কেহ হাসে কেহ গায়ে কেহ কাচ কাচে। বক্ত মাংস খাইআ যোগিনীগণ নাচে॥ চণ্ডিকা বলেন কত সব অপরাধ।২৫ আমা সনে রণ তোর পড়িল প্রমাদ॥ यकात्रण मात्रिया त्वजानि (प्रवंशत। আজি মোর হাতে তোর সবংশে মরণে 🛭

(२२১)

(२२१)

আপনি চণ্ডিকা জুঝে চৌষাটি অশ্বরে। কোপে অগ্নি মূর্ত্তি হঞা রাক্ষ্স সংহারে॥ সংগ্রামের মাঝে হৈল ঘোর অন্ধকার। কেহ কারে নাহি দেখে ডাকে মার মার॥ রাক্ষদের শোণিতে বহিন্সা জায় নদী। রক্তের উপরে সেনা ভাসে গাদি গাদি ॥৫ .বিশ্বকে বিশ্বকে রক্ত বান্ধি উঠে ফেনা। শকুনী গৃধিনী তাহে করয়ে পারণা॥ কর তালি দিমা ফিরে ডাকিনী যোগিনী। খল খল হাসে সভে পিবস্তি রোহিনী॥ নানা অন্ত্র চণ্ডিকা করেন বরিসন।১০ কোন জন সহিবেক চণ্ডিকার রণ॥ তাহা দেখি দেবগণ করে গীত নাট। পালায় রাক্ষস-সেনা নাহি দেখে বাট॥ জোড় হাতে রাবণ চণ্ডীকে স্তব করি। তুমি রণ কৈলে আমি নাহি অস্ত্র ধরি॥১৫ তোমার প্রদাদে আমি'ত্রিভূবন জিনি। বীর বলি সংসারে কাহারে নাহি গণি॥ তুমি মোরে মারিলে কাহার বুদ্ধে রাথে। রণে মোর মারিলে রাক্ষদ লাথে লাথে। তোমার প্রসাদে মোর এত ঠাকুরালী।২• তব তেজে সকল সংসার আমি দলি॥ কিচু নাঞি করিগো তোমার অপরাধ। আমা সনে ভূমি কেন কর বিসম্বাদ॥ মোরে হারাইলে তুমি কি সাধিবে কাজ। দৈবে যদি তুমি হার বড় হয় লাজ ॥২৫ মহেশের পদ্ধী তুমি আমার ঈশ্বরী। তে কারণে তোমার ঠাই পরিহার করি॥

শিবের সেবক আমি জান ঠাকুরাণী। সেবক সহিত কেন কর হানা হানি॥ রণে হারি পালাইল যত দেবগণ। তার বোলে সেবক সহিত কর রণ॥ এ কথা হইবে মহাদেবের গোচর।৫ তাঁর ঠাই লজ্জা তুমি পাইবে বিস্তর॥ তাঁর আজ্ঞা নাহি মাতা আমারে মারিতে দেবতার বোলে নষ্ট কর আচ্ধিতে॥ মোরে বধিব যদি হয় তোমার সস্তোষ। ভাগ্য করি মানি মৃত্যু নাহি রোষ ॥১০ অমর নাহিলে মৃত্যু আছে এক বার। মরিলে তোমার হাতে মুক্তি আমার॥ রাবণের বোলে দেবী মনে মনে হাসে। চৌষটি যোগিনী লৈআ গেলেন কৈলাদে॥ চণ্ডিকা চলিলা জদি রাবণ উল্লাস ৷১৫ উত্তর কাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্লন্তিবাস।। চণ্ডী রণ ছাড়িলেন দেব কাঁপে ডরে। ঐরাবতে চড়ি ইক্স জান জুঝিবারে॥ নানা বর্ণে মেঘগণ পাতিলেক থানা। ত্রিভূবন কাঁপে সবে পড়ে ঝন ঝনা ॥২০ নাচয় অপ্যরাগণ গান নানা গীত। অষ্ট বস্থ লড়ে আর দ্বাদশ আদিত॥ বিশ্বকর্মার গড়া রথে উঠে বজ্রপাণি। তাহা শুনি দশানন আইলা আপনি॥ **(मिय्या महत्र हेन्स कृ**किवादि नए ।२৫ যাত্রা কালে অমঙ্গল স্থানে স্থানে পড়ে॥ চতুৰ্দ্ধিকে উদ্ধাপাত সূৰ্য্য তেজ ছাড়ে। আকাশে নক্ষত্ৰগণ দিনে খদ্যা পড়ে।

(२२७)

(२५८)

বিচিত্র নির্মাণ রথ রাজহংস বহে। ত্বরিতে গেলেন যথা দশানন রহে।। চারি দিকে দেবত। রাবণ রাজা মাঝে। ইন্দ্রজিতে পাছু করি দশানন জুঝে॥ যুদ্ধ পাইলে দশানন হয়েত পাগল।৫ র্থ সনে আকাশে উঠিল মহারোল। দেবতা রাক্ষদে রণ হয়ে ভয়ম্বর। কাটা কাটি করি দেনা পডিল বিস্তর ম রুদ্রগণ বিদ্যাধর ধার বস্থগণ। গন্ধর্ব কিল্লর যক্ষ বরুণ প্রন ॥১০ এক চাপে চলিলা সকল দেবগণ। কুম্বর্ক বহিল ভাঙ্গিল সেনাগণ ॥ কুন্তকর্ণ সন্মুখে জে জন গিয়া পড়ে। কারে লাথি মারে কারে দন্তের কামডে॥ রুদ্র সেনাগণ জুঝে অতি ভয়ঙ্কর।১৫ বাণে বিন্ধি রাক্ষ্য করিল জর জর ॥ ক্স সেনা কুম্ভকর্ণ করিল উঠানি। নানা অস্ত্র ধরিয়া ক্রন্তের দৈন্য জিনি॥ কারে ধরি গিলে কেহ লোটায় ভূমিতলে। খাণ্ডাতে কাটএ কারে কারে বিদ্ধে শূলে॥ কেহো হস্তিপৃষ্ঠে জুঝে কেহ ঘোড়ার পিঠে বাছ প্রসারিয়া তারে ধরিয়া সাপটে ॥২০ ঘারে অচেতন কেহো পড়ে রণ স্থলে কটকের রক্তে নদী বহে ভূমিতলে। ক্ষসিল দেবতাগণ গন্ধৰ্ব কিন্নর। বাণে বিন্ধি রাক্ষসেরে করিল জর্জার॥ কোপ করি কুম্বকর্ণ ধায় রণ স্থলে ।২৫ একেশ্বর গিআ সব দেবতারে দলে।।

কোপে ইন্দ্র মারে বজ্র কুছকর্নের বুকে। বুকে বজ্র থাঞা বীর তিলেক নাচুকে॥ রোষে বীর কুম্ভকর্ণ দেখি ভয়ক্ষর। ঐরাবতে চড়িয়া পলায় পুরন্দর॥ (मथिया ताकम मव मिना छिँ काती। « এই মুখে রাখে। বেটা অমরানগরী॥ কুপিলেন ইন্দ্র কুন্তকর্ণের বচনে। কালান্তক যম যেন সাম্ভাইল রুণে॥ একে একে রাবণ জিনিল দেবগণে। মনে না করিস ডরে না আসিব রপে ॥১০ ঐরাবতে চড়ি ইক্স বন্ধ নিল হাতে। সন্মুথে রাবণ রহে চাপি পুষ্প রথে॥ ইন্দ্রে হাতের বজ্র অতি ভয়ন্ধর। গর্জন স্থনিরা সব কাঁপিল সংসার॥ স্বৰ্গ মৰ্ত্ত্য পাতাল কাপিল ত্ৰিভূবন।১৫ ইন্দ্র রাজা রাবণে ছজনে করে রণ॥ দেখিয়া ইক্রের বজ্র কিম্পিত রাবণে। কুম্বকর্ণ বলে ভাই ভয় নাহি মনে॥ রাবণে পশ্চাৎ করি কুম্ভরুর্ণ রোধে। 'দেখিআ। দেবতা সব পলায় তরাসে ॥ কুম্বকর্ণ বলে ইন্দ্র পালাইনি কোথা। নিশ্ব ল করিব আজি জতেক দেবতা।। বজ্র বস্থ ইক্র তোর নাহি কিছু ডাগু।। জত বজু চিবাইয়া করা। দিমু গুণ্ডা॥ ইক্র বলে রাক্ষ্স না কর অহঙ্কার।২৫ বজের আগুণে পুড়ি হবি ছারথার॥ মন্ত্র পড়ি ইন্দ্র বজ্র গোটা ফেলে। বাম হাতে ধরি বজু কুন্তকর্ণ গিলে॥

(226)

(২২৬) 🌸

বজ গিলে কুম্ভকর্ণ ছাড়ে সিংহনাদ। দেখিয়া দেবতা সব গণিল প্রমাদ॥ ব্রহ্ম অগ্নি হেন বজু পেটে তার জলে। জীর্ণ না করিতে পারি উগরিয়া ফেলে॥ তাহা দেখি দেবগণ দিল টিটকারি।৫ দেবতা গিলিতে বীর ধায় তরাতরি॥ স্ট নাশ করিবারে স্থজিল বিধাতা। চারিভিতে সাপটিমা গিলিল দেবতা॥ অমর দেবতা দব নাহিক মরণ। नाक मुथ मिया वादि इत्र (मवराण ॥>० বারি হৈতে তুলি ফেলে গগনমণ্ডলে। হাড় গোড় ভাঙ্গি দেব পড়ে ভূমিতলে॥ এক দিন কুন্তকর্ণ সবে জাগরণ। রজনী প্রভাতে হৈল ঘুমে অচেতন। দেখিমা তাহার নিদা রাবণ চিস্তিত।১৫ দিবা রথ করি লঙ্কা পাঠায় তরিত। कुछकर्ग निष्ठा राग र दिन एमवराग। এক চাপে আল্য সভে করিবারে রণ॥ রা দ্রুস কটক বিদ্ধি করে থান থান। দেখিআ রাবণ আল্যা ইন্দ্র বিভয়ান ॥২০ मिंदिम्बा क्रम्बदेम्बा विदक्त शादि शादि । ধনুক টঙ্কারে জার ত্রিভূবন ফাটে ॥২০০ ইন্দ্রাজা বাণ এডে ঝলকে ঝলকে। কত বাণ বাজে গিয়া রাবণের বুকে॥ রাবণ বরিদে বাণ চোক চোক ধার।২৫ দেবতা রাক্ষদে হৈল ঘোর মহামার॥ পাথী বেন উড়ি জায় ইক্স এড়ে বাণ। ক্তিবাস রামারণ করিল বাথান॥

মারা করি দেবগণ করে অন্ধকার। রাক্ষ্যের সেনা ইক্স করেন সংহার॥ অদ্ধকারে রাক্ষ্যেরে করেন নির্বংশ। রাক্ষম কটক সবে রহে এক অংশ ॥ অন্ধকারে ছই সেনা কাহা নাহি দেখি।¢ জলাধিপ বৰুণ হইল মুখমুখি॥ কুড়ি আঁথি থাকিতে রাবণ হৈল অন্ধ। রাক্ষ্যের সেনা পড়ে নাচএ কবন্ধ। রাবণ বলেন রথ লহ ত্রা করি। দেবতা রাজস মারে সহিতে না পারি ॥১০ তিন লোক জিনি আমি আঁথির নিমেষে। ইন্দ্রকে জিনিয়া শচী লইব হরিসে॥ দেবগণে জিনি নিব দেবতার স্থান। অমুরে সকল দিআ বাড়াবো স্থান॥ আমি বিদামানে কেই না করি ই ডর ১১৫ রথ থান নেহ ঝাট সংগ্রাম ভিতর॥ অন্ধকারে জায় রথ কেহ নাহি দেখে। দেবগণ ছাড়ি আলা ইক্রের সম্মুথে॥ বিধাতার বরে মারা না জায় রাবণ। ধরিয়া রাক্ষ্যে বান্ধ সব দেবগণ ॥২০ বলি বান্ধি বিষ্ণু যেন থুইল পাতালে। রাবণে ধরিয়া বান্ধ দেবতা সকলে॥ তারে ছাড়ি দক্ষিণে গেলেন পুরন্দর। কটক দেখিয়া রাজা চলিলা উত্তর॥ উত্তরে চলিলা রাজা জুঝিবার ছলে।২৫ সেই দিকে জাই আ রাক্ষসগণ দলে॥ আপনা পাসরে রণে প্রবেশি রাবণ ( বাণে বিন্ধি জর জর করে দেবগণ॥

(229)

(226)

তাহা দেখি ইক্স আলা চাপি হস্তিমনে। ত্রিত গমনে আসি রাক্ষসেরে বিদ্ধে॥ কোপে গুই জন করে বাণ অবতার। বাণে বাণে অন্ধকার হইল সংসার॥ নানা বাণ এড়ে দশ দিক পরকাশ। দোহাকার বাণে গিয়া ছাইল আকাশ ॥ ছই জনে বাণ এড়ে দোহে ধরুর্দ্ধর। দোহা দোহা বাণে বিদ্ধি করিল জর্জর॥ কেহ কারে জিনিতে নারে একই সোদর। তুই জনে যুদ্ধ করে অতি ভয়ন্বর॥ সমযুদ্ধ জায় দোহে কেহ নাহি রড়ে। মারামর বাণ জেই ইন্দ্রের মনে পড়ে॥ ইন্দ্র বলে কৌতৃক দেখহ দেবগণ। भाषाभव वार्ण वन्ही कविव वावण ॥ মাগ্রামোহ নামে বাণ যমে অবতার। ছোঁবা মাত্র রাবণ পডিব নিদা ভার॥ মন্ত্র পড়ি ইন্দ্র মায়ামোহ বাণ এড়ে। মেই বাণে রাবণ নিদ্রাতে ঢ়লি পড়ে॥ ছোঁবা মাত্র নিদ্রা হএ মায়ামোহ বাণে। র্থ হৈতে রাবণ পড়িল অচেতনে॥ নিদ্রাতে আবেশ হঞা পড়ে মহীতলে। ধাঞা গিমা বাদব রাবণ কৈলা কোলে। পাছ গিত্রা রাবণে করিল পাথালি কোলে। হাতীর আন্ধতে তার বান্ধে দশ গলে॥ কুজ়ি আঁথি রাবণের তামা হেন জলে। वश्राम विकल रूका रेक्टरक मिराहन ॥ রাবণ পড়িল বন্দি দেবতার হাতে। রাক্স পালায়ে ডবে নাহি চলে প্থে॥

ঐরাবতে হাকাইয়া দিল পুরন্দর। দস্তাঘাতে রাবণেরে করিল জর্জর॥ ঐরাবত দত্তে নহে রাবণ কাতর। বজ্র তুলি মারে দশ মাথার উপর॥ রাবণ কাতর হহলে ইন্দ্র নাহি ছাড়ে।৫ বান্ধিয়া রাখিল তারে ঐরাবত গোড়ে॥ কুড়ি হাত বাদা গেল অন্ত্র ধরিতে নারি। হস্ত পদে বান্ধিল লঙ্কার অধিকারী। হস্তী চালাইল মুগু করে লড় বড়। ছেঁছড়িয়া নিল সব গায়ে গেল ছড়॥>• খা সহিতে নারে রাবণ বন্ধন না ছিঁছে। ইন্দ্র ঘরে জায় রাজা চিকরাই পড়ে॥ হাথির চরণে তার বান্ধিআছে চুলি। ছেছড়িআ নিমা বুলে প্রতি কুলি কুলি॥ সর্বাঙ্গে রকত পড়ে পরিত্রাহি করে।১৫ কুলি ২ নিঞা বুলে চাতরে চাতরে॥ রাবণেরে নিঞা বুলে আওমারি আওমারি। বারি হঞা দেখে জত দেবতার নারি॥ বিজুরি সঞ্চার যেন তা সভার রূপ। দাণ্ডাইআ দেখে সভে দশানন ভূপ॥২० ত্রিভূবনে দশানন যুদ্ধ কৈল যথা। কোন থানে নাহি হএ এমন অবস্থা।। পরিতাহি করে তমু ইন্দ্র নাহি ছাড়ে। হাতে গলে বান্ধি তারে বন্দিশালে এড়ে। तानन नाकिया है स तार्थ नकी भारत २० হাতে গলে বান্ধি তারে লোহার শিকলে॥ तात्व तरिना तनी हेटनत हुशास्त । मामीभन চलिल जावन एमशिवादव ॥

(২২৯)

(२७०)

স্থাবেশ করিআ গেল যত দাসীগণ। তাহারে দেখিআ রাজা কামে অচেতন॥ मानीरत तावन वरल मधुत्रम वानी। মারণে বন্ধনে মোর বিকল পরাণী॥ ভোথে মরি তোরা মোরে দেহ অন্নপানি।৫ তোমা সভা হৈতে মোর বাচুক পরাণি॥ विकिशाल वनी ताजा नाहि शतिष्ठम। मांगीरक मुझात मार्ग ना छर्। यापम ॥ মোর প্রাণ রাথহ শৃঙ্গার দিআ দান। তোমা সভা দেখি মোর আকুল পরাণ॥১০ রাবণের কথা শুনি দাদীগণ হাসে। হাতে ঝাঁটা করিআ রাবণে মারি পিসে॥ রাবণে ঝাটার মুড়া মারে দাসীগণ। তথাপি শৃঙ্গার দেহ বলে ঘন ঘন ॥ বন্দীশালে থাকি তমু মাগ্র শুঙ্গার।১৫ ক্বতিবাদ গাইল উত্তরকাণ্ড সার॥

সব দেবে মেলিয়া রাবণে কৈল বন্দী।

রাক্ষস কটক সব চলে কান্দি কান্দি॥

হরসিত দেবতা বান্ধিয়া দশানন।

জার যথা স্থান সবে করিল গমন॥
রাবণ পড়িল বন্দি স্থানে ইন্দ্র জিত।২০

চারি মেঘে অন্ধকার করে আচ্ছিত॥

ব্রন্ধার বরে মেঘনাদ মেঘে অধিকার।
রহিল মেঘের আড়ে রাবণ কুমার॥

বহিল মেঘের গার্জন জেন মেঘ্ থাকি ভাকে॥২৫।

দেখের গার্জন জেন মেঘ্ থাকি ভাকে॥২৫।

দেখের গার্জন জেন মেঘ্ থাকি ভাকে॥২৫।

দেখা নাহি পাএ ইক্র চাহে ঘন ঘন ॥

ব্যাক্ষর বের মেঘনাদ পড়ে শোকে।

মায়ারথে ইক্রজিৎ হৈল অদর্শন।

মেঘের গার্জন জেন মেঘ্ থাকি ভাকে॥২৫।

মায়ারথে ইক্রজিৎ হৈল অদর্শন।

স্থনিতে গভীর নাদ বিষম গর্জন। কোণে কেন রহ ইন্দ্র আসি দেহ রণ॥ রাবণ কোঙর আমি নাম মেঘনাদ। বাপ লাগি আজি তোর পাডিব প্রমান। মোর বাপে বন্দি কর মোর বিভাষানে। অমর নগর পোড়াইব বাণে॥ স্থনিয়া তাহার কথা দেবরাজ হাসে। মরিবার তরে বেটা আলি মোর পাদে॥ তোর ঠাঞি স্থনি বেটা অপূর্ব্ব কাহিনী। বাপ হৈতে পুত্ৰ বড় কোথাহ না স্থনি ॥> • মোর বাণে কাহার নাহিক অব্যাহতি। বন্দি করি থোব তোরে বাপের সংহতি # কৌতুকে বাপের সনে আদিআছ রণে। পিতা পুত্রে ত্বজনে থাকিবে একু স্থানে॥ এত বলি রথে চড়ি আলা পুরন্দর।১৫ ফিরিআ চলিলা সঙ্গে সকল অমর॥ মেঘনাদে বাসবে হইল গালা গালি। তুইজনে যুদ্ধ বাজে দোহে মহাবলী। থাকিআ মেবের আড়ে জুঝে মেঘনাদ। সংগ্রামে সান্তায় বীর করিন্সা বিবাদ ॥২० हेक हक रुगा कूरवजानि जन। रमधनारमञ्ज दार्थ मर्छ छक्ष मिन जर्भ ॥ মাতলি সার্থি বাণে হইল জর্জর। সর্বাঙ্গে ফুটিল ইক্র ঘাএ গুরুতর॥ রথ ছাড়ি দেবরাজ ঐরাবতে চড়ে।২¢ হন্তী ঝিকি জায় ইক্সজিতের নিয়ড়ে॥ মায়ারথে ইক্সজিৎ হৈল অদর্শন।

(२७५)

(२७२)

বাণে ফুটা জর জর হৈলা পুরন্দর। দেবরাজে দেখি সব দেবতা ফাঁকর॥ বাণ জুড়ি বাসব আকাশ পানে চায়। সহস্রলোচন চাহে দেখিতে না পায়॥ দেখিতে না পাঞা ইক্র হইল ফাঁফর।৫ ইক্তে বিন্ধি মেঘনাদ করিল জর্জার॥ দেখিতে না পায় ইক্র পাইল তরাস। ইক্রেরে বান্ধিতে বীর জোড়ে নাগপাশ। মেঘনাদ জানে নাগপাশ অন্তশিকা। যুদ্ধ করি পাইল কাহার নাহি রক্ষা ॥১০ কহনে না জায় নাগপাশের প্রতাপ। মন্ত্র বলে হয় কত লক্ষ লক্ষ সাপ। এডিলেক বাণ গোটা হৈল অজগর। অজগর হাতে গলে বান্ধে পুরন্দর॥ **সর্পে**র বিষেতে ই<u>ক্র</u> হইল মুচ্ছিত।১৫ ইন্দ্র ছাড়ি দেবতা পালায় চারিভিত॥ একে একে পালাইল সব দেবগুণ। হরিদে রাক্ষ্য করে সংগীত নাচন। রণস্থলে পড়িআ লোটাএ পুরন্দর। ইন্দ্রজিৎ তোলে তারে রথের উপর॥२० ইন্দ্র বান্ধি ইন্দ্রজিৎ নিজ রথে এডে। জারে পায় তারে মারে যুক্ত নাহি ছাড়ে॥ র)বণ আছেন বন্দী বাসবের ঘরে। সান্ধাইল মেঘনাদ তার অন্তঃপুরে॥ वार्पादत वक्तन मुक्क करत रमधनाम ।२० লজ্জাতে রাবণ জুঝে ছাড়ে সিংহনাদ।। ইন্দ্ৰ বায়ু বৰুণ বিদ্ধিআ পাড়ে বাণে। খায়ে জর জর তমু নাহি ছাড়ে রণে॥

বাপেরে ডাকিআ বলে বীর মেঘনাদ। রাজা বন্দি কৈল আর না কর বিযাদ॥ রাজাকে বান্ধিল আর যুদ্ধ কার সনে। নিষণ্টকে রাজ্য ভুঞ্জ সকল ভুবনে॥ রাবণ বলেন তুমি বংশপ্রতিষ্ঠিত।৫ ইন্দ্ৰকে জিনিলে তুমি বিক্ৰমে পূজিত॥ ইক্ররে লইয়া তুমি চল আগুয়ান। অমরা লুটিয়া আমি করিব বিধান॥ আমার অবস্থা কত কৈল দেবরাজ। হেন ইক্র জিনি বাপু যুচাইলে লাজ ॥১০ ইন্দ্র নিঞা আগে বাপু তুমি জায় ঘরে। অমরা লুটিয়া আমি জাব লফাপুরে॥ हेक निका हेक्जिए हिनन मध्त। এথা সর্ব্ধ স্বর্গপুরী লুটে লঙ্কেশ্বর॥ এতেক রাবণ রাজা পাল্য শৃন্তপুরী।১৫ বাছিআ ২ লয়ে ভাল ভাল স্ত্ৰী॥ রত্ন মণি মাণিক ভাঙার লুট করি। বিংশতি সহস্র নিল স্বর্গ বিস্থাধরী॥ শচীকে ছাড়িআ বুলে রাজা দশানন। তারে লঞা পালাইল সব দেবগণ॥২০ 🔧 শচীকে রাবণ করে বড় অভিলাষ। না পাঞা রাবণ রাজা ছাড়এ নিশ্বাস॥ ইন্দ্রের নন্দনবন দেখিতে স্থন্দর। হেন বনে প্রবেশ করিল লক্ষেশ্বর॥ পারিজাত উপাড়িসা নিল ডালে মূলে।২৫ অমরা লুটিআ রাবণ চলে কুতৃহলে॥ লুটিরা পুটীয়া পুরি কৈল ছারথার। স্বৰ্গ ছাড়ি দশানন কৈল আগুসার॥

(२७७)

(805)

रेख निका स्पराम श्रमा नकाशूती। विमानात्म दाथिन (मरवत अधिकाती । চলে গেল রাবণ লইআ সৈতাগণ। প্রহন্ত মারীচ সঙ্গে শুক জে সারণ॥ সৈন্ত সঙ্গে ঘরে গেল রাজা দশানন। c এথা স্থরপুরে বড় উঠিল ক্রন্দন॥ লক্ষা আসি দেবগণে দিলেন মেলানি। দেবগণ ঘরে গেলা কান্দেন ইন্দ্রাণী॥ निक्षाला जग्न वामव देशन वन्ती। পতিপুত্রশোকে সতী অবিরত কান্দি॥১০ ক্তিবাস গাইলেন বিচিত্র প্রবন্ধ। উত্তরকাণ্ডে ইন্দ্রবন্দী দৈবের নির্বন্ধ ॥

বিদিলা রাবণ রাজা করিয়া দেআন। সত্তিস কোটী কটক দাণ্ডাল সন্নিধান॥ ইজ্রজিৎ দাগুটিল বাপের সন্নিধানে।১৫ দশানন বলিছে পুত্রের বিদ্যমানে॥ ইক্র বেটা কৈল বড় আমার অবস্থা। সে বেটারে বাপু তুমি রাখিআছ কোথা।। জোড় হাতে বলে বীর বাপের নিকটে। वस्रत्न चार्र्डन हेन्द्र विवय मक्षर्छ ॥२० লোহার দিকল তার বান্ধা হাতে গলে। বুকেতে পাষাণ দিআ থুল্য বন্দিসালে॥ এত যদি বলিল কোঙর মেঘনাদ। স্থনিআ রাবণ দিল পুত্ররে প্রসাদ। জত কন্তা আনিল লুটিয়া স্বৰ্গপুরি।২৫ পুত্রে তার দিল দশ সহস্র বিভাগরী॥

স্বরপুরী লুট জত আনিল রাবণ। নানাধন দিল পুত্রে অমূলা রতন॥ এইরপে রাবণ রহিল লক্ষাপুরে। ওথা সব দেবগণ এক্ষার গোচরে॥ দেবগণ বলে ব্ৰহ্মা হৃষ্টি গেল নাশ। c রাত্রি দিবা নাহি চক্র স্থর্য্যের প্রকাশ। স্থর পুরী লুটিল রাবণ ছরাচারী। ইন্দ্র বান্ধি নিঞা গেল আপনার ঘরে। সকল দেবতা ছাড়ি স্বর্গের বসতি। ইন্দ্ররে আপনে তুমি কর অব্যাহতি॥১• দেবতার কথা গুনি ভাবেন বিযাদ। ব্রহ্মা বলে বর দিআ পাড়িল প্রমাদ। দেবগণ সঙ্গে ব্রহ্মা চলিলা সত্তর। আপনি চলিলা প্রভু রাবণের ঘর॥ রাবণের ডরে দেব না হএ সম্মুখে 1১৫ সকল দেবতাগণ রহে অন্তরীকে॥ ব্রন্ধলোক ছাড়ি ব্রন্ধা করিল গমন। রাবণের ঠাই গেলা ইন্দ্রের কারণ॥ দেআন করিআ বসিয়াছেন লক্ষেশ্বর। দেবগণ সঙ্গে ত্রহ্মা গেল তার ঘর ॥২० আত্তে ব্যস্তে উঠে বন্দে ভ্রহ্মার চরণ। কুড়ি হস্ত জুড়ি কৈল অনেক স্তবন॥ আজা কৈলে যাইতাঙ তোমার বিদামানে। কোন কর্মে গোসাঞি আইলে সমিধানে॥ ব্ৰজা বলে দশানন সৃষ্টি কৈল নাশ।২৫ রাত্রি দিন গেল চক্ত স্থাের প্রকাশ। ইন্দ্র দনে যুদ্ধ কর কিসের কারণ। স্বৰ্গ পুৱী লুটিলে লংঘিতে দেবগণ।।

(200)

(२७७)

আপনার দোধেতে আপনি হবে নষ্ট। রাক্ষস হইয়া কর দেবতারে রুপ্ত। পাইআ অমর বর নাহি দেখ চকে। দেবগণে হাত দেহ কাহার অপেকে॥ মোর বরে মোর সৃষ্টি কর ছার থার।৫ স্বর্গপুরী লুট তুমি এত সহস্কার॥ রাক্ষদ হইয়া ইন্দ্রে কর অপমান। শীঘ্র গতি দেবরাজে আন মোর স্থান॥ ্রত শুনি জোড় হাতে বলে লঙ্কেশ্বর। তোমার প্রদাদে মোর কারে নাহি ডর॥১० ত্রিভূবন জিনি আমি তোমার প্রসাদে। তুমি নাহি আস ইন্দ্র আনে মেঘনাদে॥ যজ্ঞশালে বন্দি আছে দেব পুরন্দর। আজ্ঞা কর আনি গিআ তোমার গোচর। ব্ৰহ্মা বলে ত্ৰিভূবন জিনিলে রাবণ ॥১৫ আমি তুষ্ট হইন্ম দেখিআ তোর রণ। প্রতিজ্ঞা করিআ জিন অষ্ট লোকপাল। পৃথিবী জিনিঞা তুমি জিনিলে পাতাল ॥ দেবতার মধ্যে মোর মুখ্য পুরন্দর। হেন ইল্রে বান্ধি আন আপনার ঘর॥२० তোমার বিক্রমে আমি মান নাহি ধরি। তোমার অধিক মেঘনাদে পুরস্করি॥ ইন্দ্রে বান্ধি আনিলে অন্যের কিবা কথা। নানামতে দেবতার করিলে অবস্থা॥ আজি হৈতে তোমারে দেবতার হৈল ভীত ৷২৫ তোমার বিক্রম হৈল সংদারে পূজিত॥ ব্রমা বলে রাবণ চল যজ্ঞশালা। भिवनारमत युक्क ज्ञान (मिथ निकुछिन।॥

আগে ব্ৰহ্মা চলিলা পাছাতে দশানন। তার পাছে চলিলা ধার্ম্মিক বিভীষণ॥ মেথনাদ আইলেন বিধাতার স্থান। দেখি ব্রহ্মা তারে কত করেন বাধান॥ রাবণ ইন্দের ঠাই পাল্য পরাজয়।৫ হেন জনে জিনি তুমি বিক্রমে হুর্জায়॥ ইক্রেরে জিনিলে তুমি সংসারে বিদিত। আজি হৈতে নাম তোর হৈল ইন্দ্রজিত॥ স্থরপতি জিনিলে বাড়িল তোর যশ। আজি হৈতে দেবতা তোমার হৈল বশ ॥১৫ আমার বচন রাথ শুন হক্তজিত। ইক্রকে ছাড়িরা দেহ করহ পিরিত !৷ ইন্দ্রজিত বলে যদি ছাড়ি পুরন্দর। বর দিআ প্রভু মোরে করহ অমর॥ ব্ৰহ্মা বলে ইক্ৰজিত স্থন সাবধানে।১৫ অমর হইআ কেবা আছে ত্রিভূবনে॥ আমা আদি করিআ জতেক দেবগণ। যুগান্ত প্রলয় কালে সভার মরণ॥ घ्टे भन ठ जूम्भन भक्न मःगात। জনা মৃত্যু ছথ স্থুথ এই সে বিচার।২০ মৃত্যু নামে ভিভূবনে সভাকার ডর॥ সংশার জিনিঞা দেখ মৃত্যু ভয়ন্ধর॥ হেন মৃত্যু দূর নহে গুনহ উত্তর। ইহা ছাড়ি অন্য মাগ রাবণ কোঙর॥ ইল্রজিত বলে মোর অগ্নিতে ভকতি।২৫ তাঁর পূজা করিআ জিনিল স্থরপতি॥ অগ্নিকে পূজিতে জেই করিবে বিসম্বাদ ৷ সে জনার হাতে মোর ফলিবে প্রমান।

(२७१)

(২৩৮)

তপ ফলে কত লোক হইল অমর। রণ-জয় বর মাগি এই যে হন্ধর॥ বর দিতে থদি তুমি কর পরিহার। কেমনে ইন্দ্রের তরে করিবে উদ্ধার॥ ব্ৰহ্মা বলে ইন্দ্ৰজিত স্থন সাবধানে।c দেবতার হাতে তোর না হবে মরণে॥ জেই বোল বাহির হইল তোর মুখে। সেই বর দিল তোরে লেহ মহা স্কথে॥ আপনার দিল ব্রহ্মা কর জাপ্যমালা। যজ্ঞ করিবারে দিল তারে স্থান নিকুস্তিলা॥১। নিকুন্তিলা পূজিআ মাগিবে জেই বর। সেই বর পাবে রণে জিনিবে সত্তর॥ ব্ৰহ্মা বলে ইক্ৰজিৎ শুন এক কথা। জিনিতে নারিব তোরে কোনই দেবতা।। দানব গন্ধর্ম জত সংসার ভিতর ISC এ দব জনেরে তোর কারে নাহি ডর॥ যম কালদও তোকে মানিবেক ডর। ত্রিভূবন তোমারে দেখিবে ভয়ক্ষর॥ এত বর দিল ব্রহ্মা কেহ নাহি জানে। বিভীষণ রাবণ আছিল সেই স্থানে ॥২০ এ সন্ধান মাত্র বিভীষণ জানে। তেঞি ইক্জিত পড়ে লক্ষণের বাণে॥ মারিল তাহারে বড় করিআ সংগ্রাম। সভাথতে লক্ষণের প্রশংসে শ্রীরাম॥ বর পাঞা হরষিত রাবণ কোঙর।২৫ ইন্দ্রকে আনিআ দিল ব্রহ্মার গোচর॥ লাজে হেঁট মাথা করি রহে পুরন্দর। অপমান মুখে নাহি নিশ্বরে উত্তর ॥

লকা হৈতে উদ্ধার করিয়া পুরন্দর।
তারে নিঞা গেল এক্ষা আপনার ঘর
অগস্তা বলেন ধন্ত ঠাকুর লক্ষণে।
হেন বীর ইক্রজিত মারিল লক্ষণে॥
লক্ষণের প্রশংসে সভার চমৎকার।
কৃত্তিবাস গাইল উত্তরকাণ্ড সার॥

विक्तियान जिल हेत्त नाहि পরিছে। অপমানে হেট মুণ্ডে হৈল নিঃশবদ॥ ব্ৰহ্মা বলে ইন্দ্ৰ কেনে গুন মনে মনে। অপমান হৈল ব্রহ্মশাপের কারণে ॥১০ স্থরপা স্থজিল আমি অনেক যুবতি। চিনিবারে নাহি চিনি একোই আকৃতি॥ চিনিতে সভার রূপ নিল থানি থানি। সেইরূপে অহল্যাকে স্থজিল আপনি॥ গৌতমের ঠাঁঞি দিলাঙ রাথিবারে।১৫ অনেক বংসর রাখি দিলেক আমারে॥ স্বল্রী থাকিতে ঘরে গৌতম না ভূলে। ধান্মিক গৌতম মুনি খ্যাত মহাতলে॥ গৌতমের কর্ম দেখি হইতু কুপ্র॥ ব্রাহ্মণী করিয়া দিলোঁ দোঁতে কর ঘর ॥২० অহলা গৌতমে দিল দেবগণ রোষে। আমি স্থাী হইন্স তোমার অসন্তোষে॥ তপস্থাতে গেলেন গৌতম মুনিবর। পড়িবার তরে তুমি গেলে তার ঘর॥ অহল্যার রূপে তুমি কৈলে অভিলায ।২৫ ধরিয়া মুনির বেশ কৈল জাতি নাশ॥

(২৩৯)

(280)

গুরুপত্নী হর তুমি না কর বিচার। অহল্যার দঙ্গে স্থথে করিলে শৃঙ্গার॥ ধানি ভঙ্গ হইল গৌতম আলা ঘর। তোমারে দেখিয়া কোপে জলে মুনিবর॥ মুনির ঠাঞি মায়া নাহি চিনিল তোমারে।৫ ক্রোধ করি সাপিলা তোমাকে অহল্যারে॥ কোপে মুনিবর হৈল লোহিত নয়ান। স্থররাজ বলি তোর রাখিল পরান॥ তোমাকে দেখিয়া মুনি সাপিলেন রোষে। সেই শাপে তোমার পুরুষ অঙ্গ থদে॥১० ছুই অণ্ড থদে তোমার পরতেক দেখি। গর্দভের মণ্ড দিয়া পুরুষাঙ্গ রাখি॥ মুনির সম্পাতে বন্দী পরতেক দেখি। দৈবরাজ হঞা তুমি পরদারে স্থী। দেবতার রাজা হঞা কর পরদার।১৫ সেই পাপে ইন্দ্র তোর নাহিক নিস্তার॥ গুরুপরা হরিলে সম্পাত দিল মুনি। সেই শাপে অঙ্গে সহস্রেক থোনি॥ স্থ্যবজ্ঞ করি তুমি স্থ্যলোকে স্থা। ভগান্ধ যুচিআ হৈল সহস্রেক আঁথি ॥২০ লোভেতে হরিলে তুমি গুরুর ব্রাহ্মণী। না করিছ পরদার মোর কথা ওনি॥ মুনি বলে পড়িতে আইল মোর ঘর। মোর বেশে মোর নারী হর পুরন্দর॥ সংসারে জতেক লোক করে পরদার।২৫ তার অর্দ্ধ পাপ তোরে হইবে সঞ্চার॥ তোর এই ধর্ম ইন্দ্র রহিল ঘোষণা। পড়িয়া স্থনিয়া দিলে গুরুর দকিলা॥

ভগেতে আক্রান্ত হঞা আলো মোর ঘর। ভগময় হউক তোমার কলেবর॥ জেমন বাাকুলে তুঞি হরিলি গ্রাহ্মণী। তেমনি সম্ভোগ থাক সহস্ৰেক ঘোনি॥ গৌতমের বাক্য কভু খণ্ডন না জায়।৫ শাপ দেবা মাত্র ভগ হৈল সর্ব্ব গায়॥ মুনির চরণ ধরি হইলে কাতর। কাতর দেখিআ দয়া কৈল মুনিবর॥ মুনি বলে মোর বাক্য না জার খণ্ডন। সহস্র ভগেতে তোর হইবে লোচন॥১० আর বার পড়ে ইন্দ্র মুনির চরণে। পরদার পাপ সে যুচিবে কত দিনে। মুনি বলে মিথ্যা নহে আমার বচন। করিবে অনেক দিন নরক ভোজন॥ গৌতমের শাপ কভু না জায় খণ্ডন ৷১৫ এত তথ পাও ব্রহ্মশাপের কারণ॥ কোটা মেঘনাদ তোর কি করিতে পারি। গৌতমের শাপে তোর পুড়িল নগরী॥ ব্রন্ধা বলে ইক্র তোর মন্ত্র কহি কানে। রাম রাম তুই অক্ষর জপ রাত্রি দিনে ॥২৫ এ সব পাপের কিছু নাহি প্রতিকার। রাম নাম স্মঙরনে হইবে উদ্ধার॥ চারি বেদ সহস্র নামে জত হয় ফল। একবার রাম নামে পাইবে সকল।। সর্ব্য নাম সার তোকে দিল রাম নাম।২৫ থণ্ডিব সকল পাপ অবিশ্রাম॥ বন্ধার প্রসাদে ইন্দ্র পাল্য অব্যাহতি। অমরাবতীতে ইক্র করিল বসতি ॥ (285)

(282)

রাম নাম ছই অক্ষর রাত্রি দিনে জ্পে ইক্র অব্যাহতি পাল্য প্রদার পাপে॥ ষাট্ সহত্র বংসর ইক্র ভূঞ্জিল নরক। রাম নামে ক্ষয় হৈল সকল পাতক॥ মুনির বচন স্থানি রামচক্র হাসে।৫ উত্তরকাও রচিল পণ্ডিত ক্রন্তিবাসে॥

বাম বলে মুনিবর কহ দেখি শুনি। অহলার কোন গতি কৈলা সেই মুনি॥ অগন্তা বলেন রাম স্থনহ উত্তর্।১০ অহল্যাকে কোপে শাপ দিলা মুনিবর ॥ মুনি বলে অহল্যার রূপ অহন্ধার। তোর রূপ ছড়াইআ পড়ক সংসার। জেথা ২ মর্ত্তালোকে আছেন স্কন্দরী। অহল্যার রূপে তাহা সভা পুরস্করি॥১৫ তোমার জতেক রূপ ইক ছার্থার। পুত্র জাকে বলি তাকে ভুঞ্জায় শৃঙ্গার॥ স্থলর পুরুষ দেখি কম্পে তোর মন। হেনই থৌবন তোর হৈল অলক্ষণ॥ অহল্যা বলেন আমি ব্রহ্মার ননিনী।২০ ইক্স আসি মোরে হরে ইহা নাঞি জানি॥ পতিব্রতা নারী আমি জানে সর্কলোকে। তোমা বলি রতি দান করিল আমাকে॥ তবে যদি তোমার আছয় কিছু মনে। শংসার গুণিতে পার দেখহ ধেয়ানে ॥২৫ এত শুনি মুনি কৈল বাকোর প্রকাশ। পূর্বে হৈতে ইন্দ্রের আছিল অভিলায।

জেইকালে প্রজাপতি স্বজিল তোমারে। ইক্র নাহি বিভা দিআ দিলেন আমারে॥ আমাকে দিলেন বিভা ইন্দ্র নাহি পায়। সেই কোপে স্বরপতি হরিল তোমায়। বল ছলে হরে পাপ নাহিক এড়ান।৫ তপো বলে থাক গিন্সা হইআ পায়াণ॥ জোড় হাতে অহল্যা মুনির ধরে পায়। বিনা দোষে হেন শাপ দিতে না জ্বায়॥ স্ত্ৰীলোকে দাৰুণ শাপ নহে ত জুকতি। শাপান্ত করহ প্রভু করি জে বিনতি ॥১০ এতবলি ধরে রামা মুনির চরণ । কাতর হইআ বলে করুণ বচন। কত দিন রব বনে হইআ পাষাণ। কার হাতে আমার হইব পরিত্রাণ ॥ ञ्चिन मूनि वरण जुभि ञ्चनङ् वहन। ১৫ জেমনে হইবে মুক্ত তাহার কারণ॥ পূর্ণত্রহ্ম অবতার হব সূর্যাবংশে। শ্রীরাম বলিআ নাম হব চারি অংশে॥ দশর্থ রাজা দশ সহস্র বংসর। তপ ফলে পুত্র পালা রাম গদাধর ॥২• চারি ভাই রামচক্র বিষ্ণু অবতার। সজ্জনে পালিব করি ছটের সংহার॥ হেন রামে আনিবেক কৌশিকনন্দন। সিদ্ধাশ্রম দিআ হব রামের গমন॥ মুনির বচনে রাম পরশিব তোরে।২৫ (महे कारन मूळ इका याव वर्गभूत ॥ অগন্তা বলেন রাম কথায় দেহ মন। সেই রাম তুমি হ্র্যবংশের ভূষণ॥

(289)

(288)

উত্তানপাদ হৈতে সাত পুরুষ অন্তর। হেনকালে শাপিল গৌতম মুনিবর॥ তোমাকে জন্মিতে যাটি সহস্র বৎসর। অহলা ততেক দিন আছিল পাথর॥ মুনির সম্পাতে সেই হইল পাষাণ।৫ আছিলা অহল্যা রামে করিআ ধেয়ান। শতানন নিত্যানন গৌত্য-নদন। মায়ের সনে ছইজন গেলা তপোবন। যজ্ঞ রাখিবারে রাম আসিবেন বনে। ष्यहना। इहेव मुक्त त्राम नत्रभात ॥>० खक्पञ्जी हति हेन भाग अभगत। এতেক কহিল ব্ৰহ্মা সভা বিদামান ॥ পূর্বকথা কহিলে মানব হয় কন্ট। स्निमा बक्तात कथा हेन देश वृष्टे ॥ তব নামে নিষ্পাপ হইলা স্থরপতি।১৫ তোমার পরশে মুক্ত হইলা মুকতি॥ ব্ৰহ্মা বলে সেই পাপে পাল্য অপমান। বিষ্ণু যজ্ঞ করিবারে চল নিজ স্থান !! পুত্রহেতু না ভাবিহ পুত্র নাহি মরে। পৌলম জয়ন্ত নিআ গেলা অধোপুরে॥२० इस मरशिधिया बका रामा बकायान। নিজ ঘরে আইল্য ইক্র পাঞা অপমান॥ অন্তের কি কথা জে জিনিল পুরন্দর। রাবণ অধিক বল রাবণ কোঙর॥ (ज़रे रेक्ट वस्ती देवन ताजा नक्ष्यत ।२० (इन जारन वाक्षिण। नहेन निज घरत ॥ তে কারণে ইন্সজিতে সভাই বাথানি। बांमरम्ब वःभावनी कहिन काहिनी॥

আইল অমরাবতী দেব পুরন্দর।
দেখিআ অমর লোক হরিদ অন্তর ॥
জয়ন্ত লইআ আল্য পোলম দানব।
পুত্র কোলে হরষিত বদিলা বাদব ॥
দিব্য বেশে দিংহাদনে বৈদে দেবরাজ।
ইন্দ্রবেড়ি বৈদে দব দেবতার দমাজ॥
মাঝে স্করপতি চারিদিগে দেবগণ।
ক্তিবাদ রচিল উত্তর রামায়ণ॥

রাম বলেন স্থনিলাঙ বড়ই উত্তর।১০ ত্রিভুবনে জত কথা তোমার গোচর ॥ তপেতে আপন জেই হয় মুনিবর। দেবত্ব পাইয়া স্বর্গে হয় পুরকর ॥ ইন্দ্রের তনয় ইন্দ্র নাহি হয় কেনে। কহিবে ইন্দ্রের পুত্র হল্য কোন জনে॥১৫ मूनि वर्ण जामहत्व खून मावधारन। হইল শচীর পুত্র অনেক যতনে॥ বন্ধয়ত্ত করিবারে চাহে স্থরপতি। স্থরপতি সম্বোধিআ বলে বুহস্পতি॥ অগ্নি মূর্ত্তি পুত্র হব অগ্নি অবতার।২০ রাখিতে নারিব সেই সকল সংসার !! রুদ্র-যজ্ঞ করিবারে চাহে পুরন্দর। নিষেধ করিলা তারে মুনি পরাশর॥ বিষ্ণু যজ্ঞ করিবারে চাহেন বাসব। ধন্য ধন্য বলি সায় দিলেন ভার্গব ॥২৫ ইক্র বলে মুনিগণ দেবগণ জত। বিষ্ণু মহেশ্বরে কোনজন বড় ॥

(284)

(२8**७**)

স্কুরপতি সধোধিআ বলে স্কুরাচার্য্য। গৌতমে পাঠাঞা বুঝ সভাকার কার্য্য॥ ইন্দ্র বলে গৌতম আমার গুরুজন। আপনে লড়হ তুমি দেবের সদন ॥ মনগামী গোতম সকল লোকে জানি।৫ ব্রহ্মার সদনে আগে গেলা মহামুনি॥ ব্রহ্মার সদনে গিঅ। দেখিলা কৌতুক। জত জত গণ দেখে সম চতুৰুখি॥ দেখিতে সভার মূর্ত্তি ব্রহ্মার সমান। ব্রহ্মাণী সভার পাশে দেখি স্থানে স্থান ॥১० সভারে দেখিআ গেলা ব্রহ্মার সদনে। ত্য়ার ছাডিআ গেল ব্রহ্মা বিদ্যমানে॥ ব্রহ্মা বলে জামাতারে আন্হ স্বরিত। গৌতমে দেখিআ ব্ৰহ্মা হৈলা হর্ষিত।। পাদ্য অর্ঘ্য দিআ তারে কৈল পুরস্কার।১৫ ব্রজার চরণে মুনি হৈলা নমস্কার॥ মুনিরে দেখিমা ত্রকা হরিস বদন। আতিথা ব্যাভারে দিল বসিতে আসন। ব্রহ্মাণীকে বলে আঁট করহ রন্ধন। জামাতারে নানা দ্রব্য করাহ ভোজন॥২০ তৈল আমলকী দিল করিবারে স্নান। বেলা হৈল উচ্চুর করহ অন্ন পান। ব্রহ্মার বচন স্থানি বলে মহাঋষি। কুধার্ত্ত হইআ নাহি ভোজনেরে আসি॥ ব্ৰহ্মাকে কৌতুকে মুনি করেন চউলি।২¢ সভা মাঝে বসিয়া ব্রহ্মাকে পাড়ে গালি॥ আদি কুলে জন্ম তোর কুলের গাঁথার। ভাগ মন্দ কার্য্য কর না কর বিচার॥

একে একে মূর্ত্তি সব চিনিতে না চিনি। সভাকার পাশে আমি দেখিল ওক্ষাণী॥ মুনির স্থনিঞা কথা ব্রহ্মা কোপে মনে। নীলকণ্ঠ ভাবি গেলা মহেশের স্থানে॥ ন্ত্রী পুরুষে এক ভাবে পূজে ত্রিপুরারি।৫ লাঙ্গট পুরুষ সব বিবসন নারী॥ সর্ব্ব দূতগণ যেন দেখি মহেশ্বর। যক্ষগণ দানৰ পেৱেত নিশাচর॥ দইতা দানব দেখে পিশাচ কিয়র। স্থরনর অপসরা সিদ্ধ বিদ্যাধর ॥১০ সিঙ্গা ডম্বুর ত্রিশূল পরে বাঘছড়ে। কপাল ভাজন হাতে গলে মালা হাড়ে॥ উন্মন্ত নাঙ্গট চিতা ভশ্মবিভূষিত। চারি দিকে ভূতগণ ডাকে বিপরীত। গলাতে বাস্ত্রকি ভালে জলে হতাশন।১৫ মহাকায় শরীর সভার ত্রিলোচন। সভারে দেখিআ গেলা শিবের ছয়ারে। মুনির গমন ননী কহিল। শঙ্করে॥ স্থনিঞা কৌতুক বড় দেব শূলপাণি। পাদ্য অর্ঘ দি আ সম্ভাষিলা মহামুনি ॥২০ মহাদেব বলে মুনি কেন আগমন। শিব বলে প্রীত মুনি বলে কুবচন। ছারথার হৈলে তুমি কুল কৈলে নাশ। কোনজন তোর নাম থুলা ক্তিবাস।। কোন গুণে নাম ধর দেব শূলপাণি।২৫ मर्क श्रुकरमत शार्म (प्रिंग मर्कांगी॥ দেবরাজ হৈঞা তুমি সদাই ভিথারী। বোগেক বলায় তুমি কপট আচারী॥

(289)

(२8४)

কোন ছারে বলে তোরে দেব ত্রিপুরারি। ভালমন কর্ম কিছু না কর বিচারি॥ ভূত প্ৰেত সংহতি বলদ মাত্ৰে ভাণ্ডা। ধুতুরার ফল খাও সক্রায়ন (१) গুণ্ডা। অভকা সদাই খাও না কর বিচার।৫ ভাই ভাই অনাচারী হৈলে ছার্থার॥ মুনির বচনে মহাদেব কোপ জলে। ঢেকামারি মুনিকে ঘুচাহ সভাতলে॥ মহাদেব বলেন শুনহ ভূতগণে। গডের বাহির করি দেহরে ব্রাহ্মণে॥১০ ব্রহ্মা হর ঠাঞি মুনি পাল্য পরাভব। এত তঃথ দিতে মোরে পাঠালা বাসব॥ মনগামী মুনিবর বায়ে ভর করি। নিমেষেকে গেলা মুনি নারারণগিরি ॥ সভাকার মূর্ত্তি দেখি যেন দেব হরি।১৫ শঙাচক্র গদাপন্ন শান্ত সে ধারী। সভাকার চারিভুজ একোই মুর্তি। সভাকার সঙ্গে দেখে লক্ষ্মী সরস্বতী॥ এসব দেখিয়া গেলা হরির হুয়ারে। ছয়ারী ভিতরে গিয়া হরিকে গোচরে॥২० জরবিজয় জে ছই বিষ্ণুর ছয়ারী। মুনি নিঞা হুই ভাই গেলা অন্তঃপুরী॥ ত্যারির বোলে মুনি চলিলা সহর। मूनि त्निथ मस्राम উठिला गर्नाधत ॥ मूनित वहरन विकु रेहना नमकात ।२० পাত্ম অর্ঘ্য দিল তারে গৃহ বাবহার॥ আছিল। বিষ্ণুর পাশে লক্ষী সরস্বতী। মুনির চরণে দোহে করিলা প্রণতি॥

জামাতা বলিয়া দিল বসিতে আসন। মুনিরে কুশল বার্তা পুছে নারায়ণ। মুনি বলে কুশল তোমার দরশনে। তোমার কুশল আমি দেখি অমুমানে॥ দেবরাজ আপনে স্থজিলে দেবগণ।৫ কোন ছারে বলে তোকে দেব নারায়ণ। তোমার যতেক গণ দেখি চারি ভাই। তোমার বনিতা দেখি সভাকার ঠাঁই॥ বিষ্ণুগুণ নাহি তোর দব অবেভার। দেখিল তোমার পুরী সব অনাচার ॥১০ দেবগণ বলে মুনি ভাল নাহি বলে। প্রভুকে এতেক বলে বিদ সভাতলে॥ পাত্র মিত্র ছিল যত বিষ্ণু সন্নিধানে। গৌরবে লড়হ নহে পাবে অপমানে॥ দেবতার বচনে মুনির কোপ বাড়ে।১৫ থাক থাক বলি গেলা বিষ্ণুর নিয়ড়ে॥ ডানি পদ ভোলে বামপদ আরোপণে। সভামধ্যে তুলি লাথি মাল্য নারায়ণে॥ বিষ্ণুকে মারিয়া লাথি ভাঙ্গে ছই ঠেগ। পাথা কাটা গেল যেন পডিল পতঙ্গ ॥२• মুনিকে মারিতে ধায় সব দেবগণ। नां गांतिह ना गांतिह वरण नांताश्रण॥ বিরূপ না বল কেছো বলেন বচন। আজি হৈতে নাম মোর শ্রীবংসলাঞ্চন ॥ পাশে ছিলা সরস্বতী लक्षी ठाकुরानी।२० ছইজনে বলে হরি দড় কর মুনি॥ তার। বলে ঠাকুর তোমার লাজ নাঞি। কেমতে পরণ করিব জামাই॥

(২৪৯)

(200)

জামাতা ছুঁইতে জুকতি নাহি আইদে। বসনে বদন ঢাকি তুইজন হাসে॥ দোঁহে হুই পদ টানি করিল সোসর। পদা হন্ত বুলাইল উঠে মুনিবর॥ আছিল বিষ্ণুর গায়ে যত অলঙ্কার।৫ তাহা দিয়া মুনিরে করিল পুরস্কার॥ বথ থান সাজিয়া পাঠালা দামোদর। রথে চড়ি ইন্দ্র ঠাঞি গেলা মুনিবর॥ গলাতে রত্নের মালা রত্নে বিভূষিত। গৌতমে দেখিসা ইন্দ্র হইলা বিশ্বিত॥১০ বসিতে আসন দিয়া দিল অর্থা জল। একে একে কহে মুনি সভার কুশল॥ ব্রহ্মা মহেশ্বর ঠাই পাল্য অপমান। বৈকুণ্ঠ সদন গেল নারায়ণ স্থান॥ জত মন্দ বলিলাও হরি নাহি রোবে।১৫ শুনিয়া বিরূপ কথা নারায়ণ হাসে॥ করিল বিষ্ণুর বুকে লাখির প্রহার। বক্ষাঙ্গে ঠেকিয়া পদ ভাঙ্গিল আমার॥ ছুই পদ টানে মোর লক্ষ্মী সরস্বতী। বৃদ্ধরূপ ছিল হৈল স্থন্দর মূরতি॥২० বিস্তর কৌতুক মোরে কৈল নারায়ণে। সর্কাঙ্গ ভৃষিত কৈল নানা আভরণে॥ अहे मरह सिंहे विक् वर्रण (मवर्गाण । ব্ৰহ্মা মহেশ্বর হৈতে বড় নারায়ণে॥ 'নারায়ণ অংশে জন্ম কৈল পুরন্দর।২৫ অধিষ্ঠান হৈলা তাহে দেব গদাধর॥ প্রমান্নে সম্ভাষণা জানে দেবগণ। সেই প্রমায় শচী করিল ভক্ষণ॥

সব মুনি বলে রাজা তুমি ভাগাবস্ত।
জয় অংশে পুত্র নাম হইল জয়স্ত ॥
বিবুদ্ধি লাগিল ইন্দ্রে নাচিলে আপনা।
জয়স্তে পাঠায় ইন্দ্রজিতে দিতে হানা॥
আশা সহস্র মত্ত হস্তীর তেজ ধরে।
মহস্র হস্তীর তেজ জয়স্ত শরীরে॥
ইন্দ্রজিং সংসার জিনিতে পারে রণে।
না মৈল জয়স্ত বীর বরের কারণে॥
ভূত ভবিষ্যতি কথা কহে মুনিবর।
অবধান হৈঞা শুন রাক্ষ্য বানর॥>
ব্রুবংশে ধন্য তুমি ঠাকুর শ্রীরাম।
কার শক্তে কহিব তোমার শুণগ্রাম॥
অগস্ত্যের কথাতে সভাকে চমৎকার।
উত্তরকাণ্ডে গাইল অমৃতের সার॥

অগত্যের কথা শুনি রামচন্দ্র হাসে।১৫
শুনিতে হন্তুর কথা মোর অভিলাষে॥
শ্রীরাম বলেন মুনি অপূর্ক্ কাহিনী।
ইন্দ্রজিত রাবণ হৈতে হন্তুকে বাথানি॥
বানর হইআ কেবা লংঘয়ে সাগর।
রাজপুত্র পাত্র স্থত মারিল বিস্তর॥২০
রাবণেরে জিনিবারে ত্রিভ্বনে নারি।
তার বিভ্যমানে পোড়াইল লক্ষাপুরী॥
অলজ্য সাগর বীর লজ্যে কতবার।
আমি বলি হন্তু সম বীর নাহি আর ॥২৫
বালী স্থতীবের বাদে স্থতীব পক্ষটানে।
তবে কেনে বালী রাজে না মারে পরাণে

(२৫১)

(505

অগ্নি দিলে নাহি পোডে বালীর শরীরে। পূর্বেকার শাপ ছিল তেঁই বালী মরে॥ জোড় হাতে তোমারে মাগিএ পরিহার। হমুমান সম কেহো বীর নাহি আর॥ वक्र कृ दवत अधि यम शूत्रकत । १ সভাকার গতি জিনি হনুমান বানর॥ সংসারের লোক মোর বৈসে সভাতল। সভামাঝে বলি হতুমানু মহাবল।। হমুমান হৈতে প্রাণ পাইল লক্ষণ। আমি আদি সভাকার রহিল জীবন ॥১० হনুমান হৈতে পাল্য দীতা চক্ৰমুখী। হতুমান হৈতে আমি বন্ধুগণে দেখি॥ (भोर्य) वीर्य) रुष्ट्रमान वरण महावण। ধর্মেতে ধার্মিক বীর ভকত-বংসল। তুর্জ্য সাগর লঙ্গি করে আনাগোনা।১৫ মাথাতে পৰ্বত নাহি মানে কোনজনা। তুর্জ্ঞা সাগর তরিবারে নারে আন। मर्क् छन धरत भात वीत रुष्ट्रमान ॥ তপের প্রবাদে মুনি তুমি সব জান। সভাথতে কহ হমুমানের বাথান॥২० শ্রীরামচন্দ্রের কথা হৈল অবসান। অগন্তা কহেন কথা সভা বিদ্যমান॥ भूनि वर्ण तामहल छन मावधारन। বেমত বুত্তান্ত হৈল বীর হন্তুমানে। যৌবনে কহিলে হতুমানের বাথানে।২৫ 'বালক কালের কথা শুন সাবধানে॥ গতি মতি বিক্রমেতে ধন্ত হলুমান্। শিশুকাল হৈতে বীর মহা বলবান॥

আকৃতি প্রকৃতি বীর বড় গুণবান । ব্ৰহ্মা আদি দেবগণে বাডাল্য সম্মান॥ পরম বিক্রমশীল বানর কেশরী। অঞ্জনা বনিতা তার পরম স্থন্দরী॥ প্রনের বীর্যো জন্ম হন্তুমান।৫ তেঞি শিশুকাল হৈতে মহা বলবান॥ রাম বলেন শুনিলাম অপূর্ব্ব কাহিনী। এই কথা শুনিঞা বিশ্বয় মনে গুণি॥ ভূত ভবিষ্যতি মুনি তোমাতে গোচর। বিস্তার করিআ কহ সভার ভিতর ॥১০ অঞ্জনা বানরী স্থানি বড় পতিব্রতা। প্ৰনে জন্মাল পুত্ৰ এই কোন কথা।। মুনি বলে জিজাসিলে অপূর্ব্ব কাহিনী। অবধান হৈঞা তাহা গুন রযুমণি॥ আছএ প্রভারতীর্থ ক্ষিতি মহাত্রে ১৫ মুনি সব তপ করে প্রভাসের জলে॥ ধবল নামেতে হস্তী বঁড ভয়ন্ধর। দত্তে চিরি মারিল অনেক মুনিবর॥ তার ডরে তপ না করে মুনিগণ। মুনিগণে মারে আর ভাঙ্গে তপোবন ॥২० পালাইআ গেলা মুনি স্থমের আশ্রম। সহিতে না পারে কেহো হস্তীর বিক্রম। মুনি পালাইল শুন্ত হৈল তপোবন। একা রহিলেন ভরদ্বাজে বিচক্ষণ॥ সঙ্গোচিতে তপ করে প্রভাসের জলে।২৫ জলপান করিতে আইল হস্তী বলে॥ মুনিকে দেখিআ হস্তী মারিল দশন। মারিতে ধাইল যেন মেঘের গর্জন।।

(২৫৩)

(2¢8)

তপ ছাড়ি জায় মুনি বিকল পরাণে। হেনকালে কেশরী আইসে তীর্থ স্নানে॥ অরুণ উদয়কাল পুণা মাঘ মাদ। পুণ্য তিথি পাঞা চলে কেশরী প্রভাস।। পালাইছে ভরদ্বাজ ভয়ে অচেতন।৫ কেশরীকে দেখি বলে তোমার শরণ॥ এত শুনি কেশরী হইল সাবধান। মুনি পাছু করি গেলা হস্তী আগুয়ান। তেঁহো জলে হন্তী আন্তে পথে ঠেকাঠেকি। তুই জনে মহারণ হএ ঢেকাঢেকি॥১० মহাবীর ত্ইজনে করে মারামারি। হস্তীর দশন ধরি টানেন কেশরী॥ টান মারি যোজনেক ফেলিল বারণ। আর্ত্তনাদ করে হস্তী মেঘের গর্জন॥ আপনা সম্বরি হস্তী হুই দস্ত সারে।১৫ কেশরীকে ফেলে নিঞা যোজন অস্তরে॥ কৃষিআ কেশরী ধার<sup>®</sup>যেন কাল্সাপ। জুঝিছে ধবল হস্তী হুৰ্জ্জয়প্ৰতাপ॥ তুইজনে যুদ্ধ করে ঘোর মহামার। তপোবনে মুনিগণে লাগে চমংকার ॥২০ দোঁহে (রণ) করে দোঁহে বলেতে প্রচণ্ড। প্রভাদের গাছ পালা হৈল খণ্ড খণ্ড॥ সিংহের প্রতাপ করে কেশরী বানর। লাফ দিয়া চড়ে সেই হস্তীর উপর॥ কেশরীর বিক্রমের নাহিক সিদ্ধান্ত।২৫ কুম্বরুল ভাঙ্গিয়া উপাড়ি নিল দস্ত॥ ভয়ন্ধর দাঁত হুটা পর্বতের সার। হস্তীর উপরে করে দম্ভের প্রহার॥

সেই দম্ভাঘাতে হুষ্ট হন্তী প্রাণ ছাড়ে। ভূমিকম্প হৈল লোক চমকিত পড়ে॥ সভে দেখে হন্তী মৈল পৰ্বত প্ৰমাণ। ধন্ত ধন্ত মুনিগণ করেন বাথান॥ मव भूनि वरल छन किमती वहन। « বর মাগি লেহ তুমি জেবা লয় মন॥ . त्कभती वर्ण भूनि यपि पिरव वत। সংসারবিজয়ী হকু আমার কোঙর॥ ভাল ভাল বলি বলে সব মূনিগণ। সভার আশীষে হরু উত্তম নন্দন ॥১० বলে মহাবল হব প্রতাপ হর্জ্য। বিষ্ণুভক্তি হইব বৈষ্ণব অতিশয়॥ পবনের বীর্য্যে জন্ম হইবে তাহার। অজয় অমর হব কি বলিম আর॥ সভাকে প্রণাম করি চলিলা কেশরী।১¢ নিমিষেকে গেলা যথা অঞ্জনা স্থলরী॥ স্বামীকে দেখিয়া বামা আনন্দ অপার। করিল তাহার পূজা জে ছিল ব্যাভার॥ ফল মূল দিয়া তারে করাল্য ভোজন। স্বস্থ করি জিজ্ঞাসিলা কেন এতকণ ॥২• তবে ত কেশরী তাকে বলে কুভূহণে। জেমতে মারিল হন্তী প্রভাসের কুলে॥ বর দিল আমাকে সকল মুনিগণ। সংসার-বিজয় হব আমার নক্র ॥ মুনি সব আশীর্কাদ করিল আমাকে।২৫ সে সব বৃত্তান্ত আমি কহিব তোমাকে॥ বেদ পড়ি মুনি সব কহিল নিশ্চয়া সবগু হইব পুত্র প্রতাপে হর্জয়॥

(200)

(२৫%)

স্বামীর বচনে কগ্রা হরষিত মন। অগ্রথা না হব কভু মুনির বচন॥ বর পাঞা ছই জন আনন্দ অন্তরে। এইরূপে কথো দিন আছিলেন ধরে॥ বালী সম্ভাযণে গেলা বানর কেশরী।৫ একলা রহিলা ঘরে অঞ্জনা স্থন্দরী॥ দৈববোগে ঋতু স্নান করিআ অঞ্জনা। পর্বত দেখিতে হৈল মনের বাসনা॥ স্কবেশ করিআ চলে অঞ্জনা স্থলরী।১০ কৌতুকেতে দেখি বলে জত আছে গিরি॥ নানা বন পশু দেখে পুষ্প ক্রম শোভা। তার রূপ দেখিআ পবন হৈল লোভা।। কামে অচেতন হৈল দেবতা কুমার। বসন উড়াঞা বলে করিল শৃঙ্গার॥ অংশেষ বিশেষ করি ভুঞ্জিলেন রতি।১৫ সাঙ্গ হৈলে কোপেতে জিজ্ঞাসে রূপবতী॥ কোন জন বট তুমি দেহ পরিচয়। নহিলে শাপিতা ভন্ম করিব নিশ্চয়॥ এতেক শুনিয়া মনে পাল্যা বড় ভয়। প্রবন বলেন আমি সূর্য্যের তনয়॥২० পবন বলেন কিছু না করিছ মনে। দেবতা হইয়া রতি কৈল তোমা সনে। মোর বীর্য্যে পুত্র হবে প্রতাপে হর্জয়। সংগ্রামে স্থান্থির নাহি মরণের ভয়॥ এত বলি গেলেন প্রবল দিকপালে।২৫ অঞ্জনা বলেন মোর জে ছিল কপালে॥ এত বলি ঘরে গেলা অঞ্জনা স্থন্দরী। বালীরে মেলানি করি আইলা কেশরী॥

ফল মূল দিআ তারে কৈল পুরস্কার।
পাদ্য অর্থ্য দিল পতি পূজা ব্যবহার॥
কেশরী বলেন রামা সত্য বল মোরে।
আজি কেন বিচলিত দেখএ তোমারে॥
এতেক পতির বোল স্থানিআ স্থানরী॥
অঙ্গনা বলেন প্রভু স্থান কেশরী॥
অঙ্গনা বলেন প্রভু স্থান নিবেদন।
বলে মোরে ধরি রতি ভুঞ্জিল পবন॥
এতেক অঞ্জনা যদি বলিল পতিরে।
পূর্বের মুনির কথা কেশরী সোঙ্রের॥>
ভাবিরা সে সব কথা হৈলা হর্ষিত।
উত্তর কাণ্ড গাইল ক্তিবাস পণ্ডিত॥

পবন জনাআঁ গেল বীর হন্তমান।
হবা মাত্রে হন্তমান পবন সমান ॥১৫
অঞ্জনা বানরী গেলা আনিবারে ফল।
শৃশু ঘরে হন্তমান কান্দিয়া বিকল ॥
ক্ষ্বাতে আকুল হৈঞা পড়ে ভূমিতলে।
রাঙ্গা বর্ণে ভপন উদয় হেন কালে॥
ওড় পুষ্প সমান হর্যা উদয় করে।২০
ফল জ্ঞানে হন্তমান জান ধরিবারে॥
উঠিল পবন বেগে লক্ষেক যোজন।
বিদল হর্যোর রথে পবন-নন্দন॥
হন্তর বিক্রম দেখি হ্র্যা হৈলা স্থা।
অদর্শন হঞা হ্র্যা রথে হৈলা লুকি॥২৫
দেবগণ বলে হেন কোথায় না দেখি।
যৌবনে ইহার বল কার সনে লেখি॥

(२६१)

(२०४)

গরুড় গমন জিনি পবনের গতি। শিশুর বিক্রম দেখি চমকিত মতি ॥ হতুমানে দেখি সূর্য্য উপজিল হাসি। কুপাবান হৈআ না কৈলা ভশ্মরাশি॥৫ শীতল প্রন বহে সূর্য্য রূপা এড়ে। তে কারণে সূর্যোর আনলে নাহি পোড়ে পূর্য্য বদি প্রকাইল হৈল অন্ধকার। স্থাকে ধরিতে হতু কৈল আগুদার॥ অমাবস্যা জায় রাভ স্থ্য গিলিবারে।১০ হরুমানে রথে দেখি রাহ্ন ভাগে ডরে॥ দেখিআ সূর্য্যের রথে বীর হন্ত্রমান। মনস্তাপে গেলা রাছ বাদবের স্থান ॥ পালাইমা গেলা রাছ পাইমা তরাস। ইন্দ্রের করেন রাহ্ন বচন প্রকাশ॥১৫ চন্দ্র সূর্য্য ধরিতে আমার অধিকার। আনে সুর্য্য ধরে মোরে করে তিরস্কার॥ দেবের বুচন লডে অন্ন্যৈ কিসে লাগি। আমার বিষয় তুমি কারে কৈলে ভাগী॥ কুপিল দেবের রাজা রাহুর বচনে।২० অগোচরে বিষয় লইল কোন জনে॥ কৈলাস পর্বত যেন ধবল আকার। চারি দস্ত ধরে হস্তী গলে মদধার॥ ঐরাবতে চাপি ইন্ত বজ্র নিল হাতে। রাহু আগে করিআ চলিলা সূর্য্যপথে॥২৫ रेट्युत शत्रद बांच हिन्ना रतिरम। স্থা ছাড়ি হনুমান রাহু ধরিতে আইদে ইক্স ইক্স বলি রাহ্ন পালার তরাসে। ভয় পাঞা ইন্দের শরণ আদি পশে॥

সিন্দরে মণ্ডিত ঐরাবতের গওস্থা। হতুমান বলে আমি পালা পাকা ফল।। রাহু ছাডি ঐরাবতে থেদাডিআ আইদে। বজ্র তলি ইন্দ্রাজা মারিলেন রোধে ॥৫ ছাওয়ালে করিল ইন্দ্র বজের প্রহার। পুত্র হেতু প্রন করিল আগুসার॥ হত্ব ভাঙ্গি পৰ্বতে হইল অচেতন। পুত্র কোলে করি তথা কান্দেন প্রন। হেন পুত্র মরে মোর কিসের জীবন।১০ আপনা ধরিআ সব রহায় প্রন্॥ ইন্দ্রে কোপ করিষা প্রন সভা পিছে। সংসারে সভার শরীরে বায়ু ছাড়ে 🗵 আগুৰীর ছাড়িল সকল দেবগণে। তবে বায়ু ছাড়িল সকল গ্রিভুবনে ॥১৫ প্রবন ছাড়িল হৈল প্রলয় সংসার। ঘুচিল স্থাের গতি হৈল অন্ধকার॥ সংসারের লোকে যদি ছাড়িল প্রন। প্ৰন ছাড়িতে সভে হৈলা অচেতন॥ কাষ্ঠবং হইল বাড়িতে নারে হাড়।২০ সভাকার হস্তপদ হইল অসাড়॥ ব্রনার না চলে হংস মহেশের বুধ। কুবের নরবাহন গমের মহিষ॥ না চলে ইন্দের গজ বরুণ মকর। ना চলে ইন্দের রথ আর দিবাকর ॥२ c বিনি বানে নাহি চলে দেবতা সকল। জেই যথা সেই তথা হইল অচল।। পড়িতে২ সভে গেলা ব্রহ্মা পাশে। সতে বলে এ প্রভু স্ষ্টির বিনাশে॥

(२०५)

(2.90)

সভার শরীরে ছাড়ে বায়ুর সঞ্চার। স্বর্গ ছাডি পবন করিল অনাচার॥ ব্রহ্মা বলে দেবগণ আছে এ কারণ। প্রনের পুত্রে ইন্দ্র কৈল অচেতন॥ রাহুর বচনে ইন্দ্র তার পুত্রে মারি ic সৃষ্টি নাশ হৈলে আমি কি করিতে পারি আপনা রাখিতে সভে হও সাবধান। পবন-পুত্রের গিআ দেহ জীয়মান॥ ব্ৰহ্মা আদি কবিমা যতেক দেবগণে। নৈশ্বতি কুবের যম নড়িলা বরুণে॥১० সব দেবে নিঞা ব্রহ্মা করিলা গমন। পুত্র কোলে করি যথা কান্দেন পবন ॥ অলোকা পর্বতে বসি উচ্চৈঃম্বরে কান্দে। ব্ৰহ্মাকে দেখিয়। কৈল প্ৰণাম সানন্দে॥ অবনী নোটাঞা বীর করে নমস্বার।১৫ হমুমানে দেখি ব্রহ্মা করে হাহাকার। ব্ৰহ্মা বলে এক হতু শুনহ পঞ্চাশ। তোমার কোপেতে হএ সংসার বিনাশ। এত বলি হাত দিল হনুমানের দেহে। সব শ্রম পাসরিল মাথা তুলি চাহে ॥২० মৃত দৈতা জীয়ে যেন মেঘ বরিষণে। অচেত্ৰন হ্ৰুমান জীএ ততক্ষণে॥ বিধাতার বাক্যে তবে সঞ্চরে পবন। স্ষ্টিরক্ষা পাল্য সবে পাইল চেতন॥ প্রন হইতে তিন লোক প্রতিকার।২৫ ইন্দ্রাজে বিধাতা করিল তিরম্বার॥ বালকেরে কর তুমি বজ্রের প্রহার। তোমারে বুঝিতে কেহো নাহিক আর॥

( व कार्य) कतिरवक जान भरन भरन। জানহ শুনহ তমু নাহিক সঙরণে॥ সব দেবগণে হতুমানে দেহ বর। বর দিআ তোষ সভে পবন কোঙর॥ ব্রহ্মার বচন কেহে। না করিল আন। मर्काप्तर रूप्रभारत मिला वत मान ॥ ইক্র অগ্নি যম জে কুবের মহেশ্বর। ব্রহ্মার বচনে হতুমানে দিল বর॥ ইন্দ্র বলে মোর বজ্রে হইলে সংশয়। আজি হৈতে তোর বজ্রে নাহি ভয় ॥১৫ বাম হত্ন ভাঙ্গে মোর বজ্রের প্রহারে। হতুমান নাম হৈল বিদিত সংসারে॥ কাঞ্চনের পদ্মালা তুল্লভ সংসারে। হেন মালা দিল ইক্ত হন্তমান শিরে॥ দিনমণি দিল বর অংশুর কিরণ ১৫ শাস্ত্র জ্ঞান দিল তারে পড়িতে তথন 🗵 বরুণ বলেন মোর জলে অধিকার। তরিবে যোজন শত সাগর পাথার॥ আবর্ত্ত সংবর্ত্ত মেঘ দ্রোণ জে পুদর। ঝড় বরিদনে তোর নাহি হব ডর॥२० মোর নাগপাশে নাহি কাহার এড়ান। হেন নাগপাশে তুমি পাবে পরিত্রাণ। যম বলে মোর ঠাঞি সভার বিনাশ। কোন ব্যাধি জাইতে নারিব তোর পাশ ॥ যমদণ্ড অস্ত্রে আমি সভাকে সংহারি।২৫ হেন দণ্ডে তোমার নাহিক ভয় করি॥ কুবের বলেন মোর গদার প্রহার। হেন গদা তোমাকে করিব প্রতীকার॥

(२.५)

(২৬২)

জত বল করিবে নহিবে অবসাদ। তোমা লইআ কোন কালে নহিব প্রমাদ॥ অগ্নি বলে আমি হতুমানে দিল বর। মোর অগ্নিশিথাতে তোমার নাহি ডর। উদ্ভব অনল আর বড়বা অনল।৫ এসব আগুনে তোরে না করিব বল।। হমুমানে বর দিলা দেবতা নৈঋত। যক্ষ রক্ষ দানবে তোমার নাহি ভীত॥ শীত বাত পিত্তেতে তোমার নাহি ভয়। সিদ্ধ কলেবর তুমি সর্ব্ব ঠাঞি জয়॥১० হমুমানে দিলা বর চক্র যে শেথর। মোর মায়া অন্তেতে তোমার নাহি ডর॥ যভক্ষর মন্ত্র দিল মারুতিরে কানে। সেই মন্ত্রে হতুমান মহাজ্ঞান জানে॥ হলমানে বর দিলা দেব নারায়ণ।১৫ সংসার জিনিবে তুমি করি মহারণ॥ শঙা চক্র গদা পদা সরিঙ্গ ঈশর। মোর অস্ত্রে তোমারে কথন নাহি ডর॥ বিশ্বকর্মা বলে অস্ত্র আমার নির্মাণ। দেবগণ ধরে তাহা অতি থরসান ॥২০ সংগ্রামে পশিলে সেই অস্ত্রে নাহি ভয়। মোর বরে হবে তুমি দর্কত্র বিজয়॥ ব্রহ্মা বলে হতুমানে আমি দিল বর। মোর বরে হতুমান অজয় অমর॥ रुष्यात्म वत मिला हक्तकलाधत ।२० रहेरव आभात वरत शतम स्रुक्तत ॥ হন্নমানে বর দিল দেবতা পবন। আমা হৈতে হব তোমার সরিত গমন ॥

পবন বলেন গুন বীর হতুমান। মোর বরে হব তোর সর্বত্ত কল্যাণ॥ করিবে রামের সেবা সর্বাঠাঞি জয়। রামের শক্রকে তুমি করিহ সংশয়।। ব্রহ্মা বলে প্রন কর্ছ অবধান।৫ সংসারে ছর্জয় হব বীর হনুমান॥ জাহাকে কৃষিবে বীর তার হব ক্ষয়॥ জার হঞা জুঝিবেক অবশ্য তার জয়। হরুমানে বর দিল সব দেবগণ॥ হতুমান হৈতে মরে সবংশে রাবণ॥১০ জত২ বীর আছে সংসারের সার। হন্তুমান সমবীর কেহে। নাহি আর॥ বর দিয়া দেবগণ গেলা নিজস্থান। লড়িল প্রন কোলে করি হমুমান। রাবণের বংশ নামে রামের সম্মান 15৫ কহিলেন অগন্তা হমুমানের বাথান। হেন মতে হন্তমান পাল্য বরদান। সভাখতে স্থনে হনুমানের বাথান॥ উত্তরকাণ্ডের গীত স্থনিতে মনোহর। কুত্তিবাদে গান হতুমানে পালা বর ॥২০

পুত্র কোলে বায়ু গেলা কেশরীর ঘর।
অঞ্জনাকে কহিলেন সকল উত্তর ॥
নদ নদীর জল যেন মিশায় সাগরে।
দিনে দিনে হনুমান বাড়ে দেববরে ॥
খেলিবারে জায় হন্ন সেই তপোবনে। ২৫
তপস্থাকৈ গেলা যরে নাহি ম্নিগণে ॥

(200)

(२७8)

মুনির প্রসাদে আছে নানা ফুল ফল। সরোবর দেখিল তাহে নির্মাল জল।। ক্মল উৎপল আছে সেই সরোবরে। নানা ফুল মধু পান করয়ে ভ্রমরে॥ শুকৃপদ্দী ডাকে ঘন কুহরে কোকিল।৫ নানা রত্নে সরোবর ঘাট বান্ধি তুল। অশোক কিংগুক ফুটে চাঁপা নাগেশ্বর। ষড়ঋতু বৈদে তথা গল্পে মনোহর॥ আত্র গুয়া নারিকেল অনেক কাঁঠাল। ছোলঙ্গ নারেঙ্গ আর আছে নানা তাল॥১০ নানা ফল থাঞা বুলে কুমুদের সনে॥১০ জাতিফল দাড়িম্ব কমলা কামরাঙ্গা। শতমুখী শতমূলী আতাই তৈলঙ্গা॥ সরোবরে নামিয়া করিল স্নান দান। আপন ইচ্ছাতে ফল থায় হনুমান।। শুন্ত বনথান নাহি সান্তবের মেলা।১৫ আপ্রনার মনে থায় যত চাঁপা কলা।। থাইছে মুনির ফল না করে বিচার। ডাল ভাঙ্গে ফল থাঞা কৈল ছারথার॥ নেউটিয়া যরে গেল হৈল সন্ধ্যা কাল। মারের ঠাঞি জায় বীর হইয়া ছাওয়াল ॥২० মারের চরণে গিমা নোঙাঞিল মাথা। অঞ্জনা বলেন বাছা আজি ছিলে কোথা।। জবেকে কেশরী আইল বেলা অবসানে। পিতা পুত্র হুই জনে করিলা ভোজনে। স্থাথ শোএ হন্তমান জননীর কোলে।২৫ নিদ্রা ছাড়ি শুরু বন্ধ পরে বিহান বেলে॥ প্রভাতে কেশরী গেলা বালী সম্ভাষণে। ং ইন্ধান গেলা পুন সেই তপোবনে।।

अक्षना वानती (शला कल आनिवादत्। ফল এড়ি চাহে হত্তমান নাহি ঘরে॥ কাঞ্চনা বানরীকে অঞ্জনা বার্তা পুছে। তুমি যদি আছু হন্তমান কোথা গেছে। দেখিল ২ আমি তোমার নন্দনে।৫ কুমুদের সংহতি গেলেন তপোবনে॥ তপোবনে গেলা বীর মাতুলের সনে। নানা ফল খাইআ বলেন তপোবনে। বরের প্রভাবে সেই কারে নাহি গণে। মৌলিসিত এক পুত্র চক্রমৌলিমূনি। তপের প্রভাবে মনি জলম্ভ আগুনি॥ কোপ দৃষ্টে চাহিআ দেখিল হতুমান। मत्न हिटल मूनि त्रत्व मिन वत्रमान ॥ ক্রোধযুতে মুনির দহিছে কলেবর।১৫ শাপ দিব ইহারে দেবের পাল্য বর॥ সন্ধলিতে নারে মুনি হৃদয়ের তাপ। কোপে হতুমানে মুনি দিলা অভিশাপ॥ আপনার বল তুমি পাদর বানর। সংগ্রাম করিবে হক্তা পরের কুর্পর ॥২৫ আর হনুমান জবে জায় তপোবনে। ডরে ফল নাহি খায় শাপের কারণে॥ মুনি শাপ দিল তাহা শুনিল কেশরী। হ্মমানে নিষেধিল অঞ্জনা বানরী ॥ দিনে দিনে হতুমান বাড়ে দেববরে।২৫ তপোবনে নাহি জায় সদাই থাকে ঘরে॥ বালীর ভ্রাতা স্কুগ্রীব গেলা কেশরীর ঘর স্থাীব দেখিলা বড় হরিদ বানর॥

(२७৫)

(২৬৬)

পাদা অর্ঘা দিলেন ঘরের বাবহার। সুগ্রীবের চরণে করিলা নমস্কার॥ অঞ্জনা রন্ধন কৈল পঞ্চাশ ব্যঞ্জন। চারি বীর মহাস্থথে করিল ভোজন। কেশরীকে কহেন স্থগ্রীব অধিপতি।৫ বালীর ডরে কোথাহ নাহিক অব্যাহতি॥ স্থগীবে বোধিয়া বলে বানর কেশরী। কিন্ধিন্ধ্যা নিকটে ঋষ্যমুখ নামে গিরি॥ মুনির শাপেতে বালী তথা জাতো নারে। পর্বতে প্রবেশ কৈলে বালী রাজা মরে ॥১০ নীলগিরি পরে আছে পুরী ভোগবতী। অগ্নির তন্য রাজা নীল সেনাপতি॥ স্থ গীবের বার্ত্তা পাঞা আল্য শীঘ্রগতি। চারি বীর জড় হৈল স্বগ্রীব সংহতি॥ হতুমানে পাঠাঞা আনিল জাম্বান।১৫ পঞ্জনে গেলা ঋষাম্থ সন্থিধান ॥ রহিলা আপন ঘরে বাঁনর কেশরী। পঞ্চজনে স্থগ্রীব রহিল সেই গিরি॥ श् श्रीत्वत रूप्रमान रहेन तमामत। বালীকে বলের তেজে নাহি করে ডর॥২ সূর্যা গুরু করিআ পডেন হনুমান। উদয়গিরি অন্তগিরি পদ ছইথান॥ অগস্ত্য কহিলা হনুমানের বাখান। হত্তিবাস গাইল পোথার নির্ম্থাণ॥

সদাই থাকে হতুমান স্থগ্রীবের স্থানে।২৫ নিতি জান কেশরী বালীর সন্তাস্থে॥

স্থা বলে হতুমান জাহ স্থগীবের স্থান। তোমা হৈতে স্থগ্রীব পাইবে রাজ্যদান॥ ঋষামুখ পর্কতে স্থগ্রীব রাজা বৈসে। সীমান্তের লোক আইদে স্বগ্রীব সম্ভাবে॥ স্থগীবে মেলানি করি গেলা হমুমান। c ঘরে গেলা কেশবী দিবস অবসান। পিত। পুত্রে হজনে করিলা অর পান। তিন জন ঘরে বৈসে করিআ দেয়ান॥ প্রভাতে গেলেন হন্তু ঋষ্যমূখ গিরি। বালী সম্ভাষণে গেলা বানর কেশরী ॥১০ বসিলা কেশরী তারে বালী বার্তা পছে। কহিবে স্বরূপ হে স্থগ্রীব কোথা আছে॥ বালী সমোধিষা সে কেশরী কহে স্থথে। পঞ্জন সুগ্ৰীব আইলা ঋষামুখে॥ বালী বলে কেবা কেবা স্থগ্রীবের স্থানে।১৫ নীল সে কুমুদ জামুবান হনুমানে॥ কেশরীর বোলে বালী কোপানলে জলে। রাঙ্গা গুই আঁখি করি চাহেন পাকলে॥ তুমি কেন মোর ঠাঞি তোমার পুত্র তথা। তোমাদের উপায়ে স্থগ্রীব আল্য এথা॥২० বালীর বচন শুনি বলেন কেশরী। তুমি রাজ্য করিছ স্থগ্রীব দেশান্তরি॥ তোমার তরাসে সেই বুলে দেশস্তির। মোর ভাগ্যে স্থগ্রীব আইলা মোর ঘর॥ তোমরা তুই ভাই রাজা দেবতা কুমার।২৫ স্থগ্রীব তোমার তরে ফিরএ সংসার॥ পাত্র হঞা তোমাকে বুঝাই সবিশেষ। স্ত্রনীবেরে থানিক ছাড়িজা দেহ দেশ।

(२७१)

(২৬৮)

তুমি রাজ্যে রাজা স্থগ্রীব দেশান্তরি। সে হেতু স্থগ্রীব আল্য ঋষ্যমুথ গিরি॥ क्मित्रीत दोल अभि वर्लन सुरवर। জীয়ত্তে পিরীত নাহি ভাই হুইজনে॥ वानीएक (मनानि कति हनिना (कनती। আঁখির নিমিষে গেলা আপনার পুরী॥ ভুঙ্গারের জলে ধোয়ে তুথানি চরণ। অঞ্জনা বলেন কেন এত বিলম্বন॥ ऋ औव वहेशा लिव इस्राम वीदा। তার লাগি অনেক গঞ্জিল বালী মোরে ॥১০ অঞ্জনা বলেন স্থন বানরের রাজ। বালী ঠাঞি যাইআ সাধিলে কোন কাজ। দেবতার বরে পুত্র হইল হন্তুমান। ঘরে থাক দোঁহে না জাইহ কার স্থান। তোমার উপরে কার নাহি অধিকার।১৫ স্থগ্রীব হইলে রাজা পাবে উপকার॥ স্থগ্রীবে মেলানি করি আলা হনুমান ॥ যরেতে আইলা জবে বেলা অবসান॥ নানাবিধ পকার দিলেন ফুলফল। দকল থাইআ বীর হৈল স্থশীতল॥২০ প্রভাতে চলিলা বীর স্বগ্রীব সম্ভাষে। ঋষামুখে গেলা হতু চক্ষুর নিমিষে॥ বসিলা স্থগ্রীব রাজা করিআ দেয়ানে। রাজা সম্বোধিআ বলে বীর জামুবানে॥ মধুবনে প্রভাতে চলিলা হতুমান।২৫ নিতি নিতি রাজাকে জোগায়ে মধুপান। नील मश्वीत (म क्रमून आत नल। তপোবনে প্রবেশিয়া ব্যু নানা কল।।

পঞ্চ পাত্রে ঋষামুথে স্থগ্রীব হৈল রাজা। স্থগীবেরে সেবা করে দেশে জত প্রজা॥ পম্পানদীর কূলে জত বৈদে প্রজাগণ। নিতি নিতি রাজাকে জোগায় নানাধন ॥ নানাধন দেন আম্র দাডিম্ব কাঁঠাল।৫ গুবাক নারিকেল টাবা আর পাকাতাল ॥ নানাবস্ত দিয়া তারে করে পুরস্কার। ফল মূলে স্থাীবের ভরিল ভাণ্ডার॥ নিতি নিতি হতুমান যায় মধুবন। মধুর রক্ষক সনে হৈল দরশন ॥১० দশ সহস্র বানরে বেড়িল হতুমানে। দ্ধিমুখ বান্ধি আনে স্থগ্রীবের স্থানে ॥ দধিমুখ স্থতীবেরে নোঙাইল মাথা। জোড়হাতে কহে মধুবনের বারতা॥ জবে বীর হন্তুমান মধুবনে জায়।১৫ এথা কিছু নাহি আনে তথা সব খায়॥ মধুবন ভাঙ্গে কার নাঁ মানে দোহাই। হাতে গলে বান্ধিয়া আনিল তোমা ঠাই॥ তথা মধুপান করে আপনার স্থথে। কিছু মাত্র নিআ আস্তে তোমার সন্মুখে॥২৫ স্বগ্রীব বলেন মানা জাহ মধ্বনে। দিআ পাঠাইহ মধু জে বলে জেমনে।। দ্ধিমুখ তেন গেলা কিষ্কিন্ধ্যা নগরী। জাইআ বালীর ঠাঁই করিল গোহারি॥ মধুবন ভাঙ্গি বুলে বীর হনুমান।২৫ মোরে বান্ধি নিঞা গেল স্থগ্রীবের স্থান ॥ वानी वरन जयन आहरम मधुवन। আমাকে বারতা তুমি দিনে ততক্ষণ ॥

(そとか)

(290)

भूनत्रि पिष्मूथ (शला मधुवन। घरत रशना वानी ताजा वित्र वनन ॥ নানা কেলি করে বালী তার। দেবী সনে। ঋষ্যমুথে স্থগ্রীব আছেন পঞ্চলনে॥ পর্বতের নিকটে বালীর কলাবন। বুলা চালা গেলা তথা প্ৰন-নন্দন। ञ्चनत ञ्चलक (मर्थ अरनक कमना। সেই বনে প্রবেশে বানর মহাবলী॥ গুবাক নারিকেল নিল আর কডাকানি। সহস্রেক কান্দি কলা নিলা ভার বান্ধি॥১० ভাল ভাল নিল কলা দেখি বাছের বাছ। कना निका ननोटि जानाका फिन शाहू॥ গুবাক নারিকেল নিল আর পাকাপান। কারে ভার করিঞা লড়িলা হয়ুমান॥ ধীরে ধীরে জায় বীর কান্ধে কলাভার।১৫ ধাইজা বানর ভারে ধরিল তাহার॥ তাহা দেখি হনুমান কোপানলে জলে। রাঙ্গা আঁথি করি বীর চৌদিগ নেহালে॥ প্রন-নন্দন আমি নাম হনুমান। আমা সনে দ্বন্দ কর হারাবে পরাণ ॥২০ তারা বলে জানি তোরে না কর চাতুরী। তোর বাপে ভাল জানি বানর কেশরী॥ তার বেটা হঞা লঙ্ঘ রাজার শাসন। তোর দোষে হব তোর বাপের মরণ॥ হন্মান বলে কি করিতে পারে বালী।২৫ হাতে গলে বান্ধি তাকে নিব কাঁকতালি॥ সকল বানর বলে ছাড় তুমি তারে। তারে বাদ্ধি নিল বীর কান্ধে কলাভারে॥

কদলী এড়িল নিআ স্থগ্রীবের পাশে। হরুমানে দেখিতা স্থগ্রীব রাজা হাসে॥ রাজার সম্মুথে হতু ছাড়্যা দিল তারে। স্থ্রীবেরে প্রণাম সেই করিল তিন বারে॥ রাজা বলে তপ কৈল মুনি পঞ্চ জন।৫ আমাকে দিলেন তারা কদলীর বন॥ আমারে বন দিআ তারা গেলা স্বর্গদার। কদলীতে নাহিক বালীর অধিকার॥ তার বলে বিবাদে ছাডিল আমি দেশ। তে কারণে বালী নিল কহিল বিশেষ ॥১০ ভাল হৈল আহলে দেশের সরিধান। আমি আনি দিব না পাঠাবে হতুমান॥ তানার বচনে হৈল স্থগ্রীবের হাস। বিদায় হইআ পুন গেলা বালী পাশ। কহিল বালীর আগে জত অপমান।১৫ সদাই কদলীবন ভাঙ্গে হন্তমান॥ মধুবন ভাঙ্গে আর স্থরস কদলী। অপরাধ মানিআ কোপিল রাজা বালী॥ কেশরী পন্স বটে ছোসহ ভাই। তাহা দিগে ধরিআ আনহ মোর ঠাই ॥২০ আমার বৈমাত্রেয় ভাই তুমি শতবলী। গৌরবে না আন্তে যদি ধরি আন চুলি। স্থান শতবলী গেলা কাঞ্চনগিরি। ছই ভাই পাশা থেলে পনস কেশরী॥ ত্বতারি ভিতরে গিঅ। করিল গোচরে।২৫ আইল বালীর পাত্র তোমার হুয়ারে॥ বারি হঞা হুই ভাই দেখিল শতবলী। পাদ্য অর্ঘ্য দিআ তারে কৈলা কোলাকুলি

(२१১)

(२१२)

নানা কল মূল দিআ কৈল পুরস্কার।
জিজ্ঞাসিল কি কারণে কৈলা আগুসার॥
শতবলা বলে কাজ না জান বিশেষ॥
তোমাকে ধরিয়া নিডে রাজার আদেশ॥
জে বোল বলিলা রাজা বলিতে না পারি।৫
আপন গৌরবে চল পনস কেশরী॥
কেশরী বলেন কাজ বুঝিলাঙ মনে।
মোরা দোঁহে জাব কালি প্রভ্যুষ বিহানে
শতবলী বলে তোরে রাজার দোহাই।
অবগু বিহনে কালি জাবে বালী ঠাই॥১০
এতবলি শতবলী জায় বালী স্থানে।
আসিবেন কালি তারা প্রভ্যুষ বিহানে॥
কহিলা সকল কথা বালীর সকাশে।
উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্তিবাসে॥

ব্দনী প্রভাত হৈল প্রভ্যুব বিহান। ১৫
স্থ গ্রীবে মেলানি করি আল্য হন্তুমান॥
আদি বাপ মায়ে বীর নত কৈল মাথা।
হন্তুমানে কেশরী বালীর কহে কথা॥
আমার রাজত্ব সব বালীর প্রসাদে।
হেন বালা সনে কেন করহ বিবাদে॥ ২০
বালা দৃত পাঠাই আমা দোহা নিতে।
কালি না গেলাঙ আজি রহিব কেমতে॥
হন্তুমান বলে দোহে না থাকিও ঘরে।
ঋষামুথে থাক বালী কি করিতে পারে॥
হন্তুমান আগে পাছু পন্স কেশরী। ২৫
স্থানীবের স্থানে গেলা ঋষামুথ গিরি॥

বালীর বিরোধে মোরা আঁই তোমার স্থান। নানা ভোগ দিআ তার বাডালা সম্মান। তপ্রলে বালী রাজা জিনে এক্ষজ্ঞানে। পন্দ কেশরী রহে স্থগ্রীবের স্থানে॥ বড বড় বীর গিয়া স্থগ্রীবেরে মেলে। হিয়ার পোড়নে বালী টুট্যা আস্থে বলে॥ জবে তবে মাএ ঠাই জান হন্তুমান। থাঞা দাঞা আন্তে পুন স্বগ্রীবের স্থান॥ ঋষ্যমুখে স্থগ্রীব কিষ্কিন্যাপুরে বালী। নিত্য নিত্য হুই ভাই করেন কোন্দলি॥ কখন কখন গিয়া হারের ঘন্টা লাড়ে। পাইআ বালীর শব্দ ধাঞা জান রডে ॥ একদিন বায় গেল কাঞ্চন-নগরী। একেলা আওআদে অঞ্জনা বানরী।। অঞ্জনার পাশে গেলা দেবতা প্রন্ পাত অর্ঘ্য দিলা রামা বসিতে আসন॥ স্কবর্ণের থাটেতে পার্টের পাতি গুলি। অঞ্জনা লইআ তাহে কৈলা নানা কেলি॥ অঞ্জনার সনে কেলি করিয়া পবন। প্রভাতে গেলেন বীর আপন সদন॥ অঞ্নার তথা বায় যান নিতি নিতি। হুজনে কৌতুকে ভুঙ্গেন স্থুখরাতি॥ অঞ্জনার বার্তা চর কহিল রাবণে। রথে চড়ি চলিলা অঞ্জনা সম্ভাষণে॥ উত্রিল দশানন কাঞ্চনগিরি। কেবল অঞ্জনা ঘরে আছে একেশ্বরী।। বাহিরে এড়িসা রথ প্রনের বেশে।৫ কেশরীর অন্তপুরে করিলা প্রবেশে 🞼 🦠 (290)

(890)

पत यानि यक्षना এ फ़िल नाना करल। এথনি প্রন আসিবেন সন্ধ্যাকালে ॥ স্নান করি অঞ্জনা করেন দেবার্চন। প্রনের বেশ ধরি আইলা রাবণ ॥ পাদ্য অর্ঘ্য দিল তারে বসিতে আসন।৫ নানা ফল দিল তারে করিতে ভক্ষণ॥ কাম ভালে রাবণের দহিছে শরীর। আলিঙ্গন দিয়া আগে প্রাণ কর স্থির॥ व्यानिश्न मान मित्र। ताथर जीवन ।>• সুস্থ হ এ। ফল মূল করিব ভক্ষণ ॥ রাবণের বোল শুনি অঞ্জন। বিশ্বয়। কোনজন বট তুমি দেহ পরিচয়॥ রাবণ বলেন আমি পৌলস্ত্যের নাতি। মোর নাম রাবণ লঙ্কার অধিপতি ॥১৫ আমার বনিতা আছে মন্দোদরী রাণী। তাপরে তোমারে করিব ঠাকুরাণী॥ আমারে ভজিয়া কর্ম্যা ভুঞ্জ নানা স্থপ। বানরের সনে থাকি পাও নানা ছঃখ।। मर्कादम जूनिया निव ताज-यनकात ।२० তোর রূপ দেখি প্রাণ ব্যাকুল আমার॥ চতুর্দশ ভূবনের আমি অধিকারী। কি করিতে পারে তোর বানর কেশরী। निक मुर्डि धति (पर्या पिन नरक्षत्रत। দশানন দেখিআ অঞ্জনা পাল্য ডর ॥২৫ দশমুপ্ত কুড়ি বাহু বিকৃত বদন। রথের উপর গিয়া চড়ে দশানন। षदा थाकि अञ्चना करतन दावार्फन। সর্ব করেন হসুকে মনেতে পবন॥

পাপিষ্ঠ রাবণ আর্সি করে অপমান। আশু ঝাট প্ৰন কেশব্ৰী হন্তুমান॥ হয়নান বলে বুকি বল জাধুবান। রাবণ আমার মায়ে করে অপমান। মন্ত্রী বলে পিতাপুত্রে কর্ম গ্রম । c তোর নায়ে আগুলিআ আছে দশানন। স্থাীব বলেন তুমি চল শীঘ্রগতি। তিন বীর দিল হন্তুমানের সংহতি॥ কুমুদ কেশরী নাঁল বার হয়বান। আপনি লাড্না শেষে মন্ত্ৰী ভাষ্বান ॥১• সব বীরগণ পাছু আগুতে কেশরী। আঁথির নিমিষে গেলা কাঞ্চনের গিরি॥ সব বীর জড় হঞা ছাড়ে সিংহনাদ। আগলে রাবণ পড়ি গণয়ে প্রমাদ॥ ত্রাস পাঞা দশানন সার্থিকে ভাকে ISC হেনকালে পাঁচবীর দেখিল সন্মুখে ॥ হারাইল চেতন রাবণ সশঙ্কিত। সার্থি লইয়া র্থ জোগায় স্বরিত। চালাইয়া দিল রথ প্রন গ্মন। পালায় রাবণ রাজা হারাঞা চেতন ॥২• হাতে গাছ করি ধায় পাঁচ দেনাপতি। রাবণ বলেন শীঘ্র পালায় সার্থি॥ পালারা রাবণ রাজা গেলা লফাপুরী। বানর লইয়া ফিরি আইল কেশরী॥ লঙ্কাতে বাবণ গেল বেলা অবসানে ৷২৫ রাবণে অধিক বলি বীর হন্তুমানে ॥ অঞ্জনা বলেন আল্য প্রনের বেশে। অক্সাৎ অন্তঃপুরে করিল প্রবেশে II

(298)

(२१७)

পাদ্য অর্ঘ্য দিল তারে বসিতে আসন। প্রন বলিআ আমি কৈল আরাধন॥ कतिवादत हाट्ड वन कड़े द्वान द्वादन। হলুমান তুনি নাই ঘরে পড়ে ছলে। বালীর সঙ্কোচে ঘরে নাহি থাকি রাতি।৫ বাপ ঘরে থাক গিঅ। মারের সংহতি॥ পতিব্ৰতা ধৰ্ম মোর কভু নহে আন। দৈৰতাৰ বয়ে পুত্ৰ হৈল হন্নান। স্থগ্রীবের সেবা করি লঙ্গি রাজা বালী।১০ क्टिश कारश नाहि जित्न क्लांट महावली হত্তমান বলে মাতা বসি থাক ঘরে। আসিআ শতেক বালী কি করিতে পারে। ষরে থাক বার্প তুমি বানর কেশরী। শত বালী আসি কিছু করিতে না পারি॥ বাপ মায়ে ঘরে এড়ি জান হন্নুমান।১৫ সকল বানরে গেলা স্বগ্রীবের স্থান। রাজা বলে বার্তা কহ পবন নন্দন। তোমার ঠাই কোন মতে এড়ালা রাবণ॥ হমুমান বলে তারে আগুলি আওআদে। পালাইল দশানন পাইআ হুতাশে॥২০ পাইলে মারিতু তারে বজ্রের মুটকি। উঠিত বদনে রক্ত বিমুকি বিমুকি॥ রথে চ্ছি প্লাইল রাজা দশানন। আইলাঙ বাপের ঘরে রাখি অপেকণ ॥ জদি বালী কোপে জায় কাঞ্চনের গিরি।২৫ আমরা চাপিব গিআ কিষিয়া। নগরী॥ স্থগ্রীব বলেন সন্ধ্যা ছাড়িলেন বালী। রাত্রি দিনে ঘরে থাকি করে নানা কেলি॥

তোমার প্রসাদে পাব কিঞ্চিদ্ধানগরী। কমাকে পাইব আমি আপুন স্থানরী॥ রাজনোরী শোকে রাজা ছাড়ন্তি নিখাস উত্তরকাও রচিল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

শ্রীরাম বলেন কথা স্থান মনোহর।৫ বালী স্থাীবের জন্ম কহ্মুনিবর॥ বালী ছাড়ি হন্তমানে স্থগ্রীৰ সংহতি ! মনি বলে ব্রহ্মা হৈতে সভার উৎপত্তি। বালী রাজা স্থগ্রীব বানর অধিপতি। অবধান হৈয়া কথা শুন রযুপতি ॥১০ র।বণের ভরেতে ব্যথিত দেবগণ। ক্ষীরোদের কূলে গেল তোমার সদন।। নাগাসনে নিদ্রা জান সঙ্গে মহামায়।। ব্রহ্মার বচন স্থানি উপজিল দয়া॥ তেজিল ক্ষীরোদ স্থুখ দৈবতার হুখে।১৫ জন্ম নিঞা দূর কৈল সভাকার শোকে॥ রাম শব্দ জেই জন করিবে স্মরণ। অশেষ পাপেতে মুক্ত হয় সেই জন॥ বেশ নাস্তি রূপ নাস্তি নাহি স্থুথ শৃত্য। ত্রিভুবনে দকল তোমার পাপ্য পুণ্য ॥২• জল মধ্যে দেখি যেন চক্র সূর্য্য ছায়া। তেমনি তোমার তমু ত্রিভুবন মায়া॥ জন্ম মৃত্যু নাহি প্রভু নিলেপি শরীর। জগতের নাথ তুমি, তুমি মহাবীর॥ দশরথ ভাগ্যবলে কৌশল্যা যুবতী।২৫ তোমা পরশিয়া ধস্ত হৈল বস্থমতী। (२११)

(२१४)

भाषा त्र कतिवाद्य शिला नक्षाभूती। উদারিলা জয় বিজয় বৈকুণ্ঠনারী॥ ত্রত উপবাসে মোরা কৈলা আরাধন। দেই ফলে দেখি প্রভু তোমার চরণ॥ অনাদি অনস্ত তুমি কি বর্ণিতে জানে।« স্থুল রূপ হৈলে বিশেষ ভক্তগণে॥ ধর্ম অংশ পালনে তোমার অবতার। ব্রহ্মাহর না জানিঞা মাগে পরিহার॥ অগস্তো করিল রামচত্রের স্তবন। এত খনি সভা থাকে চমক্তিত মন ॥১০ কি দেখিল কি শুনিল একোই না জানি। পুলকে পুৰ্ণিত হয়া দিল জয়ধ্বনি॥ চমৎকার মানিয়া জীরাম পানে চাহি। বালী স্থগ্রীবের কথা মুনিবর কহি॥ তুর্জন্ন রাবণ রাজা বিক্রমে বিশাল।১৫ দেবগণে জিনিয়া লইল ঠাকুরাল॥ ব্রহ্মা বর দিয়া কৈল অভয় অমর। মরিবারে থুইল পথ মহুষ্য বানর॥ দশরথের ঘরে হৈল রাম অবতার। ছোট বড় কপি হৈল দেবের কুমার॥২• দেবগণে নিঞা ব্রহ্মা করে অনুমানে। মনে মনে চিত্তে ব্রহ্মা করিআ ধেয়ানে ॥ ব্রন্ধার চলের কোনে উপান্ধ পিচুড়ি। অমৃত অঙ্গুল করি ভূমিতে আছাড়ি॥ কোন জাতি জন্মিল বিধাতা কৈল দৃষ্ট।২৫ ञ्चन्तती वानती देश्न (मृदव देक्न शृष्टे ॥ হইল ব্রহ্মার কলা সতী পতিব্রতা। অতৈতন কন্তা দেখি হইল বিধাতা॥

সেই কন্সা বসিছিল বিধাতার পাশে। কামবাণে পীডিত ব্রহ্মার বীর্যা খনে॥ রেত বিন্দু থসি পড়ে ব্রহ্মার আঁচলে। থক্ষ মূর্ত্তি পুত্র হৈল বলে মহাবলে ॥ হইল ভান্নক পুত্র তেজে থরসান।৫ ভাল্লক জনাইয়া তারে দিল ব্রহ্মা জ্ঞান॥ গণিরা গাঁথিয়া নাম হইল জামুবান। ব্রদ্ধ জ্ঞান ফলে হৈলা দেবের বিধান ॥ ব্রন্ধা বলে শুন বাপু আমার উত্তর। ভন্নক উপরে তুমি হইলে ঈশ্বর ॥১৫ ফীরোদ ছাড়িআ কৈল অযোধ্যা গমন। বানরী লইআ ক্রীডা করে দেবগণ॥ প্রথম বানরে রতি কৈলা দিবাকর। কেলি করি বানরীকে স্থ্য দিল বর॥ মোর পুত্র হবে রাজা বানর উপর।১৫ মহা বলবান হবে বিক্রমে সাগর॥ মৈত্র বলি তাহারে বলিব নারায়ণ। রমণ করিআ সূর্য্য করিলা গমন॥ রজনী প্রভাত হৈল প্রত্যাব বিহান। পৰ্বতে বুলেন কন্তা লক্ষ্মী অধিষ্ঠান ॥২০ বদত্তে শৃঙ্গার রুসে বুলে পুরন্দর। বানরী সহিত ক্রীড়া করি দিল বর ॥ মোর তেজে পুত্র হব তোমার উদরে। তুই ভাই রাজা হব বানর উপরে॥ পর্বত উপরে কন্তা আছে একেশ্বরী॥২৫ মুগ মারিবারে গেলা ভোজ অধিকারী॥ বানরী দেখিআ ভোজ আনন্দিত মনে। স্থনিল কন্তার মুথে আজি অবসানে॥

(২৭৯)

(२४०)

কন্তা লঞা গেল রাজা আপন সদন।
কন্তা বলি দেই জন করিল পালন॥
কুন্তী বলি কৈল সেই কন্তার আথান।
দৈত্যরাজ তারকে করিল কন্তাদান॥
তারক দৈত্যের ঘর কিন্ধিন্ধা নগরী।
ক্রিল করি দৈত্যরাজ গেলা নিজ পুরী॥
মুনি বলে কথা স্থন কমললোচন।
দেবতার হাতে নাহি তাহার মরণ।
একে একে জিনিল সকল দেবগন॥>
রবুরংশে জন্ম সে কাকুন্থ নাম ধরে।
চড়িআ ইক্রের কান্ধে দৈত্যেরে সংহারে।

দেবতা সকলে দিল জয় জয় কার।
সেই কুন্তী নামে কন্সা ব্রহ্মার বিজ্ঞারী।
কিন্ধিন্ধাতে রহিলেন হঞা অধিকারী॥১৫
গর্ভবতী হৈল কন্সা দেবের রমণে।
নানা মূর্ত্তি ধরেন দেবের বরদানে॥
দেব ভয়ে দৈত্যগণ পশিল পাতাল।
কিন্ধিয়া পুরীতে কন্সা করে ঠাকুরাল॥
গর্ভবতী হৈল কন্সা পূর্ণ দশ মাস।২০
উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

স্থনিরা মুনির কথা রামে উঠে হাস।
ধন্ত ধন্ত বলি রাম করেন প্রকাশ।
অপস্তা বলেন রাম কথারে দেহ মন।২৫
ছই পুত্র প্রদবিলা বিক্রম পূরণ॥

🌞 🚁 এখানে মেলকের এক চরণ নাই।

তুই পুত্র উপজিল বিক্রমে সাগর। দেব সঙ্গে দেখিবারে গেলা পুরন্দর ॥ ইন্দ্র স্থা তেজে দোহে রূপে অরুপম। বালী স্থগ্রীব দোঁহার থুলা নাম॥ তুই পুত্র হইল যমল সংহাদর।৫ হইলা দেবের বরে নানা মায়াধর॥ হইল ইদ্রের তেজে বালী বলধর। তপন তেজে স্বগ্রীব বধিতে লক্ষেশ্বর ॥ পুত্র দেখে ইন্দ্র সূর্য্য করিলা গমন। ব্রন্ধাকে সকল কথা করি নিবেদন ॥১০ শুনিঞা দেবের কথা বিধাতার হাস। স্বগ্রীব হইতে হব রাবণ বিনাশ। ইন্দ্র বলে গোসাঞি করিএ নিবেদন। আর এক বানরীরে করহ সজন॥ সকল দেবতা তারে করিব রম্প।১৫ হয় যেন বহু কপি দেবতা নন্দন ইন্দ্রের বচনে ব্রহ্মা হাসিল অপার। রাবণ বধের হেতু তাঁরে আছে ভার।। আর এক বানরীরে করিল স্থজন। পরম স্থন্দরী কন্তা জগত মোহন ॥২• ব্রহ্মা বলে স্থজিলাঙ ইন্দ্রের বচনে। বানরী লইআ ক্রীড়া কর দেবগণে। ব্রহ্মার বচন কভু না জায় খণ্ডন। দেবতা সকলে করে বানরীরমণ।। প্রথমে শৃঙ্গার কৈল দেব ত্রিপুরারি ৷২৫ ছই পুত্র হৈল তাহে পনস কেশরী॥ তার পর ক্রীড়া কৈল ধনের ঈশ্বর। তার তেজে হৈল শতবলী সে বানর।

(२४)

(२৮२)

সমুদ্রের তেজেতে ক্রথন সেনাপতি। हन्म वीर्या मिथ्यान देश डेशनीं । অনলের তেজে পুত্র হৈল অনুপাম। নীল সেনাপতি বলি থুলা তার নাম। ত্বই পুত্র জন্মাইল আসি মৃত্যুকাল।c তমুথ সন্মুথ ছুই বিক্রমে বিশাল। বিশক্ষা জনাইল নল সে বানর। সমুদ্র বান্ধিতে সে বাপের পাল্য বর ॥ জনিল যমের তেজে ভাই পঞ্চজন। গবাক গবর গর শরভ মদন ॥১০ धवखित जनारेणा ऋरमन नाम धरत। আয়র্কোদ ধর্মা শাস্ত্র জাহার গোচরে॥ অধিনীকুমার কৈল ছুইটা নন্দন। বেগদশী শ্রুতিসেন ভাই গ্রুই জন ॥ বুহস্পতি জন্মাইল পদ্ম জে বানর।১৫ কার্ভিকের পুত্র তার হৈল বলধর॥ मरहत्त एमरवन्त देशन खैरमन नन्तन। অই জে বসুর তেজে ইইল অঞ্জন॥ বরুণের তেঞ্জেতে বঞ্চত সেনাপতি। ধূম ধূমাক্ষেরে কৈল অভয়া পার্কতী॥২০ একে একে শৃঙ্গার করিল দেবগণ। আর হুই পুত্র হুইল প্রমাতি তপন॥ হেমকৃট ইন্দ্রজাল বানর সম্পাতি। অরুণের তেজে হৈল এ তিন বেকতি॥ দেবগণ তেজ এড়ে বানরীর পেটে।২৫ দেবতানন্দন সব বলে নাহি টুটে। কত কত বানরের নাম গুটা গুটী। দেবের নন্দন হৈল ছত্রিশ কোটী॥

স্থনিঞা মুনির কথা রঘুনাথ হাসে। কহ কহ বলি রাম করেন প্রকাশে॥ অগন্তা বলেন রাম কথারে দেহ মন। অবধান করি স্থন অপূর্বা কথন। ইন্দ্রপুত্র বালীরাজা কশ্যপের নাতি।৫ কিষ্ণিদ্যাতে হৈল বানর অধিপতি॥ বয়সেতে জ্যেষ্ঠ বালী গুণের সাগর। ধর্ম্মতে ধান্মিক বড় ইন্দ্রের কোঙর॥ বালী স্থগ্ৰীৰ ছই ভাই বলে মহাবল। আকাশে তুলিয়া লোকে শিথর অচল॥১• দেবতার পুত্র সব মহাবলধর। দোঁহাকে ভিটিতে আলা কিষিয়ানগর॥ স্থ গ্রীব বালীরে আসি নোঙাইল মাথা। বালীরাজা করিঞা ধরিল দণ্ড ছাতা॥ রাজা নাহি যুক্তি কৈল মন্ত্রীর সমাজে।> সভে মেলি বালীকে করিল মহারাজে। তারকের সিংখাসন অপূর্ব্ব গঠন। সেই সিংহাসনে বৈসে ইক্তের নন্দন॥ বালীরাজা হইল স্থগ্রীব যুবরাজ। লইয়া বালীর আজ্ঞা করে সর্ব্যকাজ॥২০ রাজা হৈল বালী পাত্র হৈল পঞ্চজন। পনস কেশরী আর স্থসেন নন্দন॥ নীল সেনাপতি তার মুখ্য সেনাপতি। বানর উপরে রাজা হুই জে বেকতি॥ দধিমুখে অধিকার দিল মহাশয়।২৫ মধুবন রাখিবারে দিলেন বিষয়॥ বালী মহাবল হৈল কিম্বিয়ার রাজা। পুত্র হেন পালে রাজ্যের যত প্রজা।

(२४७)

(२৮8)

তার কপিবর ঠাঞি থুইল ভাণ্ডার। মহারাজা হৈল বালী ইন্দ্রের কুমার॥ আকাশে থাকিআ দেখে জত দেবগণ। वानीत উপরে করে পুষ্প বরিসন॥ নানা বর্ণে বাছ্য বাজে স্থনি মনোহর।৫ পুত্রস্নেহে রত্নমালা দিলা পুরন্দর॥ পুত্রকে রত্নের মালা দিলেন সন্দেশ। ইন্দ্রের বরে বসিলা বালীরাজার দেশ ॥ তারা রুমা ছই কন্তা স্থুসেনকুমারী। বালীরাজা স্থগ্রীব হুজনে বিভা করি॥১০ স্থগীবের নারী হৈল রুমা জে স্থন্নরী। বালীর বনিতা তারা হৈল পাটেশ্বরী॥ অঞ্জনের উপজিল তুইটা ঝিয়ারি। অঞ্জনা কাঞ্চনা হুই পরম স্থলরী॥ ধর্মবিভা করিলেন পন্স কেশরী ১১৫ ছুই ভগ্নী হুই ভাই নিল বিভা করি॥ কেশরীর নারী হৈল স্থন্দরী অঞ্জনা। পন্দ করিল বিভা কুমারী কাঞ্চনা॥ কাঞ্চন পর্বতে হৈল কেশরীর ঘর। আর নানা পর্বতেতে রহিল বানর॥२० পৃথিবীতে যত কপি ব্রহ্মার স্থজন। সে সব বানরের হৈল করণ কারণ॥ বানরীর কন্তা জত পরম স্থলরী। দেবতার পুত্র সব তারে বিভাকরি॥ वानी ऋशीव इहे जाहे वरन महावन।२৫ ছই ভাই রাজা প্রজা বানর দকল। অরণকিরণ হএ স্থাের উদয়। চারি সিন্ধু সন্ধ্যা করে বালী মহাশয় ॥

। বালীর সমান বীর নাহি মহীতলে। দেবাস্তর যক্ষ কাঁপে বানরের বলে॥ रहेन अञ्चन वीत वानीत नन्त। স্থগ্রীবের পুত্র ফিতা জতা হুইজন॥ রাবণ রাজারে বালী কৈল পরাজয়।৫ বড বীরে জিনে বালী মহাশয়॥ কেশরীর পুত্র হৈল বীর হত্তমান। দেবতা দানব জারে নাহি ধরে টান। হরুমান হইতে রাবণ নিঃসন্তান। এক মুখে কি কহিব বীরের বাখান ॥১০ শ্রীরাম বলেন মুনি তুমি তপোধন। স্বগ্রীব বালীতে বাদ কিসের কারণ॥ অগন্ত্য বলেন রাম কথারে দেহমন। সভাথতে শুন রাম অসূর্ব কথন। তব কাৰ্য্য সাধিতে স্থগ্ৰীৰ পাল্য বর ৷১৫ তোমার প্রদাদে হৈল কপির ঈশ্বর॥ বালীরাজা হৈল স্থগ্রীব হব রাজ। সর্ব্ব অধিকারে সেই সাধে রাজকাজ। বালীর আদেশ নিঞা সর্বাকাজ করি। मात्रां नानव मत्न (मांट्र युक्त कति॥२० ছন্দুভি অমুর হৈল বিধাতার বরে। বালীসনে যুদ্ধ করি সেইজন মরে॥ তার সহোদর ছিল বড় মায়াধর। জুঝিতে আইল সেই বালী বরাবর॥ ত্রপর রাত্রে রণ হৈল গুরুতর।২৫ স্থলঙ্গে পাতালে গেলা সেই মায়াধর॥ স্থগ্রীবে রাথিআ সেই স্থলঙ্গ ছুআরে। 🤘 मानदर मातिए वानी रामा अर्थाभूति। (**₹bt**)

(২৮৬)

স্থলত্ব তুমারে দেখি রক্তের বিমুখি। সুগ্রীব পর্বাত দিআ সেই দার ঢাকি॥ বংসরেক নাহি আলা বুঝিআ সংশয়। রক্ত দরশনে মুত্রা বুঝিল নিশ্চয়॥ বালীর স্থগ্রীব কৈল শ্রাদ্ধ তর্পণ।৫ অরাজকে রাজা কৈল সর্ব্ব পাত্রগণ॥ ञ्चीत रुवेन ताजा वरन मरावनी। তারা কমা নিঞা স্থথে করে নানা কেলি। ওথা বালী মারিসা মায়াবী মায়াধর॥ সাসিআ স্থলঙ্গে দেখে পর্বাত শিথর॥১০ লাথিতে পৰ্বত ফেলে বালী কপিবর। ঘরে আসি দেখিল স্থগ্রীব দণ্ডধর॥ তারা দনে স্থগ্রীব করে নানা কেলি। দেখিল আপন চক্ষে বালী মহাবলী॥ শুঙ্গার চুম্বন করে বালী তাহা দেখে।১৫ বজনার লাথি মারে রাজা স্থগ্রীবের বুকে॥ স্থ গ্রীব লাথির ঘাত্র হৈল অচেতন। মুখে রক্ত উঠে ঘন বহিছে পবন ॥ কথোক্ষণে স্থগ্ৰীব হইল সচেতন। প্রাণ নিআ পলাইল ছাডি রাজ্য ধন ॥২• পাছু থেদাড়ি আ যার বালী বলধর। উভরতে পালায় স্থগ্রীব পাঞা ভর॥ স্থগীব বালীর বল সহিতে না পারে। ডরে পালাইআ বুলে দেশ দেশান্তরে॥ যথন তথন হুই ভাই করেন রণ।২৫ মুঠকা মুঠকি হত ছোর দরশন॥ হই ভাই মহারণ হএ গুরুতর। বালীর প্রহারে বীর হইল কাতর।

श्रधीरव निर्जीव कति वाली वल्धत । বুকে চাপাইল তার পর্মত শিথর॥ স্থ ীব পাথর চাপে হইল অচেতন। ঘরে আলা বালী রাজা সঙ্গে কপিগণ॥ রাজ্য ধন নিল আর কুমা জে স্থলরী।৫ জ্ঞানী হঞা নিল ছোট সহোদর নারী॥ মুনির কথা স্থানি সভা খণ্ডে চমৎকার। বালীর অনর্থে রাম করে হাহাকার॥ শ্রীরাম বলেন স্থানি কহ মুনিবর। কত দিন ছিলা মিতা চাপান শিথর ॥১• অগন্ত্য বলেন রাম স্থনহ বচন। স্থগ্রীব পাষাণ ভরে সংশয়জীবন॥ বংসরেক ছিলা বীর পাষাণ চাঁপনে। মুথের রকতে নদী বহে খরসানে॥ भूथ नारन नमी वरह ना नुकाञा थरन।> ¢ তাহাতে বহএ স্রোত অতি থরসানে॥ জামুবান মহামন্ত্রী ব্রহ্মার নন্দন। পর্বত ঘুচাঞা রাথে স্থগ্রীব জীবন ॥ পর্বত ঘূচিল বীর হৈল সচেতন। জামুবান সনে কৈল গাঢ় আলিঙ্গন ॥২০ স্থাীব বলেন স্থন ভ্রন্ধার নন্দন। তোমার প্রসাদে আমি এড়াল্য মরণ। জামুবান স্থগ্রীবে হৈল সম্ভাষণ। আপনার নিজ স্থানে করিলা গমন॥ স্থগীবে খেদাড়িখা স্থথে রাজ্য করে বালী তারা রুমা লইআ সদাই করে কেলি॥২৫ পাত্র মিত্র নিঞা রাজা করে অন্তুমান। জামুবান বলে বালী কর অবধান।

(२৮१)

(२४४)

দেবতার পুত্র দোহে বলে মহাবল। ছই ভাই রাজ্য করহ ঘুচাহ কন্দল॥ স্থগ্রীব শৈলের চাপে আছিল বংসর। আমি তাহা যুচাঞা রাথিল কলেবর॥ স্থনিক। এসব কথা বালা রাজা হাসে।৫ স্থগ্রীবের তরে বল তোমা কেন আইসে। স্থগ্রীবের ধর্মাধর্ম সভার গোচর। কত দিন বুলিয়া বুলুক দেশাস্তর॥ नल नील शहे तीत परन महावन। রাজার বচনে চিন্তা করেন সকল॥১० নীল দেনাপতি বালী রাজার প্রধান। ছঃথ মানি নল নীল গেলা নিজ স্থান॥ পনস কেশরী আর স্থসেন বানর। তিন পাত্র প্রবোধিআ গেলা নিজ ঘর॥ স্থাতীব বালীর ডরে ফিরে দেশান্তরে।১৫ বানর লইআ বানী স্থথে রাজ্য করে॥ ক্তুত্তিবাদ পণ্ডিত মুরারি ওঝার নাতি। স্থনিলে উত্তরাকাও অবগ্র মুক্তি॥

জগন্তোর কথা স্থানি বলেন প্রীরাম।
রবুবংশ বলিআ আমার কেন নাম।২০
ইচ্ফাকু মান্ধাতা পৃথু দিলীপ সগর।
হেন রাজা নহে কেন রবুর শোসর।
মহামহা রাজা জত হৈল মহীতলে।
আর জত রাজা হৈল চক্র-স্থ্য-কুলে।
আর্থ্যাবর্ত্ত ভারত ভ্বন সত্যবানে।২৫
স্করথ য্যাতি অসমঞ্জ অংশুমানে॥

বাণ রাজা খেত রাজা অর্জুন শসাদ। হরিশ্চক্র রোহিতাস্য আর উত্তানপাদ॥ ধনঞ্জর স্থরণ নূপতি পুরুরবা। মুকুন অর্জুন আর রাজা পূর্কশিরা। বালী বলী স্থদেন ইলাই ভবিষাত। জন্মেজয় বেন রাজা আর ভগীরথ।। মহাশঙ্খ স্থবীর্য্য ক্রেথন রুক্সাদ্দ। ধর্মাঙ্গদ মহারাজা আর মহাত্রদ ॥ যুবনাশ্ব ঋষভ সৌদাস মহাশয়। শতবাহ স্থবাহু পাওব ধনঞ্জয় ॥১০ আর যত রাজা ছিল মহা বলবান। ত্রিভুবনে নাহি কেহো সগর সমান। সগরের হৈল সাঠি সহস্র কোঙর। জার কীর্ত্তি পৃথিবীতে এ চারি সাগর॥ স্বৰ্গ হৈতে গঙ্গা আনে রাজা ভগীরথ।১৫ গ্রহগণে জিনিল নুপতি দশর্থ।। আশি সহস্র মত্তহন্তী জত বল ধরে। ততোধিক বল দশরথের শরীরে॥ বড় ২ রাজা সব মহাবলবান। সোসর থাকিতে কেন রঘুর বাথান॥২• সংসার বশ হৈল দশরথের গুণে। রঘু ইন্দ্র হজনে বিবাদ কি কারণে॥ রঘুর বিক্রম রাম ভাল মতে জানে। তথাচ অগন্তা ঠাঞি সভাখণ্ড শুনে॥ অবধানে স্থনে রাম কহে মুনিবর I২৫ ত্রিভূবনে রাজা নাহি রঘুর গোঁসর॥ অগস্ত্য বলেন রাম কর অবধান। সভাপতে ভন রগুরাজার বাথান।

(マケカ)

) (さな。)

উত্তানপাদের পুত্র হইল তপন। দিলাপ নামেতে হৈল তাহার নন্দন॥ তপোবলে তনয় দিলীপ মহারাজ। যক্ত দানে তৃষ্ট করে দেবের সমাজ। विश्व नहें जा युक्त करत नित्रस्त । द বিষ্ণু অংশে যজ্ঞ কৈল শতেক বংসর॥ যজে তুষ্ট হৈলা সকল দেবগণ। যজ্ঞ স্থান বেড়ি কৈল পুষ্প বরিসন॥ বর মাগে নুপতি দেবের বিছমান। দকল দেবতা বলে হবে পুত্রবান॥১• त्वनात्म श्रुज देश किलीश-नक्त । ক্রপে কামদেব জিনি জগতমোহন ॥ অন্ত্র শান্ত্র যত বিছা জানিল সকল। মহাধমুর্দ্ধর হৈল বলে মহাবল ॥ স্থ্য সম তেজ ধরে মহাবলবান্॥১৫ মন্ত্ৰ হৈতে জানে রাজা শব্দভেদি বাণ॥ শব্দভেদি বাণে রঘু জাঁনে অস্ত্রশিক্ষা। জারে বাণ মারে তার কার নাহি রক্ষা॥ প্রভাতে জাএন রঘু মৃগ মারিবারে। ভয়ে সিংহ ব্যান্ত ভন্নক পালাঞা জায় ডরে। হাতে গাণ্ডি বাণে রঘু বুলে বনে বনে।২০ দশ বিশ মুগ মারি আনে প্রতিদিনে॥ गशावनवान् त्रपू मिनीशननन । বিনি মুগমাংসে তার নাহিক ভোজন। শাসিল সকল রাজা রযুর প্রসাদ ৷২৫ मकन प्रतिन तोका देशन এक नाम ॥ পিতাকে বন্দয়ে রঘু প্রভাষ বিহানে। রাজ্য চিন্তা করে রাজা বসিত্রা দেয়ানে॥

অস্কঃপুরে দিলীপ থাকেন অসুক্ষণ।
রাজ্যচিন্তা করে রঘু নিঞা পাত্রগণ।
জত জত মহারাজা বৈসে দেশে দেশে।
নানাধন লইআ রঘু স্থর নর বৈসে।
দেব দানব রাক্ষস গন্ধর্ব স্থরনর।
তেতুবন জিনি রঘু মহা ধমুর্দ্ধর।
বড় বড় রাজা জে রঘুকে নাহি মানে।
দর্শচুর করি ধনে প্রাণে আনে।
একটা ধমুকে রঘু ত্রিভূবন জিনে।
কারো ধন জন নিঞা কারে মারে প্রাণে॥১•
স্থর্যের সমান তেজ রঘু রাজা ধরে।
ক্বিত্রবাস গাইল ইহা দেবতার বরে।।

একদিন দিলীপ বসিআ সিংহাসনে।
পাত্র মিত্র পুরোহিত সব পুরীজনে॥
স্নান সন্ধ্যা করি রঘু বসিলা দেয়ানে।১৫
বামদেব বশিষ্ঠ আইলা হুইজনে॥
পিতাপুত্রে উঠিয়া মুনির পদ বলে।
আশীর্কাদ কৈল মুনি পরম সানন্দে॥
রাজা বলে অবধানে শুন মুনিবর।
আমি রাজ্য কৈল দশ সহস্র বৎসর॥२०
আয়ু শেষ হুইল এখন মনে ডর।
কোন কর্ম্ম করিলে না যাই যমঘর॥
শমনের ভয়ে বলে সকাতর বাণী।
স্বোধিআ বলেন বশিষ্ঠ মহামুনি॥
স্থাবংশে রাজা তুমি নুপতিমগুল।
অখমেধ যক্ত কৈলে পাবে স্বর্গফল।

(222)

(२৯२)

অশ্বমেধ কর রাজা মোর বোল ধরি। সেই ষক্ত ফলে তুমি জাবে স্বর্গপুরী॥ এতেক স্থনিঞা রাজা মুনির বচন। রঘুকে সকল রাজ্য কৈল সমর্পণ ॥ পাটে রাজা করিআ ধরিল ছত্র দণ্ড।৫ সমর্পণ কৈল তারে সর্বরাজ্য খণ্ড॥ হাত প্রসারিয়া রাজা রঘু কৈল কোলে রাজভূষণ পদ্মালা দিল তার গলে॥ माथार्ड मुक्ठे मिन कर्राट्ड कूछन। ষেত পাট বস্ত্র দিল নামে গঙ্গাজল॥১০ ठक नम जिका मिल त्रघुत ननारि । অভিবেক করি পুত্রে বসাইল পাটে॥ कनावजी वनिज। तचूत रेवरम भारम। তাহাতে মঙ্গল দ্রব্য করিল পরশে॥ রাজপদ দিল পুলে রাজসিংহাসন ৷১৫ রাজ পদ্মমালা দিল রাজ আভরণ॥ রাজ অভ্যাসত যজ্ঞ কৈল মহারাজ। यक मात्न ऋथी देकन त्मरवंद्र मभाज ॥ बका विकृ भरश्यत कूरवत वक्ररण। देनश ७ अन्त हेन्द्र भमन भवत्न ॥२० হরিদে দেবতাগণ দিল আশীর্কাদ। तक्रभागा मिन तपू ताजाटक श्रमाम ॥ যজ্ঞে পূর্ণা দিল রঘু পাদেতে বনিতা। সভে মেলি রযুকে ধরিল দণ্ড ছাতা॥ मर्ख (प्रदर्शाण देकन भूष्म दित्रमन ।२६ व्यानत्म भूर्विछ रका नएए एनवरान ॥ দব মৃনি বেদ পড়ে জন্ন জন্ন কার। नानानात्न मूनिशत् देकन श्रकात्।

দিলীপনন্দন রঘু হৈল মহারাজা।
পুত্র হেন পালে রঘু সকল পরজা ॥
বাপ বিভ্যমানে রাজা জগত প্রশংদে।
উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্বভিবাসে॥

রঘুরাজা করিমা দিলীপ হরষিত।৫ বামদেব বশিষ্ঠ কুলের পুরোহিত॥ উঠিয়া বন্দিল রাজা মুনির চরণ। দেশে দেশে রাজাকে পাঠাল আমন্ত্রণ ॥ সেই আমন্ত্রণে আল সহস্রেক রাজা। পাত অর্ঘ্য দিআ সভাকার কৈল পূজা ॥১• জত মহামুনি আল্য কুলীন ব্ৰাহ্মণ। একে একে সভাকার বন্দিল চরণ॥ রাজার আনেশে সভে গেল যজ্ঞশাল। মন্ত্র আরোহণে আল্য দশদিকৃপাল॥ যজ্ঞ কুণ্ড বানা নানা রত্ন উপাদানে ৷১৫ দশ দিক্পাল বৈদে জার জেই স্থানে॥ সান সন্ধ্যা করি রাজা পরে শুক্র ধুতি। বন্ধা নারায়ণ রাজা পূজে পশুপতি॥ সাজিত্মা আনিল ঘোড়া অতি স্থলকণ। कृष्णमात तथ रपाए। देवन छेश्मर्कन ॥२० ঘোড়া রাথে স্থমন্ত লইস্মা দেনাগণ। **ट्रिकाल जोका किছू विशेश वहन ॥** কত জ্ব্য চাহি মুনি কত চাহি স্থত। এত স্থান বলেন বলিষ্ঠ পুরোহিত। পর্বত সমান চাহি পঞ্চশস্ত রাশি।২৫ मित्न शुक्र ठाहि गाँउ गह्य कल्ती॥

(২৯৩)

(२৯৪)

দিলীপ নুপতি ৰটে সার্বভোমেশ্বর। চতুর্দিকে নানাদ্রব্য আনে অসুচর॥ অগ্নিহোত্রী দ্রব্য সব এড়ে স্থানে স্থানে। শতেক বংসর বই দিব পূর্ণাদানে॥ মন্ত্ৰ পড়ি মুনি সব কুত্তে অগ্নি জালি।c আগে পঞ্চ সহস্র মুনি পাছে ন্বত ঢালি॥ দিনে দিনে যজ্ঞ রাজা করে নিরস্তর। যজ্ঞ করে মহারাজা বংসরে বংসর॥ হেন মতে যজ্ঞ রাজা করে দিনে দিনে। ফলের আহার করে বেলা অবসানে ॥১० चर्यामध क्रिट्य मिलीश महागत्र। শতক্রতু নিবড়িলে যজ্ঞ সাঙ্গ হয়। মহা মহা মুনি সব সিদ্ধি কলেবর। অশ্বমেধ করে রাজা শতেক বৎসর। উনশত নিবভিল একাদশ মাদে।>৫ युक्त भूनी मिन ताका देवनाथ अद्वर्ण ॥ ডাক দিআ আনে রাজা স্থমন্ত সার্থ। ঘোড়াকে রাখিহ বাপু করিআ সকতি॥ বশিষ্ঠ বলেন ইহা মোরে নাহি বাসে। আগলিকা রাথ ঘোডা আপন আওআদে॥ ताजा मरशिक्षा वरण मूनि वामराद्व ।२० ঘোড়া না রাখিলে রাজা বড় হঃথ পাবে॥ উনশত ক্ৰতু গেল এক ব্ৰুতু আছে। যতে রাখ্য ঘোড়ারে প্রমাদ পড়ে পাছে॥ সাবধানে ঘোড়া রাখ্য আছে এক হেতু।২৫ উনশত নিবড়িল বাকি এক ক্রতু॥ অধিবাস ঘোড়ার করিব জাগরণ। আগলিমা আন ঘোড়া করি আমন্ত্র ৮

ঘোড়া আনিবারে জান স্থমন্ত সার্থি।
আগলিআ নিল ঘোড়া করিআ সকতি ॥
আপনার তেজে রঘু ধরে যজ্ঞ ঘোড়া।
স্থবৰ্ণ কণ্ডানি দিল পাটের পাছড়া॥
স্থগন্ধি চন্দন দিআ কৈল অধিবাস।
বাথ দিআ রাথে ঘোড়া গান কৃত্তিবাস॥

অশ্বমেধ যজ্ঞ করে দিলীপ নুপতি। আছতি ধরিকা যজ্ঞ করে নিতি নিতি॥ হেনমতে যজ্ঞ কৈল শতেক বৎসর। সিংহাসন ভাঙ্গিয়া পড়িল পুরন্দর।>• পরিজন পানে চাহে ইব্রু পরিচ্ছদ। ইক্র সম্ভাষিতে মুনি আইলা নারদ। তুমি নাহি জান ইক্র আমি জানি কাজ। তোমা খণ্ডি দিলীপ হইব ইন্দ্র রাজ। যাবং তাহার থক্ত দাঙ্গ নাহি হয়।১৫ কার্যাসিদ্ধি হবে তুমি স্থন স্থনিশ্চয়॥ মহা যোদ্ধা বট তুমি মহাবলবান্। সেই যজ্ঞ ঘোড়া আন আপনার স্থান। ব্যু নামে মহা রাতা দিলীপ কুমার। জারে তারে বাণ বাজে নাহিক নিস্তার॥: জবে রঘু রাজা করে বাণ বরিষণ। সহএ তাহার বাণ নাহি হেন জন॥ রণে না পারিলে তুমি জাই তথা ছলে। ঘোড়া নিঞা আইস্য তার নিজ বাছবলে নারদ কহিল কথা সকলের হেতু।২৫ যক্ত দাঙ্গ নাহি হয় আছে এক ক্রতু॥

(२२६)

(২৯৬)

শতক্রতু হইলে যজ্ঞ হর সমাপত।
জীয়ত্তে করিবে রাজা অর্গের বসত॥
আবর্ত্ত সম্বর্ত্ত মেঘ দ্রোণ জে পুদর।
চারি মেঘে লইআ নড়িল পুরন্দর॥
বর্কণ নড়িল বায়ু এক উন পঞ্চাস।৫
উত্তরকাণ্ডে গাইল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

ष्यष्टेशक निया हेन्स कतिन शमन। ঐরাবত পুগুরীক বামন অঞ্জন॥ পুপদন্ত ভৌম স্থপ্রতীকগজে। অষ্ট গজে দাজিআ লড়িলা স্থররাজে ॥>• भगन श्वन लेए कूरवत वक्र। অষ্টলোকপাল নিঞা যান দেবগণ॥ ্যজ্ঞ শালে বিষম করিল বৃষ্টি ঝড়। রক্ষক জতেক ছিল উঠ্যা দিল রড়॥ ভঙ্গ দিয়া পলাইল সব সেনাপতি।১৫ আত্তে ব্যব্তে প্লাইল সকল প্দাতি॥ यक्रमान (मिथ (यन देवकूर्थ जूदन। ছই মুনি নৃপতি রহিলা তিন জন॥ ডাক দিআ বলে ইন্দ্র অষ্ট্র লোকপাল। সতত ত্যাগ কর রাজা ছাড় যজ্ঞশাল ॥২• দিলীপ বলেন যজ্ঞে বল নাহি করি। ষজ্ঞ বল করি জে ধর্মেতে নাহি তরি॥ ইন্দ্র স্থরপতি তুমি দেবতার রাজ।. আমা সনে বাদ কর ভাল নহে কাজ।। त्रपू नारम পूज स्मात महा वनवान ।२¢ **बि**ञ्चन जांत्र नात्म नाहि भदा होन ॥

া শত সহস্র মন্ত হস্তী জত বল ধরে। তাহার অধিক তেজ রঘুর শরীরে॥ এত স্থনি হাসে ইন্দ্র রথের উপরে। তোমার শতেক রঘু কি করিতে পারে ॥ রাজা বলে ইক্র বলি করিল অপেকা। পড়িলে রঘুর ঠাঞি নাহি পাবে রক্ষা ॥ জুড়িয়া বরুণ বাণ ইন্দ্র যজ্ঞে ফেলে। কুণ্ডের আগুন সব নিভাইল জলে॥ যজ্ঞ নষ্ট দেখি কোপ তেজে নরপতি। ঘোড়া ধরি নিয়া জান ইক্ত স্কুৰুপতি॥১০ যক্ত ঘোড়া নিয়া জান আপন ভূবন। আনন্দে পূৰ্ণিত হঞা লড়ে দেবগণ॥ হরষিত স্থরপতি স্বর্গপুরে লড়ে। দিলীপ নুপতি তমু যজ্ঞ নাহি ছাড়ে॥ ধাইঞা স্থমন্ত্র কহে রঘুর গোচর ৷১৫ যজ্ঞ ভাঙ্গি ঘোড়া নিয়া জায় পুরন্দর॥ এতেক শুনিয়া রঘু লোহিতলোচন। বীর ধড়া পরে বীর নানা আভরণ॥ গায়ে মানা আরোপিল মাথাতে টোপর। অজয় ধহুক নিল ভূণে পূর্ণ শর ॥২• স্থমন্ত্রে কহিল রথ আনহ সত্তর। বাকা মাত্র সাজি আনে রথ মনোহর ॥ ञ्चमिक्न भारत ताका विक्न ठत्र। একে একে বন্দিল জতেক গুরুজন॥ যজ্ঞশালে পিতাকে বন্দিল জোড হাতে।২৫ বড় কোপ করিআ চড়িল গিআ রথে॥ **जिः एट्र १ व्हार कार्य किलीश-नक्त**। হাতে গভী করি জায় করিবারে রণ্॥

(२२१)

(२৯৮)

থেদাড়িজা চলিল পালায় স্করপতি। ঘোডা নিআ প্রবেশিল অমরা বসতি॥ নানা অস্ত্র শিক্ষা রঘু করয়ে, সঙরণ। বাসবেরে এডিয়া পালায় দেবগণ॥ দেবগণ পলাইল এডিআ পুরন্দর।৫ র্ঘুর বাণেতে ইক্র হইল জর্জর ॥ বাণ বর্ষে ইন্দ্র রাজা অষ্ট্র লোকপাল। বাণ সহে রঘু রাজা বিক্রমে বিশাল॥ বাণ দেখি কোপে ইক্স বজ্ঞ নিল হাতে। ত্তস্কার দিআ মারে রঘুরাজ মাথে॥১০ সর্বাঙ্গে ফুটিল রঘু বহিছে রকতে। বৃষ্টি ধারা বহে যেন স্থরঙ্গ পর্বতে॥ সহিয়া ইল্রের বজ্র রঘু মারে বাণ। স্ক্রিকে ফুটিয়া ইক্র হৈল থান থান॥ রঘুর সহিতে ইল্র হৈল অদর্শন। ১৫ চমকিত হইল সকল দেবগণ॥ রঘু বলে রথখান চালাও সারথি। শান্তাইল গিয়া রঘু অমরা-বসতি॥ সকল দেবতা মেলি করে অমুমান। এক মিলি হঞা গেগা বিধাতার স্থান ॥২ রঘুর ইক্সের যুদ্ধ করিল গোচর। বাণে ফুটি ইন্দ্রাজ হইণ জর্জর। অবধানে স্থন প্রভু দেব প্রজাপতি। এইবার রক্ষা কর অমরা-বসতি॥ পবনে পাঠাঞা দিল রঘু রাজা স্থান।২৫ ব্রহ্মার বচন তারে কহে সাবধান॥ বন্ধ অন্ত্ৰ জুড়িআছে দিলীপনন্দন। জোড হাতে দাডাইল দেবতা পবন॥

তোমার সমান কেহ বীর নাহি আর। স্থাবংশে রাজা তুমি বিষ্ণু অবতার॥ দেবতার প্রীত রাথ ব্রহ্মার সম্মান। সংগ্রাম তেজিআ তুমি চল নিজস্থান।। त्रपू वरण यांगा रमिश वामव शानाहै। যজ্ঞ ঘোড়া না পাইলে আমি নাহি জাই॥ প্ৰবন বলেন এই নহেত জুক্তি। দেবরাজ ইন্দ্র সনে করহ পিরিতি॥ ইন্দ্রের ভবনে রঘু কৈল আগুসার। পাত অর্ঘ্য দিল ইক্স গৃহ ব্যবহার ॥১• সারি দিআ দাগুাইল যত দেবগণে। রঘু ইক্র বসিলা একই সিংহাসনে॥ স্তুতি করে ইন্দ্র রাজা ভরি সভাতলে। জগত জিনিতে পার আপনার বলে॥ দৰ্ব্ব শাস্ত্ৰ জান তুমি নানা অন্ত্ৰশিক্ষা।১৫ তুমি অস্ত্র জুড়িলে কার নাহি রক্ষা॥ মহাসত্যশীল তুমি বড় গুণবান্। আমার গৌরব রাথ জাহ নিজ স্থান॥ নানা রত্ন দিআ নূপে কৈল পুরস্কার। রবুকে দিলেন ইন্দ্র অনেক ভাগ্তার ॥২• রঘু বলে ধনে মোর কোন প্রয়োজন। ধনের বাঞ্চিত রাজা অধম সেজন ॥ আপনা রাখিবে যদি ঘোড়া দেহ আনি। তুমি স্থথে থাক আমি মাগিব মেলানি॥ মোর খোড়া নিয়া আইলে নিজপুরী।২৫ ঘোড়া দেহ ইক্র রাজা দেব অধিকারী। কপট প্রবন্ধের কথা না বলিহ আর। মোর সনে কপটেতে না পাবে নিস্তার॥

(そるか)

(000)

বিধাতা বলেন ইন্দ্র ভাল নহে কাজ। আনিআ রবুর ঘোড়া দেহ দেবরাজ। উনশত ক্রতৃ তবে হবে পূর্ণাছতি। সকল দেবতাগণে রাথহ পিরিতি॥ উনশত যজ্ঞে পাবে শতক্রত ফল।৫ ऋर्ग कन शाद्य द्राङ्ग मिनीश-मण्डन ॥ বন্ধার বচনে ইক্ত হাত কৈল জোডা। রত্বের ভূষা করিয়া আনিঞা দিল ঘোড়া।। ঘোডা দেখি রাজা আনন্দ অপার। नर्व दिवगरण नृत्य देकन भूत्रकात ॥>० অপমান পাঞা ইক্স বিরস বদন। (घाडा निका जान रेक मिनीशनमन ॥ (मवर्गन वर्ण त्रचू महा वलवान्। ইন্দ্ৰ জ্বিনি ঘোড়া নিঞা গেল নিজস্থান। मरकार्फ मिनोश कार्त्म (इँ कित्र माथा।) व রঘু ঘোড়া আনিল সেবকে কহে কথা। যজশালে রঘুরাজা গেল ঘোড়া নিঞা। 🛊 পাত্ৰ মিত্ৰ বন্ধুগণ আইল ধাইএল ॥ এক যক্ত মাত্র আছে করিবার তরে। যজ্ঞশালা বেড়ি আছে জত সুনিবরে ॥২০ ধন্য ধন্য রঘুরাজা সর্বলোকে ঘুসি। অগ্নিতে ঢালিল যুত কলসী কলসী॥ চ इक्टिक दिन्नार्ध अप्र अप्र कात । মন্ত্রপাঠ বলে অষ্ট্র লোক আগুসার॥ সারি দিলা দেবতা দাঁড়ার স্থানে স্থানে ।২৫ শতক্রতু ফলে রাজা স্বর্গবাদ জায়।২৫ যজ্ঞপালে আসিয়া হইল অধিষ্ঠানে ॥ কুও হইতে অগ্নি উঠে হঞা মূর্ত্তিমান। विभिन्ने बर्गन बाजा एमर बिनान ॥

বশিষ্ঠেরে বলে রাজা অতি কুতৃহলে। यद्ध विन मान मिन विः गिंउ ছांगतन ॥ অগ্নি আবাহন মন্ত্র করিল ধেয়ানে। হেনকালে যজ্ঞ ঘোড়া হইল অধিষ্ঠানে ॥ বায়ু বেগে উঠে ঘোড়া গগনমগুলে। মৃর্ত্তিমান্ হঞা ঘোড়া সম্ভাইল বলে॥ मृनि नव मञ्ज পড়ে मञ्ज अधिष्ठीन। কাটিয়া যজের ঘোডা করে থান থান॥ মাংস কাটি মুনিগণ করে থানি থানি। ঘুত সনে যজ্ঞ করি অগ্নি পুরে হানি॥১० কুও হইতে পোড়া মাংস তোলে মুনিগণ। সব রাজা গণে দিলা করিতে ভক্ষণ।। তবে সব মুনিগণ জল অর্ঘ্য দান। কুও হইতে উঠে ঘোড়া দেব অধিষ্ঠান ॥ माञ्च रहेन युक्त जोका रुजिम विश्वत ।> ৫ দিলীপের ভেজ হইল যেন দিবাকর॥ মহা বলবান রঘু পৃথিবী মগুলে। यर्गवामी मिलीभ तांका अयरमध-करन ॥ স্বৰ্গ হইতে রথ আস্তে দেখিল নুপতি। রথে চড় গিয়া বলে জয়ন্ত সার্থি ॥২০ জয় জয় কার দিল সর্ব্ব রাজ্য খণ্ড। রঘু রাজা করিআ ধরিল ছত্রদণ্ড ॥ मिट द्रार्थ हिंजा मिनीभ नुभवत् । সুর্য্যের সমান দীপ্ত হৈল কলেবর॥ স্বৰ্গলোক মৰ্ত্তালোক এক দৃষ্টে চায়॥ অনেক বৎপর স্বর্গে রছে মহারাজ। নিতি নিতি দেখে গিআ দেবতা সমাজ্ঞ (00)

(002)

রঘু পুত্র হইতে রাজা বৈকুণ্ঠ ভূবন।
সক্ষমে উঠিয়া ইক্স কৈল আলিগন।
পিতৃ পুণ্য ফলে রঘু অযোধ্যাতে রাজা।
উনশত কোটা রাজা তারে করে পূজা।
পৃথিবী জিনিল রঘু বিক্রমে পৃজিত।
উত্তর কাণ্ডে ক্তিবাস গান ইক্সজিত।

ষ্পাস্ত্যের কথা স্থানি রামের উঠে হাস। কহ কহ বলি রাম করেন প্রকাশ। অযোধ্যাতে রাজা হৈল রঘু মহামতি। ইল্রের সমান হ্ঞা ভূঞ্চে বস্থমতী ॥১০ নিতি নিতি শতপ্র সোনা করে দান। তবে রযু রাজা করে স্নান জলপান॥ স্থতাপে তপন রাজা মহা বলবান্। স্থ্যবংশে রাজা নাহি রঘুর সমান॥ দানে পুণ্যে মহারাজ বিষ্ণুর সমান।১৫ मात्रिज घूठांन त्रच् जाटत एमन मान ॥ সংসারে বিজয় হইল রঘু মহারাজা। পৃথিবীর জত রাজা দবে করে পূজা॥ দানে অকাতর রাজা মহা সত্যবান। জাহা চাহে তাহা দেন নাহি করে আন ॥२। দেবগণ বিশ্বিত রঘুর দেখি দান। ছলিতে চলিলা যম আর মেঘবান॥ স্বরপতি হৈলা গাভী বংসের সহিত। বনের ভিতর গেলা হঞা হর্ষিত। युग यात्रिवादत त्रव (भवा त्रहे वन ।२० ननी गाडी मान उथा देश प्रत्न ॥

পত্য বুঝিবারে যম বাঘরূপ ধরে। বিনাশ করিয়া বুলে গাভী ধরিবারে ॥ নিদিনী বলেন মোরে করহ ভক্ষণ। তবে বাছা খাবে বাঘ স্থনহ বচন॥ ব্যাত্র বলে ভাল তুমি নাহি বল গাই। বাছুর থাকিতে আমি তোমা নাহি খাই॥ বংস বলে আগে মোরে করহ ভক্ষ। **जूमि मा शिकित्न इत्य ज्ञानक नमन ॥** তুমি যদি মর আমি কোথায় থাকিব। আহার না পাঞা আমি শরীর ত্যজিব॥>• মাএ পোএ ছইজনে করে অনুমান। হেনকালে ব্যাঘ্র বলে আস্ত মোর স্থান 🛭 বাছুর ধরিতে বাখ বুলে ঘনে ঘন। মায়াতে বাছুর কান্দে অঝর নয়ন॥ নৰ্দনী বলেন বাণ আছএ আহিছি।১¢ হৰ্জয় ধনুক হাতে কাণ্ড জে চেআড়ি॥ আহিড়ি বলিআ গাভী ডাকে ঘনে ঘন। ডাক স্থান রঘুরাজা ধাইল তথন ॥ वाकारक रमिश्रमा वाच वरनन कोजूरक।२० মোরে বাণ মার আমি পাত্যা নিল বুকে॥ পালাকু আমার কুধা হৃদয়ের তাপ। তোমার শরীরে জাকু মোর জত পাপ॥ মুগ নহি আমি ছার করিবে ভক্ষণ। মোর ভক্ষ্য দ্রব্য নিতে আল্যে কি কারণ॥ গাভী বলে রাজা তোর নিলাঙ শরণ।২৫ মাএ পোএ হুষ্ট বাঘ করয়ে ভক্ষণ॥ গোবধের জত পাপ স্থনিয়াছ কাণে। नर्स्तभाभ भारत जूमि जामात मत्रण॥

(000)

(0.8)

ব্যান্ত বলে সাতদিন আমি উপবাসী। পাপী জনে মারি পাপ লেহ রাশি রাশি॥ র্যু বলে গাই মোর লইল শর্ণ। রাখিলৈ শরণাগত পুণ্য উপার্জন ॥ শতেক মহিষ দিব সহস্ৰ ছাগল।৫ ইহা নিঞা খাও গাবী না করিহ বল ॥ বাঘ বলে গরু ছাড়ি আর নাহি চাই। আগু বংদ থাইব পশ্চাতে থাব গাই।। রাজা বলে গাবী নাহি করিহ ভোজন। ুতোর হাতে মোর মৃত্যু জানিল কারণ ॥১০ গাভী বংস ছাড়িয়া আমার মাংস থাবে। মোর রক্ত মাংস খাইয়া বড় সুথ পাবে॥ স্থা হেন মোর মাংস রকত স্থবাদ। জত থাবে তত পাবে নাহি অবসাদ।। বাদ বলে মোর ভক্ষ্য হইবে নিশ্চয় ৷১৫ গণ্ডী বাণ দেখি মোর বড় লাগে ভয়॥ ভাগীরথী তীরে রমু রাখে গণ্ডীবাণ। 🌞 তুलिन रम्भनि वृत्क रूका मावधान ॥ স্নান দান কৈল রাজা সেই গঙ্গাজলে। মন্ত্র সঙ্রণ করি আল্য গাছতলে ॥২০ শয়ন করিল রাজা পাতি বুক্ষ পাতে। উপকারে প্রাণ দিতে নারায়ণ চিতে॥ বাঘের নথ জেন অতি থরসান। मस्य नर्थ **চিরি नृ**পে করে থান থান॥ রাজার শরীর বাঘ আচতে কামডে।২৫ রক্তে তোলপাড় রাজা অঙ্গ নাহি নাড়ে॥ তপোবনে আসিআ সকল দেবগণ। রখুর উপরে কৈল পুষ্প বরিসন ॥

আপনার রূপ ধরে যম পুরন্দর।
দেবগণে মেলিআ রখুকে দেন বর॥
ব্রহ্মা আদি দেবগণ দিআ গেলা বর।
গাভী বংস নিক্রা রাজা গেলা নিজ ঘর॥
নানা ভক্ষা দ্রব্য দিআ সেই গাভী পোষে।
ব্যাঘ্র নন্দীর বচন গাইল ক্বত্তিবাসে॥

রঘুনাথ বলে মুনি কহ সর্ব মর্ম। তার পর রঘু রাজা কৈল কোন কর্ম ॥১٠ অগন্ত্য বলেন রাম স্থন সাবধানে। সংসার পূর্ণিত কৈল রঘু রাজা দানে ॥ জাবালি মুনির পুত্র বড় বৃদ্ধিমান। পড়িতে গেলেন মুনি বরতন্ত স্থান। শাস্ত্র পড়ে কোৎস মুনি বরতন্ত্র ঠাই ৷১৫ হাজার বংসর পড়ে ঘরে নাহি জাই।। मञ्ज विमा कानिन मकन भारत कान। বড়ই পণ্ডিত হৈল মহাগুণবান ॥ গুরুকে দক্ষিণা দিলে শাক্তে হই পার। মনে তোলপাড় করে বড চিন্তাভার ॥২১ বরতন্ত মুনি বলে স্থন শিষ্যগণ। কায়মনোবাক্যেতে সেবিহ গুরুজন॥ কৌৎস মুনি বলে সেবি কত পুণ্য পাই। গুরুর দক্ষিণা দিতে কিছু আমি চাই।। বরতম্ভ বলে তুমি দরিদ্র ভিথারী ৷২৫ গুরুকে দক্ষিণা দিতে কার বাপে পারি॥ অবোধ মুনির পুত্র বোধ নাহি তাতে গুরুর দক্ষিণা সোন হত জেই মতে॥

(0.t)

(000)

ু হন্তী ঘোড়া কাঞ্চন রজত বর দোলা। গুরুভূমি অনেক কনকপদ্মের মালা॥ কিছু নাহি তোমার তাহার সম্ভাবনা। কোন ধন দিতে আছে এসব বাসনা॥ कोरम वर्णन वाका वन कि छरमर्गन। স্থনিঞা শিশুর বোল কুপিল ব্রাহ্মণ। পাইল অনেক যত্নে তোমার শিষ্য গুটী। গুরুর দক্ষিণা চাই স্বর্ণ চৌদ কোটী॥ कोश्म वरनम छक आभि केन अभीकात। ইহা নাহি দিলে আমি সত্যে নাহি পার ॥১০ বরতন্ত্র হাণিলেন শিষ্যের বচনে। অঙ্গীকার কৈল আমি সোণা দিব দানে॥ সত্য বাক্য অঙ্গীকার কভু নহে আন। যুক্তি করি গুরু শিষ্যে গেলা রঘু স্থান। পিতৃ শ্রাদ্ধ করি রাজা করে পিও দান ١১৫ পৃথিবীর রাজা সব করে অন্ন পান। জত মুনি আলা আর জতেক ব্রাহ্মণ। একে একে সভাকারে দিল নানা ধন॥ হাজার সহস্র দিজ করএ রন্ধন। স্থান করি রাজা সব করেন ভোজন॥२० সোণা রূপা ঝারি খুরি ভাজন অপার। রসই শালেরে রাজা কৈল আগুদার॥ রাজার মণ্ডলী জত আছিল গর্কিত। আমাত্য সোদরগণ বৈসে চারিভিত॥ রাজা বলে স্থন সভে যতেক ব্রাহ্মণ।২৫ এককালে দিবে অন্ন ঘুত সে ব্যঞ্জন। এত স্থান বিপ্রগণ হৈল সাবধান। প্রমান্ন পিষ্টক দিলেন স্থানে স্থান ॥

সতে অন্ন থান রাজা দেখেন সাদরে। হেন কালে দোঁহে গেলা নুপতির দারে॥ অতি ভিতে দারী বন্দে মুনির চরণ। মুনি বলে চাহি আমি রাজা দরশন॥ वाती वरण रमशा नाहि পाইरव এथन। @ রাজা হৈতে হবে মুনি সিদ্ধ প্রয়োজন॥ দারীর বচন হুনি কোপে মুনিবর। ঝাট গিত্সা কর তুমি রাজার গোচর॥ মুনির বচন দারী কহে জোড় করে। ছই মুনি আলা রাজা তোমার ছয়ারে॥১० যতেক বিনয় বলি নাহি স্থনে কানে। মুনি বলে চাহি আমি রাজা দরশনে॥ পাত্র মিত্রে আল্য রাজা পরম সাদরে। পাদ্য অর্ঘ্য দিআ মুনিকে নমস্বারে॥ রাজা বলে কোন কার্য্যে করিলে গমন।১৫ मुनि वर्ण माव्धारन स्नर वहन ॥ পাইল অনেক যত্নে শিষ্য একগুটী। দক্ষিণা উৎদৰ্গ কৈল সোণা চৌদ্দ কোটী॥ শিষ্য হঞা না বুঝিআ কৈল হেন কাজ। অশক্য হইল বড় স্থন মহারাজ ॥২০ এত যদি মুনিবর কহিলেন কথা। পাত্র মিত্র সনে রাজা হেঁট কৈল মাথা॥ রাজা বলে যত ধন চাহ মুনিবর। তত ধন দিব আজি চল বাসাঘর॥ অঙ্গীকার কৈল রাজা সভাকার আগে।২৫ স্থনিঞা সকল লোকে চমৎকার লাগে॥ বাসা করি রহে মুনি নৃপতির বাসে। উত্তরকাও রচিল পণ্ডিত ক্রন্তিবাদে॥

(Poc)

(004)

সকল রাজাকে রঘু দিলেন মেলানী। পাত্র মিত্র নিঞা রাজা কহস্তি কাহিনী॥ রাজা বলে পাত্র মিত্র কর অবধান। তৌদ কোটী সোনা আমি বিজে দিব দান॥ সাধু সদাগর জত আছিল ভাণ্ডার।৫ এক কোটা সোনা আনি কৈল আগুসার॥ রাজা বলে আজি গেল আমার সম্পদ। হেন কালে তথা কারে আইলা নারদ॥ সর্ব তত্ত্ব জানে মুনি তপের কারণে। স্থাহ চিত্ত কর রাজা হঃথ ত্যঞ্জ মনে 🗈 • পাত্ত অর্থ দিআ রাজা কৈল নমস্বার। ফল মূল দিল তারে গৃহ ব্যবহার॥ নারদ বলেন রাজা কি হেতু বিধাদ। সর্ব্ব কার্য। সিদ্ধ হবে দেবের প্রসাদ ॥ ষরে বসি শত কোটী পাইবে কাঞ্চন।১৫ আপনার স্থথে কর দিনান ভোজন॥ শত পদ্ম পাকি তোর দশ কোটা ঘোড়া। চৌদ্দ লক্ষ হস্তী আছে পর্বতের চূড়া। নিকটে অলকাপুরী কৈলাসশিখর। তাহাতে কুবের বৈসে ধনের ঈশ্বর॥২০ তাহারে জিনিব বলি তোলাহ বাজনা। এখনি পাইবে ঘরে শত কোটি সোণা।। মুনির বচনে রাজা হৈল হর্ষিত। পাইকরা উত্তবড় ধায় চারি ভিত॥ চারি দিকে পাকী সব তেঘাই হর্দ্ধরী।২৫ হাতে অন্ত রাউত ধাইল সারি गারি॥ ঘন ঘন কাড়া পড়ে নাহি অবকাশ। উঠিন বাজের শব্দ পর্বত কৈলাস।।

ধাইআ কুবেরে যক্ষ নোঙাইল মাথা। রঘু রাজা সাজিল কুবের শোন কথা।। পাত্রে মিত্রে কুবের করেন অনুমান। হেন কালে নারদ গেলেন তাঁর স্থান। নারদে দেখিআ যক্ষ কৈল নমস্বার।৫ রঘু রাজ্যে বাহ্য কেন কহ বার্তা সার॥ মুনি বলে বার্তা নাহি জানি লোকপাল। তোরে ধাড়ি সাজে রঘু বিক্রমে বিশাল ॥ এক মুনি মাগিল কাঞ্চন চৌদ্দ কোটী। রবুর বাণের তেজে যক্ষ নাহি আটি॥১० রাথিবে কৈলাস যদি আপন জীবন। আপনা চিনিঞা তারে পাঠাহ কাঞ্চন॥ স্থনিআ কুবের চিন্তে পড়িয়া পাথার। যক্ষগণ বলি ঘন পডিল হাকার॥ সঠি সহস্র যক্ষ আল্য কুবেরের পাশে।১৫ ধন বঞা পেল নিঞা রঘুর আওয়াসে॥ এত জদি বলিল কুবের ধনপতি। রযুর ভবনে ধন পেলে রাতারাতি॥ কৈলাদে স্থবর্ণ মাত্রে রহে গুটী গুটী। রবুর মন্দিরে সোণা পেলে শতকোটী ॥২• রাত্রে পেলাইল হৈল অরুণপ্রকাশ। স্বর্ণময় দেখে রাজা আপন আওয়াস।। সান সন্ত্রা করে রাজা প্রথম বিহানে। বদিলেন মহারাজা দেব অবতার।২৫ হেন কালে হুই মুনি কৈল আগুসার॥ আশীষ করিল গিআ হাতে দুর্কাধান। রাজাকে বলেন কোথা সোনা দেহ দান ॥

(500)

(050)

বাজা বলে ধন দিব কৈল অঙ্গীকার। জতেক ভাণ্ডারে আছে সকলি তোমার॥ বত্ব করি পাঠাইলে তুমি শিশ্য এক গুটী। তোমাকে দক্ষিণা চাহি সোণা চৌদ কোটা ব্রিমান রাজা আমি জ্ঞানে নাহি ঘাটা।৫ তোমাকে স্থবৰ্ণ দানে দিব শত কোটী॥ রাজা বলে পাত্র মিত্র জত আছ বীর। সব ধন কর মোর বাডীর বাহির॥ বাহির করিআ রাথে ধন রাশি রাশি। দেখি আ ইল্রের ঠাঞি গেলা ছই ঋষি॥১০ मुनित्क विक्ञा हेन्द्र पित्वन जामन। डेल दल करन लिएड कतिरन गमन ॥ বরতম্ভ বলে পাল্য শিষ্য এক গুটী। গুরুর দক্ষিণা দিল সোনা শত কোটী॥ মুনি হঞা ধন অর্জি নুপতির তরে।১৫ মোর সঙ্গে আসি ধন লহত সত্তরে॥ মুনির বচন শুনি বলে মঘবান। সত্য করি বল কেবা সোনা দিল দান। রঘু রাজা দান দিল মুনি কহে কথা। তাহা শুনি প্ররপতি হেঁট করে মাথা॥২• এক বার রগু মোরে কৈল অপমান। আর বার কোন লাজে জাব তার স্থান। हेल तरन तथ निका हनर मांजूनि। মুনির জতেক ধন আনগা সকলি॥ রথে চড়ি ছুই মুনি করিলা গমন।২৫ আসিঅ। দিলেন তারে চৌদ্দ কোটী ধন॥ রণে চড়াইআ ধন করিলা গমনে। আর জত বাকী সোনা রহে সেইথানে॥

ধন দেখি স্থাী হৈলা দেব স্বরপতি
আশীর্কাদ করি মুনি গেলেন বদতি।
স্থানিয়া রঘুর কথা হাদেন শ্রীরাম।
এই হেতু মোরে রঘুবংশ বলি নাম॥
রাক্ষদে বানরে নরে লাগে চমংকার।
কেন্তিবাস উত্তরকাপ্ত গাঞা দিল সার॥

त्रपूर्नाथ वटन मृनि कर मावधारन। অবশিষ্ট দোনা হত রহে সেইখানে॥ সেই সোনা কেবা নিল কহ দেখি ভূমি। শুনিয়া বামের কথা কহিছেন মুনি॥১० ডাক দিআ রঘু রাজা আনে অমুচর। সেই সোনা পাঠাইল মুনির বরাবর॥ রাশি করি থুইল মুনির তপোবনে। মুনি বই সেই ধন নিতে নারে আনে॥ দিখিজয়েরে আলা লক্ষার রাবণে ১৫ সেই ধনের কর্ত্তা কহে শুক যে সারণে ! সর্ব সৈত্যে বেড়িল মুনির তপোবন। লঙ্কা পুরী নিঞা গেল সকল কাঞ্চন॥ ধন শোকে মুনিবর ছাড়য়ে নিশাস। শাপিল রাবণে তোর হও বংশনাশ॥২० মহাবল রঘু রাজা সর্ব্য লোকে ঘোদে। নানা দান দিআ রাজা সভাকারে তোদে॥ ইন্দ্র পরাজয় হৈল করিআ সংগ্রাম। রঘুবংশ রাজা তুমি ঠাকুর শ্রীরাম॥ মুনির কথাতে রাম হাসিলা অপার।২৫ নানারত্ব দিআ মুনিকে কৈল পুরস্কার ॥

(022)

(952)

অগত্যের সর্ব্ধ কথা হৈল অবসান।
মেলানি দেহ মুনিগণ জাই নিজ স্থান॥
সভাথও চমকিত স্থানিয়া কাহিনী।
নানা রত্ন দিআ দিল মুনিকে মেলানি॥
বামে আশীর্কাদ করি মুনি গেলা দেশে।
উত্তরকাও গাইল পণ্ডিত ক্তিবাসে॥

কথা কহিতে বেলা হৈল অবসান। রাক্স বানরে গেলা শয়নের স্থান। সন্ধা করি রামচক্র গেলা অন্তঃপুরে। শাজাইল শরন ঘরে রত্বেতে প্রচুরে॥১० স্বর্ণ থাটে নেত তুলি উপরে মসারি। লক্ষীবেশে তথা গেলা জনক-ঝিরারি॥ রত্নের প্রদীপ জলে গৃহ চারি ভিত। ঘরের বাহিরে হয় বাগু নৃত্য গীত। স্থ রাত্রি বঞ্চে রাম দীতা চক্রমুখী।১৫ ্রামদীতা একু ঠাঞি দর্ব্ব লোক দেখি॥ পূর্ব দিকে পরকাদ রাত্রি অবশেষ। রাজ্বারে আদ্যে লোক করি নানা বেশ।। রাজবাত বাজে দারে অনেক প্রচুর। বৈতালিকে স্তুতি পড়ে জায় অন্তঃপুর ॥২০ তুমি নিদ্রা গেলে বিশ্বনিদ্রা নাহি ত্যজে। ভাঙ্গিল তোমার নিদ্রা লোক রহে কাজে॥ বিষ্ণুকে জিনিঞা তুমি বিক্রমে অপার। রূপেতে জিনিলে তুমি অখিনীকুমার॥ বুদ্ধে বৃহস্পতি জিনি সুৰ্যো জিনি তেজে। किनित्न मधुत्र बादक हेक दिनवतारक ॥

ধৈর্ঘ্যে পৃথিবী জিনি গতি জে সাগর। তোমা জিনি নাহি আর পৃথিবী ঈশ্বর ॥ স্বর্গের অমৃত তুমি আইলে সংসারে। পৃথিবীর জত লোক তরাবার তরে। বৈতালিক পাঠ পড়ে স্থনিতে স্থসার।৫ অস্তঃপুর হৈতে রাম হৈলা আগুলার॥ স্থনিয়া ধাইল তথা কত কত চেড়ি। বসিতে আনিঞা দিল গুৱাকের পাটী॥ জল আনে সহস্রেক স্কুবর্ণ কলদে। তাহে সান করিআ ভূষিত কৈল বেশে ॥১০ সেবকে আনিঞা পট্ট বসন জোগায়। স্থরতি চন্দন মাল্য আরোপিল গায়॥ পিতৃ পিতামহে যজ্ঞ কৈল জেই ঘরে। সেই ঘরে সাস্তাইলা যক্ত করিবারে॥ যজ্ঞ সাঙ্গ করি পুরোহিতে পুরস্করে।১৫ পূর্ব স্থান গেলেন দেয়ান করিবারে॥ চন্দনে ভূষিত রাম গাঁৱে আমোদিত। কুগুল কেউর শিরে মুকুটভূষিত॥ রত্বের অঙ্গুরী করে বলআ অঙ্গদ। পাটনেত নানা বস্ত্র রাজপরিচ্ছদ ॥২০ রাজকার্য্যে বৈদে রাম পূর্ব্ব সিংহাসনে। বশিষ্ঠ আদি মুনি বৈদে রাম সন্নিধানে॥ ভরত লক্ষণ আর বীর শক্রঘন। माथा लाङािकका देवरम छाइ जिन कन ॥ বসিলা বানর সব হেমের আসনে।২৫ বিভীষণ বদিলেন পাত্র চারিজনে।। কুলীন ব্রাহ্মণ বৈদে শাস্ত্রেতে পণ্ডিত। অস্তরঙ্গ বহিরন্ধ বৈদে চারি ভিত্।

(050)

(860)

ইক্র জেন বসিলেন দেবতা বেষ্টিত।
স্থাবংশে রাম রাজা জগতে পূজিত॥
রাজাচিন্তা শাস্ত্রচিন্তা প্রন্তাব বিস্তর।
কেন মতে সভা খণ্ডে বৈনে নরেশ্বর॥
দানভোগ অভিলাষ প্রজার পালন।
নৈতি নিতি করে রাম রঘুর নন্দন॥
কবিত্রের সাগর পণ্ডিত ক্লব্রিবাস।
স্থানিলে রামের গুণ পাপের বিনাশ॥

খণ্ডর মাতৃল বন্ধু নুপতির শালা। অন্তরঙ্গ বহিরঙ্গ রাম দেখিতে মেলা॥১০ রাজভোগ ভুঞ্জাইল উত্তম কাহিনী। দেশে যাইবারে রামে মাগেন মেলানি॥ দেখিতে জনক আল্য হহিতা জামাতা। তাঁহার চরণে রাম নতু কৈল মাথা॥ চৌদ্দ বংসর বই রাম দেখে সর্বলোক।১৫ তোমা দেখি পাদরিল যত হঃখ শোক॥ তোমার দম্বন্ধে রাজা তিন লোক স্থথী। তোমাকে দেখিআ মোর জুড়াইল আঁখি। হাতী ঘোডা পালে পাল অনেক ভাণ্ডার। খণ্ডরের স্থানে দিআ মাগে পরিহার ॥২• জনক বলেন আমি হইলাঙ বড় স্থা। এত ধন মোরে দিলে কোন কার্য্য লেখি॥ দান পাঞা তোমাকে পুনশ্চ দিল দান। লক্ষ্মী কভু না ছাড়া যাব তোমার স্থান। লড়িল্ল জনক রাজা ত্বরিত গমনে।২৫ অমুব্রজি ভরত চলিলা তার সনে॥

কিক্স রাজার পুত্র মাগিল মেলানি। জোড হাতে রাম তারে বলে প্রিয় বাণী। পরম গর্ব্বিত তুমি পিতার সমান। চারি ভাই দাঁড়াইল তার সন্মিধান॥ বুদ্ধ বাপ তোমার মুরিব হায় বাসে।৫ মেলানি দিলাঙ জাহ পরম হরিষে॥ হাতী ঘোড়া দিলেন অনেকবিধ ধন। লক্ষণেরে দিলেন অমুত্রজের কারণ॥ য়ুধাজিত তুষ্ট তোমাদের সনে। অভিলাষ নাহি কিছু তোমা ধনে ॥১০ পুনর্বার দিলাঙ তোমাকে আমি দানে। হর্ষিতে নিজ দেশে করিলা গমনে॥ বারাণসী রাজা আর সিংহল নূপতি। তাহাকে মেলানি দিল করিয়া বিনতি॥ অনেক ভাগুার দিল ঘোড়া হাতী ধন।১৫ হাত প্রসারিয়া রাম দিল আলিঙ্গন ॥ আর জত রাজা রামে কৈল নুমস্কার। ঘোডা হাতী সবাকারে দিলেন অপার॥ কালিঙ্গ নুপতি লড়িল শশী বিন্দু। মগধের রাজা লড়ে নামে জরাসিকু॥२• বিশ্বাবস্থ রাজা লড়ে বিদর্ভনূপতি। লড়িলা গগনসিন্ধু ভোজ অধিপতি॥ থল চিলার রাজা লড়িল থলজাতি। দশর্থ স্থা লড়ে লোমপাদ মতি॥ কাঞ্চনপুরীর রাজা লড়ে সনাতন।২৫ কলিকের রাজা লড়ে স্থবংশ বর্দ্ধন ॥ কালজিহার রাজা জেন লড়িল বীরবর। পৌলব দেশের রাজা লড়ে শনীধর॥

(D(C)

(७५७)

শরভঙ্গের রাজা সে লড়িল স্থরদণ্ড। পাঞ্চালের রাজা লডে তেজের প্রচণ্ড।। চণ্ডালের রাজা লডে মগধ সমান। সিংহল দেশের রাজা জীমতবাহন ॥ চলঙ্গার রাজা লড়ে দঙ্গে শত দারা।৫ কাঞ্চনপুরের রাজা লড়ে পূর্বশিরা॥ সভাকারে রামচন্দ্র কৈল পুরস্কার। হাতী ঘোড়া ধন দিলা অনেক ভাণ্ডার॥ আস্তা ছিলা জত রাজা রাম দেখিবারে। একু ঠাঞি ছিলা সভে অযোধ্যানগরে ॥১ রাম বলে স্থন ভাই জত নুপবরে। ভাই সম তোমা সভা ধরিল অন্তরে॥ তোমাদের অমুভাবে আমার কল্যাণ। মহাকুলে জন্ম সভার মহাবলবান॥ রাজা সব বলে মোর শ্লাঘ্য জীবন।১৫ তোমার বদনে জার প্রশংসা বচন॥ থাকিতে তোমার সঙ্গে অনুক্ষণ চাহি। তোমার কুশল সভে প্রাণ সত্ত্বে বহি॥ লড়িলা রাজা সব করিয়া মেলানি। পথে জাত্যে কথা কহে আপনা আপনি॥২• ভরত রাধিআ রাম আমা সভা চাই। রাবণের সনে যুদ্ধ মোরা নাহি পাই॥ বানরের বিক্রমেতে রামের কল্যাণ। সভা মাঝে আমা সভার করিল বাথান। না মারি রাক্ষসনেনা নাহি করি হিত।২৫ রাম ঠাঞি যশ পাল্য সংসারে পূজিত॥ রাজাগণ বলে যদি জাইতাঙ সাথে। দেখিতাঙ সমর রাবণ রঘুনাথে॥

জাইও জাঙ্গাল দিআ সিন্ধু মাঝে তরি। রামের প্রসাদে তথা কার শক্তে মারি॥ পথে এত রাজাগণ করি অনুমান। পৃথিবীর রাজা গেল জার জেই স্থান। আপনার ঘরে গেলা হরিষ বদনে।৫ রাম ঠাঞি ঘোডা হাতী পালা রত্ন দানে॥ অমুব্রজ্যা তিন ভাই রাম আল্য ঘরে। নানা দেশের ধনে রাম পুরিলে ভাণ্ডারে॥ নানারত্ব মণি মুক্তা পূরিলে ভাগুরে। সেই ধন দিআ রাম কৈল পুরস্কারে॥১० রাম বলে কপি সব স্থন সাব্ধানে। কালি দিব মেলানি লড়হ বাসা হানে॥ সকল কটক গেলা করিআ মেলানি। রাম রাত্রি নিবড়িল পোহাল্য রজনী॥ বসিলেন রামচন্দ্র রতন সিংহাসনে।১৫ বিভীষণ স্থগ্ৰীৰ আদি বৈদে পাত্ৰগণে ॥ তিন ভাই মেলি রাম কৈলা অনুমান। বিভীষণ স্থগ্ৰীবে দিব কোন দান॥ মুকুট কুণ্ডল দিল বলয় কঙ্কণ। নানা দানে তুষিলা সকল কপিগণ ॥২৫ রাম বলে বিভীষণ রাক্ষ্যের রাজ। তোমার বিক্রমে মোর সিদ্ধ হৈল কাজ। সুগ্রীব রাজাকে রাম দিলা আলিঙ্গন। আপন অঙ্গের দিল কুগুল কঙ্কণ॥ এক উরে বসাইল অঙ্গদ কোঙর।২৫ আর উরু মাঝে থুলা হতুমান স্থলর॥ আপন গলার হই দিল রত্বহার। অনেক দিলেন আর রত্ব অলকার॥

(059)

(924)

नाना वर्ष वञ्च मिन अर्भर विरम्र । হমুমান অঙ্গদের করিল সস্তোষে॥ স্থগ্রীবের হাতে রাম শোঁপে ছই জন। আমা দেখি অঙ্গদের করিবে পালন। দেখিবে পুত্রের সম অঙ্গদ কুমার।৫ আমার সাক্ষাতে মিতা কর অঙ্গাকার॥ কিষ্কিন্ধার রাজা তুমি অঙ্গদ যুবরাজ। জাণুবান স্থাষেণ সাধিলে সব কাজ। বল বৃদ্ধি অনেক অঙ্গদ মহাবীর। পাত্রের ভিতরে হন্ন বড়ই স্বস্থির॥১० তুই বীর যথা তথা যমে ভয় নাহি। দোহার গৌরব রক্ষে তাই আমি চাহি॥ আর জত বীর ছিল সভাথওতলে। একে একে রঘুনাথ সভা কৈল কোলে। জाषुवान ऋरवं कू भूम नील नल 1>6 নানা আভরণে রাম কুরিল উজ্জল। ইন্দ্রজাল দধিগণ বানর কেশরী। প্রমাথি সম্পাতি যোধ সব অধিকারী॥ গয় সে গবাক্ষ আর গন্ধ জে মাদন। দধিমুখ শতবলী রম্ভ সে হুর্জন ॥২० ধূম্র-অক্ষ তেজ বীর্য্য স্থগ্রীবের সালা। শ্বেত অশ্ব চুই বীর স্থ্ঞীবের বালা।। হেমকুট পদ্ম বীর গবয় তপন। লোলাকুড় মহাকাল চন্দন অঞ্জন। একে একে বানরেরে দিলা রথ দান।২৫ তাড় বালা দিলা আর বস্ত্র পরিধান॥ মহেন্দ্র দেবেন্দ্র হুই অজয় অমর। রত্বেতে ভূষিত কৈল তার কলেবর॥

জত জত বানর আছিল সভাতলে। একে একে রামচন্দ্র সভা কৈল কোলে। বিক্রমে বিশাল সভে জন্ম কপিকুলে। এড়াল্য সঙ্কট আমি তোমা সভা বলে॥ ধন্ত হে স্থগ্রীব মিতা তুমি মহারাজ।৫ হেন সব বানরে সাধিলে মোর কাজ। ধন্য ধন্য কপি বিশ্বকর্মার নন্দন। অলজ্যা সাগর বন্দে শতেক যোজন॥ কহিতে না পারি আমি বানরের বাথান। বড় হিত করিলে স্থাসন জামুবান ॥১০ ধন্য ধন্য প্রননন্দন হতুমান। কত বার মরণে দিলেন প্রাণ দান॥ নানাধন নানা বস্তু নানা আভর্ণ। শয়ন ভোজনে স্থাী কৈলা কপিগণ॥ সহস্র বৎসর বঞ্চে রামের সংহতি।১৫ নানা ভোগে তোদে সৈত্য সেনাপতি॥ রাম বলে স্থগ্রীব স্থনহ কপিরাজ। বানর গৌরব রাথ সেই মোর কাজ। বিভীষণ স্থনহ রাক্ষদ অধিকারী। দেব দানব রাক্ষস তোমার সেবাকারী ॥২• যুগে যুগে রাজা কর পরম কল্যাণে। স্থগ্রীব আমারে নাহি পাসরিহ মনে॥ ইহা স্থনি ক্রন্দন উঠিল সভাতলে। প্রণাম করিআ হতুমান কিছু বলে। তোমার চরণে আমি না চাহি মেলানি।২৫ তুমি মোর পিতা মাতা সীতা ঠাকুরাণী। কেন হেন বাক্য বল কমললোচন। তোমানা দেখিলে মোর না রহে জীবন।

(055)

(७२०)

आत विश्व ना विनश् नातिव कारेटि । এত বলি কান্দে বীর পড়িআ ভূমিতে॥ হাতে ধরি তুলি রাম দিল আলিঙ্গন। রাম বলে হতুমান না কর ক্রন্দন॥ যথা তথা থাক হন্তু তুমি মোর প্রাণ।৫ মোর প্রিয় কেহে। নহে তোমার সমান। হাতে হাতে ধরি রাম বলে প্রিয়বাণী। একবার দেখ গিজা জনকজননী॥ কাতর হইআ বীর করেন রোদন। মোছেন আঁথির লোহ কমললোচন ॥১০ হত্তর ক্রন্দন দেখি কান্দে নারায়ণ। ভরত লক্ষণ আর বিরস্বদন॥ ভাদিল। লোচন লোহে দেবরযুমণি। অনেক প্রবোধে তারে দিলেন মেলানী॥ রামের চরণে বীর করি নমস্বার।১৫ সহরে দীতার ঠাঞি কৈলা আগুসার॥ সীতার চরণে গিআ নোঙাইল মাথা। কান্দিতে কান্দিতে হমুমান কহে কথা।। তোমা বই গতি নাহি স্থন জননী। निषय निर्देश ताम पिटलन टमलानी ॥२० বাপ হঞা ঘুচাইল এ নহে ব্যাভার। দশ দিগ্ চাহে আমি সব অন্ধকার॥ নয়ানের লোহে আমি কিছু নাহি দেখি। থাকিব তোমারে সেবি স্থন চক্রমুখি॥ टमवरक पूर्वान जाम स्नत्या ज्ञानी ।२० হাতে দণ্ড কমপুলে হইব সন্যাসী॥ রাম ছাড়া। আমার জীবন রহে কিদে। ছাড়িব পরাণ আমি বত উপবাসে॥

धन जन ठाकूतानी नाहि ठाहि नाती। না চাহি অঞ্জনা মাতা জনককেশরী॥ দীতা বলে বাপু তুমি না কর ক্রন্ন। তোমা লাগি বুঝাইব কমললোচন॥ এত বলি রামের ঠাঞি চলিলেন সীতা। যোড় হাতে কহেন হতুমানের বারতা॥ রাক্ষসের পুরে ছিম্ম বিষম তাড়নে। প্রাণ দান দিল মোরে প্রন্নন্দনে ॥ একা হমুমান মোর কৈল প্রতিকার। তাহার প্রসাদে আমি বাঁচি এক বার ॥১০ তাহার ক্রন্দনে মোর বিদরে পরাণী। রোদন না ছাড়ে মুখে নাহি দেই পানি ॥ রাম বলেন জদি ইবে রাখি হমুমান। সকল বানরের তবে হব অভিমান ॥ এখন বানর সঙ্গে জাহ হন্তুমান।১৫ সভাকে রাথিআ দেশে আশু মোর স্থান॥ রাম বলে মোর কথা রহে জত যুগে। তত দিন স্থথে থাক নাহি কোন রোগে॥ সীতা বলে চক্র সূর্য্য রহে জত দিন। নবগ্ৰহ নক্ষত্ৰ প্ৰবন নহে ক্ষীণ ॥২০ কুর্ম্ম পূর্চে যাবৎ ধরিব মহীভার। জত দিন রাম গুণ ঘূষিব সংসার॥ জত দিন থাকিবেন সপ্তম সাগর। তত দিন হতুমান অজয় অমর॥ नाना तद्य (थठानि भानात त्य गाला। २० **(इन माना मिना एमरी इस्मारने गरन ॥** করে হইতে দিলা দেবী রত্নের অঙ্গুরী। মুকুট কু ওল দিল রত্নময় কাঠি॥

(252)

(७२२)

নানা রত্ন শোভা করে হতুমানের গলে। मन फिक मीश्र करंत (जन मि जला। রত্বহার দানে সীতা তোসে হতুমানে। তারে দান দিলে কার নহে অভিমানে॥ স্থগ্রীব অঙ্গদ বলে তোস হত্নমান।৫ হমুমান হৈতে সভে পাল্য প্রাণ দান॥ সভাকার স্থথ হতুমান পাল্য হার। সোভিছে স্থন্দর যেন তারার পদার॥ জত শ্রম কৈলে বাপ জত কৈলে কাজ। তার মত দান নাহি ভুবনের মাঝ॥১० জেই হার দিল মোরে খণ্ডর ঈশ্বর। হেন হার পর তুমি সর্বাঙ্গে স্থলর॥ করিলে অনেক কাজে পোচ চক্ষের পানি একবার রাম ঠাঞি মাগ্র মেলানি॥ জোড হাতে উঠিয়া দাঁড়াল্য বিভীষণ।১৫ মেলানী মাগিতে লোহে ভরিল নয়ন॥ মিতে দেখি হেঁট মাথা করিলা বৈদেহী। হন্দমানে সম আজ বিভীষণে কহি॥ বিভীষণ স্থগীবে দিলেন নানাধন। মণি সুক্তা রত্ন দিল প্রবাল কাঞ্চন ॥২০ অনেক প্রয়াস কৈলে মোছ চক্ষুর পানি। রাজ আজ্ঞা হৈল সভে মাগহ মেলানি॥ विजीयन सूधीरव मिलन आनिश्रन। প্রদন্ন বাম দিল নানাধন ॥ রামেরে প্রণাম করি সর্বজন নডে।২৫ অবিরত স্বাকার চক্ষুতে জল পড়ে॥ বিভীষণের গুণ রাম নাহি ছাড়ে। বখন তথন রাম তাই মনে পড়ে॥

মেলানী করিআ চলে রাক্ষস বানর।
অমুব্রজিবারে গেল তিন সহোদর ॥
উচ্চৈঃস্বরে কান্দে সভে পাইআ মেলানি।
দেখি তিন ভাইর নম্ননে পড়ে পানি ॥
নানা রত্ব বস্ত্র দিলা সুভারে প্রসাদ।
কল মূল দিল জাহে খণ্ডে অবসাদ॥
রামেরে প্রণাম করি লড়ে সর্ক্রবীর।
রাক্ষস বানর হৈলা গড়ের বাহির॥
তিন ভারে বন্দিলেন সর্ক্র সভ্যগণ।
আপন আপন দেশে করিলা গমন॥>
বাটী যাইতে সভে তিন ভাইরে প্রশংসে।
স্থগীব বানর সনে গেলা নিজ দেশে॥
বিভীষণ সৈম্ভ সনে লঙ্কাতে প্রবেশে।
উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাসে॥

রাক্ষণ বানর গেল মান্থবে বেষ্টিতি।১৫
চারি ভাই রাজ্য করে লোক আপ্যায়িতি।
রাম বলেন ভাই সব স্থন সাবধানে।
কুবেরের রথ ছিল রাবণের স্থানে॥
সেই রথ নিল আমি মারি দশাননে।
পাঠাহ পূপাক রথ কুবেরের স্থানে॥২•
হর্জন্ধ রাবণ রাজা হর্জনবেষ্টিত।
হেন জনে মারিআ দেবের কৈল হিত॥
লন্ধাতে আছিল রথ কার বাপে আনি।
জেমতে আনিল রথ কহিবে কাহিনী॥
ভরত রামের বোল নাহি করে আন।২৫
মেলানী করিয়া জান কুবেরের স্থান॥

(৩২৩)

(9 \$ \$)

কুবের দেয়ান করি বস্তাছে কৈলাসে। হেন কালে ভরত গেলেন তার পাসে॥ त्रथ एमथि कूटवत्र कतिन नमकात। রাম রাম স্মোঙরণ করিল তিনবার ॥ ভরত বলেন তুমি স্থন লোকপাল ৷৫ রামের আজ্ঞাতে হেথা আইল সকল।। ত্রীরাম আনিল রথ মারিআ রাবণে। পাঠান্য ভোমার রথ ভোমা সন্নিধানে॥ কুবের বলেন তুমি চিন্ত মোর হিত। রথ লয়া রাম ঠাই চলহ ছরিত ॥১০ कृत्वक वर्णन तथ स्न त्यांत कथा। ছরিতে লড় প্রভু রাম আছে যথা॥ হৰ্জন রাবণ রাজা বিক্রমে পূজিত। হেন জন মারা গেল আমি হরসিত॥ লকাতে আছিল রথ কার বাপে আনি।১৫ জে আনিল তার কাছে লড়হ এখনি॥ এখন তোমাতে মোর নাহি কোন কাজ। ব্রীরামের সেবা কর তিনি তোমার রাজ। আমার বচন রথ না করহ আন। জাবত থাকেন রাম থাক্য তার স্থান ॥২• বাবণ তোমাতে চড়ে স্থনি মোর হংখ। শ্রীরামে বহিআ থাক মোর স্থথ॥ কুবেরের আজ্ঞা রথ লজ্মিতে না পারে। আঁখির নিমিষে গেল অযোধ্যানগরে॥ শীরামের সারথি বলে জুড়ি ছই হাত।২৫ व्यवधान कत्रि इन त्रपूरः एनत नाथ ॥ কুবের পাঠাল্য রথ তোমা বহিবারে। मातित्व भाभिष्ठे ताजा नत्कचत्त ॥

লকাতে আছিল রথ কার বাপে আনি। হইল তোমার রথ শুন রঘুমণি॥ কুবেরের বোলে রথ আলা তোমার স্থান। কোন কার্যা করিব করহ আজ্ঞাদান ॥ রথ বলে তিন লোক নাহি মোর ডর।৫ তোমারে বহিতে পাঠাইল ধনেশ্বর। রাম বলে স্বোঙরণে করিবে উপকার। ধূপ দীপ গন্ধ দিজা কৈল পুরস্কার॥ এত বলি রথে রাম দিলেন মেলানী। জোড হাতে বলেন ভরত প্রিয় বাণী ॥>• সংসার জিনিআ রাম তোমার কাহিনী। নর হঞা কহ প্রভু দেবতার বাণী॥ রাজ্যে উপহত নাহি সর্ব্বত্রে কল্যাণ। অদ্ভুত দেখিআ লোক করএ বাখান। ভরতের বচনে শ্রীরাম হৈল স্বখী।১৫ নানা কেলি করে রাম নিঞা চক্রমুখী !! রাম বলেন অশোক বন দেখিতে স্থলর। বিশ্বকর্মা নির্মাইল লঙ্কার ভিতর ॥ সভাকার স্ত্রী নিঞা রাবণ কেলি করে। দশ মাস ছিল সীতা অশোক ভিতরে ॥২০ সে অশোক নির্মাণ সীতা করহ বিরলে। তুমি আমি কেলি করি অশোকের তলে॥ নানা মিত্যা জানে বিশ্বকর্মার সমান। করিল অশোক্বন লক্ষ্মী অধিষ্ঠান॥ স্থলর অশোক বন পাতা লভা দেখি।২৫ কোকিলের কলরব নানাবর্ণে পাখী॥ মণি মুক্তা প্রবালে বান্ধিলা গাছোপতি। ঠাঁই ঠাঁই নির্মাইল সোনার চৌথতি।

(vac)

(৩২৬)

স্তবর্ণের থাট পাট কৈল সিংহাসন। নানারত্র বিরচিত অশোকের বন ॥ বিকশিত চম্পক পারুল নাগকেশর। গন্ধে আমোদিত পুষ্প গুঞ্জরে ভ্রমর॥ मिता मरतात्रत देश्म नित्रमम **ज**न। @ খেত রক্ত নীল পীত তাহাতে কমল। আয় কাঠালে বন লঙ্গ জাতিফল। ছোলঙ্গ কমলা টাবা গুয়া নারিকেল। দাড়িম্ব খেঁজুর লেমু অপরূপ শোভা। নানা জাতি বৃক্ষ তথা কামরাঙ্গা টাবা ॥>• নানা ফুল ফুটে তথা মল্লিকা মালতী। বাগাদনা তুলাল ফুটিছে জাতি জুতি॥ অশোক কিংশুক মালি রঙ্গন সিউলী। याड्ना कमना कुन जूनमी तकमनी॥ বাসক পলাশ আর পালিতা মান্দার 1>৫ কাঞ্চন কবরী কেয়া দেখিতে স্থসার ॥ বকুল কুন্দক তথি মাধবী টগর। লবঙ্গ ছোলঙ্গ বাকসনা নাগেশ্বর॥ ধুতুরা মরুয়া ফুল দেখি মনোহর। ঝাটী ঝুটী কুরুবক ভূষিত ভ্রমর ॥२० পলাশ ছাতেন ফুটে কাঞ্চন ধাধকি। জুঁই জঁই মনোহর স্থন্দর কেতকী॥ नानकु ७ कत्रित्वन विष्ठिव मत्त्रावत् । মণি মুক্তা দিআ বান্ধে দেখিতে স্থলর ॥২৫ সোনার আওআরি কৈল সোনার চোউরি। করিল সোনার খাট পাট দেখি সারিসারি। কবিবাদ পণ্ডিত রাজসভার পূজিত। উত্তরকাণ্ডে গাইল রামায়ণ চরিত॥

অশোকে থাকেন রাম জানকী স্থলরী। রাম সীতা কৌতুকে থেলেন পাশা সারি॥ দাস দাসী আসিআ করিল উন্বর্তন। স্থান করি নেপিলেন স্থগন্ধি চন্দন ॥ স্থবর্ণের ঝারি থাল অশোকের বন।¢ লক্ষীরূপা সীতা তথা করেন রন্ধন ॥ পায়স পিষ্টক অন্ন পঞ্চাশ ব্যঞ্জনে। পদ পাথালিআ রাম বসিলা ভোজনে ॥ কনক ভাজনে সীতা জোগায় ওদন। হেমাসনে বসি রাম করেন ভোজন ॥১০ কপূরি তামুল নিঞা জোগাইল দাসী। দেবের হল্ল ভ ভোগ মানসে বিনাশী ॥ অল্প বয়স কন্তা পরম স্থলরী। রাম সীতার আগে নাচে স্বর্গবিভাধরী 🕸 প্রাতঃস্থান করে রাম অরুণ কিরুণে ISC তুই প্রহর জায় তাঁর পিতৃ তর্পণে॥ শেষ কালে জখন রাম করিতে ভোজনে। রাত্রি কালে জায় তাঁর সীতা সম্ভাষণে ॥ প্রাতঃস্নান করি সীতা করে দেবার্চন। শাশুভী সভার করে চরণ বন্দন ॥২० দিতীয় প্রহর জাএ এই আরাধনে। আর হুই প্রহর জায়ে রামের সেবনে 🕸 এীরামের অন্তঃপুরে আছে বিছাধরী। সীতা ছাড়ি রঘুনাথ না চান অন্ত নারী। ভোজনে শয়নে রহে অশোকের বনে ৷২৫ রাজকার্য্য করে তারা ভাই তিন জুনে॥ পৃথিবীর রাজা আস্যে নিঞা উপহার। ভরত লক্ষণ তারে করে পুরস্কার ॥

(029)

(৩২৮)

कान मिन तामहक आत्मान क्यांता। কেই দেখে কেহো না দেখে জান ততক্ষণে রাত্রি দিন থাকেন রাম অশোক ভিতর। এই রূপে গেল সাত সংখ্যক বংসর॥ এक मिन शिना त्राम आमारकत वरन। १ পাছ গিত্রা সীতা দেবী পুছস্তি বচনে॥ আমি আইশাঙ তুআ নাহি আগুসার। আগু পাছু কর তুমি একোন ব্যাভার॥ সীতা বলে শাশুভী অনেক গুরুজন। তা সভার সেবা করি বন্দিত্ব চরণ ॥১০ রাম বলেন মাতৃগণে করিবে সেবন। সে সব আমার কার্যা সিদ্ধ প্রয়োজন ॥ হাত প্রসারিয়া রাম সীতা নিলা কোলে। trice मधु शान देकन स्वर्धात थारन ॥ নানা বেশ করে সীতা লাজ নাহি করে।১৫ মনে কৈল রঘুনাথে তুষিবার তরে ॥ নানা বেশ করি হৈলা লক্ষ্মীর মূরতি। সীতাকে দেখিআ হৈল রামের পিরিতি ॥ রতিতে তুষিল সীতা বিবিধ বিধানে। নানা কেলি কৈল রাম জানকীর সনে ॥২। कर्णामित्न गर्ड मीला धतिन उम्रत । হাতে ধরি রামচক্র পুছন্তি সাদরে॥ গৰ্ভ হৈলে নানা দ্ৰব্যে হএ অভিলাষ। কোন দ্রব্যে সীত। তুমি করহ প্রকাশ ॥ हेह। स्नि (इंड भूर्थ वरन ठक्कभूथी।२० কোন দ্ৰব্যে সাধ নাহি মৰ্জ্যে জত দেখি। জত মুনি দেখিলাও বনের ভিতর। ফল মূল থান সভে ধর্মেতে তৎপর 🛭

এক দিন প্রভু মোরে দেহত মেলানি। ধনে বল্লে তুসি গিজা মুনির ব্রাহ্মণী। তা সভারে স্থবী কৈলে সর্বত্রে কল্যাণ। এক রাত্রি দেহ মেলানি আমারে দান॥ রাম বলেন কালি জাব মুনি দরসনে।৫ সভাকে তুসিহ গিআ নানা রত্ন দানে। দীতা বলে গঙ্গা তীরে বৈদে মুনিগণে। ফল মূল খাইব মুনির কন্তা সনে॥ বলিবৈশ্ব মুনিগণ করে পিগুদান। হংদে ভাঙ্গি দেই পিও করে থান থান॥>॰ মুনি কন্তা সনে জাই স্নান করিবারে। হংস থেদাডিয়া তাহা থাই গঙ্গাতীরে॥ সত্য করি আস্থাছিত্ব মুনি কন্তা সনে। দেশে গেলে আসিআ করিব সন্তায**ে**॥ আশ্বাসিয়া গেলা রাম ভিতর আওয়াস।১৫ উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্বতিবাস।।

প্রাতঃস্নান কৈল রাম প্রত্যুষ বিহানে।
কনকের সিংহাসনে বসিলা দেয়ানে ॥২•
দেয়ানে বসিলা রাম কমললোচন।
রাম সম্ভাষণে গেলা সব পাত্রগণ॥
বাসব বন্ধন পাত্র ভদ্র সে বিজয়।
স্থমস্ত অশোক পাত্র দত্ত মহাশয়॥
দেশে দেশে স্থনি রাম গুণের কাহিনী।২৫
পাত্রে পাত্রে কথা কহে আপনা আপনি॥
স্থনিক্রা সে সব কথা করি অনুমান।
পাত্রগণে জিজ্ঞাসা করেন ভগবান্॥

(022)

(000)

সব পাত্রগণে রাম পুছস্তি সাদরে। দোষগুণ **কিবা মোর খুসয়ে** সংসারে ॥ পাত্র ভাগ বলেন তোমার গুণ পূজা। সভে যশ ঘোসে জত পৃথিবীর প্রজা॥ বানরগণ সঙ্গে কৈলে সাগরের বন্ধ। ত্রিভূবনে হর্জ্য বধিলে দশস্কন্ধ॥ ভদ্র নামে পাত্র উঠি নোঙাইল মাথা। জে কথা শুনিল রাম কহি সেই কথা॥ ধৈৰ্য্য বীৰ্য্যে প্ৰভু তুমি বৃদ্ধিতে আপন।১০ কোন কাৰ্য্যে লোক জন নাহি করে ছল।। চারি ভাই পরিবার নানা গুণধারী। সবে এক দোষ ভরে বলিতে না পারি॥ সীত। কোলে করিআ হরিল নিশাচর। হেন সীতা নিআ রাম তুমি কর ঘর॥ বলে ছলে তোমার বনিতা নিল পরে।১৫ তাহারে আনিলে তুমি আপনার ঘরে॥ লোকে বলে রাজা হঞা করে অব্যাভার॥ প্রজা হঞা নিতে চাহ রাজার আচার। ঘরেতে বাহিরে প্রভু এই কথা ঘুদি॥ আমি বলিলাম মোরে না করিছ দোষী ॥২০ এত ভদ্ৰ পাত্ৰ যদি কহিল কাহিনী। বিরস হইআ রাম উঠিল আপনি॥ নিদাঘ জ্যৈষ্ঠ মাস প্রচণ্ড তপন। হেঁট মুখে স্নানে জান রাম নারায়ণ॥ একা রামচন্দ্র সঙ্গে নাহিক দোসর।২৫ মানে গেলা আপন বাপের সরোবর॥ পুরুরের চারি পাড়ে পর্বত প্রমাণ। নানা রত্নে বান্ধা তাহাঁ মিশ্রিত পাষাণ॥

এক ধোৰা বস্তু কাচে স্থবর্ণের পাটে। সান করেন রামচক্র নামি পূর্ব্ব ঘাটে। মান করি আপনি গায়ের তোলে পানি। স্থনেন উত্তর ঘাটে ধোবার কাহিনী॥ কহেন অপূর্ব্ব কথা শ্বশুর জামাই।৫ হুইজনে কথা ঘাটে আর কেহে। নাই।। খণ্ডর বলেন স্থন কুলীনের স্থত। ধনে ধনবান তুমি রূপেতে অন্তত ॥ বড় গুণবান্ আছিল তোমার পিতা। তোমারে দিলেন বিভা আমার হুহিতা॥১• মৈল তোর বাপ কারে করিল গোচর। শিশু কলা প্লাইআ আলা মোর ঘর॥ মোর ঘরে গিআ কন্তা ছিল কালি রাতি। মোর ঘরে চল তুমি করি এ কাকুতি॥ নারী জাতি কিবা জানে না লইবে (দাষ। সকল ক্ষেমিআ তারে হইবে সম্ভোষ ॥১৫ এতেক বচন যদি বলিলা শশুর। বোল সন্ধি পাঞা বলে জামাতা নিষ্ঠুর॥ শ্বন্তর হইআ বল লংঘিতে না পারি। क्कां कि नाहि बहेरवक यानित्व (महे नादी ॥ গেলেন তোমার ঘরে নাহিক সংহতি।২• কার ঘরে থাকিআ বঞ্চিলা হঃথ রাতি॥ বড লোক নহি আমি হই অন্ন জাতি। রাম হেন রাজা নহি পৃথিবীর পতি॥ দশমাস ছিল সীতা রাবণের ঘরে।২৫ তারে নিঞা থাকে লোকে নাহি কহে ডরে বড় লোক বলি কেহো বলিতে না পারে। পৃথিবীর রাজা রাম সকল সহরে ॥

(005)

(৩৩২)

অল্প জাতি বলিয়া সভাই দিল ভর। আনিতে নারিব তারে তুমি জাহ ঘর॥ এতেক বচন यमि विनन निष्ठेत। ধর্ম সাক্ষী করি ঘরে নডিল শ্বন্তর॥ দোঁহার বচন স্থান ত্রীরাম বিশ্বিত।৫ জল হৈতে উঠিলেন হৃদয়ে চিস্তিত। য়শ সত্য হৈতে বাপ ত্রিভবন রঞ্জে। পুরুষে পুরুষে রাজা কেহো নাহি গঞ্জে॥ লঙ্কা হৈতে নিল সীতা দেবতার বোলে। ্বিপ্লব্ধি বিশ্ব নীতা ভরি সভাতলে ॥১০ হেন দীতা নিল আমি কুলের পাবনী। সীতা হেন সতীকে বলেন হেন বাণী॥ দেবতার বোলে আনি মানুষেতে দোষে। মানুষের কার্য্য করি জত পরিহাসে॥ সীতা সতী রূপে গুণে কুলের পাবনী।>৫ তার দেহে পাপ নাহি আমি ভালে জানি॥ হেন সীতা নিঞা আমি করি গৃহবাস। দেশে দেশে লোক মোরে করে উপহাস ॥ লোক উপহাস করে কি করিতে পারি। ন্ত্রী লাগিআ দোষ পাই তারে পরিহরি॥২০ উত্তমের লাগে দোষ দৈবের ঘটনে। আর সীতা সনে মোর নাহি দরসনে॥ চৌদ বংসর বলে সীতার হরণে। वि इ: ४ भागा आमि वारभन मनत्। সেই শোক পাসরিল দিন ছইচারি।২৫ আর বার হৈল শোক পাসরিতে নারি॥ জত শোক পড়ে তাহা সহিবারে চাহি। आि रिट्ट ना एम्थिव जानकी रेवरम्ही॥

সীতাসনে আজি হৈতে নাহি সম্ভাষণ। না করিব সীতা সনে শয়ন ভোজন ॥ আজি হৈতে গেল মোর ভোগ অভিলাষ। আর না জাইব আমি সীতার নিবাস # আজি হৈতে দুরে গেল সে স্থখ সন্মান।৫ আর নাহি জাব আমি জানকীর স্থান॥ আনিল ব্রহ্মার বোলে সীতা স্থলক্ষণী। মোর বিশ্বমানে মৈলে ঘুচিত পোড়নি॥ মোর ঘরে পড়ি সীতা জন্ম গেল হ:থে। কভূ কিছু না স্থনিল জানকীর মুখে ॥১० ঘাটে হৈতে উঠে বাম শিরে জল ঝরে। নয়ানের নীর রাম সম্বরিতে নারে॥ সেইরূপে ঘরে গেলা ক্মললোচন। क्षी नरेग्ना कि कत्रिव यम वर्ष्ट्र धन ॥ সীতাকে বৰ্জিব রাম পৃথিবীর ঈশ্বর।১৫ মনে হঃথ ভাবি রাম গেলা নিজ্বর॥ দারীকে ডাকিআ বলে সকরুণ ভাসে। তিন ভাই ডাকিমা আনহ মোর পাশে ॥ স্থনিঞা লক্ষণে দারী করিল প্রণাম। হুই ভারে বলে আশু ডাকেন শ্রীরাম॥२० বিলম্বা কর চল ছরিত গমন। ভরত ঠাকুর আর বীর শক্রমন ॥ রামের আদেশ সভে বন্দিলেন শিরে। তিন ভাই গেলেন ভিতর হয়ারে॥ ক্রতগতি তিন ভাই কৈল আগুসার।২¢ (मिथिञा नकन लारक नार्ग **हमश्का**त्र॥ তিন ভাই দারে রাখি নড়িল হুয়ারী। এক হই বিহন্দ ছাড়ায় বরাবরি ॥

(৩৩৩)

(998)

जिन जारे मक्षम विश्न भात नरह। হেন স্থানে গিআ দারী রামে বার্ত্তা কছে॥ बारीटक विनन बाउँ जान जिन जन। স্থনিঞা চলিল সভে গজেব্ৰ গমন॥ হুই ভাই পশ্চাতে ভরত আগুয়ান।¢ মদন মুরতি সবে রাজ্যের প্রধান॥ রামের নিকটে গিয়া কৈল পুটাঞ্জলি। তিন জনে কৈল তার চরণে সিয়লি॥ মলিন কমল যেন রামের বদন। চক্ষ জলে অঙ্গ তিতে অরুণলোচন ॥১০ রামের করুণা দেখি সভার বিযাদ। তিন ভাই বলে কিবা পড়িল প্রমাদ॥ একে একে তিন জনে কৈল আলিঙ্গন। সভাকারে বসিতে দিলেন সিংহাসন॥ রাম বলে ভাই সব স্থন সাবধানে।১৫ বায়ুরূপী আন চান প্রাণ সর্বক্ষণে॥ তোমা সভে দিল প্রজা করিতে পালন। আমি তপ করিবারে জাব তপোবন ॥ ধর্মেতে তৎপর সভে বিচারে পঞ্জিত। গুরু গর্বিতেরে ভক্তি স্থধর্ম চরিত ॥২০ এত বলি তিন জনে দিলা আলিঙ্গন। তিনজনে বন্দিলেন রামের চরণ॥ রাম বলেন মোর অপযশে বড় ডর। লোকে অপয়শ সয়ে তেজি কলেবর ॥ শীতা দেবী হৈতে লোক গঞ্জে চারিভিতে। হেন দীতাদেবী আমি ছাড়িব কেমতে ॥২৫ त्योर्पा वीर्पाए नहि जीत तक। স্বাপিদ্ধা দীতা হৈল কুলের কলক।

দেবগণ বলিল লক্ষণ বিভাষানে। সীতাকে লক্ষ্য জানে আদি অবসানে।। চক্র সূর্য্য বলে সীতা দেহে নাহি পাপ। দেবতা গন্ধৰ্ব ফফ জানে সব সাপ। সীতার চরিত্র ভাক তোমার গোচর।৫ সীতাকে আনিল ভাই অযোধ্যা নগর॥ সীতা হেন রূপবতী নাহিক সংসারে। বলিতে না পারি সীতা জ্বতগুণ ধরে॥ সত্য হকু মিথ্যা হকু অপষ্শ কহি। বার্থ প্রাণ ধরি আমি হেন কথা সহি॥>• মোর তরে জত লোক অপ্যশ বলে। হেন মন করে মোর সাস্তাই পাতালে ॥ তিন ভাই বট মোর কুলের ভূষণ। অপয়শ হৈলে ছাড়ো তোমা তিনজন। রূপে গুণে মোহিনী সে সীতা চক্ত্রমুখী।১৫ তথাচ ছাডিব সীতা কোন কাৰ্য্যে লেখি 🛭 বিস্তর বলিমা কিছু নাহি প্রয়োজন। সীতারে বলেন রাম বিস্তর বচন ॥ রথে উঠাইআ নেহ স্থমিত্রানন্দন।২০ সীতাকে রাখ নিঞা বালীকির তপোবন ॥ কালি সীতা মোর ঠাঞি মাগিল মেলানি। মুনি দেখিবারে জাবেক রাখ্যাহ আপনি॥ মিথা। অপবাদে মোর পোড়ে কলেবর। না বলিহ কেহো কিছু সীতাকে উত্তর্॥ গর্বিত বলিঞা যদি মোরে কর মনে।২৫ কেহো কিছু না বলিহ সীতার কারণে॥ সীতা লাগি কিছু না বলিহ তিনজন। আমরা ক্ষতিয় জাতি যশ বড ধন॥

(၁၁৫)

(७०७)

দীতার বর্জনে মোর হ:খ নাহি থণ্ড।
দীতার বচন মোরে না বলিহ তুণ্ডে॥
এত বলি কান্দে রাম ঘরের ভিতর।
বিরদ হইআ তিন জনে গেলেন ঘর॥
ক্রন্তিবাদ পণ্ডিতের মধুত্রদ বাণী।৫
স্থানিতে মধুর গীত জগতে বাথানি॥

প্রভাতে লক্ষ্মণ উঠি মুখে দিলা পানি। স্ক্রমন্ত্র সার্থি ডাকি আনিল আপনি ॥১০ শরন মন্দিরে রাম সীতা নাহি আনি। শৃন্ত ঘরে কান্দি প্রভু পোহালা রজনী॥ স্থমন্ত্রেরে ডাকি আ লক্ষণ বীর বলি। রাজার আদেশ হৈল বার্তা নাহি কালি॥ ষ্মীতা দেবী জাবেন মুনির তপোবন।১৫ রথে তুলি নেহ তারে শয়ন অশন॥ তুমি আমি দীতাকে লইব তপোবনে। রথখান আন গিআ ত্রতিগমনে॥ বর্থ সাজি সার্থি আনিল রাজনারে। সীতাকে লক্ষণ গিআ নমস্বার করে॥২• বিলম্ব না কর সীতা লড শুভক্ষণে। রামের আদেশ হৈল জাব তোমা সনে॥ রামের নিষ্ণুর হিমা সীতা নাহি জানে। भूनित्क प्रिथित विन इत्रिष्ठि मन्।। भारकीटक मर्वादत वटन मनद्रथंतांनी ।२६ রামেরে প্রণাম করি মাগিল মেলানি॥ র্থ নিঞা স্থমন্ত গেলেন সন্নিধানে। পাত ২ সীতা দেবি চড গিলা বানে ॥

রথেতে উঠিল সীতা হরষিত মনে। মুনি পত্নী হেতু নিল নানা আভরণে॥ রাজলন্ধী ছাডিআ জান চক্রবদনী। পথে জাইতে অমঙ্গল দেখেন গোসাঞিনী॥ আচম্বিতে হিয়া দোলে ডানি আঁখি নড়ে।৫ ঘন ঘন সীতার গারে সিঞ্চড়া পড়ে॥ অমঙ্গল দেখি সীতা পুছেন লক্ষণে। নানা অমঙ্গল মোরে পড়ে কি কারণে॥ শাশুড়ী সকলে হে তোমরা চারিভাই। চির জীবে রাজ্য কর তাই আমি চাই ॥> ० ভাল ভাল বলিআ লক্ষ্মণ দিল আশা। সেই দিন গোমতীর তীরে কৈল বাসা॥ প্রভাতে গেলেন সবে ভাগীরথীতীরে। লক্ষ্মণ না ধরে প্রাণ হইল অস্থিরে॥ এই গঙ্গাতীরে হবে সীতার বর্জন।১৫ গঙ্গা পানে চাহিআ লক্ষণ অচেতন॥ আচম্বিতে কান্দেন জাঁইতে নিকটে। উভরায়ে কান্দে চাহিআ গঙ্গাঘাটে॥ লক্ষণের ক্রন্দন দেখি সীতার তরাস। প্রবোধিআ দীতা দেবী করেন আখাদ ॥২০ ভ্রাতৃর বংসল তুমি সর্ব্ব অবধান। কোন দোষে রঘুনাথ কৈল অপমান ॥ বীর হঞা কান্দ জেন বালক স্ত্রীজাতি। কি লাগিআ কান্দ মোরে কহ মহামতি॥ वार्षे भाव श्रेषा मुनित्क मित मान। তুসি সব মুনিগণে জাব রাম স্থান॥ পারে জান জানকী পুরুষ নাহি ঠাই। পাটনীর নারীতে আসিআ নৌকা বাই ॥

(PCC)

(400)

র্থ নিঞা দার্থি বহিষ্ম উত্তরকূলে। লক্ষণ জানকী পার সাগরের জলে॥ সোনার বরণ সীতা ননীর পুত্রলী। লক্ষণ প্রণাম করি বলে পুটাঞ্জলি॥ কোন কাজ পাঠাইল রাম অপ্যশ সার।৫ এ দকল হঃথে মৃত্যু না হএ আমার॥ সীতা বলে কেন বল অমঙ্গল বাণী। কেমন প্রমাদ হৈল আমি নাহি জানি॥ ভাইর সবদি লাগে ধর্ম্মের লংঘন। আমাকে না কহ জদি স্বরূপ বচন॥১० হেঁটমুথে লক্ষণ সীতারে নাহি চাহে। গায়ের বসন তিতে নয়ানের লোহে॥ আপনে দেখিল রাম তোমার সাহস। অগ্নি প্রবেশিলে দেবে ঘোসে সেই যশ॥ আপন রাজ্যের লোক জবে বলে আন।১৫ রাজা হঞা কর তার শান্তির বিধান॥ পরম গভীর রাম বড়ই কর্কশ। তোমাকে এড়িল লোক বড়ই অপ্যশ। বান্মীকি তপস্বী মোর জনকের স্থা। তাহার নিকট হবেক তোমার অপেকা॥२० বাল্মীকির তপোবন দেখ বিগুমানে। তোমা তথা এড়ি আমি জাব রামস্থানে॥ পতিব্ৰতা বট তুমি সকলোকে জানে। ভাল মন্দ জেন কিছু না করিহ মনে॥ আমার প্রকৃতি জত তোমার গোচর।২৫ করিএ রামের কার্যা তোমার কিন্ধর ॥ তোমার চরিত্র জত ত্রিভূবনে পূজি। হইলে তোমার কোপ সবংশেতে মজি।

ভূমি পতিব্ৰতা ইহা সৰ্বলোকে জানে। শ্রীরামেরে কোপ কিছু না করিহ মনে।। তোমার চরিত্র সব জানে দেবগণে। তোমাকে বৰ্জিল রাম লোকের কারণে॥ লক্ষণ প্রণাম করে শীতার চরণে।a পায় ধরি লোটাইয়া কান্দেন করুণে॥ চৌদ্দ বৎসর বনবাস হঃথ নাহি লেখি॥ রাজা স্থ বনে গেল স্থন চক্রমুখি॥ রাম তোমা ছাড়িলেন ভাল নহে মন। বনবাদে সেবিলাঙ তোমার চরণ ॥>• জত হঃথ পাইলাঙ শ্রীরামের গুণে। তত হঃথ পাহলাঙ রাবণের রণে॥ অঙ্গ থণ্ড থণ্ড হৈল রক্ত পড়ে সোতে। নির্দিয় নিষ্ঠুর রাম তাহা নাহি চিত্তে॥ লজ্বিলে রামের আজ্ঞা হয়ে বংশনাশ ৷১৫ নহে সেবা করিমা থাকিও তোমার পাশ। না পাঙ সেবিতে তোমা কার হৈল শাপ। মহুষ্য হুংয়া কত দ্ব মনস্তাপ॥ রাজার কুমার হঞা হৈলাঙ তপদী। কভু ফলমূল থাই কভু উপবাদী ॥২• ভরতের সম্পাত বিস্তর ধরি মনে। রাম নাশ রাজ্য নাশ হৈল জার গুণে॥ সে পাপ ভরত ভাই মাত্র নাহি চাহে। চৌদ্দ বংসর বনবাসে তিতে আখি লোহে॥ হেন ধর্মনীল পুত্র না জানে প্রথর।২৫ সেই জনে পড়িল এতেক আথান্তর॥ জাহা হৈতে এতেক সকল জানে রাম। তমু তার মাত্র রাম রাখিণ সন্মান।

(000)

(080)

রামের মানস কার্য্যে বুঝে কোন জনে। কত লাভ পান রাম তোমার বর্জনে॥ লক্ষণের বোলে সীতা লোটার ভূমিতলে। ঝড়ে গাছ ভাঙ্গি যেন পড়ে ডালে মূলে॥ ধৈর্যা করি সীভাকে শক্ষণ বীর ভোলে।৫ শক্ষণেরে দিআ সীতা রামে কিছু বলে। কোন পাপ কৈল আমি জনাজনান্তর। তে कात्रण वर्ल्ड ताम पृथीत ने मत्र॥ क्षी कां जि भाभ करत देनरवत घटन। তেঁই মোরে বজ্জিলেন কমললোচন ॥১০ क्रीक दश्मत्र आष्टिलाङ लाक अपर्नत। কেমনে থাকিব বনে জীরাম বিহনে॥ মুনি সব স্থধাইব তোমা কেন বৰ্জে। ্তাহা সভারে উত্তর দিব কোন লাজে॥ শ্রীরামের গর্ভ আছে আমার উদরে।১৫ তে কারণে নাহি জাঙ পাতাল ভিতরে॥ না লজিৰ ভাইর আজ্ঞা আমি ভাল জানি। আমা লাগি পাবে কেন অপ্যশ কাহিনী। সাস্থড়ী সভাকে মোর জানাবে প্রণতি। ननारि निथन हिन देव गणि॥२• প্রভু রামে জানাবে আমার নমস্বার। প্রজার পালন করি সাসিও সংসার ॥ आभात वर्कान यनि প्रका रु स्थी। আমার বর্জন তবে ভাগ্য করি লেখি॥ পৃথিবী পালুন রাম করুন পৌরুষ।২৫ আমার লাগিআ কেন সহি অপ্যশ। ष्यामाटक विकित्रा इःथ ना ভाविह मत्न। স্ত্রীর তরে হঃখ ভাব তুমি হেন জনে ॥

আমা স্ত্রী এড়িলে যশ ঘোষে সর্বজনে।
ভাগ্য করি মানি আমি আপন বর্জনে।
আমি হেন শত নারী যশ হেতু ছাড়ি।
তাঁর যশ পরিপূর্ণ হব দেশ জুড়ি ॥
জোড় হাতে লক্ষণ করিআ নমস্কার।৫
সীতা প্রদক্ষিণ করি হৈল গঙ্গা পার॥
কাতরে লক্ষণ বীর কান্দে উচৈচঃস্বরে।
কান্দিতে কান্দিতে চড়ে রথের উপরে ॥
উলটী লক্ষণ বীর সীতা পানে চাহে।
কমল শরীর তার তিতে চক্ষ্ লোহে॥১০
কৃত্রিবাদ পণ্ডিত কবিত্বে বিচক্ষণ।
উত্তরকাণ্ডে গান সীতা দেবীর বর্জন ॥

দীতাকে রাথিআ বনে চলিলা লক্ষণ।

সারথিকে কহি জান্ দেবীর কথন ॥

চক্ষ্ জল সম্বরিতে না পারে লক্ষণ।>৫

একেশ্বরী দীতা হেথা করেন ক্রুলন ॥

মাথে হাত কান্দে দীতা বনের ভিতর।

দীতার ক্রুলনে হুংথে বনের পাথর ॥

মৃগ পশুপন্দী কান্দে জীবজন্তগণে।

পাষাণ হইল জল দীতার রোদনে ॥২০

মৃনি বালক ধায় ক্রুলনের স্বরে।

দীতার ক্রুলন দেখি মুনিকে গোচরে ॥

বনে বিদ গোদাকী কান্দিছে এক নারী।

নানারত্ব জলমার স্বর্গবিভাধরী ॥

ধরণী লোটাক্রা কন্সা কান্দে একেশ্বরী ।২৫

বিভ্রনে নাহি হেন প্রম স্কুল্বী ॥

(285)

(७8२)

হাতে পদ্ম গায় পদ্ম লক্ষ্মী মূর্ত্তিমতী। ঘরে আনি পূজা কর এই দে জুকতি॥ ত্রিলোকমোহিনী কলা কি দিব উপমা। ত্রিভবনে জত রূপ নহে তার সীমা। নয়ন খঞ্জন তার দশন মুকুতা। গমন মন্তর যেন জিনি গজমাত। ॥ ভ্রমর জিনিঞা কেশ কবরী বিরাজে। মল্লিকা মালতী জুতি বেড়া তার মাঝে॥ স্থরঙ্গ অধর যেন বান্ধুলীর ফুল। তাহার বদনে চক্র নহে সমতুল॥১० মকর কুণ্ডল শোভা করে, শ্রুতিমূলে। ভ্রমর গুঞ্জরে তার কবরীর ফুলে॥ নাসিকার উপরে শোভে মুকুতার ফল। রবির কিরণে অঙ্গ করে ঝলমল। কণ্ঠে কণ্ঠাবলী গজ মুকুতার হার।১৫ সিঁতির সিন্দুরে তার অরুণপ্রচার॥ কেশরী জিনিঞা মাঝা দেখি অতিক্ষীণ। তাহার সদৃশে দেখি বিধুরে মলিন।। চালের সমান যেন পদন্ধ পাঁতি। সর্বাঞ্চে পদ্মের গন্ধ পদ্মিনীর জাতি ॥২० আসন বসন সব পদ্মের নির্মাণ। গঙ্গার সমীপে কান্দে ঝাপিআ বয়ান। রাম রাম বলি কান্দে ভূমে লোটাইআ। তাহাকে দেখিআ মোরা আইমু ধাইআ॥ আলো করি বসিআছে ভাগীরথীকূলে।২৫ তপোবনে আলো সে তোমার তপোফলে॥ ইলের ইক্রাণী কিবা বিষ্ণুর ঘরণী। মোর সঙ্গে আসি গোসাঞি দেখহ আপনি

रेश स्नि शान कति विमा वासीकि। জানিলেন রামচক্র বর্জিলেন জানকী॥ ठाँत त्वार्ण लक्का ताथिका लिला वरन। এ কারণে বসি সীতা করেন করুণে॥ ধেয়ানে জানিঞা মুনি লড়িলা আপন। দীতা পাত্যাইতে বলে মধুরদ বাণী॥ সর্বা বার্তা জানি আমি তপস্থার বলে। রামচন্দ্র বজ্জিল তোমায় লোক বোলে॥ রাজার বছরী ছিলাম রাজার ঝিয়ারি। রাজমহাদেবী তুমি পতিব্রতা নারী ॥>• তপোবনে জানি তোমার নাহি পাপলে। মোর ঘরে আস্ত তুমি না ভাবিছ ক্লেশ। অনেক মুনির পদ্মী আছে মহা সতী। সতী ২ বলিষা বঞ্চিবে তুমি তথি॥ বুহিনী মায়ের জে সম সব তোমার সহি।১৫ তা সভার সংহতি তোমার তথ কহি॥ আমার ঘরেরে সীতা কর আগুসার। পান্ত অর্ঘ্য লেহ তুমি গৃহ ব্যবহার॥ মুনির বচনে সীতা হৈল নমস্বার। চলিলা মুনির পাছু লক্ষী অবতার ॥২০ আগু জান মুনি পাছু সীতা সতী। বিধাতার পাছু যেন মোহিনী মূরতি॥ আগু মুনি পাছু সীতা গেলা মুনির ঘর। **मिथिवादत भूमि भन्नी आहेगा विखत्र ॥** ভক্তি করি মুনিবর সীতা ঘরে আনি ৷২৫ সীতাকে সঁপিলা যথা আপন ব্ৰাহ্মণী। মুনিকে বন্দিতা ডড়াইল বিভাষান। ইনি কেবা কার নারী কর আজ্ঞাদান।

(080)

(988)

জনক ঞিহার পিতা জননী পৃথিবী।

সীতা নাম ধরে রামের মহাদেবী॥
লোকের কথাতে রাম দিলা বনবাস।
সীতা বেন নাহি পান ভোগ জে পিয়াস॥
এত বলি ব্রাহ্মণীকে বাল্মীকি ব্রার।৫
ভোগ শোষে সীতা যেন কষ্ট নাহি পায়॥
এত বলি ব্রাহ্মণীকে স্থাপিলেন সীতা।
ইহাকে পালিবে জে আপন ছহিতা॥
ম্নিপত্নী চিস্তে তাঁর শয়ন ভোজন।
ব্রত উপবাসে সীতা তোসে ম্নিগণ॥১০
অনেক গুণ বৈসে পণ্ডিত ক্তিবাসে।
উত্তরকাণ্ড গাইল সীতা মুনির বরে বৈসে॥
উত্তরকাণ্ড গাইল সীতা মুনির বরে বৈসে॥

তপোবনে রহে সীতা সন্ধলি ক্রন্দন।
পার ক্লে রথে আসি উঠিলা লক্ষণ॥
কান্দেন লক্ষণ বীর বোধে নাহি থাকে।১৫
তাহার ক্রন্দনে লোহ না সম্বরে লোকে॥
লক্ষণ ভাইর তরে কান্দে উচ্চস্বরে।
একা ভাই ত্রিভূবন জিনিবারে পারে॥
ত্রিভূবনে হেন নাহি রামচক্রে জিনে।
হেন ভাই হঃথ পান দৈবের কারণে॥২০
রূপে গুণে যৌবনে স্কুন্দর সীতা সতী।
অধিশুদ্ধ দেবী তার পাপে নাহি মতি॥
অবিচারে হঃথ পাই স্থমন্ত্র সার্থি।
লোকের বোলে বর্জিলেন সীতা হেন সতী॥
বনবাসে হঃথ পাইল চৌদ্দ বৎসর।২৫
হেন সীতা বর্জে রাম স্থনিতে হন্ধর॥

দীতা হেন সতী নাহি সংসার ভিতর। হেন সীতা বর্জে রঘুবংশের ঈশ্বর ॥ মোরা চারি ভাই আর পাত্র পরিজন। দীতার বর্জন পাপে মজে সর্বজন॥ অযোনিসম্ভবা সীতা দেবগণে পূজে।৫ হেন সীতা দেখি রাম কোন দোষে তেজে স্থমন্ত্র বলেন তুমি স্থির কর মতি। পূর্ব্বের বুত্তাস্ত কহি কর অবগতি॥ সীতার বর্জনে কেন কান্দিছ লক্ষণ। কথো দিন বই তোমা করিব বর্জন॥১० গেলেন তোমার বাপ তুর্বাসার ঘরে। মুনিকে দেখিআ তার হরিস বিস্তর॥ মুনির চরণ বন্দে করিআ ভকতি। পুছিলেন দশর্থ আপনার গতি ॥ মুনি বলে তোমার বয়েস অবশেষে।১৫ চারি পুত্র তোমার জন্মিবে বিষ্ণু অংশে॥ রাম লক্ষণ ভরত শত্রুর নামে। ভূবনবিজয় হব জাহার সংগ্রামে॥ এগার সহস্র কাল তাহার জীবন। একক জনার হব ছুইটা নন্দন ॥২০ দীতা নামে হইবেক রামের স্থলরী। লোক অপ্যশে রাম বর্জিবেন নারী। লক্ষণ নামেতে ভাই প্রাণের সোসর। তাহারে বর্জিবেন রাম কথো দিন পর॥ দেবতা ব্ৰাহ্মণগণ তুসিবেন দানে ৷২৫ ব্রন্ধলোকে জয় রাম দেহ অবসানে॥ এত স্থান দশরথ হরিস বিষাদ। কারে না বলিহ তুমি এ সব স্থাদ ॥

(984)

(৩৪৬)

এতকাল নাহি লংঘি রাজার বচন। সহিতে নারিল আজি তোমার ক্রন্সন॥ কারে নাহি কহিবে রাজার সত্য ভাঙ্গে। এত কালে এত কথা হইল তোমা সঙ্গে॥ হইবে দীতার গর্ভে হুইটা কোঙর ic সেই হুই রাজা হব অযোধ্যা উপর॥ ইহ। বই অন্ত রাজা নহিব নূপতি। কেন হঃথ ভাব লক্ষণ সব দৈব গতি॥ সীতার নন্দন রাজা তোমার বর্জন। লক্ষণ স্থানহ কথা শম্বর ক্রেন্সন ॥১० কথা কঞা জান দোঁহে বেলা অবসানে। সেই দিন বাসা করি রহে ছই জনে ॥ প্রভাতে উঠিয়া দোহে চড়ি পুষ্পরথে। দিতীয় প্রহর কালে গেলা অযোধ্যাতে॥ রথ খান সার্থি লক্ষ্ণ থুঞা দ্বারে।১৫ একলা গেলেন বীর বাড়ীর ভিতরে॥ দার ছাড়ি গুয়ারী হইলা একভিত। পরাণে বিকল বীর শোকে অসম্বিত ॥ সীতারে রাখিল বলে রামের পরাণ। কেমনে ভাঞাব গিআ তার সন্নিধান ॥২০ শ্রীরামের পায়ে গিজা পডিলা লক্ষণ। লক্ষণে দেখিআ রাম জুড়িল ক্রন্দন।। ছই ভাই কান্দে আর কেহো নাহি পাশে। হেঁট মাথা করি বীর জীরামে সম্ভাবে ॥ তোমার আদেশে সীতা দিলু বনবাস।২৫ স্থথে রাজ্য কর লোকে নাহি করি প্রকাশ এড়িলে লোকের বোলে সীতা হেন সতী। তুমি আমি কান্দি আর কার নাহি মতি॥

লক্ষণ বলে শোক ত্যজ না হও চঞ্চল।
তুমি স্কৃষ্থ হও গোসাঞি না হও বিকল।
বড় লাজে এড় সীতা লোকে করি ডর।
কোন জন ইহা করে সংসার ভিতর॥
তুমি স্কৃষ্থ হৈলে সর্কা লোকের স্কৃষ্থির।
তোমার অন্থিরে হব সভার অন্থির॥
লক্ষণের বচনে প্রবোধ গেলা চিতে।
শোক মোহ ছাড়ি রাম রহে ভাল মতে
কৃত্তিবাস পণ্ডিত সে কবিত্বে চতুর।
উত্তরকাণ্ড গাইল শুনিতে মধুর॥>•

রাম বলে হেন বোল বলে কোনজনে। তোমার প্রবোধে শোক তেজিলাঙ মনে ম তিনদিন অস্থু তেজিআ দেবী সীতা। তিন দিন রাজকার্য্য নাহি মোর চিন্তা॥ বসিব দেয়ান সালে যথা নিতাবসি।১৫ পাত্র মিত্র প্রজা আন মুনি আর ঋষি # সৰ্বজনে আন জতেক বন্ধুগণ। রাজা ঠাঁই জাহার আছএ প্রয়োজন॥ রাজা হঞা রাজকার্য্য নাহি বাঞ্চে লোক। যমন্বরে গিআ সেই পাঠএ নরক ॥২০ नृश नारम ताका हिन धर्मनीन माछा। ব্ৰাহ্মণে আদেশ হঞা পাইল অবস্থা॥ ব্ৰান্ধণে দিলেন দান গাভী কোটি কোটি। আর পালে মিশাইল ধেমু এক ওটি॥ পালের মিসালে এক দ্বিজে দিলা দান ৷২৫ গরু নিঞা জায় খিজ আপনার স্থান॥

(989)

(984)

রিমায়ণ।

ভিক্ষক ব্রাহ্মণ তার অগ্নিবেশ্র নামে। গাভী হারাই আ দিজ বুলে গ্রামে গ্রামে ॥ ছগ্নের অভাবে সেই বিপ্র ভোগে মরে। গাভী লাগি গেলা দ্বিজ্ব ভিক্ষুর নগরে॥ बान्न बर्लन गांडी आहेम शामनी। ব্রাহ্মণের ডাক শুনি গাভী উত্তরোলী॥ ব্রাহ্মণের ডাকে গাভী ধার অনুসারে। জার গাই সেই ধার রহবার তরে॥ পুষর তীর্থকে গেলা নুগ রাজা স্থানে। এক ৰিপ্ৰ বলে আগে মোরে দিলে দানে॥ আর জন বলে গাভী মোরে দিবে দানে।১০ দেই গাভী আমার লইব কেবা আনে॥ মোর প্রতিগ্রহ কেন লবে অন্ত জনে। ক্লহ করিআ চলে নুগরাজা স্থানে॥ বাজা বলে বাদ ভাঙ্গি জে জন লেউটে।১৫ একশত গাভী দিব উহার পালটে॥ প্ৰৰোধ না মানে কেহ অতি কোপমন। কন্দলি না ভাঙ্গে রাজা করিলা গমন॥ ছুই দ্বিজ বলে রাজা হবে কেঁকলাশ। ব্রহ্মশাপ শুনি রাজা হইল তরাস ॥২० পুত্রে দণ্ড দিআ রাজা করিল নূপতি। রাজা হঞা কান্দে দেখি বাপের হুর্গতি॥ আওয়াস স্থলর কৈল কাটার আদাড়। প্রাচীর বিহন্দ সাত পাথর আথাড়॥ কলমূল থুইল তথি স্থমধুর বাস।২৫ জে সৰ আহারে তুষ্ট হয় কেঁকলাশ।। সিতের স্থলুক কৈল পথের ভিতরে। উপরে করিল টুঙ্গি বার্ডাদের তরে॥

বরিসা বঞ্চনে কৈল স্থলন্থ স্থমঞে। কেঁকলাশ হঞা রাজা ব্রহ্মশাপে বঞ্চে॥ দাপর নিবডি হবে করিল প্রচার। যতুবংশে উপজিব কৃষ্ণ অবতার॥ মহামুনি বশিষ্ঠ বংশের পুরোহিত।৫ তপের তপস্বী তেহো পরম পঞ্চিত॥ ভারত পুরাণ বাখানিব মহামতি। ক্ষীণকুরুবংশে তার হইব সম্ভতি॥ ভারত পুরাণ হব তাহাতে উৎপতি। হইবে আমার বংশ তাহার সংহতি ॥১০ যছকংশে নারায়ণ কুরুবংশে নর। নর্নারায়ণ হব কলির ভিতর ॥ খণ্ডিৰ নুগের পাপ তাহা দরশনে। ব্ৰহ্মশাপ পড়ি আছে থাক সাবধানে ॥ ব্রহ্মশাপে নুগরাজা হৈল কেঁকলাশ।১৫ উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত কৃত্তিবাস॥

স্থনিতে রামের কথা লক্ষণের বন্দ।
প্রীরাম কহেন কথা বিচিত্র প্রবন্ধ।
নিমি নামে রাজা হৈল ইক্ষাকুনন্দন।
যক্ত হেডু আনিল উত্তম মুনিজন॥২০
আনিল বশিষ্ঠ মুনি করি আমন্ত্রণ।
ইক্র যক্তহেতু তোমা করমে বরণ॥
বিশ্বুমন্ত্রে যক্ত কৈল মহল্র বংসর।
গোতমে লইআ যক্ত করে নিরস্তর॥
যক্ত হেডু বশিষ্ঠ নিমির আলা ঘর।
গোতমে দেখিতা যক্তে কোপে মুনিবর

(480)

(000)

নিদ্রা জান নিমিরাজা আপনার স্থথে। রাজারে না দেখি বিপ্র মরিছেন ভোথে॥ ভোথে মরে দিজ নাহি রাজার সম্ভাষ। শাপ দিল রাজা তোর হকু বংশ নাশ। নিদ্রা হৈতে উঠে রাজা ব্রহ্মশাপ স্থনে।**৫** নিদ্রে অচেতন মোরে সাপে কোন জনে॥ বারি হঞা গেলা রাজা বশিষ্ঠের স্থান। নিদ্রে শাপ দিলে হে তোমার কিবা জ্ঞান॥ বিনি অপরাধেতে শপিআ বল কোপে। তোমার শরীর নষ্ট হকু মোর শাপে॥১० রাজভূত হইআ বেড়ায় অন্তরীকে। ঘরে দ্বারে না থাকিবে সবে গাছ লকে॥ ष्ट्रे जनात (मरू श्रुष्ट्रि तूल अश्रतीरक। শাপ অগ্নি পুড়িআ বেড়ায় রুক্ষে রুক্ষে॥ সম্বন্ধেতে বাপ হএ বন্ধ পদ্মযোনি।১৫ তাঁর পায় বলেন বশিষ্ঠ মহামুনি॥ নিমির শাপেতে আমি অশরীরে বুলি। কোনজনে তারিবে উপায় দেহ বলি॥ বশিষ্ঠের বোলে ব্রহ্মা বলেন বচন। মোর বলে স্থন তুমি দেহের ধারণ ॥২০ মিত্রাবরুণ এক ঘরে করিবে প্রবেশ। অঘোনিসম্ভবা তথা হবে উপদেশ।। ব্রহ্মার বচনে গেলা বরুণের পাশ। মিত্রাবরুণ তথা হৈল এক বাস। স্থি সনে উর্বসী আইলা বেড়াবারে।২৫ বরুণ বেওসে তারে শুঙ্গারের তরে॥ উর্বসী বলেন মোর এই সে সন্মতি। মিত্র এড়ি অন্তে ভজি নহেত জুকতি॥

বরুণ বলেন রতি দেহ লো স্থন্রি। তোমারে বইআ আমি রতি কেলি করি # তুমি আমি না হইবে শরীর সংযোগ। তোর দেহে মিত্রমুনি করেন সংভোগ॥ पृत्त थाकि উर्क्सनीटकं पिन आनिश्रम Ic কাপড়ে ঘুচাইআ অঙ্গ করে দরশন॥ আলিঙ্গন দিআ কলসীতে জল ভরে। বীর্য্য খসি পড়ে সেই কুম্বের ভিতরে॥ ভাবেতে শৃঙ্গার করি গেলা মিত্র পাশে। উর্বসী দেখিয়া মিত্র বিষ ছেন বাসে ॥১০ ভাবেতে শৃঙ্গার তুমি কৈলা কার সনে। অপবিত্র দেহ নিআ আস্ত কি কারণে॥ দেবলোকে শৃঙ্গার তোমার নাহি বাসে। মোর শাপে তোর দেহ পরশে মামুষে॥ वृद्धित नक्तन स्मेर वित्रान स्म देवरम ।১৫ তার সনে রতি হৈল কতক দিবসে॥ আয়ু নামে বড় পুত্র ধরিল উদরে। নহুষ তাহার পুত্র বিদিত সংসারে॥ বুত্রাস্থরে ধরি ইক্র কৈল তার নাশ। নচ্য হইআ ইন্দ্ৰ কৈল স্বৰ্গবাস ॥২০ যযাতি নহুষম্বত ধরা অধিকারী। দেবধানি তার নারী শুক্রের কুমারী ॥ শর্মিষ্ঠা স্থভগা দৈত্যের নন্দিনী। পুরু নামে পুত্র তার সর্ব্ব অবধানি॥ यञ्च नात्म (कार्ष्ठ (प्रविधानित नक्तन ।२६) পিতৃ অপমানে মায়ে পোত্রের ক্রন্দন।। যত্ বলে জন্ম নিল ভার্গবের কুলে। অপমান না সব মরিব গিঞা জলে।

(565)

(002)

তুমি হঃথ পাও মাতা লোক পরিহাসে। আজ্ঞা কর মরি আমি অগ্নির প্রবেশে॥ পুত্রের ক্রন্দনে দেব্যানি পাঞা তাপ। मत्ना इः एथ एमत्यानि त्या ७ ति वाश ॥ ভক্ত আসি পুছে ঝিএ ইংথের কারণ।৫ দেব্যানি বলে বাপা মাগিএ মরণ॥ অগ্নি প্রবেশিব কিবা বিষের ভক্ষণে। মরণ সময় হৈল তেজিব জীবনে॥ স্বামী হঞা করে মোর এত অপমান। মাত্র পোত্র মরিব করহ সলিধান॥>• যবাতির ঠাই শুক্র গেল। মহাকোপে। বুদ্ধ হও য্যাতি আমার অভিশাপে ॥ যমাতিরে বৃদ্ধ করি শুক্র গেলা ঘরে। পুত্রে ডাকি আনে রাজা জরা দিবাতরে॥ জ্যেষ্ঠ পুত্র যতু তুমি ধর্ম্মের চরিত্র ৷১৫ যুবা লহ জরা তুমি লেহ কর মোর হিত॥ সহস্র বংসর ভূঞ্জি তোমার যৌবনে। ভোগাইলে জরা নিবে দেহ অবদানে॥ यइ वरन (कार्ष्ठ भूज ना देकरन ममान। वार्कका (मवात कार्त (भारत जा खरान ॥२० রাজা বলে পুত্র হঞা বল বিপরীত। পুত্র নইসি বেটা তোর রাম্স চরিত্র॥ অর আয়ু হবি কুলে নাহি তোর বশ। তোর বংশে পুত্র হব অধিক কর্কশ।। श्रुक्रक वर्णन ताजा प्रश्रुत योवन ।२० স্থনি পুরুবলে ধন্ত তোমার জীবন। দীর্ঘ আয়ু বলি রাজা পুরুকে প্রশংসে। সহত্র বৎসর তার যৌবন বিলসে॥

তার পর পুরুর যৌবন স্থবি ধার। পুত্রে রাজ্য দিব্সা গেলা স্বর্গের হুয়ার॥ অনেক গুণ ধরে যে ক্বন্তিবাস পণ্ডিত। উত্তরকাণ্ডে গাঞা দিল য্যাতি চরিত

বরুণের বীর্যাভরে পানীর কলসী।৫ আগে তাহা জিমিলা অগন্তা মহাধাৰি॥ মিত্র মুনির তেজ স্মাগে ধরিলা উর্ব্বসী। তুই বীৰ্য্যে জন্মিল অগস্ত্য নামে ঋষি॥ বশিষ্ঠ হইলা সেই কলস ভিতরে। পুরোহিত করিল ইক্ষাকু নূপবরে ॥১০ বশিষ্ঠের তথা হৈল দেহের বারণ। পুরোহিত বলি কৈল ইক্ষাকু বরণ॥ নিমি রাজা প্রাণ ছাড়ে বৃশিষ্ঠের শাপে। মুনি পুত্র জিমাইল মৃদ্রের প্রভাবে॥ গৌতম করেন যজ্ঞ নিমি রাজা স্থানে।১৫ বজ্ঞ ভাগ লইতে আইল দেবগণে॥ শাস্ত্রমত যজ্ঞ করে হৈল অবসান। দেবগণ বলে নিমি মাগ বর দান॥ निभिवतन यमि वत मितव (मवशत। নিমিষ হইআ থাকি লোকের নয়নে ॥২০ শরীর ধরিলে আছে অবশু মরণ। প্রাণ সনে শরীর ছাড়িব কি কারণ। পুনরপি থাকি মুঞি লোকের নয়ানে। व्याथित निमिष व्यामि (एव वत मान्त ॥ वत मिया रशत्मन मकन (मवशर्ग।२६, निभिष रहेका निभि तहिला नगरन ॥

(000)

(008)

মড়া দেহ নিমির সকল খুনি মথি। মন্ত্ৰ যজ্ঞ হৈতে পুত্ৰ উপজিল তথি॥ মথনে জন্মিল সে মিথিল। নাম ধরে। भिथिन। विनया ताका रहेन मःमादत ॥ অযোনিসম্ভব দেব জনকপ্রবর।৫ দেহ হৈতে হইল বিদেহ নাম তার॥ বিদেহের বংশেতে জনক রাজঋষি। তেঞি সে বৈদেহী বলি সীতা নাম ঘুসি॥ অন্তঃপুরে হুই ভাই কহন্তি কাহিনী। প্রভাতে করিলা স্নান নানা তীর্থ পানী ॥১৫ দেয়ানে বদিলা রাম মুনির বেষ্টিত। ইক্র আদি দেবগণ সভার পূজিত॥ রাম বলে বারি হঞা জানহ লক্ষণ। রাজকার্য্য কার আছে আস্কুক এখন॥ এত স্থানি লক্ষণ বাহির হঞা পুছে।১৫ রাজার গোচরে চল রাজকার্য্য আছে॥ লোক বলে হঃখ নাঁহি আছি মহাস্কথে। রাজার গোচরে মোরা জাব কোনু হঃথে॥ লক্ষণে রামের ঠাঞি করিলা গোচর। शृष्टिल मकल लाकि नो शाना छेखत ॥२० পাত্র মিত্র রাজকার্য্য করে চারি ভিতে। বাহির হঞা লক্ষণ জানেন ভাল মতে॥ রাম বলে দেয়ান জানি আমি জাই ঘর। জার জেই কার্য্য তাহা করহ গোচর॥ বারে বারে পুছি রাম নাপান উত্তর।২৫ সবাকে বিদায় দিআ জান রাম ঘর॥ ক্বন্তিবাদ পণ্ডিত দে কবিত্বে দাগর। লক্ষণে ভুয়ারে রাখি রাম গেলা ঘর॥

ধর্ম কার্যা করে রাম লোকে হিতকারী। লোক হিত লাগিমা ভাইকে কৈল দারী॥ ছয়ারে লক্ষণ রহে স্থমিত্রানন্দন। ভাল মন্দ আইলে জানেন ততক্ষণ॥ দ্বীপ দ্বীপাস্তরে জত বৈসে গঙ্গাকুলে।¢ রাম হেন রাজা নাঞি সর্বলোকে বলে ॥ হেনই রামের গুন কহিতে না পারি। ভাই ভাই মিলি রাম স্থথে রাজ্য করি॥ সিক্লার্থ নামেতে দ্বিজ অযোধ্যাতে বৈদে। দেবার্চন করিতে বিপ্র শীঘ্রগতি আইসে॥ শীঘ্ৰ ধাইয়া আইসে সিদ্ধাৰ্থ নামে ওঝা।১০ হাতেতে খনতী বাড়ী মাথে কুশের বোঝা॥ দেবার্চ্চন হেতু বিপ্র আদে আন্তে ব্যস্তে। একটি কুকুর স্থ্যা আছে রাজপথে॥ পথে সুআ কুকুরের বিবিধ বিলাপ। মনে মনে চিস্তা করে আপনার তাপ ॥১৫ পর মন্দ না কৈল না কৈল ডাকা চুরি। কোন অপরাধেতে কুকুর হঞা মরি॥ এতে চিন্তি কুকুর রহে মনো ছথে। ঘন ঘন ত্রাঙ্গণ কুকুর বলি ডাকে ॥২০ দেবার্চার বেলা মোর হইল উচ্ছুর। ঝাট পথ ছাড়ি দেহ স্থন হে কুকুর॥ উলট্যা জাইতে বাড়ি হুই দিকে থাল। কেমনে জাইব তাহে কটক বিশাল॥ ব্যথাতে পীড়িত পদ কাটা পাছে।২৫ ঘন ঘন দ্বিজবর কুকুরকে ভাকে॥ শ্বন বলে মূর্য তুমি নহেত পণ্ডিত। রাজপথ ঘুচাইছত নহেত উচিত॥

(200)

রাজপথে দ্বিজ কেনে কর অহঙ্কার। এই পথ তোমার নহে সকল রাজার॥ শ্ৰীরাম আইলে আমি না ছাড়িব বাট। আমি বাটে থাকিলে উল্টা জাবে ঠাট।। এত স্থানি আপাণের দম্ভ কড়মড়ি।৫ কুকুরের মাথে মারে থবতির বাড়ি॥ মাথা ফুটা ধারে রক্ত পড়য়ে প্রচুর। গোষাঞিং বলি কান্দেন কুকুর॥ রাম হেন রাজা আছে ধর্ম অবতার। গোহারি করিলে রাখ করেন বিচার ॥১০ এত বলি কুকুর কান্দেন উচ্চৈঃস্বরে। গোহারি করিতে গেলা রাজার ত্য়ারে॥ ত্রমারে কুকুর গিতা কান্দে বিপরীত। ক্রন্দন স্থানিআ সভা খণ্ড চমকিত। कात्मन कुकुत इहे ठटक जल यदा ।> ६ তাহার ক্রন্সনে লোক কাঁপিল অন্তরে॥ রাজ্বারে বসিআছে লক্ষণ ঠাকুর। তার ঠাঞি গিসা মাথা নোয়ায় কুকুর॥ শক্ষণ বলেন কি কার্য্যে তোমার গমন। আমা হৈতে সিদ্ধ হবে কহ প্রয়োজন ॥২• कुकुत बर्णन ठाहि जाम पत्रमन। অনাথের নাথ রামচক্রের বদন।। विकु अःरन जन्म ताम धर्म अवजात। **(इन जाम विश्वमादन आमात विठात**॥ কুকুরের বোল কহে রামের গোচরে।১e রামের আজ্ঞাতে গেলা কুকুর ভিতরে॥ রামের চরণে গিজা নোয়াঞিল মাথা। ক্লান্সিতে কান্সিতে কহে আপনার কথা।।

(एव नहि त्रांका नहि क्रम कुकुत। তোমার আদেশে আসি আমি এতদূর। লোকে জুড়াইতে তুমি বিষ্ণুর বদন। মূর্ত্তিমান ধর্ম তুমি জগত রক্ষণ॥ তুমি চক্র তুমি স্থ্য তুমি হতাশন।৫ অষ্টলোকপাল তুমি সর্ব্ব দেবগণ॥ তুমি কোপ কৈল লোক হএ বিনাশন। তুমি প্রতি পাল হৈলে লোকের রক্ষণ। তুমি যদি নাহি পাল মঞ্জে এ সংসার। তোমার জনম প্রভু ধর্ম অবতার॥১० রাম বলেন আমার ঠাই কোন প্রয়োজন। কোন হঃথে আইলে তুমি আমার দদন।। कूकूत वरणन रमर्भ देवरम मर्क्जन। ধার্ম্মিক হইলে ধর্ম্ম করএ রক্ষণ॥ ধর্মে রাজা নাহি দেখে লোকের বলাবল। গোহারি করিলে নাহি রহে কোন ছল॥১৫ শ্রীরাম বলেন কেন কৈলে আগুসার। কোন জন করিলেক তোমাকে প্রহার॥ কুকুর বলেন এক হুর্জন বাক্ষণ। হস্তেতে থনতি তার ডাগর বচন ॥२० 🦈 সিদ্ধার্থ নামেতে দ্বিজ অযোধ্যাতে বৈসে। প্রহারে মন্তক মোর কুনাইল রোষে॥ কোন কালে তার ঘরে চুরি নাহি করি। বিনি অপরাধে সেই মোরে কেন মারি॥ ব্রান্ধণে আনিঞা রাম করহ বিচার।২৫ কোন অপরাধে মোরে করিল প্রহার॥ শ্রীরামের মন গণ ভালে জানে। সিদ্ধার্থ ব্রাহ্মণ ডাকি আনিল দেয়ানে 🖟 🦠 (009)

(004)

দ্বিজ বলে আমা দনে কোন প্রয়োজন। কিবা কার্য্যে আনিলে মোরে রাজার সদন শ্রীরাম বলেন কোপে হয় সর্বনাশ। मन्नामो रहेमा द्याप किरमत मन्नाम ॥ করহ সন্মাসী ত্রত সর্ব্ধ লোকে পূজি।৫ এহেন কঠোর তপ কোন কার্যো তাজি॥ কোপেতে কুকুরে কর দারুণ প্রহার। মন্তক ফুটিয়া রক্ত পড়িল অপার। করহ সন্নাসত্রত শরীর নিপাপ। প্রোণিহিংসা করিয়া সঞ্চয় কর পাপ ॥১০ সিদ্ধার্থ বলেন স্থন কমললোচন। কুকুরে মারিল আমি দোষের কারণ। তপ করি খরে আসি দিবস উচ্ছুর। পথ জুড়ি সঞা ছিল এইত কুকুর॥ উলটিতে পথ নাহি হুই দিকে খাল।১৫ কেমতে উলটা তাহে কটক বিসাল॥ যুচ যুচ বলি আমি তমু নাহি যুচে। আমা পানে চাহিআ সঘনে দস্ত কিচে॥ ক্ষুধা ভৃষ্ণাতে দেহ পীড়িত আমার। কোপেতে কুকুরে আমি করিল প্রহার॥२० আমি অপরাধ কৈল দেহ প্রতিফল। তুমি ফল দিলে মোর হুকুলে নির্মাণ॥ সভাথত পুছে রাম কিবা ইথে দও। বিষ্ণু অবতার তুমি বলে সভা খণ্ড॥ সর্ব্ব ধর্মণান্ত্র প্রভু তোমার গোচর।২৫ ধর্ম বিধি শান্তি দেহ ত্রাহ্মণ উপুর॥ হেনকালে উঠে মাথা নোঙারে কুকুর। কালিজর দেশে কর ব্রাহ্মণে ঠাকুর॥

मिट एए विख्य उपाक नाना धन। তথাকে ঠাকুর করি পাঠাও ভ্রাহ্মণ॥ ধর্মের প্রমাণে স্থায় করিলে উচিত। ব্রান্ধণেরে করিমা দেহ শিব পুরোহিত। কুকুরের বোলে দ্বিজ হন্তী ক্ষন্ধে চড়ে।৫ রামের প্রসাদ পাইঞা কালিঞ্সরে লড়ে 🛭 কালিঞ্জর দেশে দ্বিজ পাল্য অধিকারে। নানা বস্তু উপজায়ে শিবের ভাগুারে॥ রাজা হআ জায় দ্বিজ সভাখও হাসে। শাস্তি হেতু আনিল রাজত্বে পায় দেশে ॥১০ রাম বলে সভাখণ্ড হাস অকারণ। কুকুর জানেন সেই দেশের কারণ॥ कूकूदत्रत्र द्यारम विक शाहेम विषय । স্থনিলে উহার কথা পাইবে বিশ্বয়॥ কহ কহ বলি সবে কুকুরের বোলে।১৫ কুকুর কাহিনী কহে ভরি সভাতলে॥ কুকুর বলেন আমি ছিমু বিপ্র জাতি। কালিঞ্জর নামে দেশ তাহাতে নুপতি॥ উপজে অনেক ধন সকল সম্বরি। যতী ত্রতী সন্ন্যাসী তুসিএ দেশাস্তরী ॥२० শিবের বচনে আমি করিয়ে ভকতি। দ্বত মধু নৈবিদ্যে পুজিএ নিতি নিতি॥ যত লোক আস্যে মিষ্টান্ন ব্যঞ্জন। সর্ব্য অবশেষে হয় আমার ভোজন। অল্ল খাই দেব দ্ৰব্য বিলাই বিস্তর।২৫ সভাকার হিত করি ধর্মেতে তৎপর॥ চতুর্দ্দশী উপবাদে করিতে পারণা। নথের ভিতরে শোর ছিল ঘুতকণা।

(000)

(060)

হত প্রকালন আমি করিল যতনে। পারণা করিতে আমি বসিল ভোজনে॥ তপ্ত অরে লাগি ঘৃত গলিল প্রচুর। সেই পাপ হইতে আমি হইমু কুরুর॥ নিদ্ধার্থ ব্রাহ্মণ প্রভু দোক্ষের প্রচুর।৫ স্বভাব ব্রাহ্মণ মূর্থ হইবে কুকুর॥ धर्म उड़ान नाहिक प्रक्षिरव वह धन। বড় মূর্থ আহ্মণ সহজে কোপ মন।। হেন দিজ কালিঞ্জর দেশের অধিপতি। সপ্তম পুরুষ তার জাবে অধোগতি॥১० ধন লোভে দ্রব্য লোভে নাহি অব্যাহতি। নরকে পচিবে তার নাহি কোন গতি॥ ত্রান্ধণ দেবের পরে যে হয় ঠাকুর। সবংশ সহিত সেই হএত কুকুর॥ দেবতা ব্রাহ্মণ সার স্ত্রীলোকের ধন।১৫ বলে ছলে নিলে হএ নরকে গমন ॥ দান দিআ যেই জন লএ আর বার। অধিক নরকে পড়ে নাহিক উদ্ধার॥ পাপ হৈতে নরকে জায় যম তারে গঞ্জে। অস্ত নহে ঘোর নরকে কত কাল পড়ে॥২০ কুকুরের বোল সভাথত্তে তরাস। বারাণসী মরি আমি জাব স্বর্গ বাস॥ মরিব তথাতে গিন্সা ত্রত উপবাসে। কুকুরের বোল স্থানি রামচক্র হাসে॥ ধন্ত ধন্ত বলি রাম কুকুরে প্রশংসি।২৫ মরিতে কুকুর চাহে গিয়া বারাণসী॥ ডাক দিনা আনে রাম স্থমন্ত্র সার্থি। বারাণসী জাহ তুমি কুকুর পংহতি॥

রামের আজ্ঞাতে রথে কুকুর লইআ।
দিন অবশেষে বারণসী থুল্য নিরা।
কুকুর করিল মণিকর্ণিকায় প্রবেশ।
স্থমন্ত্রে কহিলা রামে আসি নিজ দেশ।
ক্রন্তিবাস পণ্ডিতের সরস গাঁচালী।
উত্তরকাণ্ডে গাম দ্বিজ কুকুর কন্দলি॥

<u> এরাম সন্তাষণে আইল মুনি জন।</u> ভরদাজ ভার্গব গৌতম কবরণ ?॥ রামের আশ্বাদে মুনি করিল প্রবেশ। নানা তীর্থের জল দিল শ্রীরামে সন্দেশ ॥>• হাতে দূর্কা ধানে মুনি করেন কল্যাণ। মুনিকে আসন দিলা কাঞ্চন নির্মাণ ॥ জোড় হাতে রামচন্দ্র পুছেন প্রয়োজন। কোন কার্য্যে আমা ঠাঞি করিল গমন॥ ধন জন অজ্জি আমি ভ্রান্সণের তরে।১৫ মুনির কিঙ্কর মোরা চারি সহোদরে॥ রামের বচন স্থানি মুনি হর্ষিত। তুমি থণ্ডাইতে পার মোসভার ভিত॥ রাবণে বধিআ দেব কৈলে পরিত্রাণ। তোমা বিনে ভয় খণ্ডাইতে নাহি আন ॥২• রাম বলেন কোন জনে উপজাএ ডর। সম্প্রতি কাহারে পাঠাইব যম ঘর॥ ভার্গব বলেন রাম স্থনহ স্থাদ। এক বেটা দৈত্য পড়িল প্রমাদ॥ মধু নামে দৈত্য হিরণ্যকশিপুর নাতী।২৫ বান্দণের ভক্ত দৈত্য বুদ্ধে বৃহস্পতি॥ (७७১)

(७५२)

দৈত্য জাতি হইয়া কৈল দেবের পিরিতি। দেবাতে মালিন্ত দেই দেব পশুপতি॥ শূল অন্ত্র দিল তারে পার্বতীর নাথ। বৈরী মারি সেই শূল আইসে তার হাত॥ দেবত। ত্রাহ্মণ জবে করে অপমান।৫ তেজ ছাড়ে শূল তবে নহে অধিষ্ঠান॥ মধু দৈতা বলেন হলর্ভ সেই শূল। কভু নাই ছাড়িআ জাবেন মোর কুল। হর বলে এই শূল থাকে প্রয়োজনে। তোর বোল না লজ্বিবে হেন লয় মনে॥১ পুপটন্ধার ঝি নাম কুন্তনসী। রাবণের ভগ্নী দেই পরম রূপদী॥ তোমার হল্ল ভা পত্নী হবে ভোর কুলে। লবণ নামে পুত্র তার অদ্ভূত বলে॥ কথো দিন তার ঠাঞি শূল অধিষ্ঠান।১৫ যতন করিহ আর নাহি বরদান॥ महावन नवन दम माजूरनत दमारम। শিশু কাল হৈতে সেই দেব দ্বিজ হিংসে॥ বাপের নিষেধ নাই নিসেধিআ থাকে ৷২.০ পুত্রের চরিত্র দেখি মধু পোড়ে শোকে॥ শ্ল অন্ত্র পুত্রে দিআ দিল ঠাকুরাল। সাগরে প্রবেশি মধু গেলেন পাতাল। লবণ জাঠার গুণে ত্রিভূবন জিনে। সর্বলোক চমকিত দেখিআ লবণে ॥২৫ পাইল অনেক রাজা করিবারে রণ। কার মুখে না গুনিল জিনিল লবণ ॥ তোমার বাণে সবংশে পড়িল রাবণা। কোন কাজে লাগে তার মারিতে ভাগিনা॥

লবণে মারিলে ঘুচে সবার কচাল। তার মারি মথুরাতে কর ঠাকুরাল॥ জোড হাতে বলেন খ্রীরাম মহাযশা। কত লক রাক্ষসের কোথা তার বাসা॥ मूनि वरण नवन देवरम मधु वरन। व সহস্রেক জন্ম মারি থার একদিনে ॥ মাংস থাইতে তাহার বড়ই অভিলাষ। পড়িল তাহারি মুথে সভার বিনাশ ॥ কভু রাক্ষস হয়ে কভু রাক্ষসিনী। নানারপ ধরি থার জত পায় মুনি ॥১০ মধুর তনম দৈত্য বড়ই ছুরাচারী। লোক থাইয়া শৃত্য কৈল মথুরা নগরী॥ রাম বলে ভরত তোমাকে দিল ভার। লবণে মারিআ কর মুনির নিস্তার॥ লবণে মারিব আমি তোমার আদেশে ।১৫ কাটিৰ দৈত্যের মাথা আঁখির নিমিষে॥ ভরতের বচন স্থনিয়া সভাতলে। জোড় হাত করি কিছু শত্রুত্ব বলে॥ চৌদ্দ বৎসর তুমি কৈলে বনবাস। ফল মূল নাহি থাও কর উপবাস ॥২০ জত হঃথ পাল্য রাম বনের ভিতরে। তত হঃখ ভরত পাইল নিজ ঘরে॥ ঠাকুরের কার্য্য যদি ভূত্যে গিআ করি। তবে কোন কাৰ্য্য লাগি হবে দেশাস্তরী॥ জটা বন্ধল পরিধান সদা ফলাহার ৷২৫ -এত হঃখ পায় কোথা রাজার কুমার॥ আর হঃথ পাইতে জুক্তি নাহি আইসে। भारत हरेट मिक्ष श्रेट्स कृत्य शास्त्र किस्न ॥ (৩৬৩)

(৩৬৪)

সভা মাথে শক্রম বলে বিপরীত। তাহার বিক্রম স্থানি রাম হর্ষিত॥ षामात य वीर्या जना जूमि मारे वीर्या। লবণ মারিতে ভাই লাগে কোন কার্য্যে॥ জ্যেষ্ঠের বচনে তুমি না কর উত্তর।৫ ভাগ मन्त वर्ण क्यार्र स्निर मानत् ॥ সেই দেশে রাজা তুমি ধরাইব দগু॥ সাক্ষাত্তে করিব রাজা নাহিক পাষও ॥ শক্রম্ব রাজা হৈতে বলেন শ্রীরাম। स्वित्रा जानत्म वीत्र गारत्र वरह चाम ॥>• তোমার বচনে প্রভু না করি উত্তর। ভাল মল হক সব করিব গোচর॥ বাপ স্বৰ্গবাদ গেলা তোমা বিভ্নমানে। শোক পাশরিল আমি তোমা দরসনে॥ তোমার প্রসাদে বাডে আমার সন্মান।১৫ কেমনে হইব রাজা জ্যেষ্ঠ বিশ্বমান ॥ পুরাণ পণ্ডিত মুখে স্থনিল বিস্তর। জ্যেষ্ঠের বচনে আমি না বলি উত্তর ॥ প্ৰেণাম কৰিয়া বলি না করিছ রোষ ॥ তোমারে উত্তর দিল ক্ষম সব দোষ ॥২০ শক্রমের বোল স্থানি রাম হর্ষিত। রাজ আভরণ দিন্দা করিল ভূষিত॥ শক্রমের রাজা হইতে রামের আদেশ। পাত্র মিত্র থাঞা আলা করি নানা বেশ। শক্ৰত্ম রাজা হব পড়িল ঘোষণা ৷২৫ দেব সান করাইতে ধাইল ব্রাহ্মণা॥ শক্রম্ব বসিলেন রাজসিংহাসনে। তিন ভাই নেহালেন হরিদ বদনে॥

কুলপুরোহিত সে বশিষ্ঠ মহাঋষি। তীর্থ জলে শিরে ঢালে কলসী কলসী॥ ব্রাহ্মণের বেদধ্বনি উঠে কোলাহল। নানারাজবাত বাজে স্থন্তর মঙ্গল। মন্তকে ঔষধ দিল শাস্ত্রের ব্যবহারে।৫ কৌশল্যা স্থমিত্রা কৈকেয়ী আগুগারে॥ জত নারীগণে আল্য বেশ আভরণে॥ রাজা মঙ্গল কার্যা করে শাস্তের বিধানে॥ শক্রম্ম রাজা হৈল সর্ব্ব লোকে চাহি। শক্রমের কাণে রামচক্র এক্সমন্ত কহি॥১০ স্ষ্টির জথন আদি পৃথিবী সঞ্চার । মধুকৈটভ অস্থ্রের করিল নির্বার। ব্রহ্মা স্থজিলেন যে রাবণ মারিবারে। মিথা। নাহি করে বাণ সংসার ভিতরে॥ হেন বাণে কৈল আমি রাবণ বিনাশ।১৫ দেব আদি সভাকার থণ্ডাইল তাস। ত্র মন্ত্রে হৈল বাণ দিল উপদেশে। লবণ মাল্যে মধুপুরী নির্ভয়ে বসে॥ লবণের বাপ মধু অতি বড় গুণি। সেবা করি মানাইল দেব শূলপাণি॥२० জাঠা গাছ পালা সেই মহেশ্বর বরে। বালবিছ্য নামে সে লবণ জাঠা ধরে॥ নিকটে থাকিআ তুমি নিবে বার্তাসার। ঘরে জাঠা এডি জবে করে আগুসার॥ ঘরে জাঠা রাখি জবে জাইবে লবণ।২৫ হেন কালে তার সঙ্গে তুমি কর রণ॥ शास्त्र कार्रा यमि थात्क नवाकादत कितन। মহেশের বর মিথা। নহে এক কণে। (೨৬€)

(৩৬৬)

সহস্রেক নেহ তুমি জুঝার সার্থি।

ছই সহস্র লেহ তুমি মদমত্ত হতী ॥

চারি সহস্র লেহ তুমি ভাল ভাল তাজি।

আপন ইচ্ছাতে লেহ পদাতিক বুঝি ॥

বন্ধুগণে ডাকি লেহ জত আছে ঘরে।

জার বন্ধু বান্ধব সংগ্রামে জুঝি মরে॥

নানা ভক্ষ্য দ্রব্য লেহ নানা উপহার।

কাতর হইলে নহে বিপক্ষ সংহার॥

গ্রীম্মকালে থাকে মধু পুরীর নিকটে।

বর্ষাকালে মধুবনে জাইহ সন্ধটে॥১০

কৃত্তিবাস পণ্ডিতের কবিত্ব বিচক্ষণ।

স্থানিলে উত্তরকাণ্ড পাপ বিমোচন॥

জাহাকে হানিতে জাই সেই যদি জানে।
তাহারে জিনেতে নারে দেই তারে হানে॥
অলক্ষিতে জাবে যেন না পার প্রকাশ।>৫
উপার করিয়ে তারে করিবে বিনাশ॥
ম্নিগণ আগে আগে জান সর্বজনে।
তার পাছে জাইবে সকল দৈগুগণে॥
রামের চরণ বন্দে করি প্রদক্ষিণে।
যাত্রা করি চলিলেন বীর শক্রঘনে॥>
তারপাল করি রাম নিলা মাথার আঘাণ।
আশীষ করিলা হকু তোমার কল্যাণ॥
ভরত লক্ষ্মণে বীর কৈল নমস্কার।
রাম হেন হুই ভাই কৈল পুরস্কার॥
মাতা সৃপ্ত মাত্র গিজা বন্দিল চরণ।২৫
বিশিষ্ঠ বন্দিল আর জতেক ব্যক্ষণ॥

যাত্রার মঙ্গল পড়ে বিবিধ বিধানে। হন্তী ঘোড়া পাইক চলিলা আগুআনে॥ লবণ নিকটে সৈত্য ফিরে একমাস। অনেক কটক হৈল না পায় প্রকাশ ॥ রাজার কটক সব বুলে মধুবনে।৫ হিংসা নাহি করে লবণ শক্ষা নাহি মনে॥ निर्किषय तट राम नाहिक मः भय । একমাস সৈতা রহে লবণ নির্ভয়॥ পাছু জান শত্রুঘন নিজ পরিবারে। বেলা অবসানে গেলা বাল্মীকির ঘরে ॥১০ মুনিরে বন্দিলা বীর জোড় করি হাত। বিনয় বচন বলে রঘুবংশনাথ ॥ রাজকার্য্যে জাই প্রভু রাজার আরতি। বাসা করি দেহ মোরে বঞ্চি আজি রাতি॥ মুনি বলে রঘুবংশে তোমার উৎপতি।১৫ আজি মোর ঘরে থাকি বঞ্চ প্রথরাতি॥ পাল্ম অর্ঘ্য দিল মুনি গৃহ ব্যবহার। ফল মূল থাঞা তুপ্ত হইল অপার॥ युक्त स्थारित दिल वीत भक्तरमा কোন রাজা যজ্ঞ কৈল কারে আয়তন ॥২০ সর্ব্ব কথা কহে মুনি লোক পরিহাদে। পূর্ব্ব পুরুষ তোমার আছিল কৃহিদাদে॥ মৃত্যুঞ্জয় নামে তার হৈল পুত্রবর। সর্বশাস্ত্র সভ্যবিষ্ণা ভাহার গোচর॥ বীর অবতার রাজা ধর্ম অধিষ্ঠান ৷২৫ যজ্ঞ হেতু নিৰ্মাইল এই যজ্ঞস্থান॥ মুগরাতে গেলা রাজা মৃগ মারিরারে। ব্যাঘ রূপে তুইটা রাক্ষ্য মৃগী মারে॥

(999)

(374)

इंटे वार्य मृती थात्र मृत्र नाहि वरन। তার এক বাঘ রাজা বিদ্ধিলেক বাণে॥ ডাক দিঅ। বলে মোরে মারিল সংহতি। শাপ হইতে রাজা তোর হইবে তুর্গতি ॥ বশিষ্ঠ আইল যজ্ঞ এই যজ্ঞশালে ic বিপ্ররূপে বাঘ আসি হইল মিসালে। অশ্বমেধ যজ্ঞ করি পাল্য অবসাদ। মাংস থাইবার তরে রাজা কৈল বাদ। বশিষ্ঠের বোলে বিপ্র রাজা পাড়ে ডাক। হরিসে রসইশালে মাংস কর পাক ॥১০ দ্বিজরপে সম্ভাইল রন্ধনের শালে। मञ्जूरवात मांश्रम ताकि थूना ८२म थारन ॥ অর সে বাঞ্জন নিঞা গেল রাজার স্থান। অমৃতভোজন আগে কারে দিব দান॥ রাজা মহাদেবী তবে বলে ছই জনে।১৫ আগে অন্ন দেহ লৈকা বশিষ্ঠের স্থানে॥ অন্ন ব্যঞ্জন দিল লৈঅ। ভরি হেম থালে। রাক্ষস আহার দেখি মুনি কোপে জলে॥ রাক্ষসের ভক্ষা দেখি বশিষ্ঠের তাপ। রাক্ষস হইও বলি নূপে দিলা শাপ ॥২০ রাজা মহাদেবী দোহে পভিলা চরণে। রাক্স করিল মায়া রূপা কর মনে। भूमि वर्ण वार्थ नरह आभात वहन। বার বংসর রাক্ষ্স হঞা করহ ভোজন।। বার বৎসর রাক্ষস হইআ ভূঞ্জ পাপ ৷২৫ দাদশ বংসর বই টুটিবেক শাপ॥ যজ্ঞশালে যজ্ঞ মোরা করি অকারণ। শাপানলে পোড়াই জা মারিব বান্ধণ।।

বশিষ্ঠে সাপিতে রাজা হাতে নিল পানি। ক্ষেম ক্ষেম ভাক ছাড়ে দময়স্তী রাণী ॥ বংশে বংশে সেবি মোরা অনেক ত্রাহ্মণে। ব্রাহ্মণে না দিও শাপ কর সমাধানে॥ শাপ নাহি দিল রাজা নারীর বচনে। শাপ জল এড়ে রাজা আপন চরণে॥ তুই পায়ে পোড়ে রাজা সেই শাপ জলে। সেই হৈতে কল্মাষপাদ সর্ব্ব লোকে বলে॥ রাক্ষম হইআ রাজা ভূঞে সেই পাপ। দাদশ বংসর থতে হৈল ব্রহ্মশাপ ॥১० চির যুগ রাজ্য করি হইল সন্তান। তোমার পূর্বপুরুষের এই যজ্ঞ স্থান॥ যজ্ঞ স্থান দেখি শত্ৰুঘন নাহি লড়ে। পূর্ব্ব কথা শুনি অঙ্গে সিঞ্চড়া সে পড়ে॥ বাল্মীকির কুড়্যা খানি পাতের ছাওনি।১৫ রাজা হঞা শক্রঘন বঞ্চিল রজনী॥ উত্তরকাও গান ক্তরিবাস মহামতি। মুনির ঘরে শত্রুঘন বঞ্চে স্থথে রাতি॥

ছই পর রাত্রি গেলা স্থনি হলাছলি।
মুনির ঘরে স্ত্রীলোক হইল উত্তরোলি॥২৫
দীতা দেবী প্রদাবিল হুইটী কোঙর।
জাইআ মুনিরে লোক কহিল সত্তর॥
মুনির চরণে গিআ করিল গোচর।
দীতার জন্মিল হুই হৈল সহোদর॥
বিজুলীর ছুটা জেন হুই সহোদর।২৫
রাজন্মী ধরেন দোঁহে পরম স্থানর॥

(のもの)

(ope)

স্থনিমা গেলেন মুনি সীতা জেই ঘরে। मकन मुनिटि (विकृ (मर्थन कुमारत ॥ হাতে কুশে মুনি সব পড়ে তথা বেদ। হুলাছলি করিআ নাভি করিল ছেদ। नव कून वनि नाम थूरेन स्मत । द মুনি সব নেহালি আ দেখে কলেবর ॥ এক হাতে কুশ আর হত্তেতে লবণ। মন্ত্র পড়ি স্ত্রীগণে দিলেন তথন ॥ লবণ হাতেতে নাম লব মহাবীর। কুশ হত্তে কুশ নাম স্থলর শরীর ॥১০ ল ফ লক্ষ নারীতে করিল সম্পণ। ব্ৰহ্ম জ্ঞানে জানে চক্ৰবৰ্ত্তীৰ লকণ॥ হর্ষিত হৈল সব তপোবনে মুনি। শ্রীরামের পুত্র হৈল জানকী পুত্রিণী। শ্রীরামের চিহ্ন ধরে সীতার নন্দন।১৫ রাম মূর্ত্তি দেখি সীতা জুড়িলা রোদন॥ রামের সমান মুখপদা হুই আঁখি। আজি হৈতে ছমাস প্রভুরে নাহি দেখি॥ আমার লাগিমা প্রভু বান্ধিলা সাগর। সবংশে সংহার কৈল রাজা লঙ্কেশ্বর ॥২• হেন প্রভু বিনে আমি ধরিব জীবন। তাঁর বীর্য্য নষ্ট হবে তথির কারণ॥ এই হেতু প্রাণ আমি করিলা ধারণ। মোর পুত্রে পালন করিবে ভগ্নীগণ॥ পরান ত্যজিব আমি প্রভুর বিহনে।২৫ खत्म जत्म পारे त्यन कमनत्नाहत्न॥ ছুই পুত্র হৈল যেন অশ্বিনীকুমার। পুত্র পানে চাঞা লোহ পড়ে আর বার॥

আপনি না বলে দীতা পাদরিতে নারে। রাম রাম বলিমা কান্দেন উটচেঃস্বরে॥ কার বোল নাহি স্থনে প্রবোধ না মানে। হিয়া বিদরিতে চাহে সীতার করুণে॥ ना ऋरन थरवांध कार्ल जनकनिन्ती। জোড় হাতে প্রবোধে বাল্মীকি মহামুনি॥ জনকের ঝিউ দেবী তুমি শ্রীরামের রাণী। দামান্ত জনের হেন কান্দ্র গোদাঞিনী॥ দৈব হেতু হৈল কাজ কভু নহে আন। দৈবেরে হইতে মাগ নাহিত প্রধান॥১० তুমি নাহি জান আমি জানি বার্ত্তাসার। দেখিবে কতোক দিনে বিষ্ণু অবতার॥ তোমার বালকে সভে করিবেন পূজা। তোমার ছই পুত্র হব পৃথিবীর রাজা। প্রজার পালনে হব রামের সোসর !১৫ ত্রিভুবন জিনিঞা হইবে ধয়র্দ্ধর॥ মরিবারে চাহ তুমি স্থনি বিপরীত। তোমার পশ্চাতে গাব রামের চরিত ॥ মোর বোলে শোক তাজ পুত্রে দেহ মোহ। মুনির বোলে সীতা চক্ষের মোছে লোহ॥২० আপনার হাত মুনি দিল তার মাথে। দীতা দেবা রহিলা প্রবোধ মানি চিতে॥ স্ত্ৰীলোক মঙ্গল কাৰ্য্য স্ত্ৰীলোকে সে জানে। সীতা প্রবোধিআ মুনি গেলা রাজস্থানে॥ রাজা বলে কেন মুনি গেলেত সত্তর।২৫ অর্দ্ধরাত্রে গেলে হইল শেষের প্রহর॥ মুনি বলে মোর পূজা রঘুবংশে জানে। রবুবংশ কার্য্যে জামি জানি সর্বাঞ্চণে॥

(595)

(592)

রাম পুত্রবান্ হৈলা জানকী পুত্রিণী।
হইল যমল স্কৃত ত্রিভ্বন জিনি॥
এত স্থানি শক্রম্ম হরিস-বিবাদ।
অঙ্গ আতরণ সব করিল প্রসাদ॥
রামের আদেশে জাই দৈত্য মারিবারে।
কারমের আদেশে জাই দৈত্য মারিবারে।
কোমার ঘরে থাকি আ হইল বড় স্থা।
না দেখি রামের ডরে সীতা চক্রমুখী॥
না বলিবে সীতাকে আমার আগমন।
মুনিকে মেলানি করি কান্দে শক্রঘন॥>
শ্রামের পুত্র হর্ষিত মন।
প্রভাত হইলে আমি বিলাইব ধন॥
এত বলি মধুবনে গেলা নরপতি।
উত্তরকাও গান ক্রন্তিবাস মহামতি॥

রহিলা মূনির ঘরে মধুবন কাছে।১৫
লবণের বার্তা বীর সভাকারে পুছে॥
স্নান সন্ধ্যা করিআ করিল ভোজন পান।
কথা কহে মূনি সব বেলা অবসান॥
আানন্দ করিল রাজা দেব পুরন্দর।
শক্রগনে বেড়ি সব মূনির কোঙর॥২০
বল করি কোন রূপে মারিব লবণ।
রাজা বলে বেড়ি গিআ লবণের ঘর।
মূনি বলে ইবে তুমি নাহবে তৎপর॥
তিত্বন জিনি সেই জাঠাগাছ তেজে।২৫
হাতে জাঠা করিলে জিনিবে কোন রাজে॥

অনেক মারিল সেই পৃথিবী ঈশর। জাঠা দেখি দেব দৈত্য কাঁপে থর হর॥ বড় বড় রাজা জত চন্দ্র হ্যাবংশে। কার রক্ষা নাহিক লবণ জারে রোধে। হাতে জাঠা থাকিলে তাহার বাড়ে বল। c লবণে মারিবে তুমি জবে পাবে ছল।। রাজা বলে মুনি তুরা চরণে প্রণাম। কত কত নুপতির লইব পরাণ ॥ মোর বংশাবলি রাজা কভু নাহি টুটে। তবে কেন দৈত্য ছিল তাহার নিকটে॥১० রাজার বচন স্থানি বলে মুনিগণ। আপন বিক্রমে হেন বসে অন্ত জন॥ রাজা বলে মুনি সব দেব অধিষ্ঠান। স্থনিব তোমার মুথে তাহার বাথান॥ মুনি বলে মান্ধাতা হইল স্থ্যবংশে।১৫ অযোধাতে থাকি রাজা সব রাজ্য শাসে॥ रेक जिनिवादत राग अभव जुवन। ডরে ইন্দ্র পলাইআ হৈলা অদর্শন ॥ প্রীত হেতু রাজাকে বেওদে দেবগণে। অর্দ্ধ রাজ্য নিঞা প্রীতে থাক ইন্দ্রসনে ॥২০ অদ্ধা অদ্ধি বাটী নেহ অমরা বসতি। দেবরাজ ইন্দ্র সনে করহ পিরিতি॥ রাজা বলে এই কথা নাহি লয়ে মনে। ইন্দ্র জিনি শচী নিব রাথে কোনজনে। মনে মনে চিন্তি ইক্র নাহিক নিস্তার।২৫ প্রীত করি রাজাকে পাঠাইব যম-ঘর॥ হাসিয়া বলেন ইন্দ্র স্থন মহারাজ। পৃথিবী জিনিতে নার এই বড় লাজ॥

(OPO)

(၁٩৪)

পৃথিবী জিনহ আগে যত আছে বীরে। তবে তুমি রাজা হবে আদি স্বর্গপুরে॥ মান্তা বলেন ধরা করিলাঙ্বশ। মোর আজ্ঞা লঙ্গিবারে কাহার সাহস॥ ইক্স বলে রাজা তুমি স্থন মনে মনে।৫ মধুদৈতাতনয় লবণ নাহি মানে॥ লাজে হেঁট মাথ। রাজা ইন্দের বচনে। স্বৰ্গ হৈতে নামি রাজা গেলা মধুবনে॥ দূত পাঠাইআ দিল বলিআ কৰ্কশ। দূতের বচন স্থানি খাইল রাক্ষস ॥১० দৃত পানে চাহে রাজা দূত নাহি আইদে। সর্ব্ব দৈন্ত নিঞা রাজা জুঝিবারে পৈদে॥ নানা অন্ত্র মান্ধাতা করেন অবতার। রাক্ষস কটক কৈল অনেক মুংহার॥ মহেশের শূল ধরি তুলি নিল হাতে।১৫ লড়িল বে জাঠা গাছ ত্রিভুবন বেথে॥ ঘোড়া হাতী রথ রথী পাইক সব পোড়ে। অন্ত্র সনে মারুগতা ভস্ম হইয়া উড়ে॥ বাহুডিআ গেল জাঠা লবণের হাতে। মান্ধাতা পডিল সব দেবগুণ ব্যথে ॥২০ জাঠা গাছ তেজে সভা মারয়ে পরাণে। বড বড রাজা নাহি জিনিল লবণে॥ জাঠায় তেজেতে দৈত্য নহে পরাজিত। এ সকল কথা স্থানি না করিছ ভীত॥ আপনা পাসরে বীর ভক্ষণের বসে।২৫ বিহান হইলে জায় মৃগের উদ্দেশে। জাঠা গাছ থুঞা জায় শয়ন মন্দিরে। দেবদত্ত জাঠাগাছ থাকে পূজা ঘরে॥

উপদেশ শ্বন রাজা আমার উত্তর।
মৃগ মারিবারে গেলে বেড় গিআ ঘর॥
ঘর বেড়িলে জাটা নিতে না পারে রাক্ষ্ম।
অবগু মরিবে দৈত্য করহ সাহস॥
বিস্তর কাঞ্চন দান দিলেন ব্রাহ্মণে।
কেলবণ-বধের চিস্তা লাগে রাত্রি দিনে॥
কৃত্তিবাস পণ্ডিতের সরস পাঁচালি।
উত্তরকাণ্ডে গাইল গীত শক্র-পুটালি॥

মুগরাতে লবণ প্রভাতে গেল দূর। যমুনায় পার হৈলা কটক প্রচুর ॥১০ আওআস বেড়িল রাজা আগুলিল দূরে। লবণ দানব আইসে কান্ধে মৃগীভারে। পথ আগুলিআ রাজা জুড়ি গণ্ডীবান॥ দেখিআ লবণ বীর কোপে থর্মান। মধুর তনয় আমি মধুবনে থানা।১৫ আপনা চিনহ তুমি বটে কোন জনা॥ সর্বলোকে জানে মোরে নাম হে লবণ। মরিবারে আল্য তুমি বল কোন জন।। কার বোলে আল্য তুমি ধরি গণ্ডীবান। তোরে বড় কত রাজা বধিল পরাণ॥২० জতেক আহার আনি খাইতে নাহি আঁটে। আচম্বিতে আসিআ সাম্ভাইল মোর পেটে। কুপিলেন শক্রঘন অগ্নি হেন দেহে। ক্রোধে পথ নাহি দেখে কাল ঘাম বহে।। মাতৃলের গর্ব কর বল অহঙ্কার।২৫ মোর ভাই ঠাঁই তোর মামা সে গেল মার ॥

(D9C)

(99%)

সে রামের ভাই আমি শক্রঘন বালী। তোমারে মারিতে আমি বনে বনে বুলি॥ এত যদি বলিল বীর শক্রঘন। কান্ধে ভারে লবণ করিছে তর্জন ॥ তোর ভাই মাল্য মোর মামা সংহাদরে।৫ मा अब कन्मरन निजा नाहि जाहे घरत ॥ ক্ষমা করি না করিল তোর বংশনাশ। মরিবার তরে কেন আলি মোর পাশ। তোর রঘুবংশ আমি তৃণ হেন বাসি।১০ মান্ধাতাকে পোড়াইআ করিল ভন্ম রাশি॥ বাছি বাণ মার মোরে জত মনে আইসে। যেন তেন অস্ত্রে তোরে করিব বিনাশে॥ রাজা বলে নাহি আজি তোমার জীবন। মাথা কাটি পাঠাইব যমের সদন ॥১৫ কান্ধে হৈতে ভার বীর ফেলিলেক মাটী। হাতে হাত কাছাড়ে দস্তের কটুমটা॥ থাক থাক বলিআ লবণ তারে তর্জে। হত্তিগণ দেখিআ কেশরী যেন গর্জে ॥ क्रांका वरन दर्व (मव मात्रिरन दावरन। नर्करनारक जुडे यनि जुनि পড़ রণে॥२• मर्कापम नष्टे किना ना ताथ ছाउँचान। তোরে মারি দেশ বদাইব চালে চাল। সুর্য্যের কিরণে ধেন পদ্মবন ভাঙ্গে। মোর বাণে রক্তা তোর না থুইব অঙ্গে ॥ লবণ বলেন ভোর বালকের মতি।২৫ মোর সনে রণ তোর নহেত জুকতি॥ দেবতা দানব যক্ষ রক্ষ বিভাগর। মোর নাম স্থনিলে সভাই করে ডর।।

বড় বড় রাজা কৈল সংগ্রাম আপার। আমার সমুথে কার নাহিক নিস্তার # গাছ পাথর তুলি মারে পর্বত প্রমাণ। শক্রঘনের বাণে সব হয় থান থান॥ গাছ কাটা গেল দৈতা কোপে অচেতন।৫ গাছ পাথর বরিসনে ছাইল গগন॥ বড বড গাছ তোলে পর্বতের দার। শক্রঘনের বাণে সব হএ ছার্থার ॥ শক্রঘন মহাবীর রণেত প্রচণ্ড। বাণে সব কাটিআ করেন খণ্ড খণ্ড ॥১• উপাড়ে ডাগর গাছ দীর্ঘ ভুজদণ্ডে। দোহাতিআ বাড়ি মারে শত্রুঘণের মুণ্ডে 🕽 মোহ গেলা শত্ৰুঘন হৈলা অচেতন। হাহাকার করেন সকল মুনিগণ॥ শক্রম মোহ গেলা লোকে হাহাকার।১৫ ঘরে জায় লবণ কান্ধেতে করি ভার ॥ সম্বিত পাইআ শত্রুর্ঘন উঠে রোষে। ব্রহ্ম অন্ত্র জোড়ে বীর আঁথির নিমিষে ॥ অরুণ কিরুণ বাণ অগ্নি হেন জলে। পর্বত মন্দার মক জার তেজে টলে ॥২ • দেবতা দানব জারে নাহি ধরে টান। পর্বতে পড়িলে গিরি হএ থান খান॥ উৰা নিৰ্ঘাত পড়ে বাণ দরসনে। রক্তে রাঙ্গা যেন বাণ ব্রহ্মের কিরণে॥ হেন বাণ এড়ে রাজা মারিতে লবণে।২৫ তাদে দেবলোক পৈনে ব্রহ্মার শরণে।। তিন লোক পৈদে গিআ ব্রহ্মার শর্ণ। হেনই উৎপাত প্রস্তু কিসের কারণ ॥

(999)

(396)

কোন যুগে হেন শব্দ মোরা নাহি স্থনি। কেমন প্রমাদ পাড়ে কিছুই না জানি॥ ব্রহ্মা বলে দেবগণ না করিহ ডর। লবণে মারিতে শত্রুঘন জোড়্যাছে শর।। পূর্কে বিষ্ণু বাণ স্বজে আপনার তেজে।৫ মধুকৈটভ মারা গেল যে বাণের কাজে॥ স্থনিঞা বাণের স্বর কাঁপে ত্রিভূবন। হর্ষিত সর্কলোক স্থানিঞা বচন। সংগ্রাম দেখিতে দেব আইলা কৌতকে। বুগান্তের অগ্নি থেন রাজার ধন্থকে॥১० সিংহনাদ ঘন ছাড়ে বীর শত্রুঘন। ঘর জায় লবণ বাহুড়ি দেই রণ॥ শক্রঘনের বাণ দেখি লবণের ডর। আহার করিসা আসি দেহ অবসর॥ ভোজনের বেলে না খাইল আহার পাণি।৫ ক্ষণেকের তরে মোরে দেহত মেলানি॥ ঘরে হৈতে জাটা গার্ছ আনি জুঝিবারে। এখনি মারিব তোরে জাঠার প্রহারে॥ শক্রঘন বলে কালি আছি উপবাসী। ছই কুধাতুরে রণ হৈলে ভালবাসি ॥২• এ লোকে আহার সনে নাহি দরশন। যমলোকে গিআ তুমি করহ ভোজন॥ পাত্যে জাইতে নাহি দিলে রগুবংশের নাথ। তোর বাণে দেখি আমি অনেক উৎপাত॥ নেউটা লবণ জায় জুঝিবার মনে।২৫ আকর্ণ পূরিক্রা শক্রঘন বিদ্ধে বাণে॥ ছুটিল জে বাণ গোটা বজ্ৰ হেন ভূকে। শব্দ স্থানি চমকিত হৈল তিন লোকে।।

লবণের বুকে বিদ্ধি প্রবেশে পাতালে। নেউটিয়া আলা বাণ শক্রঘনের কোলে। শক্রঘনের বাণ থাঞা পড়িল লবণ। মহেশের স্থানে জাঠা গেলা ততক্ষণ।। তেজ কুড়াইআ জাঠা গেল বায়ুবেগে। সংসারের লোক সব দেখে চারিদিগে॥ দেবগণে মেলিঅ। দিলেন জয়কার। বর মাগ বলি একা পাড়িল হাকার॥ তোমার বিক্রম দেখি হর্ষিত মন। বর মাগ ব্যর্থ নহে দেবের বচন ॥১० জোড় হাত করে বীর দেবতার আগে। বৈসাহ মথুরা শত্রুঘন বর মাগে॥ এই দেশ বৈসাইব যেমন ইক্রপুরী। লবণের ডরে লোক হইল দেশাস্তরী নানারত্ব সকল মুনিকে দিল দান।১৫ দেশ থান বস্থাবারে কৈল সন্নিধান ॥ বন ডাল কাটিয়া নগর খান বৈসে। নানারত্ব নিঞা প্রজাগণ সব আইসে ॥ অনেক দেশের লোক আল্য নানাজাতি। বিচিত্র নগর হৈল অমরা বসতি ॥২• যমুনার কৃলে হৈল নগর পত্তন। হাট বাট দিঘী সব হৈল স্থশোভন ॥ লোক থাঞা লবণ নগর কৈল বন। বন ভাঙ্গি নগর বসাল্য শত্রুঘন ॥ রাজার আওআদ হৈল বিচিত্র চউরি।২৫ নাটশাল পাঠশাল রাজার চাতুরী॥ ভূবনে হল ভ পুরী অতি অমুপাম। মথুরা নগর বলি খুল্য তার নাম ॥

(GPC)

(oto)

মধু হৈতে নাম তার ছিল মধুপুরী।
শক্রঘন নাম থুলা মথুরা নগরী॥
নানারত্বে ভূষা লোক নানা উপভোগ।
হরিস সকল লোক নাহি শোক রোগ॥
ঘাদশ বৎসর তাহে স্থথে করি ঘর।৫
ভাই দেখিবারে গেলা অযোধ্যা নগর॥
সভা প্রতি বর দিরু রাম দেবরাজ।
দেবের বরে শক্রঘের হরিস হৈল কাজ॥
ক্তিবাস পণ্ডিতের কবিত্ব স্থন্দর।
উত্তরকাণ্ডে লবণ্বধ গাইল মনোহর॥>•

দেশ বসাইআ রাজা দাদশ বংসর। ভাই দেখিবারে জান অযোধ্যা নগর॥ সর্ব্ধ লোক বাহুড়িল বাহুড়িল পুরোহিত। র্থ চডিআ কথোক লোক চলিলা তরিত ॥ লোক সব পাইল গিজা বাল্মীকির ঘর।১৫ পান্ত অর্ঘ্য দিঅ। মুনি করিলা আদর ॥ মুনি বলেন বিক্রম তোমার হৈল বিদিত। লবণ বধিমা লোকের খণ্ডাইলে ভীত॥ তোমার ভাই রাবণ বধিল বহু দিনে। লবণ বধিলে তুমি হুই তিন দিনে ॥২• মানুষ খাইঞা লবণ নগর কৈল বন। লবণ বধিআ তোমার হইল গমন॥ তোমারে দেখিআ মোর জুড়াএ নয়ন। ष्मानित्रन पिष्या मूनि माथा नहेन जान ॥ व्यानिक्रन मित्रा मूनि जुविन मानदत ।२० দৰ্ম দৈত তুমিল নানা উপহারে॥

পায়দ পিষ্টক মধু শর্করা শোধক। ভোগ শোষ খণ্ডিলেক স্থনীতল কটক॥ ভোজন কবিআ বাজা কবিলা শয়ন। মনে চিন্তা কবেন বাল্যীকি তপোধন ॥ সাতকাণ্ড রামায়ণ কৈল মুনিবরে ic সেই পোথা শিথাইল সীতার কোঙ্রে॥ ছুই ছাওমালে মুনি ডাক দিআ আনে। রামায়ণ গাও দোহে রাজা যেন স্থনে॥ মহামুনির কথা শুনিঞা ছই ভাই। লোক প্রবন্ধে রামায়ণ দোঁহে গাই ॥১০ শক্রঘন নুপতি স্থইল একঘরে। আর ঘরে গীত গান ছুই সহোদরে॥ উঠিল বীণার স্বরে মনুর সংগীত। রামের চরিত্র গীত উঠে আচ্ধিত।। রামরাজ্য তেজিতে যেমন লোক কান্দে।১৫ বস্ত্র ছাড়ি যেমনে বাকল আনি পিন্ধে॥ রাণী ভাগ কান্দে বুড়া রাজার ঘরণী। জেইরূপে বুড়া রাজা তেজিল জীবনী॥ রাম সীতা লক্ষণ জেমতে দেশান্তরী। চারি ভাই জেমন বাকল জটা ধরি ॥২০ দীতা চুরি কৈলে যেন রামের বিলাপ। চৌদ্দ বৎসর বনবাস যেন পাল্য তাপ॥ স্থলতি গীত গাম বীণাযন্ত্ৰ বাজে। গীত স্থানিবারে লোক আস্তে নানা সাজে॥ দীতা স্থৃত গায় গীত অমৃতের কোণা।২৫ স্থনি শক্রথন কান্দে আর জত সেনা॥ গীত স্থনি সর্ব্ধ লোক আপনা পাসরে। হিয়া উত্তরোল হঞা সব সেনা ঝুরে।

(363)

(৩৮২)

পূর্বের বৃত্তান্ত স্থানি পরম শীতল। গীত স্থনি লোহ মোছে কটক বিকল।। পাত্র মিত্র বলে প্রভু অপূর্ব্ব কাহিনী। স্থনিএ মুনির ঘরে কার বেদ ধ্বনি॥ नाना मुनिशन एनथि निएक्षम् नतीरत । ६ হেন গীত কভু নাহি স্থনি কার ঘরে॥ রাজা বলে নানারঙ্গ মুনিদের ঘরে। মুনিকে স্থধাব আমি কোন কাৰ্য্যের তরে॥ মোরে ইহা স্থাইতে না আন্তে জুকতি। এই গীত স্থনিবেন রাম রযুপতি ॥১০ নিঃশন্দ হইআ গীত স্থন একমনে। নিদ্রা নাহি গেল সবে গীতের প্রবণে॥ সান সন্ধা কৈল রাজা পোহালা রজনী। অযোধ্যা চলিলা করি মুনিকে মেলানি। অবোধ্যা প্রবেদি গেলা রাজার ছয়ারে।১৫ আপনার দ্রব্য জাত থুল্য ভারে ভারে॥ অবনী লোটাঞা রামে কৈল প্রণিপাত। ভরত লক্ষণে নমস্করে জুড়ি হুই হাত॥ তিন লোক জিনি রাম তুমি চূড়াম্ণ। পাত্ৰ মিত্ৰ সম্বোধিআ কহেন কাহিনী ॥২০ সম্মুখে ডাগুায় বীর হাত যুগলে। কথা ছাড়ি রামচক্র ভাই নিলা কোলে। রঘুনাথে শত্রুঘন নত কৈল মাথা। জোড় হাত করি কহে আপনার কথা॥ লবণ মারিতে গেলা তোমার বোলে।২৫ তারে মারি মথুরা বদালা চালে চালে॥ वात वंदमत ना तमिथन हत्रन यूगन। (थञ्ज हाई वारम राम वाहूत विकल।

তোমা না দেখিয়া স্থথে নাহি প্রয়োজন। তোমার চরণ দেখি এই মোর মন। ভাইর বচন স্থানি দিলা আলিঞ্চন। শক্রঘন কোলে করি বলেন বচন॥ সেই রাজ্য সাস তৃষি আপনার বাহে।¢ আন রাজা হৈলে ভাই লোক নাহি রহে। সভার কনিষ্ঠ তুমি প্রাণের সোসর। সেই রাজাে রাজা তুমি কৈলে দণ্ডধর॥ ত্মি আশু আমি জাব নহিব মান্তর। তোমাতে আমাতে দেখা বৎসর ভিতর ॥১० পাঁচ দিন থাকিআ আমার সন্নিধানে। সতা বাকা বলি আমি চল নিজ স্থানে। ভাল ভাল বলি আজ্ঞা বনিলেন শিরে। এত লোক ছাড়ি যাব আস্থক আন্তরে॥ পঞ্চদিন থাকি শত্রুঘনের মেলানি।১৫ ভাইকে বন্দিআ বন্দে জনকের বাণী॥ ভরত লক্ষণ দোঁহে অমুব্রজে গেলা। কতো দূরে রাখি তারে ফিরিআ আইলা। অনেক দিবসে পাল্য মথুরা নগর। রাজ্য থণ্ড সামে রাজা ধর্মতে তৎপর॥২• ত্রই ভাই আদিআ রামের পদ বন্দে। উত্তরকাণ্ড ক্বতিবাস গাইল সানন্দে॥

শ্রীরাম করেন রাজ্য ধর্ম্মের প্রমাণে।

মৃত্যু ডর নাহি লোক বাড়ও কল্যাণে॥
লোকের পরম স্বায়ু সহস্র বংসর।ই৫

ভাকালে মরণ নাহি ধম নাহি ডর॥

(O+O)

(OF8)

এই রূপে রাজ্য করে রাম নারায়ণ। চণ্ডালের তপদ্যার শুনহ করিণ॥ কেহে। তপ করে পরলোক তরিবারে। কার তপ পরলোক নাসিবার তরে॥ একজন তপকরে জাতিতে চণ্ডাল।¢ তার তরে চিন্তে স্বর্গে অষ্ট লোকপাল ॥ স্বর্গে রাজা হৈতে চাহে খণ্ডি পুরন্দরে। দেবগণ যুক্তি কৈল বসি একত্তরে ॥ দূত পাঠাইআ দিআ অযোধ্যা নগরে। চুরি করি নিল এক ত্রাহ্মণ কুমারে ॥১० বন্ধ ব্রান্ধণের ব্রাহ্মণী কান্দেন বিকলে। পঞ্চ বংসরের শিশু মড়া করি কোলে॥ মিথ্যা নাহি বলিএ অধর্ম নাহি করি। বসিমা রামের রাজ্যে শোক ছথে মরি॥ স্থ্য বংশের দেশে বসি পুরুষামুক্রমে।১৫ অকাল মরণ কভু নাহি করে যমে॥ ধর্মে ধরা পালিল নুপতি দশরথে। নাহি ছিল অকাল মরণ শোক ব্যথে॥ বসিমা রামের রাজ্যে হারাল পরাণ। কোন গুণে রামে লোক করয়ে বাধান ॥২০ विवाह ना मिल श्रूटात ना मिथ योवन। বাপ মা ছাড়িআ পুত্র হৈলা অদর্শন। জন্মাবধি পুত্র নাহি এই সে সন্ততি। রাজার ঠাঞি মরিব গিআ হুই বেকতি॥ পূর্ব্ব জন্ম পাপ-ফলে এই দেশে বসি।২৫ রাজদারে মরি গিন্সা হঞা উপবাসী॥ স্থথে রাজ্য করুন রাম ভাই চারি জনে। ত্রন্ধবধে স্ত্রীবধে পীড়িত হবে মনে।।

ব্রান্ধণের কোলে হৈতে মরা পুত্র আনি। মরা পুত্র কোলে কান্দে ব্রাহ্মণ ব্রাহ্মণী॥ গৰ্ভ হৈতে হুখ পাঞা এত দিন পুসি। হেন পুত্র মরে চণ্ডালের দেশে বসি॥ ধার্মিকের দেশে নাহি হুর্ভিক্ষ সায়ক।৫ অধর্মের দেশে বস্যা হারাল্য বালক ॥ পুত্র হেতু কান্দে দোঁহে হইআ বিকল। স্নতে লোকের চকু করে ছল ছল।। দার থান রাথে বীর স্থমিতানন্দন। লক্ষণ ব্ৰাহ্মণে বলে প্ৰবোধ বচন॥১० বান্ধণ ব্রাহ্মণী দোঁহের রহিলা তৃত্যারে। লক্ষণ ভিতরে গিআ শ্রীরাম গোচরে॥ আজ্ঞা পাঞা দ্বিজ গেল ত্বরিত গমনে। মরা পুত্র ফেলিল রামের সিংহাসনে॥ সহস্র বংসর রাজ্যে শোকের জীবন।১৫ তোর পাপে মরে রাম আমার নন্দন॥ করুণ হৃদয়ে রাম নেহালে কুমারে। ব্রাহ্মণের কোপ দেখি কম্পিত অস্তরে॥ বামদেব বশিষ্ঠ আহল পুরোহিত। ভদ্র আদি করিআ সকল পাত্র মিত্র ॥২• কাত্যায়ন গৌতম জতেক মহা ঋষি। রামের বচন স্থনি সভে ধাঞা আসি॥ দর্ক মুনিগণে রাম দিলেন আদন। রামে বেড়ি বসিল সকল মুনিগণ। রামের বচনে সভে বসিলা আসনে i২৫ ব্রাহ্মণের কথা কহে কমললোচনে॥ তোমা সভা লঞা আমি চিস্তি রাজ কাজ। ব্রান্সণের পুত্র মরে এই বড় লাজ।

(Dre)

(OF (5)

আজি হৈতে দূর হৈল আমার সম্পদ। ट्रिन काटन द्रारमद ठाँ है आहेन। नादम ॥ পাত অর্ঘ দিল রাম গৃহ ব্যবহার। মুনির চরণে রাম হৈলা নমকার॥ রাম বলে অবধানে স্থন মুনিরাজ।¢ অকালে ব্রাহ্মণ মরে এই বড লাজ।। नातम वर्णन त्राम स्नर वहन। আমর। ব্রাহ্মণীপুত্র হইল ব্রাহ্মণ ॥ এক পোয়া ধর্ম ব্রহ্মা নিলেন কাডিআ। পণ্ডিত হইলা নানা শাস্ত্র জে পডিআ॥১০ তুই অংশে ব্রহ্মার তনয় ক্ষত্রি জন্ম।। সেই পোয়া কাডিআ লইল সবধর্ম॥ ত্রেতা যুগে ক্ষত্রিয়ের তপ অবতার। এক পোয়। ধর্ম্ম নষ্ট অধর্ম্ম প্রচার॥ ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় হৈল তপতে সোসর।১৫ ছই পোয়া ধর্ম নিল সভার ভিতর ॥ বৈশ্র জাতি হইল ব্রহ্মীর বক্ষঃস্থলে। এক পোয়া ধর্ম সেহ কাডি নিল বলে। দাপরে বৈশ্ব জাতি তেঁই তপেতে তৎপর। তিন পোয়া ধর্ম গেল ছাপর ভিতর ॥২০ তিন পোয়া ধর্ম গেল এক পোয়। আছে। সেই ধর্ম পোয়া নিতে শূদ্র ইবে ইচ্ছে॥ তপে অধিকার শূদ্রে নাহিক দাপরে। ভাল মতে জান কোথা শূদ্ৰ তপ করে।। শূদ্র জাতি তপ করে মোর মনে দেখে।২৫ তেঁই বিপ্রস্কৃত মরে বিপ্র কান্দে ছথে॥ উগ্র তপ করে কোথা দেখ শুদ্র জন। সেই পাপে দ্বিজম্বত অকাল মরণ॥

नातरमत वहन स्थान जीतारमत शम। লক্ষণে ডাকিআ রাম আনিলেন পাস।। জাবত না জাই আমি রাজ্যের বিচারে। পাত্যাইআ বাহ্মণ বাহ্মণী রাথ ছারে॥ পিতলের খোল ভরি নারায়ণতৈলে। তাহার ভিতরে থোবে ব্রাহ্মণ ছাওমালে॥c বেদবিহিত পণ্ডিত জতেক জন আছে। মন্ত্রে রক্ষা করব্য যেন মড়া নাহি পচে॥ যত বৈল রাম তাহা করিল লক্ষণ। পুষ্পর্থে শ্রীরাম চলিলা ততক্ষণ॥ ভরত লক্ষণে রাম দিআ রাজ্যভার ৷১০ রথে চড়ি শ্রীরাম করিলা আগুসার॥ मुनिপদে প্রণমিআ রথে গিআ চড়ি। বিদায় হইআ জে পশ্চিম দিগে নড়ি॥ আগে গেলা রামচক্র দিগের পশ্চিমে। অবিচার নাহি লোক আছএ ধরমে ॥১৫ সেই দিগ রামচন্দ্র চাহিতা দেখিলা। তথা হৈতে স্বরিতে উত্তরদিগে গেলা॥ উত্তর দিগে গিআ চারি দিগে চায়। কাহারে দেখিতে রাম কাহারে না পার॥ উত্তর দিগের রাম করিলা বিচার।২০ ধর্ম্মে লোক বৈদে নাহি অধর্মের ভার॥ তথা হৈতে পূর্ব্ব দিগে রাম করিলা গমন। शूर्व मिर्ण विठातिन वन डेशवन ॥ সেই দিগ রামচন্দ্র করিআ বিচার। অধান্মিক বলি তথা না দেখিল আর॥২৫ তিন দিক চাহিআ রাম গেলেন দকিণে। প্রবেশ করিল ঞিমা মহাঘোর বনে ॥

(Dr9)

(944)

বিচারিসা বুলে রাম বনের ভিতর। তাহাতে দেখিল এক রম্য সরোবর 🗈 তার কুলে বট বুক্ষ আছএ বিশাল। একই যোজন জায় জার এক ডাল॥ তথা তপ করে এক তপুস্বী তৃষ্কর।৫ হেঁট মুখে উর্দ্ধ পদে কুপের ভিতর॥ দেখিমা তাহার তপ রামেত তরাদে। ধন্ত ধন্ত বলি রাম গেলা তার পাসে॥ রাম বলে তুমি তপ কর কি কারণে। দেথিআ তোমার তপ সর লাগে মনে॥১० রাম নাম মোর দশরথের নদন। কোন জাতি তপস্বী কহিবে বিবরণ॥ শম্ব আমার নাম আমি শুদ্র জাতি। রাহুরনন্দন আমি স্থকেতুর নাতি॥ এক বিভা কৈল আমি জাতি চণ্ডালিনী।১৫ বলে ধরি আর বিভা করিল ব্রাহ্মণী॥ ব্রাহ্মণীর গর্ভে হৈল দশটি নন্দনে। চণ্ডালীর গর্ভে হৈল পুত্র বারজনে॥ উগ্র তপ করি আমি দ্বাবিংশতি বেটা। গাছের বাকল পরি শিরে ধরি জটা ॥২০ উগ্র তপ করি আমি ছর্ল ভ সংসারে। ব্রহ্মলোক যাব আমি এই কলেবরে॥ কুপিলেন রামচন্দ্র তাহার বচনে। হাতে থাণ্ডা করি মুণ্ড কাটিলা আপনে॥ অগ্রিকুণ্ডে পোড়াইআ করিল ছারথার।২৫ রথে চড়িলেন হঞা স্থলর কুমার॥ রাম বলেন হুষ্ট নাশে আমি অন্তর্ধরি। ্ধার্মিকের মিত্র আমি অধার্মিকের অরি॥

দেবগণ ঠাঞি আমি কৈল অঙ্গীকার। তেঁই তোমা পাঠাইল যমের ছয়ার॥ ইহা শুনি শম্বক জুড়ি গ্ৰই হাতে। তোমার বাণে আমি মুক্ত হৈলাঙ রঘুনাথে॥ মোর সত্যে পালিবে আমার পুত্রবর।৫ সভাকে রাথিবে এক যোজন আন্তর ॥ এথা ব্রাহ্মণের শিশু পাইল জীবন। ব্রাহ্মণ ব্রাহ্মণী হর্ষ ভরত লক্ষ্ণ॥ ছই ভাই করিল ব্রাহ্মণে নমস্বার। দিলেন অনেক ধন বস্ত্র অলঙ্কার ॥১০ পুত্র কোলে ব্রাহ্মণ গেলেন নিজ ঘর। রাম লক্ষণ ভরত শক্রুছে দিঅ। বর ॥ সাধু সাধু রাম রাজা বিষ্ণু অবতার। রামে পুষ্প বৃষ্টি দেব করিল আপার॥ (मवर्गण वर्ण ताम किवा देकन कांक 15¢ চণ্ডাৰ আসিত স্বৰ্গে হৈত বড় ৰাজ॥ বর মাগ রামচন্দ্র জেবা লএ মনে। সেই বর দিবহে সকল দেবগণে ॥ জোড় হাতে বলে রাম যদি দিবে বর। তোমাদের বরে জীবুক ভ্রাহ্মণ কোঙর ॥২• তথনি জীবন পাল্য ব্ৰাহ্মণ-নন্দন॥ ভরত লক্ষণ তথো কৈল পুরস্কার। নানা ধন ছিজে দিল বস্ত্র অলম্ভার ॥ হরষিতে পুত্র নিঞা তারা গেল ঘর।২৫ তোমাদের সভারে বিস্তর দিআ বর ॥ দেবগণের বচনে শ্রীরাম হরষিত মনে। সকল দেবগণের করিল রাম চরণ বন্দনে ॥

(342)

(000)

বন্ধা পাঠাইল রথ বিচিত্র নির্মাণ। দেব রথে জাবেক শমুক ব্রহ্মার স্থান। অগ্নিকুণ্ড হইতে উঠে শমুক গন্ধৰ্ক অবতার রথে আরোহণ করিল যাইতে স্বর্গ চয়ার॥ তপের ফলে দেবমূর্ত্তি উঠিল আকাশে।৫ গগনে থাকিয়া গ্রীরামকে সম্ভাবে ॥ অবধান কর গোদাঞি রব্বংশের নাথ। আপন বৃত্তান্ত বলোঁমো জোড় করি হাত॥ জাতি চণ্ডাল আমি জন্ম নীচকুলে।১০ গোদাঞির দর্মন পাইলোঁ পূর্ব্ব জন্মের ফলে মহুষ্য জন্ম তোমার বিষ্ণু অবতার। তোমার পার নিবেদন করি কার্যা আপনার উগ্রতপের ফলে হইল তোমার হাতে মরণ দেবরথে চাপিঞা জাই ত্রন্ধার সদন ॥১৫ মর্ক্তালোকে রহিল গোসাঞি আমার পরিবার।

পালন করিতে আমি নাঁ পাইল তা সভার উত্তম কুলে বিভা করিল আমি সভার গোচরে।

ঘাদশ পুত্র হইল তাহার উদরে॥
মহাবল পুত্র দব সংগ্রামে স্থর।২০
অন্ত্র শন্ত্র জানে তারা জ্ঞানে চতুর॥
দিতীয় বিভা করিল আমি ব্রাহ্মণ-ছহিতা।
মহাকুলে জন্ম তার রূপে গুণে পতিব্রতা॥
তার উদরে হইল মোর দশ বেটা।২৫
গাছের বাকল পরিধান মাথাতে ধরে জটা
আমার ঔরসে জন্মতার ব্রাহ্মণীর কুমার।
ধর্ম দেখিয়া প্রতিপালন করিহ তাহার॥

তোমার বাণে মরিলাহেঁ। আমি সিদ্ধ অভিলায।

পাপ বুচিল মোক্ষ পাইল আমি যাই স্বৰ্গবাদ॥

তোমাতে সমর্পিল পুত্র গোসাঞি না করিহ আন।

ছৰ্জন অন্তর করিঞা গোসাঞি থুইবে স্থানে স্থান ॥

রাজ্যভোগ নিঞা গোসাঞি করিবে পালন৫ তোমার চরণে প্রভু করি এ নিবেদন॥ আজা দেহ গোদাঞি আমি জাই স্বৰ্গভূবন ধর্ম দেখিঞা আমার পালিহ সত্য বচন॥ গ্রীরামে প্রণাম করিঞা চলিলা আসে। মেঘের ভিতর জেন বিহাত ছটা থদে॥১০ বৃক্তলে আছেন গোসাঞির সংহতি॥ শবুকের বাইস পুত্র আইল আচ্মিতি॥ ব্রাহ্মণীর দশবেটা ধরে মুনির আচার। ফল মূল নৈবেদ্য হাতে আনিল অপার॥ শুদ্রিণীর দাদশ পুত্র তারা বলে মহাবীর।১৫ মাথাতে কাষ্ঠের বোঝা আনিল প্রচুর॥ যজকুত্তে পিতা পিতার সনে না হইল দরশন আসিঞা প্রণাম করে শ্রীরামের চরণ॥ শ্রীরাম বলেন্ত কে তোমরা দে পরিচয়। আপন বুত্তান্ত কহ তবে জানিএ নিশ্চয়॥২• শব্দের পুত্র আমরা দিএ পরিচয়। তোমার চরণ দেখিতে আইলা হোঁ নিশ্চয়॥ শস্কুক মারিয়া তুমি দেবলোকের করিলে হিত ত্রিভূবনে রহিল তোমার এ যশ কীরিত॥

(८६७)

(७৯२)

কি বলিতে পারি আমরা তোমার কিঙ্কর।। হয়ুমানের বোলে রাজ্য ছাড়িয়া দিল কোন কার্য্য করিব আমরা বল নরেখর॥ শ্রীরাম বলেস্ত স্থন তোমরা আমার

বচন। তোমার পিতা সমর্পিলক আমি করিব পালন ॥

্রতেক বলিঞা শ্রীরাম শ্বরেন হমুমানে।৫ আসিআ প্রণাম করেন হন্তমান শ্রীরামের **Б**ब्रुट् ॥

এরাম বলেন্ত স্থন বাছা প্রননন্দন। সাবধানে স্থন বাপু আমার বচন ॥ বাইদ পুত্রকে লঞা জাহ দক্ষিণদিগর। বাদা স্থানে স্থানে দেহ অনেক যোজন অন্তর ॥১০

রাজ্য ভোগসভাকে দেহ করিয়া বণ্টন। বাদ বিবাদ জেন না করে কোন জন॥ রণে ভঙ্গ না দের বিক্রম বিস্তর। বর্ণে শুদ্রজাতি দ্বাদশ হঞা কাতর॥ লড়িলা হনুমান লঞা বাইস কোঙর।১৫ দকিণ দিক লঞা গেলা হনুমান বানর॥ গৌড়ের দক্ষিণে বৈসে অলভ্যা সাগর। তার মধ্যে মধ্যে বসাইব নগর॥ শ্রীরামের কথা সাগরে গোচরে হন্তুমান। বাইস কুঙরকে তুমি বসিতে দেহ স্থান ॥२० রামের বচনে হতুমান রথে চড়ে। मक्राकादब गरेया मिक्र मिदक गए ॥ গৌড়ের দক্ষিণদিগে অলক্ষ্য সাগর। माभरतत कूरम रभना अर्जिक अञ्जत ॥

সাগর।

বাইস ভাই নিল বাইস নগর॥ সভা নিঞা হতুমান গেলা দেশান্তর। রামের স্থজিত হইল বাইস আগর॥ বাইস বেটাকে দিল বাইস নগর।৫ রহিল একক জন যোজন সম্ভর ॥ আগরি বলিয়া হৈল সভাকার নাম। একক যোজন বই সভার বিশ্রাম ॥ দশ বার সোল কার হইল তনয়। সাত আট নয় কার হৈল পাঁচ ছয়॥১০ শুদ্র আগরি হৈল ক্ষেত্রিতে বাথানি। জাকে বর দায় হৈলা লক্ষ্মী ঠাকুরাণী॥ জানা আগরি তাহে ধরে নর স্থনে। হাত্যা গাই নাহি দোহে পূজে নারায়ণে॥ মহামুর কেত্রি হইল বড় বলবান।১৫ ধন ধান্তে বলবীর্য্যে অতুল সমান ॥ কেহো কুল অকুল কেহো বড় বেহাল। অহঙ্কারে কোন জন প্রকৃতে চণ্ডাল।। চণ্ডালীর যে স্কৃত না মানে বাপ ভাই। কন্তা দিয়া বাদ হেতু কাটিলা জামাই ॥২• বিস্তর দেউল মঠ করিল স্জন। স্থাপন করিল তাহে দেব ত্রিলোচন॥ উত্তম ব্রাহ্মণে তারা দিল ভূমিদান। নিত্য নিত্য দ্বিজ পূজে দেব সন্নিধান॥ (যজ্ঞসূত্র-ধরে জারা সোদর দশ ভাই।২৫ राण ना भरत जाता जात ना वरह ना रागरह (లనల)

(8 €€)

আলি জাঙ্গাল দিল উত্তম সরোবর।
অতিথশালা পানীশালা দেবতার ঘর॥
গায়ত্রী জপে সন্ধ্যা করে করে দেবার্চন।
পণ্ডিত মূর্ত্তি তারা ভাই দশ জন॥
ব্রাহ্মণীর দশো বেটা বিচারে পণ্ডিত।৫
ধর্ম্ম কর্ম্ম করে শাস্ত্র স্থনে অন্তে নাহি চিত॥
চণ্ডালিনীর বারপুত্র বড়ই হর্জন।
দেবপিতৃগণ না মানে না মানে ব্রাহ্মণ॥
মহাবলবান হৈব তারা বিক্রমে বিশাল।
অহঙ্কারে না জানে তারা স্ক্র চণ্ডাল॥>
চণ্ডালের আচরণ করে তারা না মানে
বাপ ভাই।

বিবাদে কন্তা দিঞা কাটে জামাঞি॥
বারগ্রাম বদাইল বার সহোদর।
শহুকের কুলে হৈল বাইস কুঙর॥)
সভাকে স্থান দিয়া আইল হম্মান।>৫
রথ হৈতে নামিঞা গোঁলা শ্রীরামের স্থান॥
প্রণাম করিলা গিঞা শ্রীরামের চরণে।
আইস বইস শ্রীরাম বলেস্ত মধুর বচনে॥
ইন্দ্র বলেস্ত শ্রীরাম শুন আমার বচন।২০
অগস্তা সন্তামণে জাব আমার বচন।২০
অগস্তা সন্তামণে জাব আমার জত দেবগণ
বার বৎসর হইল না দেখি মুনিবর।
অগস্তা মুনিকে দেখিতে আমি জাইব সত্তর॥
পুশক রথে চাপিয়া তুমি আইলা আমার
সংহতি॥২৫

অগন্ত্য মুনির পা বন্দিব পরম ভকতি॥ জল্বাস হৈতে মুনি আইলা সংসারে। হেন মুনির চরণে হৈব নমস্বারে॥ আগু দেবগণ জায সভে বিচিত্র বাহনে।
পাছু জান গ্রীরাম পুপক রথ আরোহণে ॥
শব্বুক তেজিল প্রাণ শ্রীরামের হাতে।
স্বর্গবাসে গেলেন চড়ি দিব্য রথে ॥
কৃত্তিবাস পণ্ডিতেরুসরস বদন।
উত্তরকাণ্ডে গাইল ব্রাহ্মণ বটুর জীবন॥

পুষ্পকরথে চড়িঞা শ্রীরাম জান অগস্ত্যদর্শনে
নানাজাতি পাথী বৈদে তথা গহন কাহনে ॥
কোকিল কলবর স্থনিতে মনোহর।>
গিংহ ব্যান্ত হস্তী গণ্ডার নানাজস্ত ভরম্বর ॥
বাসা ঘর করিঞা আছেন জার যথা ইচ্ছে।
গৃধিনী পোঁচা বাসা করিঞা আছে এক
গোটা গাছে॥

পেঁচা বলবান তাতে গৃধিনী ছর্বল। ১৫
এক গাছ ছই জনে বঞ্চে অনেক বংসর॥
ছর্বল পেঁচা গৃধিনী বলবান।
বলে হরিঞা নিলেক তার বাসা স্থান॥
গৃধিনী বলে পেঁচা আমার বোল ধর।
বাসা ছাড়িঞা দেহ জাহ স্থানাস্তর॥২•
ছই জনে মহাবোল হৈল বিস্তর।
শ্রীরামের স্থানে ছই জনে করিল গোচর॥
আসিঞা মাথা নোয়াইল শ্রীরামের চরণে।
আসিঞা আপন বৃত্তান্ত কহে ছইজনে॥
গৃধিনী বলে শ্রীরাম ভূমি কর অবধান।২৫

দেবাস্থর গদ্ধর্কের যুদ্ধ স্থন রযুপতি॥

(950)

(৩৯৬)

বিক্রমে পিংহ তুমি বুদ্ধে বৃহস্পতি। চক্র জিনিঞা তোমার মুথের জ্যোতি॥ স্থ্য জিনিঞা তেজ গান্তীর্য্যে সাগর। কুবের জিনিঞা তুমি ধনের ঈশ্বর॥ প্রবন জিনিঞা তোমার বাণ চলে IC নির্মাণ যশ তোমার ত্রিভূবনে বলে॥ পৃথিবী জিনিঞা তুমি বড় ক্ষমাবান। তোমার গুণ কে করিতে পারে আগু অবসান বৈরা জিনিতে গোদাঞি তুমি দর্ব্ব গুণধারী। আপন বুৱাস্ত আমি তোমাতে গোচরি ॥১০ অনেক সক্তিতে বাসা সাজাইল আলয়। বলে তাহা নেগ় পেঁচা স্থন মহাশয়॥ পেঁচা বলে বিষ্ণু অংশে তোমার অবতার। তোমার অবতারে হইল ধন্ত ধন্ত সংসার॥ \*\* কপাল তোমার দেহে উংপত্তি ১৫ নারায়ণ অংশে জন্ম তুমি সর্বলোকেরগতি॥ চন্দ্ৰ জিনিঞা তুমি অতি স্থশীতল। বিশ্বস্তর মৃত্তি তুমি বলে মহাবল। যমের অংশে কর তুমি হুষ্টের বিনাশ। ধাতা কর্তা বিধাতা তুমি সর্বত্র প্রকাশ ॥२० সূর্য্য জিনিঞা তোমার তেজ বিস্তর। ইক্র জিনিয়া তুমি রাজা দওধর॥ অন্ধলনের চকু তুমি হর্বলের বল। शृधिनी आभात वामा रनम वृश्विका कत कन। রথে হৈতে নামিঞা শ্রীরাম বৃক্ষতলে বসি। পাত্র ভাগে হাকার পড়িল সভে ধাঞা আসি ভদ্ৰ ষে অশোক পাত্ৰ আইলা বিজয়। ধর্মপাল আইল সিদ্ধান্ত মহাশ্য।

জয়ন্ত মহাপাত্র আইলা ততক্ষণ। তুই পাথীর কন্দলি দেখিঞা বিশ্বয় হৈল মন শাস্ত্র পণ্ডিত পাত্র সব সর্ব্বশাস্ত্রে অবধান। পক্ষী বলে আইস বঝিতে জাই শ্রীরামের স্থান গৃধিনী পাথীকে শ্রীরাম পুছেন্ত উত্তর।৫ কতেক দিবস হৈতে গুধিনী তোমার বাসঘর गृधिनी वरण यथन देश्ण शृथिवीत উদ্ধাत। যথন হৈতে মানুষের নাহিক সঞ্চার। তথন বাসা সাজাইঞা আছি চির্ংগে। কোন লাজে পেঁচা বাদ করে আমার আগে পেঁচা বলে রঘুনাথ কর অবধান। • সত্য কথা কহি আমি তোমার বিগ্রমান॥ যথন হৈতে হৈল পৃথিবীর উৎপত্তি। তথন হৈতে এই গাছে আমার বস্তি॥ কি বলিতে জানি আমি পাপ ছুরাচারী। অনাথের নাথ তুমি তোমাকে গোচরি ॥১৫ ত্রিভূবনের বৃত্তান্ত তোমাতে গোচর। সর্বাসিদ্ধির তুমি সকল কার্য্যে তৎপর। শ্রীরাম বলেন শৃত্য সভা সভাতে নাহি গণি। প্রামাণিক নহে সে জে না বলে সত্যবাণী ॥ সে ধর্ম নাহি জাতে সত্যের নাহি গন্ধ।২• সে সত্য নহে জাতে ছলের প্রবন্ধ॥ সত্য বচন না বলে জে সভাতে বৈসে। সহস্র বংসর বন্দী থাকে বরুণের নাগপাশে মরণ দোসর বন্ধন নাগপাশে। ্বৎসরেক গেলে তার এক বন্ধন থসে॥২৫ শ্রীরামের বচন স্থনিক্রা বলে সভাখও। গৃধিনীর করিতে বুনি এ রাজদণ্ড॥

(৩৯৭)

(৩৯৮)

দর্শন শাস্ত্র ধর্ম কর্ম তোমাতে গোচর।
তোমার আগে আমরা কি বলিব উত্তর ॥
শ্রীরাম বলেন যথন স্থাইর নাহিক সঞ্চারে।
স্থাবর জঙ্গম নাহি সকল একাকার ॥
অনস্তর্শয়াতে নিজা জান্তি চক্রপাণি।
ক্রে নাহি কমলে ব্রহ্মার উংপত্তি।
পৃথিবী স্কল জে জন সেই স্থাজল
নানাজাতি॥

মধুকৈটভ হুই অস্কর উপজিল বিষ্ণুর ক্ষেন।
বন্ধাকে হানিতে জায় হুই জনে ॥>
বিপরীত রা কাটে অতি উচ্চৈঃস্বরে।
আপনি মারিল তাকে চক্রের প্রহারে॥
অস্ক্রের মেদ মজ্জাতে একা স্বজিল পৃথিবী

আগে মান্ত্ৰ স্থাজিল ব্ৰহ্মা পাছে বৃক্ষ দান ॥
বৃক্ষ না হৈতে কেমতে গৃধিনীর বাসা ঘর।>
রাজদণ্ড কর নিঞা গৃধিনী উপর ॥
গৃধিনীকে শান্তি করিতে বলিল কমললোচন
না মারিহ না মারিহ বলে ডাকে দেবগণ ॥
গৃধিনা পক্ষী পুড়িছে দাকণ ব্রহ্মশাপে।
পক্ষীরূপ ধরে পক্ষী না মারিহ কোপে ॥২০
এতেক বোল জবে ৰলিল দেবগণ।
পক্ষীর বৃত্তান্ত পুছেন্ত রাম কমললোচন ॥
কোন্ জাতি ছিল পক্ষী বৈদে কোন্ জানে।
কান কার্য্যে ব্রহ্মশাপ দিল কোন্ জানে।
সরস বৃত্তান্ত কহ পূর্ব্ব কাহিনী।২৫
স্থানিত শ্রবণ স্থা সমূত্রের বাণী॥

ইক্ত বলেন স্থন গ্রীরাম কমললোচন।
জে কার্য্য নিমিত্ত হৈল শাপ বচন॥
পূর্ব্বে গৃধিনী ব্রহ্মদন্ত রাজা।
বিদর্ভ নগরে বৈদে ধর্মে পালেন প্রজা॥
রাজাকে সন্তাসিতে,আইলা গৌতম মুনি।৫
গৌরব করিঞা দিল আসন পানী॥
পুটাঞ্জলি করিঞা রাজা মুনির বন্দিল চরণ।
কোন কার্য্যে কোথা জাহ গোসাঞি কেনে
জাগমন॥

মুনি বলে তপে হৈল আমার শরীর দাহন।
অন্নদান দেহ রাজা জুড়াক জীবন ॥>

সহস্র বংসর কৈল আমি লজ্মন।
তপস্থাতে ভর দিঞা করি পবনভক্ষণ॥
রাজা বলেন অতিথি তুমি আমার ভাগ্য
দিবদে।

রন্ধন ভোজন কর জে মনে আইসে॥১৫ পাত্র মিত্র নানা দ্রব্য ভাণ্ডার হৈতে আনি। মূনিকে রন্ধন করায় রাজা বসিঞা আপনি॥

পঞ্চাশ ব্যঞ্জন অন্ধ রন্ধন করিঞা।
মহানন্দে বিদলা মুনি ভোজন করিঞা।
এই মতে ভোজন করেন মুনি এক বৎসর।
বিধি বিড়ম্বিত পড়িল আথাস্তর ॥२०
রন্ধনে বিলম্ব হৈল মুনি ক্ষ্ধাতে আকুল।
অবিচারে হাঁড়ির ভিতর রাজা দিলেন্ত
চাউল॥

বিধির ঘটন হইল বিপরীত। শুদ্ধ মাংস রন্ধন ছইল তথুলের সহিত॥ (022)

(800)

রন্ধন হইল মুনি বসিলা ভোজনে। কথোক অর বাঞ্জন মুনি করিল ভক্ষণে॥ রন্ধন মাংস দেখেন মুনি অন্নের ভিতর। রাজাকে শাপে মুনি স্থনিতে ভয়কর ॥ মুনিজনে মাংস খাওআলি নষ্ট করিলে ব্রত।৫ গৃধিনী হঞা থাঞা বুল মাংস রকত॥ <u> এরাম নামে রাজা হব ইক্ষাকু বংশে।</u> সর্বাপ্তণ ধরিব জন্মিব বিষ্ণু অংশে॥ শ্রীরাম নামে রাজা তোকে করিব পরসন। সর্ব্বপাপ খণ্ডিবেক তোহার শাপ বিমোচন॥ তুমি ছুঁইলে ব্রহ্মদত্ত রাজার হয় মুকুতি।১০ যুগে যুগে ঘুসিবেক তোমার কিরিতি॥ এতেক কহিল জবে দেব স্থারপতি। <u> এরাম ছুঁইল গৃধিনী হইলা নুপতি ॥</u> রাজ আভরণ পরে রাজবসন I>¢ হার কুগুল পরে মানিক রতন ॥ পক্ষীরূপ ছাড়িঞা ব্রহ্মদত্ত জোড় কইল হাত অবধান কর গোসাঁই রঘুবংশের নাথ। ধন্ত ধন্ত শ্রীরাম দশরথের কুমার। তোমার পর্যে পাপ ঘুচিল আমার ॥২० ताजा रहेका शकी देशलाई। मांश व्याहाती তোমার প্রদাদে গোগাঁই মোর নরকে তরী মেলানি করিএ গোসাঁই তোমার চরণে। আজা কর জাই আমি স্বর্গগমনে॥ ব্ৰহ্মদন্ত স্বৰ্গে গেল স্বৰ্গে কইল স্থিতি।২৫ অগত্ত্যের যর গেলা রাম দেবের সংহতি॥ (ज जन स्टान ज्ञान उक्तमरखंद काहिनी। সকল হথ থণ্ডে তার লক্ষ্মী গোদানী।।

ক্বত্তিবাস পণ্ডিত গাইল দেবের কল্যাণ। জাঁহার প্রসাদে স্থনে লোক ভারত পুরাণ।

সকল মুনিগণ গেলা মুনির তপোবন।
সভার গৌরব করিল মুনি দিল নানা ধন॥
হরিস মনোরথে স্বর্গ গেলা দেবগণ।
কল শেষে বন্দে রাম মুনির চরণ॥
মুনি বোলেস্ত রাম তুমি আইলা কুশলে।
তোমার গুণে রাজা নাহি ত্রিভ্বনের তলে॥
সকল মুনি তুই হব তোমা দরসনে।
তোমার চরিত্র মোরা সদা জপি মনে॥১০
নারারণ রূপে তুমি জগত রক্ষণ।
হই জনা মারিঞা কর তুমি শৃষ্টির

শুদ্র মারি ঞা তুমি জিয়াইলে আহ্মণ।
দেবগণ তুই হইল করিলে পুণ্যের স্থাপন॥
আমার ঘরে আতিথ্য তুমি বঞ্চ এক রতি।
অতিথি ধ্যবহারে তোমার করিব ভকতি॥
বিশ্বকর্মার নির্দাণ নানা অল্কার

পালন ॥

দেখিতে স্থলর।
রাজ আতরণ নিল মুনি রামের পোচর ॥২০
গ্রহণ করিঞা দান করি পাত্র বিশেষে।
তোমাকে দিল অধিক ফল নারায়ণ আসে॥
ক্ষরিয় হইঞা দান নেয় নরকে নাহিক উদ্ধার
ব্রাহ্মণের দান লয় ক্ষত্রিয় নহে শাস্ত্র ব্যবহার
মুনি বোলেন্ত শ্রীরাম না বলিহ হেন বাণী।
অবধানে কহি সুন পুরাণ কাহিনী॥

(805)

(800)

শতাৰ্মে আলণ বহি অন্ত না পাও পূজা। ব্রাধ্বণ রাখিতে আছিল পৃথিবীর রাজা। ইক্র রাজা করিঞা রাখিলে দেবগণ। নির্ভয়ে বৈদ্র সভে জাহার কারণ। পৃথিবীতে ক্ষেত্রি রাজা বলে সর্বজন। है ज नहित्न आगा नवांत्र नत्ह तक्षण। **लाक्शान वनिका** उन्ना वमारेन आत्र। लाकपालत जः स्व इहेना कोठी जाएग ॥ লোকশালের অংশে হইল ক্ষিপ্র নামে রাজা ক্ষিপ্ৰ ৰাজাকে লইকা গেলা পৃথিবীৰ প্ৰজা रेक अःश्म रहेन कवित उभाराम। ट्रन कजिब्र शाहेरल आमि निज नान ॥ ইব্র অংশ ধর তুমি বিষ্ণু অবতার। ভোমাকে দান দিতে আমার তৃপ্তি আপার বিশ্বকশার নির্শ্বিত রত্ন অলম্বার ৷১৫ রাজ্মাভরণ পরেন রাম ত্রিভূবনের माद ॥

নাথাতে মুক্ট শোভে করে জে কঞ্চ।
বিশ্ব নিশ্বিত আভ্রপ কণ্ঠেতে ভূষণ।
কিলের মৃতি রাখ হৃদর অলক্ষার।
পৃথিবী আলোক করে রাম বিষ্ণু অবতার।
অগত্যা মূনি ভূসিল রামকে হ্মবর্ণ অলক্ষারে।
তেঞ্জন হ্মনে ভনে সে বাড়ুক শ্রীরামের বরে
কৃত্রিবাস পণ্ডিত স্বাশাস্ত্র জানে।
পাঁচালী প্রবন্ধ কইল লোক রামায়ণ শুনে।

শ্রীবৃদ্ধি বোলেন্ত ভোমাকে,পুছি একারণ। কোন রাজ দিলেক ভোমাকে দ্ব্য মাতরণ দিবা অলম্বার গোসাঞি গুল্ল'ভ সংসারে। বড় কোতৃক আমাকে ইহ বৃত্তান্ত স্থানিবারে।

মূনি বোলেন্ত শতেক বোজন বন থান আছিল নানা উপভোগে।

মান্তবের সঞ্চার নাই ছাড়িল পঞ্চী মুগে । উপকারী ভোগে নাহেঁ। আমি সেই

তপোবনে। ﴿
শতেক যোজন বেড়াই আমি কাছে।
সংন নাহি দ্রসনে ॥

নানা ফল মূল তাহা মধুর স্থসাদ।
বন থান দেখনে মাত্র থণ্ডে অবসাদ॥
বনের উপমা গুণ কহিতে না পারি।
যোজনেক বাট জুড়িঞা আছে উত্তম
পোথরি॥>\*

নানাপক্ষী কেলি করে পদ্ম উৎপল।
নির্মান স্থলীতল সরোবরের জল।
সরোবরের জীব দেখিল অন্তুত দরসন।
মূনিজনস্বজিত পুরাণ আয়তন।
পাষাণের নির্মাত গোফা দেখিতে অতি
মনোহর ১১৫

নিশি বঞ্চিল আমি তাহার ভিতর ॥
'প্রভাতে বেড়াই আমি সঙ্গোবরের তীরে।
স্থানর পুরুষ এক দেখিল স্থানর শরীরে ॥
হেন জনা না দেখিল জাকে পুছিব কার্থ।
প্রক্রবের কাছে বিসাঙ্ বিশ্বিত বদন (২০)
মড়া হইরা পড়িঞা আছে স্থানর শরীরে।
জ্যোতি অধিষ্ঠান সেই মড়ার শরীরে॥

(C.8)

(8 . 8)

মড়া নেহালিআ আমি করিঞা ধেআনে।
স্বৰ্গ হইতে রথ আইল লক্ষী অধিষ্ঠানে॥
স্কবর্ণে নির্মাণ রথ স্থ্যতেজ ধরে।
সহস্রের কন্তা সেবে সেই পুরুষ বরে॥
কেহো গীত গাএ কেহো বাজার
মোহন বাঁশী।৫

নানা আভরণে ভূষিত কল্পা সব প্রম রপেদী॥ রথে হইতে নাম্বিল পুরুষ সেই সরোবরের পাহাড়ে।

মড়ার মাংস থাএ পুরুষ কামড়ে কামড়ে ॥
আচমনের তরে নাম্বে সরোবরের জলে।
সান করিঞা পুরুষ শরীর পাথালে ॥১০
সান করিঞা পুরুষবর রথের উপর চড়ে।
কৌতুকে পুছিল আমি জখন রথে ফর্গ নড়ে॥
দেবরথে চড় তুমি দেব অবতার।
দেব হইঞা কেনে কর মড়া আহার॥
দেবমূর্ত্তি হইঞা কেনে ফর্ম পিশাচের আহার
তোমার চরিত্রে বাড়ে বিশ্বয় আপার॥
সকল বৃত্তান্ত কহে বা করিআ জোড় হাতে
ভূমিতে থাকিআ স্থনি আমি পুরুষ

কহে রথে ॥
স্বর্গরাজার পূত্র আমি স্বর্গ অধিকারী।২০ '
বাপের বিশুমানে আমি ধর্ম্মে রাজ্য করি ॥
সায়ু শেষ স্থানিরা ছাড়ি রাজ্যপণ্ড ।
কোট ভাই স্থারথে দিলাও ছাতা দণ্ড ॥ 
কীব হুবু মাহি এথা মন্থব্যের বার।
এই তপ করি আমি ফ্লম্লাহার ॥২৫

হৃষ্ণর করিল তপ আমি পঞ্চ সহস্র বংসর। ব্রহ্মলোক গেলাঙ্ আমি ছাড়িজা কলেবর ব্রহ্মলোকে কুধা তৃষা সহিতে না পারি। ব্রহ্মকে পুছিল আমি কোন্ মতে তরি॥ ব্রহ্মলোকে কুধা তৃষা নাহি করে বল।৫ ভোথ পিয়াসে আমি কেনে হইলাঙ্ বিকল॥ ব্রহ্মা বোলেস্ত হৃথ পায় রাজা তৃমি আপনার লোষে।

ব্ৰহ্মলোকে পীড়া কইলেক ভোমাকে ভোথ জে পিয়ানে॥

তে কারণে তোমাকে নামেন আহার পানী।

জেই দিএ তাই পাইএ স্থনহ কাহিনী ॥১০ জেই জেই শস্য পৃথিবীতে নাই বুনি।
সেই শস্যের ফল তুমি থাওগা আপনি॥
তোগ পিয়াস খণ্ডিবেক স্থনহ কারণ।
আপনার মড়া শরীর থান করগা ভক্ষণ॥
এতেক স্থনিআ আমি ধরিল ব্রহ্মার চরণ।
মড়ার, সড়িত মাংস কেমতে করিব ভক্ষণ॥
কা হইতে হইব আমার নরকে উদ্ধার।
সেই কথা কহ গোসাঁই কর অঙ্গীকার॥
আমার বচনে ব্রদ্ধার হাস্ত উপজিল।
শাপ বিমোচন হেতু সকল কহিল॥২০
ব্রহ্মা বোলেস্ত না পচিব না টুটিব মধুর

নিত্য নিত্য থাবে শরীর থণ্ডিবেক অবসাদ। তপের প্রসাদে অগন্ত্য ম্নির কাকেছে। নাহি ডর। (800)

(80%)

তপ করিতে আদিবেক মূনি এই বনের ভিতর॥

অগস্ত্য মুনির সনে তোমার হবেক দরসন। ছু:খ ভোখ শোক তোমার খণ্ডিবেক তথন॥ ইক্স আদি ত্রিভূবন তারিতে পারে মুনি। ক্ষুধা তৃষা খণ্ডিবেক কোন কাৰ্য্যে গুণি॥৫ মজা শরীর খান আমার প্রাণ ধারণা। এত দিবস মাংস খাই তবু না টুটে এককণা ্রত দিবস শরীর থাই আমি ব্রহ্মার বচনে। আজি মুক্ত হব আমি তোমা দরসনে॥ তোমা বই মুনি আর আন নাহি গতি।>• ক্বপা কর মুনি মুঞি পাই অব্যাহতি॥ গায় হইতে কাডিয়া দিলেক সকল আভরণ। নানা ভোগ পাইলেক করিতে ভক্ষণ ॥ নানা ভোগ দিল উত্তম বসন। नानाविध तक पिन वहमूना धन ॥১৫ প্রতিগ্রহ বলি যদি করিবে তিরস্কার। ত্র্গতি সাগরে আমার নাইক নিস্তার॥ নানা মত স্তব কৈলেক পুরুষবর্ণ প্রতিগ্রহ নিল আমি তাহার দেখিঞা কাতর॥

সকল দ্রব্য উৎসর্গিঞা দিলেক
আমার হাতে।২০
স্বর্গ গেল পুরুষবর চাপিঞা কাঞ্চনের রথে॥
প্রতিগ্রহ নিল আমি তাহার কারণে।
নর-শরীর নষ্ট তার হইল ততক্ষণে॥
স্কুর্গ ভ্ষা থণ্ডিলেক দেবশরীর ধরি।

মুনি জন ধনে মোর নাহি প্রয়োজন।
উত্তম পাত্রের তরে আমি রাথিল করিঞা

য়তন।
বিষ্ণু অবতার তুমি ত্রিভ্বনে পূজে।
হেন অলম্বার দ্রব্য তোমাকে তাল সাজে॥
ক্রত্তিবাস পণ্ডিতের সরস বাথান।
উত্তরকাণ্ডে গাঞা দিল খেত উপাধ্যান॥

শীরাম বোলেস্ত খেত রাজা বিদর্ভ দেশে
বন্দে।
কঠোর তপ করিঞা রাজা গেল স্বর্গবাদে ॥
বনে বনজন্ত নাইদে কিসের কারণে।
এ সব বুতান্ত সে তোমার পাএ জানে ॥>

মূনি বোলেস্ত সতাযুগে রাজা হইল তার

ইন্ধাকু নামে পুত্র হইল তাহার পুত্রবর ॥ ব্রন্ধলোকে গেল ইন্ধাকু পুত্র দিঞা রাজ্য । ভার।

नाम नुभवत्।

ধর্ম পালন অবশু করিবেক রঘু বংশের প্রচার রাজনীত শিগাইল পুত্রে পালিতে রাজ্য ভার ধর্ম কথা ব্ঝাইল শাস্ত্রের বিচার ॥ অপরাধে শাস্তি করিলেক দেবলোকে পুজি॥ বিনি অপরাধে শাস্তি করিলে ঘোর নরকে মঞ্জি॥

সত্য করাইঞা পুত্রে রাজা করিল ক্ষিতি-ভলে।২০

्रांच तरथ हालि को शुक्र राग वर्गभूती ॥२० वक्तानांक राग तांका राग सर्वात करन ॥

(809)

জ্যেষ্ঠ পুত্র সত্যবান্ তাহার হইল বলে মহাবল। ধর্মশাস্ত্র জানিবেক পণ্ডিত কেবল।। কনিষ্ঠ পুত্র দও তার হইল অভি গুরাচার।

গুরুপূজা না জানে শান্তের ব্যবহার॥ দওকে দিল উপান্তের রাজ্যখও।৫ व्याननात त्नार्य भागा उक्रमानमञ्ज ॥ স্থরসেন পর্বত মাঝে দণ্ড রাজ্য করি। মধুপুরী বলিঞা রাজ্য বসাইল নগরী॥ তক পুরোহিত লঞা নানা যক্ত করে। ইক্স স্থ্ৰ ভূঞ্জে রাজা অনেক বংসরে ॥১० ভক্তের ঘর গেলা রাজা আপনি বুলা

वृिन ॥ নানা রত্নে নিশ্বিত ঘর পড়এ বিজুলী।। অজা নামে শুক্রের ঝি পরম স্থলরী। ফল ফুল তুলিতে কন্তা দেখিল একে भंती ॥

ক্তার রূপ দেখিতে রাজার কাম হইল व्यिश्वीन ।> ६

কন্তার বৃত্তান্ত জানিতে রাজা গেল কন্তার স্থান ॥

রাজা বলে কাহার কৌরারী কলা কাহার वित्राती।

হেন রূপ গুণে কেনে বেড়াহ একেশ্বরী। কন্তা বলেন আমার বাপ তোমার

প্তরুজন।

অজা নাম ধরি আমি স্থনত রাজন ॥২০

(8 ob)

রাজা বলে তোমাকে দেখিঞা আপনা ধরিতে না পারি।

হাত প্রসারিষা মোকে আলিঙ্গন দেহলো यमत्री॥

আমার ভার্যা হইলে কন্তা তোমার হইব माम।

হুই জনে ভূঞ্জিব রতি ভোগ বিলাস ॥ গুরুর কন্তা ভগিনী হএ রতি না বাসহ नक्ता।

আমা সনে ক্রীড়া নহে তোমার ব্রহ্মশাপে মরিবে রাজা।

আমার বাপকে গোচরিআ নেহ সন্মতি। তবে তুমি আমার ঠাই করহ আরতি॥ বলে ধরিআ শৃঙ্গার করিতে না বলিবে আমার বাপে

রাজ্যদনে পুড়িঞা রাজা মরিবে ব্রহ্মশাপে। রাজা বলে তোমার বাপের বিলম্ব সহিতে না পারি।

তোমার নাগি মরণ আমার আজি ভাগ্যে ধরি ॥

ভজমান হইআ কেনে স্বরূপে করহ পরি-श्रा ।

প্রাণ রাথ কল্লা মোর দেহ ত শৃঙ্গার। বিস্তর কাকুতি করে রাজা না করে ভর ১৯৫ কোপে কন্থা গালি দের রাজাকে বিস্তর 🖟 হাত পা আছাড়ে কন্তা রাজাকে পাড়ে भागि।

বলে শৃঙ্গার করে রাজা বলে মহাবলী ॥

বলে শৃঙ্গার করিঞা রাজা গেলা নিজ ঘর। বাপের অপেক্ষা জানিঞা কন্মা কান্দে বিস্তর ॥

শিষ্যগণে বেষ্টিত মুনি আইলা নিজ ঘর।
তোথের ডাহে মুনির পোড়এ কলেবর॥
কান্দে অজ্ঞা কন্তা বদন ঢাকি লাজে।
কে মকল জানিল মুনিরাজ ধ্যানের তেজে॥
ব্যাকুল হইলা মুনি দিনাস্তের ভোথে।
অধিক জানিলা মুনি বিএর অস্থথে॥
ধর্মশীলা কন্তা আমার বেন অগ্নির শিথা।
গুরুর কন্তা হরে রাজা না করে অপেক্ষুণ॥
বন্দশপ দিল মুনি কোপ করিঞা মনে।
দণ্ডরাজা পড়িঞা মরুক অগ্নি বরিসনে॥
অগ্নিবর্ধে দেবরাজ সাত দিবস রাতি।
সবংশে পুড়িঞা মরে দণ্ড নরপতি॥
অজ্ঞা রহিল গিঞা সরোবরের পাহাড়ে।১৫
অজ্ঞার কাছে জেই রহে অগ্নিতে

নাপাড়ে॥ সহস্র থোজন এড়িঞা শুক্র করিল গিঞা বাস।

সাত দিবস অগ্নি বর্ষে দেখিঞা লোকে তরাস॥

সহস্র যোজন জুড়িয়া ইক্র আকারবর্ষে।
স্থাবর জকম পুড়িঞা ভরিল পাঙ্গে ॥২•
সহস্র বোজন ছাড়িঞা কাহো নাহি এড়ে।
পাত্রমিত্র সমেতে রাজা সবংশে পোড়ে॥
অ্কার পারে জে জন পদ্বিল শরণ।
তাহারা সব এড়াইল শাপ অগ্রিতে মরণ॥

গরু মান্ত্র্য কারে। নাহিক নিস্তার। সহস্র যোজন পুড়িঞা হইল ছার থার॥ পোড়া হইতে সেই বনে নাহিক বসতি। দত্তক বন বলিঞা বনের রহিল থেয়াতি॥ জলস্থলে যথা তথা বৈদে মুনিজন ic পূর্ব্ম বৃত্তাস্ত তোমাকে আমি কহিল এখন।। হইজনে কথা কহিতে বেলা অবসান। স্থান করিঞা ছইজন করিল সন্ধ্যা ধ্যান॥ ছই জনা তপকরে ছই সন্ন্যাসী। সন্ধ্যা ছাডিঞা আন কোথা ভাল না বাসি॥ সন্ধ্যা জাপ্য করেন রাম বিবিধ বিধানে। ফল মূল দিল মূনি অমৃত সমানে॥ তৃষ্ট হইলা শ্রীরাম করিআ ভোজনপান। রাত্রি প্রভাতে গেলা রাম মুনির সন্নিধান # দেশ জাইতে শ্রীরাম মুনিকে মাগিল মেলানি ১৯৫

নমস্বার করিল রহিল প্রিয়বাণী॥
তোমার অমুগ্রহেতে গোসাঁই আমার
সফল জীবন।
আর বার দেখিতে আসিব আমি

তোমার চরণ॥
মুনি বোলেস্ক অমৃত হেন তোমার বচন।
তোমার বচনে তৃষ্ট হইলাঙ্ দকল মুনিজন॥
অনাথের নাথ রাম তুমি লোকপালন।২০
তুমি তৃষ্ট হইলে ভূঞ্জি স্বৰ্গভূবন॥
জেজন তোমাকে চাহেস্ক কোপ করিঞা।
অবাথি।

যমদ ও মারিআ তাঁকৈ নরকে করেন্ত হ্থী।

(852)

সর্বলোক প্রির তুমি আপনার গুণে। আমি বড় তুই হইলাঙ্রাম তোমার

मञ्जायरम ॥

কুশলে থাকিহ রাম তুমি ভুঞ্জিই মেদিনী। শ্রীরামকে কল্যাণ করিঅ। পাঠাআ দিল

यूनि ॥

মুনির প্রির রামচন্ত্র জগতের গতি।

কেন জীরামের বরে সভাগত্তের বাড়ুক

পিরিতি॥

ক্লান্তবাদ পণ্ডিত কহে শাস্ত্রের অনুমান। উত্তরকাণ্ডে গামা দিল উত্তর উপাথ্যান।

পুষ্পক রথে জায়েস্ত শ্রীরাম লোক

পুরস্কারি। ছই প্রহরে গেলা রাম অযোধ্যা নগরী ॥১•

ধারীকে আজ্ঞা করেন রাম জাহ ভিতর। আমার আগমন কহ ভরত লক্ষণ গোচর॥

প্রীরামের সম্বাদ কহিল হুইজনে। সম্ভ্রমে আসিআ হুই কৈল শ্রীরামের

**চরণ বন্দনে** ॥

ছুই ভাইকে কল্যাণ করিআ রাম বসিল। সিংহাসনে।১৫

আজা করিল শ্রীরাম মধুর বচনে ॥
রাজস্র যজ্ঞ করিলেক পূর্ব্ব মহারাজে।
রাজস্র যজ্ঞ করিব থাকহ তাহার কাজে ॥
জোড় হাত করিআ ভুরুত করে হাহাকার।
রাজস্য যজ্ঞ করিলে মজিব সংসার ॥২০

রাজহয় যজ্ঞ করিল পূর্বে শশধর। গ্রহনক্ষত্রে সংগ্রাম হইল দেখিতে ভরন্ধর । ताजरुत युक्क कतिन दक्रण जरनत ने भेता। মংগ্র মকর কচ্ছপ পুড়িয়া মইল বিস্তর । রাজস্ম যজ্ঞ কইল ইন্দ্র দেবরাজে।৫ দেবাস্থরের রণ কাজিল তাহার কাজে,॥ হরিশ্চন্দ্র রাজস্য় করিআ পাইল অপচয়। মহাঘোর যুদ্ধ হইল সংসারের রাজা ক্ষয়॥ রাজস্য় বজ্ঞ করিলেক রাজা রুহিদাস। রাজহয় যজে তার রাজ্যের বিনাশ ॥১• রাজস্য যজ্ঞ করিল রাজা জন্মেজয়। মোহপর চক্র হইল সংসার ক্ষয়॥ রাজস্য় যজ্ঞ করিল রাজা উশীনর। রাজ্য সমেত মইল রাজা গেল যমের ধর॥ রাজস্য যক্ত করিল রাজা জীমৃতবাহন।১৫ অগ্রিতে পুড়িআ তারা হারাইল জীবন ৪ রাজস্য যজ্ঞ করিল বেণু নৃপতি। সবংশে পুড়িআ মইল তার নাহিক সস্ততি॥ রাজ্যথান কোপে তার নিলেক সাগর। দীপথান রহিল ভার অস্তরে অস্তর।২০ পৃথিবীর তলে বৈসে জেবা বৈসে অন্তরীকে॥ রাজস্য় কইলে মরে তাহা সর্বলোকে (मर्थ।

হেন রাজস্থ করিতে গোসাঁঞী তোমার গেল মন।

রাজহর যজ্ঞ করিবে হবেক সংসারে মরণ। সহোদর ভাই আমরা ভোমার কিন্ধুর।৯.৫ আমার বচনু স্থন তুমি পৃথিবী ঈশ্বর॥ (829)

(8 < 8)

অনাথের নাথ তুমি সংসারের রাজা।
রাজচক্রবর্ত্তী সকলে করে তোমার পূজা॥
সংসার রক্ষা কর গোসাঞি কর পরিত্রাণ।
রাজস্ম যক্ষ করিলে সভাই হারাব পরাণ॥
বড় বড় রাজা সব রাজ অহন্ধারে রহে।
রাজস্ম যক্ষ করিআ কেহ নাহি রহে॥
বিভূবন পালিতে গোসাঞি তোমার
অবতার।

তোমাকে না জুয়ায় লোক করিতে সংহার॥

লোকের হিতের তরে ভরতের বচন।
ভরতে শ্রীরামচন্দ্র দিল আলিঙ্গন॥১০
লোকের হিতের তরে ভরতের কাহিনী।
বিভূবন রাথা গেল তোমার ধর্মবাণী॥
রাজস্ম মহাযক্ত সর্ব্ব যক্ত আগে।
তোমার বচনে আমি করিল পরিত্যাগে॥
ছাওয়ালের বচন লীয় যদি যুক্তি বিচার।১৫
তোমার বচনে ভাই হইল জগতের
•প্রতিকার॥

রাজহের যজ্ঞ রাম এড়ি এই দোষে। উত্তরকাও গাইল পণ্ডিত ক্বত্তিবাসে॥•

শ্রীরামের দক্ষিণে ভরত বামে লক্ষণ
আছিলা ভাই ছইজন।
সমূপে ভরত দাগুইলা দোসর লক্ষণ ॥২০
জোড় হাতে লক্ষণ বীর বোলেগু বচন।
সম্মেধ্যক্ষ কর ভূবন পালন॥

পূর্বের ত্রন্ধাবধ কইল ইন্দ্র দেবরাজে। ইক্রের ব্রহ্মবধ ঘুচিল অশ্বমেধের তেজে।। বুত্র নামে অস্থুর হইল ব্রহ্মার নন্দন। আড়ে প্রসরিল বীর সতেক যোজন। ভয়কর মূর্ভি দেখি অদ্ভূত প্রমাণ।৫ দান ধর্মে তপে বড় জাহার বাখান॥ সর্বলোকপ্রিয় অন্থর ধর্মে রাজ্য পালে। বিনি চাসে জার রাজ্যে নানা শস্ত ফলে॥ नाना मधुत कृषकण नाना तृक धरत । ত্রিভুবন প্রীত করিষা স্থথে রাজা করে॥ রাজভোগ ভূঞ্জিয়া পুত্রেরে রাজা করে। তাহার কীর্ত্তি ঘূষিবারে থাকিল সংসারে॥ পুত্রেরে রাজা করিঞা তপে দিল মন। জাহার তপ দেখিঞা কম্পিত দেবগণ॥ **(ए**नर्गंग न्या रंगना हेन्द्र निकुत घत ।১৫ বৃত্রের চরিত্র বিষ্ণুতে করিল গোচর ॥ ধর্ম্মেতে ধার্ম্মিক অস্থর বলে মহাবল। কোন মতে তাহার না পাইল ছল।। তপ করিতে বুত্র না করে অপেকা। ত্রিভুবন বশ করিলেক দেবের নাহি রক্ষা॥২• জার হইতে দেবগণ হইল সন্নিধান। তুমি নাথে দেবগণ হইল নাথবান॥ তোমার মুখ চাহিয়া দেব পশিল শরণ। বৃত্তেরে মারিআ দেবগণে করহ রমণ॥ বিষ্ণু বলেস্ত বৃত্তাম্বর বড়ই চতুর ৷২৫ সেবাতে আমা বন্দি করি হইয়াছে ঠাকুর॥ আপনি না মারিব আমি স্থঞ্জিব উপায়। জেই মতে জোমা সবার থণ্ডএ আপায়॥

(850)

(85%)

তিন অংশ হব আমি বৃত্ত মারিবারে। এক অংশ প্রবেশিব ইন্দের শরীরে ॥ এক অংশ বজ্র সনে হইব মিশাল। তেয়জ অংশে বন্দি করি থুইব পাতাল॥ বুত্রবধে সমতোষ হৈল পুরুদর।৫ विकृत वहरन रमरव इत्रिम विखन्न॥ क्षिवादत्र काम्र त्मव विकृत कात्मत्म । ব্রত্রের তপের বনে করিলেক প্রবেশে। তপের প্রদাদে বৃত্র ত্রিভূবন শাদে॥ বুত্র দেখিঞা দেবগণ পড়িলা তরাসে ॥>• কেমতে মারিব আমরা অস্থর হর্জয়ে। চিস্তিত দেবতা হৃদে সাম্ভাইল ভয়ে॥ বিষ্ণু তেজে বিক্রম বাড়িল পুরন্দরে। বজ্র তুলিঞা মারে বৃত্তাহ্মরের উপরে॥ ব্রহ্মবধ করিঞা চিস্তিত পুরন্দর।১৫ পড়িল প্রমান কোন ত্রৈলোক্য ভিতর 🛭 ততক্ষণে ব্রহ্মবধ হইল মৃর্তিধর। প্রবেশ করিতে চাহে ইন্দ্রের কলেবর॥ দেবগণ বোলে বিষ্ণু কর পরিতাণ। দেবতার রাজা ইন্দ্রের করহ কল্যাণ ॥২• তুর্জ্জয়ে অস্থ্র মারা গেল তোমার তেজে। ব্রহ্মবধ হইতে রক্ষা কর দেবরাজে॥ विकृ वर्णन अन्यामध या दिक् मात्र वर्ष भूजा। व्यथ्यस्य विकृष्ठ कत्र हेल त्राजा। ব্ৰহ্মবধে ইক্ৰ রাজা হৈল অচেতন।২৫ যজ করিতে ইক্স আপনি কইল মন॥ অচেতন হঞা করে কাল বিলম্বন।' স্বৰ্গ ছাড়ি দেব রাজা হৈল অদর্শন।

মহাঘোর পাইল তবে এ তিন ভূবন।
নদ নদী স্রোত ছাড়েল গৃথিবী নিজলা।
হর্তিক্ষ মড়ক ভয়ে প্রজায় হর্বলা ॥
যজ্ঞ করিতে ইক্রের ঠাই গেলা দেবগণ।
ইক্রের আঁচলে তথন ধরে ব্রাহ্মণ॥
বংসরেক যজ্ঞ করিল বিবিধ বিধানে।
যজ্ঞে পূর্ণান্থতি দিলা জতেক দেবগণে॥
অশ্বমেধ যজ্ঞ জবে ইক্রে কৈল অবসান।
বিসিবারে ব্রহ্মবধ জলের ভিতর।
অশুচি ধোবার ঘাটে থাকে নিরন্তর॥
জলে নামিআ শৌচকরে ধোবার ঘাটে
করে স্পান।

ব্রহ্মবধের ফল পাএ কভু নহে আন ॥
আর অংশ ব্রহ্মবধ থাকে গাছের উপর।১৫
জানিঞা স্থানিঞা ব্রহ্মবধে পতিত হএ নর॥
বলে ছলেতে বা কাটে জারা করে বিক্রের।
ব্রহ্মবধের ফল সেই পাএ স্থানিশ্চয়॥
তৃতীয় অংশ ব্রহ্মবধ যথা স্ত্রী রক্তম্বল।
বর্ষজ্ঞানে তপে নষ্ট করিল দেবলোকে
আর অংশ কলা॥২০

রজস্বলা স্ত্রী গমনে পাপী হবে জারা।
ব্রহ্মবধের ফলে উদ্ধার না হবে তারা॥
চারি সংশে ব্রহ্মবধ থুইল চারি ভাগে।
ইক্সু রাজা মুক্ত হইলা ব্রহ্মবধ রোগে॥
হেম যক্ত থাকিতে আরু যক্ত করিতে উচিত্ব
ক্রমমেধ মহাযক্ত চারি যক্তের পুঞ্জিত॥

(859)

(824)

লক্ষণের বচনে শ্রীরামের মনে যুক্তি আইসে। ভাল ভাল করিঞা শ্রীরাম কথাকে প্রশংসে॥

স্থনিআ পুরাণ কথা শ্রীরামের উল্লাস। উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত কৃত্তিবাস।

শ্রীরাম বলেন যুক্তি ভাল কৈলে লক্ষণে। ৫
অশ্বমেধ যজ্ঞ করিব ভাল পড়িল আমার
মনে॥

দশরথ বাপকে আমি দেখিল স্বপনে। হাতে ধনুকবাণ করিঞা মৃগী থেদাভিয়া বনে বনে॥

বাপের পাছে দেখিল অন্ধ মুনির ছাওয়াল থান্তি না পাএ রাজা দদা এ জঞ্জাল ॥১০ বাপে এক্ষবধ কইল দৈব নির্কল্পন । ধর্মশীল বাপ মোর কুলের লোকপালন ॥ বাপ মুক্ত হইলে আমি ঋণে হই পার । তবে স্নামার যশ ঘূষিব দকল সংদার ॥ কর্মদোষে পড়ে কার্য্য সকলেরি তথা ।১৫০ লক্ষ্মণ ভরত প্রশংসিঞা শ্রীরাম কহন্তি কথা কর্দ্ম প্রজাপতির হইল পুত্রবর । ইন্দাপ নাম ধরে কনোজ দেশের ঈশ্বর ॥ প্রজাগণ পালে রাজা ধর্ম্মে রাজ্য করে । দেব দানব গন্ধর্ম্ম কম্পে জাহার ডরে ॥২০ জাহার কোপ উপজিলে ত্রিভ্বনে দণ্ড । তাহার ঠাই গেলে এড়াঞি পাষ্ও ॥

দার্কভোমের রাজা হইলা পৃথিবীর তলে।

সকল রাজা জিনে ুরাজা দানে বৃদ্ধিবলে ॥

বসস্ত সময় হইল উত্তম চৈত্র মাস।

মৃগ মারিতে গেলা রাজা পর্কত কইল

নাশ ॥

মৃগ মারি ঞা বুলে রাজা কাননে কাননে।
পার্কাতী মহেশেত হইরাছে মিলনে ॥
স্ত্রীরূপ ধরিক্রা যথা \* \* র।
স্ত্রীরূপ করাইল পর্কাত শিথর ॥
মৃগী পক্ষী যত ছিলা সব হইলা স্ত্রী।
সকল স্ত্রী করিক্রা তোষে পর্কাতকুমারী॥
হেন বে \* \* সকল অমূচরে।
গোলে মাত্র সভাকে স্ত্রী কইলেক

মহেশ্বরে॥

স্ত্রীরূপ সভাকে দেথে রাজা জেই জথা বুলে।

ত্রাস \* \* আপনা নেহালে॥ 
সৈত সমেতে স্বী হইলা রাজা টুটিয়া
আইলে।১৫

মহাদেবের পায়ে পড়িআ রাজা করএ বিকলে॥

উঠ উঠ মহারাজা বোলে মহেশ্বর।
পুরুষ এড়িয়া তুমি অন্ত মাগ বর॥
মহাদেবের বচন রাজা জবে স্থানিল দারণ।
দেবীর চরণে পড়িঞা রাজা করন্তি করুণ
দেবী বোলেন মহাদেবের বচন করিতে
নারিব আান।

এক মাস স্ত্রী হৰে মহাদেবের বিধান।

(668)

(820)

আর মাস পুরুষ হবে আমার বর দানে।
আক্ষেমা না কর রাজা চল নিজ স্থানে॥
পুরুষ হইঞা স্ত্রী হবেন হিরেম্মর বনে।
স্ত্রী হইঞা পুরুষ হবে তোমার না পড়িব
মনে॥

জেই মাসে জেই হবেক সেই সে হয় এক ধেয়ানে।৫

রাজা বলেন মাসেক হব পরম স্থলরী।
মাসেক পুরুষ হব জেন রূপের মুরারি॥
পরম স্থলরী হইলা রাজা মহাদেবের বর
দানে।

রাজ্য তেজিস্পা বনে বুলে রাজা সকল অমুচরগণে॥

ব্রীরামের কথা স্থনিঞা ভরত লক্ষণে উঠে হাসি।>•

অন্তৃত বলিঞা লোক কথাকে প্রশংসি॥ ভরত লক্ষণ বলে গোসাঞি কথা স্থনিতে বড উপহাস।

**স্ত্রী হইঞা কোন্** ছর্মতি পাইঞা রাজ্য বঞ্চে এক মাস॥

পুরুষ হইকা এক মাস রাজা কোন্ বুদ্ধি বঞ্চে।

এতেক ছুর্গতি রাজার কোন্ মতে ঘুচে ॥১৫

জ্বীয়াম বোলেস্ত দেবের বরে হইল

भूक्य छी।

সকল সৈপ্ত হইল তার পরম স্থন্দরী॥ নানা বন বেড়াঅি পারের সঞ্চারে। নানা পুল নানা ফল তুদিল আপারে॥ নানা পক্ষী কেলি করে বিচিত্র সরোবরে। বুধ তপ করে চক্রে কোন ঘরে॥ দ্বিতীয় চন্দ্র যেন কৈলেক উদয়। কঠোর তপ করে মুনি শুদ্ধ হৃদয়॥ জলকেলি করিতে আইলা সঙ্গে কন্তাগণ।¢ সরোবরে বধুসনে হইল দরসন ॥ জলকেলি করাইলা হাসন্তি লিলাএ। কাম অধিষ্ঠান হইল বুধের হৃদয়ে। তপ এড়িআ মুনিবর জলকেলিতে মন। ইলা সনে দেখা অন্ত অন্ত নিরীক্ষণ॥১০ বুধ বোলে দেব গন্ধৰ্ক নাহিক হেন স্ত্ৰী। অত্যের স্ত্রী নহে আমি বিভা করি॥ জল হইতে উঠিআ বুধ গেল নিজ স্থান। সকল কন্তা আনিল করিআ ধেয়ান। সকল স্ত্রীগণ বুধকে নমস্বারি।১¢ ক্যাগণে পুছিল বুধ লজ্জা পরিহরি॥ মুনি বলে কন্তা সব কহত নিশ্চয়। কাহার ঝি কাহার বহু দেহ পরিচয়। দেবতা মনুষ্য কিবা গন্ধর্ক কিল্লর। কোন কার্য্যে তোমরা আইলা সরোবরের ভিতর ॥২০

কন্সা বোলে আমরা মহাদেবের দাসী। পতি নাই একেশ্বর বেড়াই এ সকল রূপসী॥

এতেক স্থনিআ বুধ কইলেক ধেয়ান।

সকল বৃত্তান্ত জানিল মুনি আদি অবসান॥

স্ত্রীগণে বোলে বুধ পুরুষ হইলা স্ত্রী।

কিং পুরুষ লইঞা থাকহ স্থনারী॥

.25)

(822)

সকল স্ত্রীগণ লই ঞা বৃধ গেল পর্বত-শিখর।

কিংপুরুষ লইআ তথা বঞ্চে নিরম্ভর ॥
লক্ষা হরিআ আইলা বুধ ইলার সম্ভাবে।
কামে পীড়িত মুনি বসিলা ইলার পাশে॥
বুধ বলে শুন কন্তা বচন আমার।
তোমাকে ভজিল মন দেহত শৃঙ্গার॥
চল্রের প্রিয়পুত্র আমি বুধ নাম ধরি।
তোমার রূপে মোহ গেলাম তুমি হয়
আমার স্ত্রী॥

বুধের বচনে বলে ইলা ত রূপদী। জেই ইচ্ছা তাই কর আমি তোর দাসী॥১० উভয় সম্মতি দোঁহে কেলি পরিহাস। ক্ষণ হেন মাত্র তার গেল মধুমাস॥ মাস শেষ জানিঞা রুধ হইল সত্তর। শঙ্গার ছাড়িয়া আইলা তপেতে তৎপর॥ স্থন্দর পুরুষ রাজা হইলা মাস শেষে।১৫ জিজ্ঞাসিতে বার্ত্তা রাজা গেল বুধ পাশে॥ সর্ব্ব সৈত্তে আইলাঙ পর্ব্বতশিথর। কোথা গেল তাঁহারা কহ'মুনিবর ॥ বুধ বোলে চিস্তা রাজা না করিহ মনে। তোমার সৈত্য মইল সবে ঝড বরিষণে ॥২০ ঝড় বুষ্টে আলে। তুমি আমার আশ্রমে। সব গেলা পাবে তুমি কথোক দিন ক্রমে॥ একেশ্বর বৃলি তুমি না হবে বিকল। আমার আশ্রমে থাক খায়া মধুর ফল।। অত্নুচর মরণে রাজা হইলা ছ:খিত ৷২৮ হেথা এক। কেমতে থাকিব বান্ধব বৰ্জিত।

রাজ্য গেলে কান্দিবে সবার পরিবার। কোন বুদ্ধে করিব তা'সবার প্রতিকার॥ শশবিন্দু পুত্র মোর ধর্ম্ম অবতার। আমা বিনে কেমতে শাসিব রাজ্যভার॥ পাত্রমিত্র তরে রাজা কান্দিঞা উত্তরোল।৫ व्यागिरिक्तारम तुथ त्वात्वस्त श्रियात्वान । পরিতাপ তাজ রাজা থাক মোর ঘরে॥ সব ভাল হবে তোর বৎসর অস্তরে॥ অমুচর দঙ্গে তোমার হবেক সংযোগ। রাজা হইঞা তুমি ভঞ্জিবে রাজ্যভোগ ॥:• বুধের ঘরে রহিলা প্রবোধ বচনে। ন্ত্রী হইসা তোষে রাজা চন্দ্রের নন্দনে ॥ একমাস পুরুষ যুবতী আর মাস। পুরুষ হইঞা করে রাজা ব্রত উপবাস॥ ত্রী হইলা রাজা আর মাদের প্রবেশে।১৫ বুধ সহিতে বঞ্চে শৃঙ্গারের রসে॥ দেবের নির্দান্ধ কেহ খণ্ডাইতে নারে। বুধবীর্য্যে পুত্র তার রহিল উদরে॥ পুরুষ হৈলে গর্ভে পবন সঞ্চার। নারী হৈলে প্রবেশ করএ আর বার ॥२० নয় মাসে প্রসব হৈল রাণী ইলা॥ পুরুরবা পুত্র হইল যেন চক্রকলা॥ মহাবংশে পুত্র হইল যেন রূপের মুরারি। রাজচক্রবর্তী হইবেক নানা গুণধারী॥ পুত্ৰ দেখিআ বুধ হইলা আনন্দিত মন।২৫ পুত্রের পালন করে ইলা থাকে সর্বাঞ্চণ।। পুরুষ হইলা রাজা আর মাস প্রবেশে। ধর্ম কহি শান্তকথা থাকেন বুধের পালে 🛊

(७५८)

(8 \$ 8)

ন্ত্রী হইলা রাজা মাস অবশেষে। বুধের পাশে বঞ্চে রাজা শৃন্ধার রসে॥ বার মাদ গেল রাজার পুরুষ অবতার। বৎসরেক রহি বুধ চিন্তে প্রতিকার॥ ব্রাহ্মণের রাজা বুধ চল্লের নন্দন।৫ (कान ज्ञान लिखार वृद्धत वहन ॥ সম্বৰ্ত্ত মুনি আইলা ঔৰ্ব্ব চাবন। জমদগ্নি ভার্গব আইলা ছইজন ॥ ওঙ্কার পঙ্কার আল্য ত্র্বাসা জৈমিনি। ক্রত পুলহ আইলা পরম গেআনী ॥>• মুনিগণ আইলা কৰ্দম প্ৰজাপতি। দতে মিলি চিন্তেন রাজার অব্যাহতি ॥ পান্ত অর্ঘ দিল মুনি শিরে বন্দিল চরণ। বসিবারে মুনি সকলকে দিল আসন।। কর্দম বোলেন্ত বুধ স্থন বচন আমার।১৫ অশ্বমেধ মহা যজ্ঞে আরাধ শঙ্কর॥ অশ্বমেধ যজ্ঞে আরাধ পশুপতি। অশ্বমেধ যজে রাজার হবে উত্তম গতি॥ মহা মহা মুনি সভে হইক্রা আতিসার। ব্ধ মুনির আশ্রমে কৈল যজের অবতার॥ শাস্ত্র-মত অশ্বমেধ কৈল সমাপতি। যজ্ঞ স্থানে বর দিতে আইলা পশুপতি॥ মহাদেবে বর মাগে মুনির সমাজে। भूक्ष रुष्ठेक मर्क्तकान हेना महादाखि॥ দেব বোলেস্ত বর মাগ মনের বাঞ্ছিত।২৫ বর মাঙ্গ বর দিব বলহ উচিত॥ তোমার শাপে স্ত্রী হইল রাজা ইলাপ। তোমার ববে পুৰুষ হয়ে মুচে মনের তাপ

তুষ্ঠ হইঞা মহাদেব সভাকে দিল বর। স্ত্রী অঙ্গে পুরুষ হইল দেখিতে স্থন্দর॥ বর দিঞা দেবরাজ হইলা অদর্শন। আপনাপন স্থানে গেলা মুনিগণ॥ বাল্মীকির দেশে শশবিন্দু রাজা

বিগ্নমান। ৫
আরু দেশ বসাইল রাজা নামে প্রতিষ্ঠান।
প্রতিষ্ঠানে পুরুষ হইঞা রাজ্য করে ইলে।
ন্ত্রী হইঞা পুরুষ হৈল অশ্বমেধের ফলে॥
নানা ধন রত্ন ভোগ আপনে আসি মিলে।
সর্ব্বসিদ্ধি হইল রাজার অশ্বমেধের ফলে॥১০
তিন ভাই মিলিআ অশ্বমেধ কৈল সার।
অশ্বমেধ যক্ত করিব সভার অঙ্গীকার॥
দেবগণ মূনিগণ সভে হইলা স্থথী।
হেন রাজার চরিত্র স্থানিলে লোক না
হত্র তুথী॥

কৃত্তিবাস বাথানিল ধালীকি পুরাণ।১৫ জে জন স্থনএ তার সর্বত্ত কল্যাণ॥

তিন ভাই অখমেধ যজ্ঞ কৈল সার।
পুরোহিত বলি ঘন পড়িল হাঁকার॥
বামদেব জমদিয় বশিষ্ঠ জাবালি।২০
অখমেধ কর রাম সভাকারে বলি॥
ভাল ভাল বলি সভে মুনির বাখান।
অখমেধ যজ্ঞ কৈলে রাজ্যের কল্যাণ।॥
বাদ্ধণের অমুমতি লইঞা লক্ষ্মণ।
দেশে দেশে পাঠালাঁ যজ্ঞের আমন্ত্রণ॥২৫

(824)

\*(82.4)

স্থগ্রীব অঙ্গদ হমুমান মহাবল। যজ্ঞ আমন্ত্রণে আলা বানর সকল ॥ সব কপি আলা জে করিল উপকার। আমন্ত্রিল বিভীষণ সাগরের পার॥ পৃথিবীর রাজা লোকে দিল আমন্ত্রণ।৫ হাঁকারিআ আনে উত্তম দ্বিজগণ॥ জ্ঞান তপে মহোৎসব সভেই বাথানি। নিজে দেশে হাঁকারিল ব্রাহ্মণ ব্রাহ্মণী॥ ट्रिक्शिय अक्रांशिय विश्वास्थित । আমন্ত্রণ দেহ যেন যজ্ঞস্থানে আইসে।১০ শিষ্য সহিতে আমন্ত্রণ দেহ সকল মুনি। সপ্ত ঋষিকে আমন্ত্রণ দেহ পরম জ্ঞানী॥ সিদ্ধ পুরুষকে হাঁকারিহ জাহে সিদ্ধি বৈসে। मकल मलूषा शाकात (जावा वर्धा वरेटम ॥ দেনাপতি ভাগ হাঁকারহ আম্রক সকল देमरक १२६

যজ্ঞখন নির্মাণ করগা নৈমিধারণো॥
নানা শিল্পি হাঁকারহ জে নানা শিল্প জানে।
যজ্ঞখনে সাজাই রতন কাঞ্চনে॥
নানা শালি তণ্ডুল আনি ভরাইল ঘর।
মাস মঞ্জী যব গোধ্ম ভরাহ

তেপাস্তর ॥২০

দধি হগ্ধ ঘৃত জাউক অপার।
রজত কাঞ্চন জাউক ভারে ভার॥
রাশি রাশি করিঞা এল নৃতন হাণ্ডি।
ক্ষেত্র তেপাস্তরে বান্ধ লবণের কাণ্ডী॥
দিবা বস্ত্র লেহ সভে দিবা অলঙ্কার।২৫
চিডা সন্দেন আদি জতেক আহার॥

বিচিত্র নির্মাণ মেলাহ বাসা ঘর। কাষ্ঠ পাত্র নানা দ্রব্য তাহার ভিতর॥ ভরত রাজা আপনি তুমি করহ আগুসার। সোনা রূপা তামা কাঁসা আন ভারে ভার॥ রাজমহিষী জাউক রাজার ঝিয়ারী বহুয়ারী। কাঞ্চনময়ী সীতা নেহ আপনার স্ত্রী॥ কাপড টাঙ্গাইল মাথার উপর। বশিষ্ঠ মহামুনি জে বলেন্ত উত্তর ॥ ভরত রাজা লড়িলা লইঞা অন্তঃপুরী। রাজার ভাণ্ডার লড়িলা দোলা সারি সারি॥ নটক নর্ত্তক নডিল গায়ন দেশাস্তরি। বাজনা ঢুলি নড়িল বেশ্যা স্থন্দরী॥ নানাদেশের রাজা আহল লইঞা উপহার। নানা রাজদ্রব্য লঞা শক্রয়ের আগুসার॥ লক্ষ্মণ ঘোড়া নড়িল করিতে উৎসর্গন।১৫ কটকে রাখিতে ঘোডা লডিলা লক্ষণ॥ বেদ বেদী লঞা শ্রী হইলা অধিষ্ঠান। একমাদে যজ্ঞস্থান করিল নির্মাণ॥ যজ্ঞস্থান দেখিতে চলিলা সম্বর। সোনা রূপাতে বান্ধিল দেখিতে স্থন্দর॥২• ্যজ্ঞ দণ্ড বান্ধিল বিচিত্র পাথরে। মণিমাণিক্যে তাহার বান্ধিল উপরে॥ কাচ ঢাল খোহ ঢাল দেখিতে স্থন্দর। রাজ আয়তনে নির্মাইল পাত্রমিত্রের ঘর॥ সোনার আওয়াস ঘর সোনার থাট পাট। রত্ব নির্মাণ সকল গুলি বাট॥ মুনির বাসা মিলায়িল ঘর সারি সারি। নির্মাণ জলেতে পূর্ণ দীঘি শোভাকরী ॥

(829) <sup>1</sup>

(827)

বড় স্থা হইলা শ্রীরাম দেখিকা বজ্ঞস্থান।
ধন্ত ধন্ত বলিকা শ্রীরাম করিলা বাথান॥
শ্রীরামের বজ্জুবার্ত্তা গেলা দেশে দেশে।
যজ্জে আমন্ত্রণ হেতু সর্বলোকে আইসে॥
নানারত্ব লইকা বিলীষণের আগুসার।৫
স্থারীব অঙ্গদ হন্তুমান আনিল অপার॥
স্নিসব আইলা লইকা সর্ব্ব তীর্থের জল।
ব্রহ্মচারী সন্ন্যাসী আইল সকল॥
নটক নাটুয়া আইল বেখা চমংকার।
ভরত শক্রত্ম স্বার করিল পুরস্কার॥১০
ভরত রাজা জারে জে দ্রব্য দিতে

আজ্ঞা করে।

সেই দ্রব্য শত্রুখন তারে সমর্পণ করে।
ভক্ষ্য দ্রব্য চিড়া সন্দেশ কলা হ্রগ্ন দিধ।
ভক্ষ্য দ্রব্য আনিলেক কলা কান্দি কান্দি॥
দেশদেশাস্তর হৈতে জত আইল

মুনিগণ।১৫

নানা দ্রব্য রাক্ষস বানরে করে সমর্পণ।
ক্রে রাক্ষসের ডরে তপ ছাড়ে মুনিজন।
সে রাক্ষস মুনির পদ কররে সেবন।
নানা উপভোগে লোক পাইলা পিরিতি।
পোনা রূপার বস্ত্রে সবে হইলা পিরিতি।
থাও থাও নেও নেও এই মাত্র স্থন।
সর্বলোক স্থাই এলা ইজ্ঞকে বাখানি।
সোনারূপার বস্ত্র দিতে নাহি অবকাশ।
বুড়া বুড়া মুনি দেখি পাইল তরাস।
শ্রীরাম করেন যক্ত বেষ্টিত বাক্ষণে।২৫
ক্রেই চাহেস্ক তাই আনি ক্রোগান্ত লক্ষণে।

সম্পূর্ণ হইবে যজ্ঞ এক সম্বংসরে।
দেবগণ আইলা সব যজ্ঞ দেখিবারে ॥
কুবের বরুণ যম অগ্নি পুরন্দর।
আর জত যজ্ঞ কৈল পৃথিবী ঈশ্বর ॥
শ্রীরামচন্দ্রের যজ্ঞ সর্বলোকে জিনে।
দেবতা গন্ধর্ব নর দেখিয়া বাখানে॥
কুত্তিবাস পণ্ডিতের কবিত্ব রচনা।
উত্তরকাণ্ডে গাইল শ্রীরাম যজ্ঞের বর্ণনা

যজ্ঞস্থানে গেলা রাম বেষ্টিত সহোদর।>• যজ্ঞ করিতে পুরোহিত হাঁকারে রঘুবর ॥ নানা বাদ্য বাজে তিঁহ সংগীত নাচন। যজ্ঞ করিতে তথি আল্য দেব মুনিগণ॥ জত জত মুনিগণ বৈদে তপোবনে। সর্বজন আইলা জীরামের আমন্ত্রণে ॥১৫ বশিষ্ঠ বামদেব ঋষ্যাঁশৃঙ্গ বিভাওক। বিশ্বদেব স্থত দেব ত্রিজটা ত্রাম্বক ॥ বৈশস্পায়ন শাস্তমু শুক সনক সনাতন। পুলহ পুলস্তা আলা বন্ধার নন্দন ।। হংস বাস্থকি ঋষি গৌতম গোবৰ্দ্ধন।২• ভাৰ্গৰ প্ৰলম্ব ঔৰ্ব আইলা চ্যবন ॥ সম্বর্ত সার্থ আল্য আর ভরত ভর্মাজ। বিশ্বামিত্র জামদগ্য জনক মহারাজ ॥ কুশধ্বজ বৃষধ্বজ আর বৃহস্পতি। রতিকান্ত উমাকান্ত অগন্ত্য মহামতি ॥২৫ ব্ৰহ্মশৰ্মা বিষ্ণুশৰ্মা শিবশৰ্মা মহামুনি। অঙ্গিরস আইলা না মানে অগ্নি পানি 🎚

(822)

(800)

কোংস কাকুত্ব আল্য কৌশিক কার্ত্তিক। বরতমু অমুবর্ত্ত বিজয় বাল্মীক॥ कावानि वानिथना द्वीटक्वक द्वीटक्वयत ।२० ভান্তর হন্ধর নিশাকর পরাশর।। কাগ্ৰপ নিশ্বতি সে বাসব শুভশুও।৫ শিতিকণ্ঠ নীলকণ্ঠ সে উগ্ৰ মাৰ্কণ্ড ॥ जमनिध मधुकुना दको खिना विभातन। জরংকার জানসার স্পর নার্দ ॥ ইন্দ্র যম কুবের বরুণ অগ্নি হয়। নৈশ্বতি প্রন আলা সূর্যোর তন্য ॥১० শক্তিধর পীতাম্বর শ্রীবংস শ্রীধর। ै কেলির কানন ছব্বাসা রত্নাকর ॥ উদ্মৃথ বিমৃথ আর ক্রমৃথ মুনি। উত্তর মাত্র আলা প্রম গেয়ানী॥ জার যথা স্থান যান জে রাজা বৈসে।>৫ যজ্ঞ ভাগ শইবারে নবগ্রহ আইদে॥ বামদেব বশিষ্ঠ কুলের পুরোহিত। ধাতা কৰ্ত্তা বিধাতা হইলা উপনীত॥ সকল মুনি যজ্ঞশালে হইলা শোভিত। অষ্টবস্থ আইলা আর দ্বাদশ আদিত ॥২• নানা রত্বে বান্ধিআছে যজ্ঞকুণ্ড বেদী। অখ্যেধ যজ্ঞ করে রাম গুণনিধি॥ विश्व वर्णन जाम स्नर वहन। অর্চনা করিয়া বর সকল ব্রাহ্মণ॥ এত স্থান बहेरनम कुन्नम हम्मन ।२৫ একে একে বরে সকল শ্রীরাম ব্রাহ্মণ 1 युक्तवनी विकित्रा विज्ञा श्रुव मूनि। রামের অগ্রেতে সভে করে বেদ্ধ্বনি॥

চতুদ্দিকে বেড়িয়া পড়িছে জয়কার।
মন্ত্র তেজে অষ্টলোকপাল আগুসার॥
দিলে স্বত হবে সাটি সহস্র কলসী।
কৃত্তিবাস গাইল বন্ধিআ বালীক শ্বাষ

শ্রীরাম চন্দ্র যজ্ঞ করে হরিস সর্বজনে।c সংসারের রাজা আইলা যজের আমন্ত্রণে॥ পৃথিবীর তলে বৈদে জত রাজাগণে। সকল রাজা আইলা রামের আমন্ত্রণে॥ বড় বড় রাজা সব আল্য নানা বেশে। অযোধ্যা নগরে সভে করিলা প্রবেশে ॥১০ গুণসিংহস্কত রাজা আল্য মিত্র সহ। আইল কৌশল সে রামের পিতামহ॥ কেকয় রাজার পো আল্য বিক্রমে অতুল। স্থাজিত নাম তার ভরতের মাতৃল। বারাণসের রাজা আলা সিংহ নরপতি।১৫ স্থমিত্রার পিতা সে লক্ষণ জার নাতি॥ চম্পারণ হৈতে রাজা আইলা শ্সাদ। লোমপাদস্থত রাজা আইলা প্রসাদ॥ 'গোবংস পাটনে রাজা আল্য ব্রহ্মদণ্ড। স্থাকর রাজা আল্য রণের প্রচণ্ড ॥२० কনকপুরের রাজা কনক ঈশ্বর। ঋণিদের রাজা আল্য ভোগে পুরন্দর॥ বেদভট্ট নুপতি বিদর্ভ অধিপতি। জ্ঞানসিংহ রাজা আল্য ভোজরাজার নাতি। থিথিকার রাজা আল্য নাম সনাতন।২৫ वार्य महात्राका जानी वृत्धत नक्त ॥

(cc8)

(৪৩২)

সিংহল দেশের রাজা আলা জয়াজিত। খোরাদানের রাজা আল্য বিক্রমে পূজিত। কলিন্স দেশের রাজা আল্য কলিকন। মগধের রাজা আলা জাবিতবাহন। জিতদেনস্থত রাজা আলা সত্যবান। শতানন্ত্রত রাজ। আল্য বর্দ্ধমান॥ কাশীপুরের রাজার পো আইল কাশীশ্বর।৫ আর্ট্রক দেশ হৈতে আল্য উশীনর॥ আদিত্যনন্দন রাজা আল্য আদি দেবা। পূর্কশিরাস্থত রাজা আল্য স্থলশিবা।। ধর্মপাল রাজা স্থত আলা মহীপাল। শুঙ্গবের রাজা আল্য গুহক চণ্ডাল ॥১০ শ্রীবৎদ রাজার স্থত আল্য উদয়রাজ। বিন্দু মহারাজ আল্য করি নানা গাজ। ইলার তনয় রাজা আল্য শশবিন্দু। মগধের নুপতি আইল জ্রাসিকু॥ যুত্বংশ রাজা আলা উগ্রসেন নাম।১৫ ভৃগুবংশের নৃপতি আইলা প্রশুরাম॥ কতেক রাজার নাম নিব গুটী গুটী। এক ঠাঞি রাজা জত হৈল শত কোটী॥ কেহ অশ্বে কেহ দোলা কেহ চড়ে হাতী।" কত কত মহারাজা আলা মহারথী॥২० গুরুজন গর্বিত জে মাতুল শুগুরে। সর্ব্ব রাজাগণে ভরে অযোধ্যা নগরে॥ युक्त (मिथिवादत ष्यांना तात्मत जुजादत। ছয়ারি ভিতরে গিঞা এরামে গোচরে ॥ . রাম বলে ঝাট জাহ ভরত শত্রুঘন।২৫ ভক্তি করি আনহ সর্কণ রাজাগণ॥

এত স্থনি বাহির হইলা ছই বীর।
সভাই দেথিব রাম ধর্মের শরীর॥
স্থতি করেন জত সব নুপতিমণ্ডল।
বিসতে আসন দিআ পুছিল কুশল॥
রাম বলে আজি সভে লেহ বাসা ঘর।
নিরোজিয়া দিল রাম সব অনুচর॥
নানা ভোগ দিয়া কৈলা পিরিত সভার।
নানা স্থ পাঞা সভে হরিস অপার॥
নানা স্থ পাঞা সভে ভোগ অভিলাষ।
শর্মরী প্রভাত হৈল রবির প্রকাশ॥
মান সন্ধা কৈল রাম প্রত্যুষ বিহানে।
পাত্রমিত্র বন্ধু সঙ্গে বিদলা দেআনে॥>
হেনকালে রাম ঠাঞি নানা দেবগণে।
ক্বিবাস গাইল উত্তর রামায়ণে॥

বিদিলা মূনি সব জীরামের সরিধানে ॥
যক্ত দেখিতে আকাশে আইলা দেবগণে ॥
ইক্ত ঈশান আইলা শমন পবন।১৫
চক্ত স্থ্য সাথে বরুণ আলা ব্রহ্মা নারায়ণ॥
সব দেবগণ মেলি করে অনুমান।
অশ্বমেধ করিবেন আপনি জীরাম॥
সর্বদেবগণে গেলা যথা পুরন্দর।
জোড় হাত করি পবন করিলা গোচর॥২০
দেআন করিয়া বৈসে দেবের সমাজে।
আপনে বিদিলা তথা ইক্ত স্থ্ররাজে॥
বিধাতা বলেন স্থন দেব পুরন্দর।
বৈকুষ্ঠ শৃত্য এবাক্ত ব্রহ্মার

(cc8)

(808)

অধ্যমধ করিবারে রাজা রাম বাঞ্ছে।
তবে তার জনকের ব্রশ্নহত্যা ঘুচে ॥
ব্রশা বোলেস্ক ইক্র স্থন আমার বচন।
এক ঘোড়া দেহ তুমি দর্ম স্থলক্ষণ ॥
ক্রশার বচনে ইক্র হাত করি জোড়া।৫
শালে হৈতে বারি কৈল স্থলক্ষণ ঘোড়া॥
দর্মতত্ত্ব দর্ম-অর্থ জান তুমি আদিদেবা।
এক গুটা ঘোড়া আছে নামেউটেচঃশ্রবা॥
মোর বাহন দিব গোসাঁই যুক্তি না
আইদে।

উচ্চৈঃশ্ৰবা দিলে তবে আমি ইন্দ্ৰ কিনে ॥১৩

ব্রন্ধার বচন স্থানি জানাইল জয়ন্ত। ঘোডা দিতে নারি আমি পারেন রেমন্ত। সব দেবগণে ভথা প্রদালা পবন। ডাকিয়া রেমস্তে আন স্থর্যের নন্দন॥ দাঁড়াইআ দেবগণে করিল স্তবন।১৫ এক ঘোড়া দেহ তুমি রাজার বাহন॥ দেবতার বাক্য অন্ত করিতে না <sup>8</sup>গারে। আমি ঘোড়া দিলে রাম হথে রাজ্য করে। ব্রহ্মার বচনে রেমস্ত হস্ত করিল জোড়া। নেইক্ষণে আনিঞা দিল স্থলক্ষণ ঘোড়া॥২० বোডা সাজি আনিলেন রেমন্ত সার্থি। শ্রীরামের ঠাই পাঠাইতে শীঘ্রগতি॥ আপনার যোড়া রেমন্ত আনিল আপনি। নানা রত্নে ঘোড়ার করিল সাজনি॥ থেমন বিষ্ণুর ঘোড়া বিষ্ণু অধিষ্ঠান।২৫ হেন ঘোড়া দেৱতা পাঠালা রামস্থান।

স্বর্গে হইতে নাধিলা ঘোড়া হইয়া মূর্ত্তিমান্। ব্রহ্মা পাঠাইল ঘোড়া শ্রীরামের স্থান। মান স্ক্রা করিঞা রাম বসিলা দেআনে। হেনকালে ঘোড়া গেল খ্রীরামের স্থানে॥ জয় জয় শব্দ হৈল প্রষির সমাজে।৫ हेरत युक्त मान्न देशन मिन्न देशन कारज ॥ ঘোড়া দেখি মহা স্থথী হৈল সভাতল। সান করাইল অধে দিয়া গঙ্গাজল। ঘোড়া দেখি শ্রীরামের হরষিত মন। শীঘ্র আসি অশ্ববরে করিলা বরণ ॥১০ পাদ্য-অর্ঘ্য দিলা রাম পাটের পাছডা। ञ्चवर्ग कुड़ानि मिन बाक्षा शाह-धड़ा॥ চামর অসিত দিঞা করিলা শোভন। ञ्चवर्ष प्रकृष्ठे मिल मर्काटक ठनमन ॥ পায়ে সোনার রুপুর দিল গলেতে কিঞ্চিনী। ত্রিভুবন জিনি কৈল ঘোড়ার সাজনি॥ স্থবর্ণ কড়ি আনি দিল রাঙ্গা পাঠের দড়া। সর্বাঙ্গে ঢাকিঞা দিল পার্টের পাছোড়া॥ খেত চামরে ঘোড়াকে করিল স্থশোভিত। প্ৰন-গমন ঘোড়া লক্ষণে পূজিত ॥২০ যজ্ঞ স্থান নিল ঘোডা হরিস সকল ঋষি। ধন্ত ধন্ত বলিঞা সবে ঘোডাকে প্রশংসি॥ স্নান সন্ধ্যা করি রাম গেলা যজ্ঞস্থানে। নানা দ্রব্য আনিঞা জোগায় লক্ষণে॥ শ্রীরামের স্থানে গেলা অষ্টলোকপাল।২৫ সকল মুনি বেড়িল রামের বজ্ঞশাল।। রাক্ষদ বানর আর মানবগণ। পাটো আড় পড়ে জুঁড়ি দাদশ যোজন।।

(800)

(809)

ধুতি উত্তরি পারিল রাম অঙ্গে গঙ্গামাটি। গঙ্গাজন তুলসী কুশ আর তামবাটী॥ শক্ত পাটাম্বর ধুতি বড় পরিপাটী। হাথে কুশ বৈদে রাম নিয়া তামবাটী॥ সংকল্প করেন রাম শুউক্ষণ বেলে ic বেদধ্বনি মঙ্গল হইল সভাতলে॥ मर्ख नक्षण (घोड़ा किन उरमर्गन। বেদ মন্ত্রে আশংসিত জত মুনিগণ॥ मूनि नव मञ्ज পড়ে বেদ হস্তে করি। চতুর্দিগে লোক সব বলে হরি হরি॥১० বিষ্ণু অবতার রাম কমললোচন। ভ্রতক্ষণে ঘোড়া রাম কৈলা উৎসর্গন॥ घाड़ात वत्र देकन दनव शनाधत। স্থানন্দিত সর্বলোক অযোধ্যানগর॥ यक्रभारन मूनि नव देवरन नात्रि नात्रि ।১৫ কেহো বেদ পড়ে কেহো মঙ্গল উচ্চারি॥ বশিষ্ঠ বলেন রাম স্থনহ বচন। ষোড়া রাখিবেন কেবা আনহ এখন। (জ জন রাখিবে ঘোড়া হঞা সাবধান। তাহাকে ডাকিয়া আন মোর বিগুমান॥২० রাম বলে ঘোড়া রাথে কাহার শক্তি। এই ঘোড়া রাখিব লক্ষ্ণ যোদ্ধাপতি॥ বুদ্ধি বল বিক্রমে তাঁহারে কেবা জিনে। লক্ষণ রাখিবে ঘোড়া হেন লয় মনে॥ বশিষ্ঠ বলেন তারে আন শীঘ্রগতি।২৫ আনিল লক্ষণে ডাকি রাম মহামতি॥ রাম বলেন খোড়া রাথ পরম যতনে। ভোমা বই ঘোড়া রাথে কাহার পরাণে॥

ঘোড়া রাখিতে নিয়োজিলা অমুজ লক্ষণ। মাথায় মুকুট দিলা হীরা মণিকাঞ্চন ॥ প্রদাদ পাইয়া বীর প্রণমে চরণ। হেনকালে লক্ষণ করেন নিবেদন॥ রাথিব যুদ্ধের ঘোড়া তোমার আদেশে।৫ বংসরেক বেডাব ঘোডার পাশে পাশে॥ নানারপে বিপক্ষ বেড়ায় নানা বেসে। নির্ভয়ে বেড়াব প্রভু কেমন সাহসে॥ নির্ভয় দক্ষিণা মোরে দেহ মহাশয়। বেড়াইব পরম স্থথে হৈয়া নির্ভয় ॥১• লক্ষণের বচন স্থনিঞা রঘুনাথে। জয়পত্র লিথিঞা ঘোড়ার দিল মাথে॥ লেপেন ঘোড়ার অঙ্গে স্থগন্ধি চন্দন। গলাতে বিচিত্র হার দেখিতে শোভন॥ পায়েতে নূপুর শোভে'বিচিত্র ঘাঘর।১৫ চামরে ছাইল ঘোড়া দেখিতে স্থন্তর॥ মাথাতে মুকুট দিল দেখিতে শোভন। জয়পত্র দিল মাথে রামের লিখন ॥ অপূর্ব্ব ফুদ্ধের ঘোড়া সর্বালোকে দেখে। কেহ বলে ঘোড়া পাছে জায় অন্তরীক্ষে ॥২০ শ্রীরাম বলেন ঘোড়া রাখিবে যতনে। ঘোড়া গেলে যজ্ঞ নাশ জানিহ আপনে॥ শ্রীরামের চরণ লক্ষ্মণ বন্দিলেন মাথে। ঘোড়া রাথিবারে জান ধন্থর্কাণ হাথে॥ ঘোড়ার নিকটে গেলা বশিষ্ঠ আপনে।২৫ মুনিবর কহে ঘোড়া কর্ণপাতি স্থনে॥ নিরস্তর থাকিহ ভুমি লক্ষণের স্থানে। .. এই কথা কহিলা ঘোড়ার হুই কানে॥

(PC8)

(804)

যজ্ঞ পূর্ণ হবে বংসর পরিমাণ।
বংসরেক রহি তুমি আসিহ যজ্ঞস্থান ॥
এতেক কহিল যদি বশিষ্ঠ মহামুনি।
মুনিরাজের কথা অশ্বরত্ন স্থানি ॥
সেই বোলে রহেন লক্ষ্মণ যথা থাকে।
প্রভাত সময়ে বুলে আপনার স্থথে ॥
মক্তর স্থ্রথ রাজা লড়িল কটকে।
কালাস্তক যম যেন চমৎকার লোকে॥
কত শত রাজা লড়েন লক্ষ্মণ সংহতি।
মহা মহারথি সব মহা যোধপতি॥১০
লড়িলা স্থমন্ত্র রাজা সৈক্ত লাথে লাথে।
পুরুরবা লড়ে ঠাট কেবা তারে

(मर्थ ॥

লড়িল মগধরাজ কটক অপার।১৫
অশ্ব বেড়ি সঘনে পড়িছে জয়কার ॥
হস্তী ঘোড়া রথ রথী সৈত্য কোলাহল।
সারি সারি রাজছত্র করে ছলমল॥
ধামুকি পাইক চলে ধহুকে দিঞা চড়া।
আড় নিঞা পাইক চলে হাতে জাঠি
শ্বিণ্ডা ॥২০

বোড়ার ঘর চলিল বাজিছে কিঞ্চিনী।
হতীর ঘর চলিল গজঘণ্টার চনচনী॥
হাতে অস্ত্রে পাইক সব করেন্ত রড়ারড়ি।
আন্তে ব্যস্তে চাপেন্ত সভে ঘোড়া ঘোড়ী॥
ঘোড়া রাখিতে চলিলা সৈক্ত সাজনে।২৫
নানা বাছ্য বাজে রাজ-বাজনে॥
শঙ্ম-ছন্তি বাজে ঘণ্টা ঘাঘর সিন্ধুআন।
কর্মড়া কর্মড় বাজে মুদক্ষ তবলে বিশাণ॥

ঢাক্ঢোল দগড়ি বাজে ডিণ্ডিম বিশাল। কাহাল ভেরী বাজে কাংস্থ করতাল। কছরি গাড়ড়ি বাগু বাজে সাহিনী।৫ বেলাবলী কমরু বাজে মধুর ভাল স্থানি॥ নানা রাজবাদ্য বাজে মধুর মধুর স্থান। বেসে স্থরে সেনাতে ইন্দ্রের নাচনি॥ নানা বাছ বাজিছে ঘোড়ার চারি দিগে। মাদল কাহাল বাজে ঘোডা জায় আগে॥ রাজ আভরণে ঘোডা রাজগণ মাঝে। ঘাঘর উর্মাল শব্দ স্থুনি ভাল সাজে॥ জয় জয় শব্দে ঘোড়ায় এড়িঞা দিল। সকল কটকে লক্ষ্মণ বীর আপনি চলিল। পদত্রজে শ্রীরাম চলিলা অনুব্রজনে ৷১৫ কথোক হুজনে থাকি আইলা যজ্ঞস্থানে॥ আপন ইচ্ছায় চলে ঘোড়া যথা লএ মন। সকল সৈতা লইঞা ঘোডা রাথেস্ত লক্ষ্মণ ।। খনে গ্রামে খনে মাঠে খনে থাকে বনে। যোড়ার পাছু জায় লক্ষণ সঙ্গে লৈঞা সৈত্যে॥ ক্লত্তিবাস পঁতিতের কবিত্ব বিচক্ষণ। উত্তরকাতে গাইল যজের ঘোড়া উৎসর্গন॥

(808)

(880)

ছুটিল যজ্ঞের ঘোড়। উত্তর দিগ জাএ।\* দৈন্ত সহ লক্ষ্মণ বীর পাছু পাছু ধাএ॥ হিমালয় গেল ঘোড়া পবনের বেগে। দৈন্ত সহিতে লক্ষ্মণ ধাইলা বীর ভাগে॥

অন্ত পু থির পাঠ :---"পশ্চিমে চলিলা ঘোডা আপনার মনে। ছেম গিরি শৈল দেখে সকল কাঞ্চনে॥ সোনার পর্বত দেখি লাগে চমৎকার। বিন্ধ্যা নামে নদী ঘোড়া তাহে হৈল পার॥ লক্ষ্মণ স্থমের গেলা ঘোড়ার গমনে। তথাই রহিলা ঘোডা বেলি অবসানে॥ স্থমেরু নিকটে আছে পশ্চিম সাগর। পশ্চিম বুলিঞা ঘোড়া লজ্ফিলা উত্তর॥ উত্তরে বেডায় ঘোডা দেখিতে স্থন্দর। হিমালয় গিরি গেলা হেমন্তের ঘর॥ প্রন গমনে জায় আপনার মনে। উত্তর সাগরে যোডা বুলে কথোদিনে॥ নানা দেশ বুলে ঘোড়া নগরে নগর। পূর্ব্ব দেশে গেল ঘোডা দেখিতে *সুন্দর*॥ পূর্ব্বের জতেক লোক পিঙ্গল মূর্ত্তিধরে। লক্ষণের সেনা দেখি যুদ্ধ আগুদারে॥ নানা অস্ত্রধরি সভে জুঝিবারে সাজে। শ্রীরামের জয়পত্র দেখি সভাই পূজে। পূর্ব্ব দেশ হইতে ঘোড়া চলিলা দক্ষিণে। দক্ষিণে বেডায় ঘোডা বন উপবনে॥ তিন দিগ বুলি ঘোড়া বেড়ায় দশ্মাদে। দক্ষিণে বেড়ায় ঘোড়া বৎসর প্রবেশে॥ বন উপবন ঘোড়া মনস্থে বুলে। বেলি অবসানে রহে সর্যুর কুলে ॥ नानां ज्ञवा भिल्न छथा भवूत रूपान। ভক্ষাভোজ্যে কটকের যুচে অবসাদ।। সেইথানে রহিলা লক্ষণ যোদ্ধাপতি ! স্থথে নিজা গিয়া লোক বঞ্চে স্থথ রাতি। নৃত্য গীতে নানা রঙ্গে রহিলা হরিদে। যোড়ার দিখিজয় গাইল কুত্তিবানে ॥

হিমালয় দেখি ঘোড়া যায় কৈলাস শিথর। নানা তীর্থ ভ্রমে ঘোডা নানা গ্রাম নগর॥ উত্তরদিগু ভ্রমিঞা দেখে উত্তর সাগর। ফিরিয়া যজ্ঞের খোড়া পূর্বাদিগে ধায়॥ গোমতী লজ্ফিল ঘোড়া ব্রহ্মপুত্র হইল পার।৫ ঘোডা রাথিতে লক্ষ্ণ ধাএ সৈন্ত অপার॥ উদয়গিরি গেল ঘোড়া যথা স্থর্য্যের উদয়। দিবাকরে দেখে ঘোড়া পূর্ণ প্রতিভায়॥ পূর্ব্বসাগর দেখে ঘোড়া পূর্ব্বদিগের পার। দক্ষিণ মুখ করিল ঘোড়া হইল আগুদার॥ দাগরের কূলে ঘোড়া গেল গঙ্গা-দাগর। পবনবেগে গেলা ঘোড়া দক্ষিণ দিগর॥ नाना नम नमी लिख्या जां । शक्रमामन। বিচিত্র নির্মাণ দেখে অগস্তোর আশ্রম॥ পর্বত এড়িঞা ঘোড়া করিল গমন।১৫ দক্ষিণ সাগর তবে হইল দর্শন॥ আগু লক্ষ্মণ ধাঞা জাত পাছে সৈভাগণ। দক্ষিণ এডিঞা পশ্চিমদিগ করিল গমন॥ গোকুল মথুরা এড়ি দারকায় দিল দরদন। নদ নদী তরিঞা জাএ গহন কানন ॥২০ পবন বেগে জায় ঘোড়া যথা মনে বাসে। রাত্রি দিবসে থাকে ঘোড়া লক্ষণের পাসে॥ হইল প্রভাতকাল নির্মাল গগন। স্থগন্ধি শীতল বায়ু বহে স্থলকণ ॥ ঘোড়া রাথে কটকে সঘন জয়কার।২৫ পবন বেগে ঘোড়া সর্যু হৈল পার ॥ পশ্চাতে লক্ষণ ধায় চাপে দিআ চড়া। বেগে ধার লক্ষণ রথিতে নারে ঘোডা ॥ (885)

(\$82)

ধমুক ধরিয়া ধায় বীর অবতার। এক লাফে লক্ষণ সর্যু হৈল পার॥ পার হঞা দেখে বীর আনন্দনগরী। মুনির কুটীর তথা দেখে সারি गারি॥ নানা দ্ৰব্য নিল কেহো বিষ্ণুকে পূজিতে ic মহাদেব পূজে কেহো শ্রীফলের পাতে॥ বিষ্ণুপূজা বিনা কেহো নাহি জানে আন। বিষ্ণু সে আনন্দ হেরি নগরের নাম॥ আম্র জে কাঠাল নিল নারেঙ্গ কেসর। নানা জাতি ফুল নিল গন্ধে মনোহর॥>० নানা বৃক্ষে নান। ফল হিষ্ণুল আকার। কলাবনে পাকা কলা আছে ভারে ভার॥ নানা ফলে উপবন অতি শোভা দেখি। মুনির প্রদাদে তাহে বুলে মুগ পাথী॥ ইন্দ্র তথা জাইতে নারে কিবা কথা।১৫ হেন বন দেখিআ লক্ষণ বুলে তথা।। বিষ্ণুপদা নামে পুরী তেপোবনে বৈসে। রামের যজের ঘোডা তাহাতে প্রবেশে॥ বৃক্ষতলে থেলিছে সীতার ছই বাল্বা। মুনির বালক সঙ্গে সর্ব অঙ্গে ধূলী॥२० মণি মুক্তা প্রবাল গলাতে শোভে কাটী। কেশবিবৰ্জ্জিত মুণ্ড সবে পঞ্চঝুটী॥ গায়ে রাঙ্গা মাটী দোঁহে পরে বীর ধড়া। হেনকালে আইল রামের যজ্ঞ ঘোড়া।। দেখিঞা মুনির শিশু ছাড়ে চিকরাই।২৫ কেহে। পালাইল ঘরে দিআ উভধাই॥ কোন শিশু রহিলেন নব কুশদনে। তাঁড়াতাড়ি করি যোড়া ধরিল তপোবনে

চারিদিগে বেড়িআ রহিল শিশুগণে। ঘোড়া ধরিবারে নাহি পারে কোন জনে॥ নানাগুণ জানে হুই সীতার কোঙর। সাস্ভাইল দোঁহে তপোবনের ভিতর। মাথাতে মুকুট ঘোড়া গলেতে কিঙ্কিণী।৫ সর্বাঙ্গে নির্মিত যোডা বিচিত্র সাজনি॥ স্থবর্ণ কড়্যালি শোভে রাঙ্গা পাট ধড়া। উপরে ছাওনি তার পাটের পাছড়া॥ চন্দনে ভূষিত ঘোড়া মঙল সিন্দুর। চারি পায়ে শোভা করে বাজন নুপুর॥১० দেখিআ আনন্দ বড় ছুই সহোদরে। পাকে পাকে বুলে দোহে ঘোড়। ধরিবারে ॥ ছই মহাবীর যেন পর্বতের চূড়া। লাফ দিআ কুশ বীর ধরে গিআ ঘোড়া॥ দিগ্বিজয় করি গোড়া জমুদ্বীপে বুলে ৷১৫ যোড়া নাহি ধরে কেহ পৃথিবীমণ্ডলে॥ কুশের দড়িতে বান্ধি নড়িতে না পারে। অশ্বরত্ব বন্দি কৈল ছই সহৌদরে॥ ঘোড়। বন্দি কৈল দেখি লোকে লাগে ভর ধাইঞা দেখিতে আল্য সকল নগর॥২০ বিষ্ণু অবতার হুহে বড় বলবান। ঘোডা বারি করিআ দেখাল্য ময়দান। মহাবেগে ধায় ঘোড়া জিনিআ পবন। ভূমি নাহি ছোএ ঘোড়া উঠিল গগন ॥ দেখাইল ছই মুড়ি সীতার কুমার।২¢ গগনে লাগয়ে ধূলা দেখি অন্ধকার॥ উত্তরিল কুশবীর লব ঘোড়া চড়ে। মারিল তাজন হোড়া পঞ্চী হেন উড়ে॥

(088)

(888)

নাকড়ির ঘারে ঘোড়া উঠিল গগন। উলি পালি করি তাহে চাপে হুইজন। ছই ভাই শ্ৰমযুক্ত নামিল তখন। যোড়াকে দিলেন ঘাস করিআ যতন॥ বোড়া বন্দি করি ছুই ভাই আনন্দিত।¢ লক্ষণের কটক আইল আচ্থিত। লক্ষ লক্ষ লোক ধায় নানা অন্ত হাথে। রথেতে লক্ষণ বীর সেনা চারিভিতে॥ কটক দেখিল তবে ছই সহোদর। অশ্বিনীকুমার যেন রূপে বিদ্যাধর ॥১০ লবকুশে দেখিআ কটক বার্ত্তা পুছে। এ পথে রাজার ঘোডা আল্য কোথা আছে কুশ বলে ঘোড়া মোর ভাঙ্গিল কদলী। নষ্ট কৈল ঘোড়াতে সকল বনস্থলী। সেই ঘোড়া বন্দি আমি করিলাঙ বলে।১¢ কেবা নিতে পারে ঘোড়া পৃথিবীর তলে।। এত স্থনি কৈল কেহো লক্ষণে গোচর। ঘোড়া বন্দি কৈল হুই মুনির কোঙর॥ स्मिका निमाण वीत हमश्कात मति। এ সব তুরম্ভ কর্ম্ম করে কোন জনে ॥२० মুনির কুমারে মাইলে মরিব ব্রহ্মশাপে। ষোড়া বন্দি হৈল হেথা মুনির প্রতাপে। विन क्र प्रहे भिष्ण ना माविश প্राण। मुक्क कवि शाका जान भाव विग्रमात ॥ রাজার আদেশ পাইল ধাইল সম্বর।২৫ বায়ু বেগে গেলা যথা সীতার কোঙর॥ কটক বলেন আশু রাজার সন্নিধান। যোড়া ছাড়ি দেহ নহে,পাবে অপনান॥

কোপে কুশবীর বলে তর্জন উত্তর। তোর বোলে জাব আমি কাহার কুর্পর॥ ডাকিয়া কটক বলে কাড়ি নিব ঘোড়া। ইহা স্থানি কোপে দোঁহে চাপে দিল চড়া।। ধনুকে টক্ষার দিল অজয় প্রতাপ।৫ ঘাটাল্য মারিতে যেন রোষে কাল সাপ॥ হাথে ধমু হুই ভাই গর্জে উচ্চস্বরে। গরুড় বিক্রমে জেন ধরে বিষধরে॥ কোপ করি হুই ভাই জুড়িলেন বাণ। বাণ দেখি কটকের উড়িল পরাণ ॥১০ অনেক কটক মরে থাঞা তার বাণ। লবকুশের বাণে কার নাহি পরিত্রাণ ॥ দেখিয়া শিশুর বল সেনাপতি ভাগে। বড় বড় বীর আসি বেড়ে চতুর্দ্দিগে॥ স্থপর্ম জুঝিয়া পড়ে লক্ষণ সমুথে।১৩ পড়িল স্থমন্ত রাজা দৈন্ত লাখে লাখে॥ স্থরথের বাহে বাণ বাজে নিরপেকে। মুখে ব্ৰক্ত উঠে ব্ৰাজাব ঝলকে ঝলকে॥ পড়িল স্থরথ রাজা সৈতা নহে মেলা। হাথে হৈতৈ থদিআ পড়িল খাঁড়া কলা ॥২• জুঝএ মরুত্ত রাজা দেখএ লক্ষণে। লব বীর মারে তারে চারি গোটা বাণে॥ বাণেতে মকত রাজা হৈল অচেতন। সকল কটক পড়ে চিস্তিত লক্ষণ॥ তুই শিশু সৈতা মারে লক্ষণের হাস।২৫ লবকুশের সংগ্রাম গাইল ক্বতিবাস ॥

(884)

(88%)

বহিদক্ষায়ন মধু পক্ষ অচেতন। পদ্ম চিরজাতি শ্রেয় যম দর্মন ॥ বিপক্ষ দলন রণ কর্কশ মুকুন। স্থবাহু স্থকর্মা শ্রের পমার প্রবন্ধ। এই সব রাজাগণ যম দরসন।¢ গাছ পাথরে ছাইলেক সীতার নন্দন॥ নররূপে রাজা সব দেব অবতার। নানা অস্ত্র জানে সভে ভুবনের সার॥ হেন দব রাজা জুঝে অস্ত্রের ঝনঝনি। পর্বত উপরে যেন মেঘে বর্ষে পানি॥১० দিগাদিগ নাহি জানি অবনী আকাশ। বাণে ঢাকা গেল নাহি স্থ্যের প্রকাশ। চক্র স্থ্য আগে জেন রাহু গ্রহরাজে। শত সংখ্য রাজা জুঝে লক্ষণ সমাজে॥ কুশ বীর বাণ এড়ে নামে পঞ্চ শত।১৫ দেখিআ সভার গাএ উড়িল রকত॥ এড়িলেক বাণ কুশ ধূমে অন্ধকার। শত রাজা পড়ে কার নাহিক নিস্তার॥ ছটা ভাই কটক মারিল লাথে লাথে। शास्य धर्स्यारन जुरब नक्तन ममूरथ ॥२० লক্ষণ বলেন দোঁহে মুনির নন্দন। তোমাদিগে মারিআ নাহিক প্রয়োজন। আপনার পরিচয় দেহ হুইজন। মুনির বালক হঞা কেন কর রণ॥ মুনির কুমার হ্ঞা এতেক বড়াঞি।২৫ মোর হাথে পড়িলে তোমার প্রাণ নাঞি॥ বান্ধই রাজার ঘোড়া এত অহন্ধার। দৈক্ত মার যুদ্ধ কর অতি হ্রাচার॥

মুনির কোঙার হঞা ধর গণ্ডিবাণ। মিছা কাজে দোঁহে কেন হারাও পরাণ। আমার বাণের আগে বজ্র অগ্নি বৈসে। তুমি হুই ভাই মর আপনার দোষে॥ হাসিআ লক্ষণে বলে লব যুদ্ধমতি।৫ ঘোড়া চুরি করি বুল হঞা ক্ষেত্রি জাতি॥ চোর হঞা বেড়াসি ধর্মের কহ কথা। পড়িলে আমার ঠাই হইবে বিতথা॥ কুশ বীর বলে দাদা না ছাড়িহ ঘোড়া। আদি ঘোড়া চোরা বেটা বটে এই বুড়া॥১• এহা স্থানি মুনিগণ করে হাহাকার। হেন সব বাক্য কেহো না বলিহ আর ॥ লক্ষণেরে না করিহ বুড়ার গেস্সানে। অতিকায় ইক্রজিত পড়ে জার বাণে॥ বুড়া জ্ঞানে না বুঝিহ ঠাকুর লক্ষণে।১৫ জার বাণে সবংশে মজিল দশাননে ॥ গুরু গর্কিত ছাড়িলেক ছই সহোদর। অন্ত্র বরিদন করে লক্ষণ উপর॥ রুসিল লক্ষ্মণ কোপে পথ নাহি দেখে। ছয় বাণ জুড়িলেক আনিআ ধন্তকে॥২• সেই বাণ কুশ বীর কাটে এক বাণে। লক্ষণেরে বাণে বিদ্ধে ভাই হুইজনে॥ ছই ভাই বাণ বর্ষে লক্ষণ বীর একা। সভাকার বাণ যেন জলস্ত উলুকা॥ জতেক অস্ত্রের শিক্ষা তিন বীরে জানে I২¢ সভে সভাকারে সব সেই অন্ত হানে॥ লক্ষণেরে বাণ সিখাইল পুরন্দর। লবকুশে সিথাইল বালীক মুনিবর ॥

(889)

(88b)

কুশ বলে দাদা স্থন আমার উত্তর। ঘোড়া চোর। মহাতেজী বড় ধমুদ্ধর॥ লক্ষণ সহিতে কুশের হএ রণ। কেহো কাহা নাহি জিনে সোদর ছইজন॥ সিংহের বিক্রম কুশ নাড়িআ আলা বলে। সার্থির মাথা কাটি পেলে ভূমিতলে॥ রথের উপরে কৈল বাণ অবতার। পজিল রথের বোড়া হৈল চুরমার॥ ডাক দিআ বলে তারে দীতার কোঁওর। ঘোড়া নিআ জাও তুমি ভাণ্ডি পুরন্দর ॥১০ পাপ কৈলে মিছা নহে সর্ন্নলোকে জানে। চোর পাইলে কোন জন রাথএ পরাণে॥ নানা রণ করে চোরা জিনিতে না পারি। মায়াময়ী চণ্ডী অস্তে চোরা বন্দি করি॥ মারামরা বাণ সেই নিদ্রার সংহতি।১৫ ক্রদ্রতেজে বাণকে স্থজিল পশুপতি॥ হেন বাণ কুশ বীর করে অবতার। স্বর্গে থাকি দেবগণ করে হাহাকার॥ মহেশ্বর মন্ত্র সেই বাণ অধিষ্ঠানে। বাণ ছাড়ি দিল গিআ বাজিল লক্ষণে ॥২০ কি কব বাণের কথা মায়াময় নামে। অচেতন হৈলা বীর জ্ঞান নাহি যুমে॥ চণ্ডি-অস্ত্রে লক্ষণের বান্ধে হাথে গলে। মোহ গেল লক্ষণ লোটার ভূমিতলে।। হাথে হৈতে কাড়িয়া লইল শরাসনে।২৫ বন্দি করি লক্ষণে রাখিল তপোবনে॥ যাস পানি ঘোড়ারে দিলেন হুইজনে। দড়া দিআ বাদ্ধিআ রাখিল তপোবনে॥

লবকুশ ঘরে গিঅ। কৈল ভোজন পান স্ফুইলা মায়ের কোলে রূপে পঞ্চবাণ॥ ছইজনে নিদ্রা গেশ জননীর পাশে। উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত কৃত্তিবাদে॥

নিদ্রা হৈতে উঠি দোঁহে গেলা তপোধন।৫ উলি পালি করি ঘোড়া চড়ে হুইজন॥ হুই ভাই ঘোড়া চড়ে আপনার স্থথে। তপোবনের মুনি দব কৌতুক দেখে॥ ভঙ্গ দিআ পালাল্য সকল অনুচর। লক্ষণের বন্দি কহে রামের গোঁচর ॥১० অত্নচর সব গিয়া নোঙাঞিল মাথা। লক্ষণ বার বন্দি হৈল রামে কহে কথা॥ এত স্থানি রামচন্দ্র হইলা চিস্তিত। কেমনে হইলা বন্দি রণের পণ্ডিত॥ অত্নচর বলে ঘোড়া থাথি রাত্রিদিনে ৷১৫ যথা ঘোড়া জার তথা জাই তার সনে॥ আগলিতে নারি ঘোড়া বায়ু অবতার। দেখিতে দেখিতে হৈল সর্যুতে পার॥ নদী পার হৈন্ত মোরা ঘোড়ার উদ্দেশে। ঘোড়া গিআ বিষ্ণুপদা নগর প্রবেশে ॥২० ছইটা মুনির শিশু পরিধান ধড়া। তার একজন আসি ধরিধেক ঘোডা॥ যোড়া ছাড় খোড়া ছাড় বলেন লক্ষণ। মারা অন্তে বন্দি করি শিশু হুইজন ॥ বন্দি করি রাখিল লক্ষণে তপোধনে।২৫ ইহা স্থনি শ্রীরাম বিশ্বিত হৈলা মনে॥ ভাগ্যে পালাইলু মোরা রহিল জীবন। আমা দভা রাখিল সকল মুনিগণ ॥

(488)

(80.

ৰীর সব পড়িল অনেক সেনাপতি। হুইটী বালক প্রভু রণে মাতা হাথী॥ বার্তা স্থানি রামচক্র হইলা বিস্মিত। বুঝি মায়া রণ করে আসি ইক্সজিত॥ রাম বলেন জামুবান মন্ত্রকের সার।৫ কোন মতে ঘোড়া পাই লক্ষণের উদ্ধার॥ এত স্থনি জামুবান করে জোড় হাথ। আমার বচন স্থন পৃথিবীর নাথ॥ আপনা আপনি নাহি করি অপচয়। পাইবে সকল সৈল্ম নাহিক সংশয় ॥১০ জত জত মুনিগণ বৈদে আমার দেশে। মুনিজন হঞা তারা রাজা নাহি হিংদে॥ ঘরে বসি খার মুনি রাজার শাসন। বৈসয়ে রাজার দেশে জত মুনিজন॥ রাম বলেন এই মোর চমৎকার মনে I>c হেন বীর নাহি জে লক্ষ্ণ বীরে জিনে ॥ দেবতা দানব আর যক্ষ রক্ষ সাপ। কেহো না সহিতে পারে লক্ষণের প্রতাপ। ट्न वीत विन देशा वान्तक तर्।। এই চিষ্ঠা করি রাম গুণে মনে মনে॥२० कूम्म नन नीन अञ्चन रन्मान। মাথা নোঙাইআঁ কহে রাম দলিধান॥ সভাকার আগু হঞা কহে হনুমান। কোন কার্য্য লাগি প্রভু চিন্ত অপমান॥ ব্রহ্ম অস্ত্রে মারিলে রাক্ষস লক্ষেশ্বর।২৫ ত্রিভূবনে দেবতার খণ্ডাইলে ডর॥ -ৰাখিলে কতেক যুগ সাগরে কীরিত। হেন জম চিস্তা করে নহেত্ উচিত।

পরম হরিষে থাক না ভাবিহ ব্যথা। মুনির বালকে ধরি আনি দেহ এথা॥ পূর্ব্বে বর দিল মোরে দেবী উগ্রচতা। এক মুঠকির ঘাএ শিশু হবে গুণ্ডা। ব্রহ্মমন্ত্র পাইল আসি বিধাতার বরে। ৫ ইন্দ্রের বজ্রেতে মোর কি করিতে পারে॥ কুবের বরুণ যম রাথএ শিশুরে। ত্রিভূবন আস্তে যদি তমু আনিমু তারে। কোন কাৰ্য্য হেতু তুমি চিন্ত অপমান। ছই শিশু আনিব তোমার বিভাষান ॥১• ভাঙ্গিব নগর সব পাডিব প্রমাদ। সর্ব্ব কার্য্য সিদ্ধ হবে ন। কর বিষাদ ॥ সাগর তরিল আমি বাদ্ধিআ জাঙ্গাল। ধরিয়া আনিব ছই মুনির ছাওআল॥ রাম বলেন হন্তু তুমি বুদ্ধে বুহস্পতি।১৫ ব্রাহ্মণের সনে রণ না আস্ত্রে জুক্তি॥ মুনির বালক ধরি আন'সলিধান। মল না বল্লিছ না করিছ অপমান॥ হরু বলে ইন্দ্রজিত ত্রিভুবন জিনে। হেন জন পড়ে বীর লক্ষ্ণের বাণে ॥২০ **(इन जन तिम देवल मुनित दका** ७त : ত্রিভুবনে বীর নাহি শিশুর সোঁসর॥ বলিতে বলিতে বাড়ে পবন নন্দন। উভেতে প্ৰমাণ হৈলা শতেক যোজন॥ শ্রীরামের আগে সভে কৈল অঙ্গীকার।২৫ বিষ্ণুপদা নগর করিল ছার থার ॥ রামের চরণে সভে কৈল প্রদক্ষিণ। যাত্রা করি লড়ে সভে সংগ্রামে প্রবীণ॥

(843)

(802)

তার পাছে লড়িলা সম্পাতি শতবলী। त्कभती श्रमाथि नाष्ट्र वान महावनी ॥ বড় বড় বীর লড়ে পর্বতপ্রমাণ। कुमृत नन नीन अन्न रुस्मान॥ চারি বীরে লড়িলা কটক নিআ সাথে।e কোপ মনে চড়ি সভে নিজ নিজ রুথে॥ নজিলেন বীরভাগ নাহি রহে আর। জাঙ্গাল বান্ধিআ সরযুতে হৈল পার॥ জমূবান স্থাসেন রহিলা রাম পাসে। মোর দঙ্গে জাবে সভে রণ অবশেষে॥১० नान। ताजवामा वाटक विविध वाजन। বিষ্ণুপদা নগর বেড়িল তপোবন॥ উপাড়িয়া নিল সভে পর্বতি শিথর। বীর ভাগ বেড়ে যথা সীতার কোওর॥ বেজিল নগর ডরাইল মুনিগণ।১৫ হাথে অন্তে বারি হৈলা সীতার নকন। পর্বত গুহার মাঝে খোড়া লুকাইআ। সম্ভাইলা হুই ভাই রণে গণ্ডি নিঞা इहे डाहे तरा निन धन्नरक देशात। তত্ত্বে মন্ত্রে দড় বড় সীতার কুমার॥২० দূরে হৈতে হনুমান শিশুকে নেহালে। স্বৰ্গ হৈতে জেমন নাম্বিল আখণ্ডলে॥ হন্মান বলে দোহে মুনির কোঙর। মুনি হঞা অস্ত্রধর কুলে অযক্ষর॥ বেদ বিদ্যা তপ জ্বপ হোম বেবহার।২৫ মুনি হঞা রণ কর এই ছরাচার॥ বিসিমা রাজার রাজ্যে তার সনে বাদ। আজি তোমা দোহা নিঞ পাডৰ প্ৰমাদ॥

কুশ বলে স্থন ভাই বানরের কথা। ধর্মশান্ত্র বানর। বুঝায় মোর এথা।। ধার্ম্মিক বানর তোর গিরি কেনে হাথে। ফলমূল খাইতে আইলি মোর ভিতে॥ আমি সব ঘরে নাই শূন্ত নগর।৫ পাকা ফল খ্যাত্যে আইল্য সকল বানর ॥ গগন জুড়িআ তোর শরীর প্রমাণ। পর্বত ধরিঞা কেন আলি মোর স্থান॥ কুপিলেন হনূমান শিশুর বচনে। পর্বত বরিষে ছই সীতার নন্দনে॥১० হাথে গাছ শৈলে ধায় জত কপিগণ। গাছ পাথর বৃঞ্চে ছায় ভাই হুইজন॥ কোপে কুশবীর তবে জুড়িলেক বাণ। বড় বড বীর পড়ে তেজিআ পরাণ। ত্বই ভাই বাণ বর্ষে পর্নম সত্বর।১৫ বাণে বিন্ধি বানরে কুরিল জর জর॥ বাণের মুখেতে অগ্নি উঠে গুলি গুলি। পর্বতের গুহাতে লুকায় শতবলী॥ প্রাণ নিঞা পালাইল বানর সম্পাতি। সর্যুর জলে লুকাইলেন প্রমাথি॥ २० . পালায় বানর সব হুই ভাইর বাণে। কুপিল অঙ্গদ বীর সাম্ভাইলা রণে॥ वानात्कत युक्त (मिथ वानात्त वर्ष त्रत्र। রহিলা অঙ্গদ মাত্রে রণে নাহি ভঙ্গ॥ রণে সাম্ভাইল বীর অকাতর প্রাণ। ২৫ नन नौन मरहक एएटक मरक धान॥ পাঁচ জনে লব কুশে ধরিবারে চায়। হাসি হুই ভাই,সংগ্রামে সাম্ভায় ॥

(800)

(808)

मिथारम्थि अन्नम अर्दर्ग जर्पादरन। দেখিসা জলিল কোপে ভাই হুইজনে॥ মায়াময় অস্ত্র দোঁহে করিল স্মঙরণ। অন্ধকারে পথ নাহি দেখে কপিগণ॥ রণ দেখি দোঁহার হরিষ মুনিগণ। আশার্কাদ কৈল সভে জিন মহারণ॥ মারামর অস্ত্র মারার অতিসন্ধি। সেই অস্ত্রে অঙ্গদ বীর হইলেন বন্দি॥ মায়া করি যুদ্ধ করে তুই সহোদর। অঙ্গদের সহিতে বান্ধি কুমুদ বানর॥ তুইজন রণ করে হাথে ধন্নক বাণ। বড় বড় বীর বিন্ধি করে খান খান॥ অঙ্গদৈরে বান্ধিআ রাখিল তপোবনে। তা দেখি পালাইল সকল কপিগণে॥ ভঙ্গ দেখি বানরের হনুমান কোপে জলে নেউটাআ বানর প্রবেশে রণস্থলে॥ উপাড়ি আ গাছ মারে পর্বত প্রমাণ। ছই বাণে কাটি সব করে থান থান॥ মহেক্র দেবেক্র নল নীল সেনাপ্তি। হাগে গাছ পাথরে ধাইল লঘুগতি॥ দোহার উপরে পেলে করি অন্ধকার। বাণে কাটা লব কুশ করে ছার থার॥ মায়াময় বাণ দোঁহে কৈল অবতার। পালায় বানরগণ নাহি ফিরে আর ॥ গয় গ্রু গ্রাক্ষ গন্ধমাদন। সরভ পনস কেশরী রম্ভ হুর্জন॥ 🚅 कुं जान पिशान वरन भशवनी। একবারে উঠিল গগনে নামে বুলি॥

হাথে গাছ গিরি ধরি উঠিল গগন। বন ছাড়ি পালায় সকল মুনিগণ॥ দেখিআ মুনির ভঙ্গ লব কুশ হাসে। সভারে বান্ধিব আজি মান্নাময় পাশে॥ এত বলি মায়া অস্ত্রকল অবতারে।৫ একে একে বন্দী করে সকল বানরে॥ সভা বন্দি করিআ রাখিল তপোবনে। বিস্মিত বানর সব মনে মনে গুণে॥ मरहन्द्र प्रारम् वार्ष श्टेन जर्ब्ह्र । স্থা পানে হুই ভাই অজয় অমর॥১० ছই জনে বন্দি পড়ে দেবতার গতি। নল নীল বন্দি পড়ে মহাযুদ্ধপতি॥ বান্ধিল কুমুদ বীরে রম্ভ সে হুর্জনে। হাথে গলে বান্ধি সভে রাথে তপোবনে॥ মায়া অস্ত্রে বন্দি সভে যুমে অচেতন।১৫ কৃত্তিবাস গাইল উত্তর রামায়ণ॥

বড় বড় বাঁর বিদ্ধি কৈল খণ্ড খণ্ড।
দেখি হন্মান কোপে রণেত প্রচণ্ড॥
হাথ টানে সাল গাছ উপাড়িআ আনে।
এড়িলেক গাছ বীর তর্জন গর্জনে॥২•
সালগাছ দেখি কুশ সীতার নন্দন।
ধন্থকে জুড়িল বাণ কোপবৃত মন॥
দেই বাণে সাল গাছ কৈল ছই খান।
দেখি কোপানলে জলে বীর হন্নমান॥
দোহাতিয়া মারে বীর লোহার সাবল।২৫
ব্কেতে বাজিল•কুশ হইল বিকল॥

(800)

(88%)

শ্বাস মাত্র আছে কুশ পড়ে ভূমিতলে। দেবগণ হঃখ ভাবে গগন মণ্ডলে॥ ट्निकारल हेन्द्र रेकना स्था वित्रव। শ্রম পাসরিল কুশ পাইল চেতন ॥ চেত্তন পাইয়া কুশ প্রবেশিলা রণে।৫ কুড়ি বাণে বিন্ধিলেন বীর হন্তুমানে॥ वानत पिथा कुम हारम वड़ त्रश्री। বাম হাথে ধন্ম ধরে ডানি হাথে সাঞ্চি॥ ছই হাথে অন্ত্র ধরে দেখি লাগে ডর। বাণেতে বিদ্ধিতা বীরে করিল জর্জার ॥১০ বড় বড় বীরকে রাখিল বন্দিআনে। তাহা দেখি চিন্তিত হইল হন্নুমানে ॥ মহাবল লব কুশ সীতার কুমার। হন্তুমানে বান্ধিতে করেন প্রতিকার॥ বালীকি দিখাইল বাণ ভাই তুইজনে ১১৫ হেন বাণ জোড়ে লব ধন্তকের গুণে॥ মাহেশ্বর বাণ জোড়ে সীতার কোঙর। বুকেতে বাজিল বাণ পড়িল বানর॥ গগন হইতে বীর পড়ে ভূমিতলে। প্রাণ মাত্র রহিল পূর্কের পুণ্যফলে ॥২০ হাথে গলে ধরি তারে লব কুশ বান্ধে। হমুমানে দেখিআ বানর সব কান্দে॥ नव रस्मात्न वात्क कून दमि शदम। শতবলি বানর পালায় উর্দ্ধানে॥ মাথা নোঙাইআ কহে রামের গোচর।২৫ পড়িল শিশুর বাণে হমু বলধর॥ रस्मात्न अन्नरम् वाक्तिन रार्थ शतन। पदा शिना मान कति नर्यमात जल्न ॥

দীতা ঠাঞি ছই ভাই কৈল ভোজন পান জননীর কোলে স্থঞা স্থথে নিদ্রা জান ॥ এথা শতবলি বার্ত্তা কহেন রামেরে। স্থনিমা ছঃথিত রাম সভার ভিতরে ॥ হন্তুমান বন্দি সভা থণ্ডের তরাদ।৫ উত্তরকাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্ষতিবাস ॥

চিন্তি রণে রামচন্দ্র হাদয়ে বিষাদ। কোনজনে পাড়িলেক এতেক প্রমান॥ হন্তর চাপড়ে কাঁপে রাজা লঙ্কেশ্বর। অন্তরীক্ষ হৈতে আনে পর্বত শিথর ॥১০ জার মল্লযুদ্ধে কেহে। নাহি ধরে টানে। হেন বীরে বন্দি করি রাখে কোন জনে॥ অঙ্গদ কুমার বড় ছর্জন শরীর। কভু রণে ভঙ্গ নাহি দিল মহাবীর॥ বালক হইআ হেন প্র বীরে বান্ধে।১৫ বলিতে বলিতে মোহ পায় রামচক্রে॥ বার্ত্তা স্থানি স্থগ্রীব হইলা তুঃখ্মতি। রামের গোচরে বলে বানরের পতি॥ সুগ্রীব বলেন মিতা না ভাবিহ হুঃখ। হুই শিশু আন্তা দিব তোমার সমুখ॥২० কত বল ধরে তারা কোন রণ জানে। কেমনে সমুখ হবে আমা সনে রণে ॥ চক্র স্থ্য অগ্নি বায়ু শমন প্রন। মোর আগে আসিআ জুঝিব কোন জন। রাম বলেন মিতা তুমি হবে সাবধান I২**ে** অঙ্গদে লক্ষণে বান্ধে বীর হন্তমান॥

(809)

(8¢b)

স্থাীর বলেন মিত। বস্তা থাক ঘরে। মুনির বালকে মোর কি করিতে পারে॥ রামের চরণ বন্দি রাজার গমন। সিংহনাদ করি সঙ্গে ধায় কপিগণ॥ স্থর্য্যের নন্দন রাজা স্থর্য্যের সমান।৫ জার দরসনে হও বিপক্ষ ভক্ষান ॥ বানর কটক ধায় মারে মালসাট। উত্রড়ে ধার সভে বলে মার কাট॥ আগে রাজা পশ্চাতে কটক লাথে লাথে। ধুমুর্বাণ হাথে লব কুশ সভে দেখে ॥১০ দেখিআ স্থগ্রীব রাজা শিশু হুই গুটী। দূরে ছিল দৈন্ত হৈল নিকটানিকটী॥ শঙ্কা নাহি ছুই ভাই সৈত্ত দেখি হাসে। অগ্নি হেন বাণ দোঁহে কটকে বরিষে॥ স্থাবি বলেন স্থন মুনির নন্দন ।১৫ পরিচয় দেহ মোরে ভাই হুইজন॥ মুনি হঞা অন্ত ধর এ নহে ব্যাভার। রণ কর দৈত্য মার বড় ছরাচার॥ স্থগ্রীব আমার নাম জন্ম রাজকুলে। তোমাকে মারিলে অপ্যশ মহীতলে ॥২० বসিআ রাজার রাজ্যে রাজা সনে বাদ। কতদিন ভালে জাব পড়িল প্রমাদ॥ এক ঘায়ে মরিবে কি করে ধমুর্কাণ। এক মুঠাকির ঘায়ে তেজিবে পরাণ॥ স্মগ্রীবের কথা স্থানি ছই ভাই হাসে।২৫ হারাবি বানরা প্রাণ আপনার দোষে॥ अजीव वरनम यनि आस्त्र मिवशन। তথাপি মারিব তোরে রাখে কোন জন ॥

স্থগ্রীবের বোলে লব কুশ কোপে জলে। বানর কটক বিশ্ধি পাড়ে ভূমিতলে॥ কালাস্তক যম যেন লব কুশের বাণ। কত কত মহাবীর তেজিল পরাণ॥ ভূমিতে লোটায় কত কত মহারথী।৫ দোঁহাকে দেখিআ কাপে বানরের পতি॥ হহগার দিআ হুই ভাই এড়ে বাণ। বিন্ধিআ স্থগ্রীব রাজা করে থান থান॥ বাণে মোহ গেলেন বানর অধিপতি। পুণা ফলে স্থগীৰ পাইল অব্যাহতি ॥১০ স্থিত পাইআ রাজা হৈলা সাব্ধান। পারিজাত গিরি আনে দিআ এক টান। উপাড়ে পর্ব্বত থান এ চারি যোজন। কোপেতে পর্বত ফেলে স্থা্যের নন্দন॥ বাণেতে পর্বত কাটে সীতার কোঙর।১৫ দেখিআ স্কুগ্রীব রাজা হইল ফাঁকর॥ হুজনার বাণে রাজা ফুটিলা অপার। মাথা রাঞারক্ত তার পড়ে পঞ্চধার॥ ফুটিআ স্থগ্রীব রাজা তিতল রকতে। রাঙ্গাজল পড়ে যেন সোনার পর্বতে ॥২৫ খণ্ড খণ্ড স্কুগ্রীব হইল অচেতন। কালান্তক বাণ জোডে সীতার নন্দন॥ বালীকি শিখাল্য অন্ত হল্লভ সংসারে। হেন বাণ জুড়িল স্থগ্রীব মারিবারে॥ সাপ মূর্ত্তি বাণ গোটা অগ্নি হেন জলে।২৫ সেই বাণে স্থগ্রীবেরে বান্দে হাতে গলে ॥ ভূমিতে লোটায় রাজা আউদর চুলি। বার্ত্ত। দিতে চলিলী বানর শতবলী॥

(802)

(8%0)

লব কুশ স্থাীবে বান্ধিমা হাতে গলে।
স্থান কৈল গৃই ভাই নৰ্মদার জলে।
বং জিনি গুটী ভাই নিজস্থানে চলে।
সীতা ঠাঞি খাইলেন মধুর ফলম্লে॥
পড়িল স্থাীব রাজা স্থানিতে তরাস।
উত্তরকাও রচিল পণ্ডিত ক্তিবাস॥

শতবলী পালাইআ জায় শুঘ্রগতি। পাছু পানে নাহি চাহে ভয়ানক মতি॥ ধুলাতে ধুসর তমু আউদড় চুলি। রামের আগে বার্ত্ত। কহে করি পুটাঞ্জলি ॥ পড়িল স্থগ্রীব রাজা স্থনহ বারতা। তার হুই পুত্র পড়ে নামে সেতা জেতা॥ স্থন প্রভু শিশু দনে না করিহ রণ। আত্মা রাথ রাজ্য রাথ রাথ সর্বজন॥ বার্ত্ত। স্থান রামচন্দ্র মনে মনে গুণে।১٠ এতেক গুরুত্ব কর্ম্ম করে কোন,জনে। দেখিআ রামের চিস্তা বলে বিভীষণ। স্থাহ আমার বোল কমললোচন॥ মাগ্না রণ করে শিশু কেহো নাহি বুঝে। কোন দৈত্য আদিআ মানুষ রূপে জুঝে॥ দেবতা দানব কিবা হয় নিশাচর। জগতের মারা প্রভূ আমার গোচর॥ জগতের মায়া প্রভু আমি জাই রণে। বন্দি করি আনিব বালক হুইজনে॥ শ্রীরাম বলেন মিতা হবে সাবধান।২৫ স্থগীব অঙ্গদ বান্ধে বীর হরুমান।

বালক বলিয়া তারে হেলা না করিহ। সাবধানে যুদ্ধ করি শিশুরে ধরিহ॥ বিভীষণ বলে আমি নানা মায়া জানি। মোর আগে মায়া করে কাহার পরাণি। শ্রীরামে বন্দিন্সা বিভীষণের পয়াণ। লড়িল রাক্ষস সব হাথে ধরুর্বাণ॥ রাক্ষদে বেষ্টিত চলে রাক্ষস ঈশ্বর। তপোবনে বসি দেখে দীতার কোঙর॥ বিভীষণে দেখে দোঁহে রাক্ষ্যে বেষ্টিত। তাহা দেখি ছটী ভাই হইলা বিশ্বিত ॥১০ পূর্ব্বে স্থন্যেছিত্ব মোরা রাক্ষসের ডর। রাক্ষদে ধরিআ থায় জত পায় নর॥ রাক্ষসে দেখিআ দোঁহে কাঁপিল অন্তরে। মুথে ধূলা উড়ে কার বাক্য নাহি সরে॥ কুশ বলে স্থন দাদা আমার বচন।১৫ আপদে বিধাদ নাহি করে বুধজন॥ বিষাদ ছাড়িআ উঠ ধরি গণ্ডিবাণ। সারিআ কটক আস্ত পুরিআ সন্ধান॥ কুপিলেন হুই ভাই অগ্নি অবতার। বজ্রাঘাত হেন দিল ধমুকে টঙ্কার 🖂 • অগ্নিবাণ হুই ভাই করে অবতার। পোড়াইয়া রাক্ষ্যে করেন ছার্থার॥ তুই ভাই দেখি বিভীষণ জলে কোপে। হজনারে বেড়ে গিআ শার্দ্দুল যেন ঝাঁপে॥ চারিদিকে আগুলিআ বিদ্ধিল বিস্তর।২৫ মাল্যবাণ বুড়া জুঝে বিক্রমে সাগর॥ नव मानावारन विदन्न काथ काथ वार्ष ।... कूर्ण विভीषत् यूक्त वार्क मधाशारम ॥

(85)

(8<sup>.</sup>%<sup>2</sup>)

स्राली ताकम सूर्य एहेतीत मरन। চন্দ্র বাণে ছইবার দোহাকারে হানে॥ তুইটা রাক্ষ্য পড়ে ধর্মত আকার। তাহা দেখি মাল্যবান ক্ষিল আপার॥ মহাতেজা রাক্ষ্যা সে বড় ধহুর্দ্ধর।৫ জার তেজে মুর্চ্ছিত পড়িল পুরন্দর॥ বালকে দেখিআ মাল্যবান ধাএ রঙ্গে। লাফদিমা বুলে বুড়া তরঙ্গে তরঙ্গে॥ পঞ্চবাণ জুড়ে বুড়া কুশের উপরে। সেই বাণে বিশ্বিতা পড়িল ধরুর্দ্ধরে॥>• ছই ভাই বিশ্ধি বুড়া কৈল খণ্ড খণ্ড। রক্তে রাঙ্গা হৈল হই কুমারের মৃত্ত ॥ চেত্রন পাইল লব রণেত প্রচণ্ড। মহেশ্বর বাণে কাটে মাল্যবানের মুগু। মাল্যবান পড়ে বল বাড়িল বিস্তর।১৫ জুড়িল গন্ধর্ক অন্ত্র হই সহোদর॥ পড়িল সকল সেনা দেখি বিভীষণ। দোহার উপরে করে বাণ বরিসন্॥ নানা মায়া জানে বীর মায়ার সাগর। দকল মারা চুর কৈল দীতার কোঙর ॥২• विजोषन दमिथ इट्टे नैट्टामन खटन। নানা অস্ত্র বরিসন করে কোপানলে॥ অগ্নিবাণ এড়ে বীর অগ্নি অবতার। বরুণ বাণে কুশবীর করিল সংহার॥ জত জত় অস্ত্র এড়ে লঙ্কার ঈশ্বর।২৫ সকল কাটিমা পাড়ে সীতার কোঙর॥ কুশ বলে স্থন দাদা আমীর উত্তর। বড়তেজ রাফদের মহাধ্যুর্দর ॥

জত রণ করিল কিছুতে নাই জিনি। মায়াময় অস্ত্রে ধরি বন্দি করি আনি॥ হেন অস্ত্র সিথাল্য বাল্মিকি মহামূনি। সেই অস্ত্র জোড়ে কুশ পরম সরানী॥ তাহা দেখি আকাশে উঠিলা বিভীষণ ৷৫ উৰ্দ্ধাপে নেহালেন ভাই হুই জন॥ হইল বৈষ্ণৰ অন্ত্র পরম সঞ্চার। আকাশ হৈতে বিভীষণ পড়ে চুরমার॥ বিধাতার বরে তার হৈল পরিত্রাণ। তে কারণে বিভীষণের রহিল পরাণ ॥১০ বৈষ্ণব অন্তে বিভীষণে বান্ধি হাতে গলে। ভূমিতে লোটায় বীর আউদ্ভূ চূলে॥ বিভীষণ মৈল বলি সর্ববৈদ্য বলে। দড়ি দিআ কুশবীর বাব্ধে হাথে গলে॥ আছিল বানর সব রাক্ষস মিসালে।১৫ কাপড় বন্ধনে তারে বান্ধে হাতে গলে॥ উন্ধাৰ্থা পালাইল লই আ জীবন। রামে বার্ত্ত। দৈতে জায় পডিলা বিভীষণ॥ রাজা রাজপাত্র বন্দি হৈলা তপোবনে। হনুমান বিভীষণ স্থগ্রীব লক্ষণে ॥২০ অঙ্গদ কুমুদ আদি জত কপিগণ। বান্ধিল সভারে ধরি সীতার নন্দন॥ লক্ষণ বলেন সভে স্থন, বিভীষণ। মোরা সভে বন্দি হৈল দৈবের কারণ॥ ভূত ভবিষ্যৎ বর্ত্তমান সব গণি।২৫ শ্রীরামের তেজ ধরে শিশু হুই থানি॥ শ্রীরামের হেন দেথি ছজনার ঠাম। ত্রিভ্বন জিনিমা হাথের গণ্ডিবাণ ॥

(850)

(888)

বাঁচিব সভাই মোরা নহিব সংশয়। অনুমানে বুঝি ছই সীতার তনয়॥ কানে কানে কছেন লক্ষণ না করে প্রচার। সভাকার দঙ্গে এই যুক্তি কৈল দার॥ विज्ञोषन यत्नन नक्षन ठूमि नर्सकान। ६ স্থনিঞা তোমার কথা বুকে পড়ে টান॥ হারিলাঙ রণ করি কি করিব বুধি। সভার উদ্ধার হেতু রাম গুণনিধি॥ দেখিতে ছাওমাল দোঁহে রাঙ্গার কোঙর। মহাবল ধরে হুর্জন্ন ধুকুর ॥ ১০ সর্বভাবে দেখিল রামের হেন ঠাম। হইবে রামের পুত্র ইহো নাহি আন॥ লক্ষ্মণ বলেন সভে স্থনহ জুকতি। জখন বৰ্জিলা সীতা ছিলা গৰ্ভবতী॥ গর্ভবতী সীতা রাখি গেমু তপোবনে।১৫ শ্রীরামের পুত্র এই হেন বুঝি মনে॥ প্রচার না কর কেহ সাঁপে পাছে সতী। সীতা শাপ দিলে সভে জাবে অধােগতি॥ এতেক চিস্তিমা সভে মন্ত্রণা কৈল সার। ভর না করিহ হব সভার উদ্ধার ॥২০ বহু তুঃথ পাল্য রাম দীতার হরণে। সাতা ছাড়ি শ্রীরামের অন্ত নাহি মনে॥ র্নীম রাম বলি লক্ষণ ছাড়এ নিখাস। উত্তরকাপ্ত রচিল পণ্ডিত ক্বন্তিবাস॥

সান করি ছই ভাই গেল্থা মান্তের স্থান।২৫ প্রম স্কথেতে দোহে কৈল ভোগন পান॥

স্থতে দিআ সীতা করিল ভোজন। জননীর কোলে দোঁহে করিল শয়ন॥ ত্বই ভাই নিদ্রা গেল জননীর কোলে। নিদ্ৰা তেজি উঠিলা অতি উষা কালে॥ জটাবাকল পরিধান হাথে গণ্ডিবাণ।৫ ত্রিভুবনে বীর নাহি দোহার সমান॥ পালাইআ উকামুথ রামে নোঙায় মাথা। সাবধানে স্থন প্রভু সংগ্রামের কথা। পড়িল কটক সনে রাজা বিভীষণ। নররূপে নাহি জানি জুঝে কোন জন॥>• বিদি হৈলা দভে রামে করিল গোচর। বার্ত্ত। স্থনি রামচক্র কান্দিলা বিস্তর ॥ মুনির কোঙর দোঁহে জানে অন্তশিগা। জারে জারে বাণ মারে কার নাহি রক্ষা॥ বিভীষণ স্থগ্ৰীব অঙ্গদ হত্মনান ৷১৫ নল নীল দ্ধিপাল বানর প্রধান॥ বড বড বীর বন্দি বিক্রমে বিশাল। জার তেজে জিনিলাঙ অইলোক পাল। গয় জে গ্রাক সরভ গন্ধমাদন। পনস কেশরী বন্দি রম্ভ সে ছর্জন ॥২০ বিনোদ প্রমাথি পদ্ম আর শতবলী। দধিমুথ লোটাইছে আউদড় চুলি॥ সভাকারে বন্দি করি থুল্য তপোবনে। আর কেবা আছে স্থির হব তার রণে॥ বার্তা স্থান রামচন্দ্র চিস্তাবৃক্ত মনে।২৫ কি হবে উপায় আর কেবা জাবে রণে॥ मागत वाकिया नकी जित्न एक वानदर्त । হেন বীর বন্দি করে মুনির কোঙরে॥

(856)

(৪.৯.৯)

হা করিল অষ্টপাত্রে কমললোচনে। আ ওদারি মাথা নোঙায় ভরত শত্রুঘনে॥ সর্ব্যেনা বন্দি পড়ে ভাল নহে কাজ। সংসার জুড়িআ হৈল অপবশ লাজ॥ ভরত শত্রুবন লডে সব পাত্রগণ IC আগুলিখা মুনিরে করিছ সন্তাষণ। মুনি সব সম্ভান্তা মুনির ধরি বেশ। বিষ্ণুপদা নগরে করিহ প্রবেশ। সর্ব্য কার্য জানিবে মুনির সম্ভাষণে। মুনিগণ তাহার সন্ধান ভাল জানে॥১० রামের মেলানি করি লড়িল ভরতে। হাথে গণ্ডিবাণ নিঞা চডে নিজ রথে॥ শক্রবন লড়িআ লইআ পাত্রগণ। নানা রাজবাদ্য বাজে দম্পূর্ণ দাজন ॥ মুনিসব বলে বুঝি সাজিলা শ্রীরাম।১৫ কোন জন সহিবেক তাঁহার সংগ্রাম॥ বিস্মিত সকল মুনি গণিল প্রমাদ। ছাড়িলাঙ বিষ্ণুপদার বসতের সাধ॥ শক্রঘন রহিল গিআ তপোবনের পাসে। ভরত করিল বিষ্ণুপদাতে প্রবেশে॥২০ ভরতে দেখিআ উঠে সব মুনিগণ। নামিঞা ভরত বন্দে সভার চরণ॥ পাদ্য অর্ঘ্য দিল মুনি গৃহ ব্যবহার। একে একে মুনিগণে কৈল নমস্বার॥ আশীর্কাদ কৈল সভে ধরম হরিসে।২৫ জোড় হাথে নিল মুনিগণের আশীষে॥ ভুরত মুনিকে বলে আয়ুনেতে বিন। ভরতেরে বেডিআ বসিলা সব ঋষি॥

মুনি বলে ভরতেরে কেন আগমন। ভরত বলেন মোর আছে প্রয়োজন। সর্বকাল লই তোমাদের আশীর্কাদ। মুনি হঞা কেনে কর এতেক প্রযাদ॥ সর্বাকাল সভে মেলি বৈদ মোর দেশে।¢ হেন সব কর্ম্ম কর যুক্তি নাহি আইসে॥ আমার শাসনে বসি মন্দ কর কাজ। মুনি হঞা কেন লঙ্ঘ রাম মহারাজ। অনুজ লক্ষ্মণ মোর রামের সমান। বন্দি করি তাহারে করহ অপমান ॥১০ কেমন মুনির স্থত কিবা অস্ত্রধারী। ব্রাহ্মণ মারিতে নারি তেঞি সংরি॥ ছাড়হ লক্ষ্মণ ঘোডা জত দৈয়বল। তপোবনে হিত চিস্তি আপন কুশল।। এতেক বলিল দশর্থের নন্দন।১৫ ভরত সধোধি মুনি বলেন সাস্ত্রন ॥ প্রতাপে শাসিলে তুমি সব রাজ্য থও। তপোবলে হুই শিশু ধরে ছত্র দও। ধরয়ে রাজার শ্রী কুমার ছইজন। তাহার প্রসাদে তপ করে তপোধন ॥২০ স্থ্যবংশে জন্ম সেই গুইটা কোঙর। রাজ্য হারাইআ আলা অরণা ভিতর॥ ধার্মিক বট তুমি মুনির ধর বেশ। গাছের বাকল পর জটাভার কেশ। সর্বলোকে জিন তুনি আপনার গুণে।২৫ তোমা হেন পুরুষ নাহিক ত্রিভুবনে॥ ধন্য ধন্য ভরতে প্রশংসে জত মুনি। मक्तम् नि गए। मिले आनीक्तान वाणी ॥

(859)

(896)

ভরত বলেন মোর সার্থক জীবন।
তোমা সভার চাই মোর প্রশংসার বচন॥
মুনির প্রশংসে বীর স্থসিদ্ধ ভাসে।
উত্তরকাও গাইল পণ্ডিত কৃত্তিবাসে॥

বিনয়ে তুষিল ভরক্তেরে মুনিবর।৫ হেনকালে আল্য তথা সীতার কোঙর॥ বীর ধড়া পরিধান গায়ে রাঙ্গা ধূলা। সূৰ্য্য হেন তেজ রূপে চন্দ্রমার কলা।। হেন বেশে গুজনে বসিলা মুনি মাঝে। দেবতার মধ্যে যেমন ইন্দ্রদেব সাজে॥১० বিদিলা মুনির মাঝে মাথাতে ত্রিজট। দেখান ভাঙ্গিখা গেলা ভরত নিকট। এই ছই কুমার ছর্জয় ধরুরর। লক্ষণ বন্দি কৈল আর সকল বানর॥ স্থগ্রীব অঙ্গদ আর রাজা বিভীষণ।১৫ মহেন্দ্র দেবেন্দ্র আর প্রন্নকর॥ ইহাদের ঠাই কার নাহি অহন্ধার। আপনা সন্তাল কিছু না বলিহ আর॥ এত স্থনি ভরত জ্বিল কোপানলে। করিঞা পাকল আখি বালকে নেহালে॥২० তপোবনে বৈসহ মুনির ধর বেশ। कान कुरन जना वटाँ दिया कान एम। রাজনী ধর দোহে বিষ্ণু অবতার। পড়িলে আমার হাতে রক্ষা নাহি আর॥ ছই শিশু বলে মোর মাতা পিতা নাহি।২৫ व्यश्कात त्वांन तन तुक रमेथि मिर ॥

বুদ্ধ হঞা তোমার এতেক অহদার। পড়িলে আমার হাথে না দেখি নিস্তার॥ অস্ত্র সে বাটুল হাথে ধর গুণ তাই। মোর হাথে পড়িলে তোমার রক্ষা নাই।। এত যদি বলে দোঁহে তৰ্জন বচন।৫ কন্দলি স্থানিঞা আল্য বীর শক্রঘন॥ मुनि मव वरल स्म त्रघूवः भ तां छ। এথানে কন্দলি কর ভাল নহে কাজ॥ নিজ সৈত্যে চলিলা ভরত শত্রুঘন। লব কুশ দোঁহে গেলা সেই তপোবন ॥১০ তার পাছু সংগ্রাম দেখিতে লড়ে মুনি। কটকের মহারোল অস্ত্র ঝন ঝনি॥ এক চাপে উঠিল সকল রাজাগণ। দোঁহার উপরে করে বাণ বরিসন। মায়ামই বাণ দোঁহে কৈল অবভার।১৫ রাজাগণ ভঙ্গ দিল সূত্রম আপার ॥ মহারাজা জত আল্য যুদ্ধ করিবারে। ভঙ্গ দিল সভে কেহো রহিতে না পারে॥ খুড়া ভাইপোয় হ্এ ঘোরতর রণ। বজ্র বাঁটুল পেলে ভরত রাজন ॥২৫ 'কোপ করি বাঁটুল ভরত রাজা পেলে। সম্রমে বান্ধিল গিআ দোঁহার কপালে। তাহাতে পাইল মোহ ছই সহোদর। ভূমিতে লোটায় দোঁহে ধূলাতে ধুদর। হাহাকার করিঞা বেড়িল মুনিগণ।২৫ অনেকক্ষণে হুই ভাই পাইল চেতন॥ ঘাও সম্বরিঞা দোঁছে এড়ে নানা বাণ। ফুটিয়া ভরত রাজা হৈল খান খান।।

(8₺৯)

(870)

নানা মতে জানেন গন্ধৰ্ম অন্ত্ৰ সন্ধি। সেই অস্ত্রে ভরত নুপতি হৈল। বন্দি॥ তাহা দেখি শত্রুখন এডে নানা বাণ। দেই বাণে ছই ভাই হৈল আগআন॥ শক্রবন বাণ বরিসয়ে হাত টানে।« বাণে ফুটি ছুটি ভাই মোহ গেল রণে॥ সকল মুনি মেলিআ করেন হাহাকার। যুগক্ষ হৈল কিবা প্রলয় সংসার॥ মুনিগণ মেলি দিল আশিষ বচন। সম্বিত পাইআ দোঁহে উঠে ততথন॥১। সপরিআ সেই ঘাও এড়ে নানা বাণ। শক্ৰবন ফুটা হইলা জে থান থান॥ নানা মায়া জানে ছই সীতার কোঙর। শক্রঘনে বন্দি কৈল সংগ্রাম ভিতর ॥ ভরতশত্রুঘন গ্রহ ভাই হৈলা বন্দি।১৫ মহাবল শক্ৰথন আপনাকে নিনি।। মহাবলবান ছই সীতার নন্ন। কাড়িআ হাথের গণ্ডি নিলা ততক্ষণ॥ নারায়ণ মৃত্তি খেঁাহে বড় বলবান। গণ্ডিবাণ কাডি নিল করি অপমান ॥২ ভরতের কাডিয়া লইল গুণ তাই। তপোবনে বন্দি করি থুইল ছই ভাই॥ মুনিকে মেলানি করি ছোঁহার প্রান স্নান সন্ধা। করিয়া করিলা অরপান॥ তুই ভাই নিদ্রা গেল জননীর কোলে।২৫ হেন কালে সকল মুনি এক ঠাঞি মেলে। নিদ্রাভাঙ্গি হটা ভাই মুথে দিলা পানী। দেখিতে সীতার পুত্রে আলা বৃদ্ধমূনি।

সকল মূনি করে ছই ভাইর বাথান॥
চিরকাল জিয় বলি করেন কল্যাণ।
নানা ফল মূল দিল উত্তম স্কুসাদ।
মূনির প্রসাদে সব থণ্ডে অবসাদ॥
আশীর্কাদ করি মূনু সব গেলেন ঘর।৫
কৃত্তিবাদ গান ইহা দেবতার বর॥

ভরত শত্রুত্ব বন্দি হৈলা দৈবগতি। রথ নিয়া পলাইল স্থমন্ত সার্থি॥ তপোবনে বন্দি হৈলা ভরত শক্রন্ন। আর কেবা সহিবেক লবকুশের রণ॥১० স্থমন্ত কহেন বার্ত্তা রামের গোচর। স্থান রঘুনাথ বড় হইল ফাঁপর॥ তপোবনে দ্বোঁহে বন্দি সৈম্মগণ সনে। বার্তা স্থনি রামচন্দ্র চিন্তাযুক্ত মনে॥ রাম বলেন স্থনহ স্থারণ জামূবান I>c অষ্টপাত্রে হাঁকারিয়া আন মোর স্থান॥ বড় বড় রাজা যত বৈসে পৃথিবীতে। শ্রীরামের হাঁকারে সকল রাজা আইসে॥ সারি দিয়া শ্রীরামেরে নোঙাইয়া মাথা। কেমনে পালাঞা আল্য রাম কহে কথা।২০ হুর্জিয় প্রতাপ হুই মুনির কুমার। তার হাতে কোনজনে না পাবে নিস্তার। রণস্থলে আসি দিল ধন্থকে টকার। দশদিগ চাপি কৈল বাণ অবতার ॥ আগে ভরত বন্দি হৈলা পাছে শত্রুঘন।২৫ হুইজনে বন্দি করি রাথে তপোবন।

(893)

(892)

ভাগো পালাইরা মোরা বাঁচিল পরাণে। আমা সবা রাখিল সকল মুনিগণে॥ রাম বলে জাম্বান মন্ত্র কর সার। কোন বুদ্ধে ঘোড়া আনি কটক উদ্ধার॥ রামের বচনে মন্ত্রী হাত্ত কৈল জোড়া।৫ পাইবে সবারে রাম আর যক্তঘোডা। দাণ্ডাঞা স্কুষেণ বেজ জোড় কৈল হাত। বড়ই সংশয় কথা শুন রঘুনাথ॥ আপনা আপনি নাহি করি অপচয়। পাইব সকল সৈত্য নহিবে সংশয় ॥১০ সার্থি বলিআ পড়ে রামের হাঁকার। সত্তবে আনিআ রথ দিল রথকার॥ রাম বলে বশিষ্ঠ না ছাড় যজ্ঞহান। প্রতিদিন ঘজ্ঞকর যে আছে বিধান॥ যাত্রা কৈল রামচন্দ্র বন্দি যজ্ঞশাল ١১৫ যজ্ঞশালে রহিলেন অষ্ট লোকপাল।। অষ্টপাত্র রথে চড়ে রামে আগুয়ান। তারপর চড়িল স্থাবেণ জামুবান। মহাপাত্র রথে লড়ে বিক্রমে বিশাল। নানা রাজবাদ্য বাজে ফুকরে কাহাল ॥২০ নানা অন্ত ধরি সাজে রণের সাজাড়। পৃথিবী পর্বত সিন্ধু করে তোল পাড়॥ দৈল্পদনে জ্রীরাম সর্যু হৈলা পার। হাতে দুর্কা ধানে সব ঋষি আগুসার॥ ভক্তিভাবে প্রীরাম মূনির পদবন্দে ৷২৫ আৰ্শিকাদ কৈল মূনি পরম আনন্দে॥ ্রাম বলে মুনির দেবা কৈলে রাজ্যলাভ। মুনি হুঞা কেন আমা দণে বৈরিভাব॥

ঘর জাহ মুনি সব পরম হরিদে। দৈত্য ঘোড়া ছাড়ি দেহ যদি মনে আইদে জন্মাবধি করিলাঙ মুনির পালন। কেনে বা বিরূপ কৈলে না জানি কারণ ॥ মুনির কিন্ধর লক্ষ্মণ শাস্ত্রেতে পণ্ডিত। হেন জনে বন্দি কর নহেত উচিত॥ চৌদ্দবৎসর লক্ষ্মণ রহিল উপবাসে। পবিত্রতা সতাবাদী কারে নাহি হিংদে॥ তোমাদের নারী পুত্র থাইল লবণ। তেকারণে বধে তারে বীর শত্রুঘন ॥১০ স্থগ্রীব অঙ্গদ বিভীষণ হন্নমান। নল নীল আর যত বানর প্রধান ॥ জে সব বানরের তেজে কৈলুঁ সেতুবন্ধ। ত্রিভূবনে হর্জয় রাবণ দশস্বন্ধ। তোমাদের যজ্ঞনাশে রাগ্ন সের গণ।১৫ মায়া মারীচ মারিলাম থর দূষণ।। মোর বংশে অশ্বমের্ঘ করি সর্কাকাল। যজ্ঞদানে তুই করি অই লোকপাল। কৃষ্ণদার বোড়া আমি কৈল উচ্ছর্গন। অশ্ব রক্ষে নিজোজিলা অনুজ লক্ষণ ॥২০ ঘোড়াসনে ভাই মোর তপোবনে বন্দি। অক্ষেমা করিয়া রাম আপনাকে নিন্দি॥ এত যদি শ্রীরাম মুনিকে কহে কথা। লজ্জা পাঞা মুনিগণ হেট করে মাথা।। অবোধ বালক এই নাহি বুঝে কাজ।২৫ চিস্তাতে বিকল হৈলা মুনির সমাজ ॥ সকল মুনি ঘরে জান ছাড়িয়া নিশ্বাস। উত্তরকাও গাইল পণ্ডিত ক্বতিবাস॥

(890)

(898)

নিদা তেজি হুই ভাই মুথে দিল পানি। হেঁন কালে গেল তথা সব বৃদ্ধ মুনি॥ চারি দিগে বসিলা সকল মুনিগণ। তাহাদের মধ্যে বৈদে ভাই হুই জন॥ যুক্তি হেতু বৈদে ছুই কুমারের পাসে।« ত্বজনারে বুঝান মুনি অশেষ বিশেষে॥ প্রীরামের রাজ্যে বসি রাম মোর রাজা। নানা মতে রাম করে সভাকার পূজা॥ স্থ্য সম তেজে রাম মহা ধহর্দ্ধর। জার তেজে বন্দি হৈল অলজ্যা সাগর ॥১০ বালিরাজা মালা রাম না করিল রণ। রাক্ষ চউদ্দ সহস্র থর দূষণ॥ মায়ার মারীচ মালা দেবতার বরে। ত্রিভূবন হুর্জয় মারিল লক্ষেশ্বরে॥ কুন্তকর্ণ মকরাক শ্রীরাম সংহারি।১৫ লক্ষণ মারিল ইন্দ্রজিত দেব-অরি॥ মৈল দশর্থ দিল রামে দুর্সন। রামের প্রসাদে জিল মরা কপিগণ॥ পালিতে বাপের সত্য রাজ্যভোগ ত্যজে। **क्रोक्वरमय वनवाम मूनि मंव शृद्ध ॥२०** দেশে আসি শ্রীরাম মুনির করে পূজা। পদতলে থাটে ক্লামের উনকুটা রাজা॥ বিষ্ণু অবতার রাম লোকে হিতকারী। তেজিল লোকের বোলে সীতা হেন নারী॥ সীতা হেন স্লীকে দিলেন বনবাস।২৫ হেন রাম লজ্ফিলে মুনির সর্কনাশ। ব্রিনয় বলেন মুনি হাত কুরি জোড়া। দর্বনৈত্য ছাড় রামের আর যক্ত বোড়া।

রামের তেজে বিভীষণ পাল্য মন্দোদরী। রাজপাট পাইল কনক লক্ষাপুরী। মুনির গৌরব রাখ তেজহ সংগ্রাম। বজ্ঞ ঘোড়া সৈত্য দিয়া তোষহ শ্রীরাম॥ আমাদের না করিহ বচন লঙ্ঘন।৫ নহে বা মেলানি দেহ ছাড়ি তপোবন। সতাবাদী রামচক্র মুনির হলত। গুণবান ধর্মনীল সংসারে বল্লভ । বসিয়া রামের রাজ্যে রাম সনে বাদ। ছাড়িলাঙ বিষ্ণুপদার বদতের সাধ॥১० আপন মহত্ত লোক রাথএ আপনি। স্থথে থাক দোঁহে মোরা মাগিব মেলানি। এত সব মুনিগণ কহিলেন কথা। স্থনি লব কুশ দোঁহে হেট কৈল মাথা। তপোবনে বিদ হইলুঁ তোমার কুর্পর।১৫ তোমাদের হেথা হইতে জাব অন্তর।। মায়ের সনে আগে গিয়া করি অনুমান। তোমাদের পুরী থাকি জাব অগুস্থান॥ এতবলি গেলা ছই সীতার কোঙর। তপোবন ছাড়িয়া মায়ের গেলা ঘর ॥২০ মুনির বচনে হুই ভাই কোপে জলে। কোপ মুখ হইয়া উঠিলা সভাতলে। এতেক রহস্য কথা সীতা নাহি শুনে। তুই ভাই প্রণমিল মার্ট্যের চরণে॥ কুত্তিবাস পণ্ডিত কবিত্বে বিচক্ষণ।২৫ লোক ভাঙ্গি রচিল উত্তর রামায়ণ॥

(89¢)

(89%)

# পাহিড়া রাগ।

মুনিকে প্রণাম করি হাতে গণ্ডি বাণ ধরি ঘরেরে চলিলা হই ভাই। নয়ান উৎপল্দল 'তাহে অঞ্চল চল मा धारेना जननीत ठारे॥ দীতা দেখি পুত্রমুখ অন্তরে বাড়িল ছুখ শোকে হিয়া না জায় ধরণে। নয়ানে গলয়ে লোহ দেখিআ পাইল মোহ মুখ মোছে অঞ্চল বসনে। বাছা,কেবা কৈল তুরক্ষর কেন গদ গদ স্বর কেন দেখি বিরুষ বদনে।৫ অযোধ্যার গৃহবাস সে হেন পতির পাস ছাড়িয়া বসিএ তপোবনে॥ স্থানিআ মাএর কথা দোঁহে করি হেট মাথা নিখাস ছাডিয়া কহে বাণী। আসি মুনিগণ জত পরাভব বলি কত আমাদিগে দিলেন মেলানি॥ কহিতে বাসিএ লাজ এ তিন ভুবন মাঝ কোথাহ রহিতে নাহি স্থান। স্থ্যবংশে জন্ম নিঞা পরের ক্পর হঞা কত না সহিব অপমান ॥১০ वित्रश मारबद कारल क्लांटर अन अन वरल ছলছল করে ছ্টী আঁথি। কহিলে কখন নয় মুনি বা দেখায় ভয় ৰিজ মধুকণ্ঠ তার দাথি॥

ডরাইল ছই ভাই মুনির কথা স্থনি। মুনির বচনে মাত্র মাগেন মেলানি॥ মুনি সব বলে তোরা ছাড় তপোবন। বাদ বিদয়াদ কিছু নাহি প্রয়োজন॥ তপোবনে আমরা পাইল এক ঘোড়া।৫ সেই ঘোড়া লইতে আইল এক বুড়া॥ সেই ঘোড়া নিবারে বুড়ার বড় সাধ। ঘোড়া পাইলে জায় বুড়া না করে বিবাদ। বুড়া বন্দি করিয়া রাখিল তপোবনে। তার লাগি মুনি সব বলে কুব্চনে ॥১০ মুনি সব জত বৈল মাত্র কহে কথা। হুই পুত্ৰ সম্বোধিয়া কিছু বলে দীতা॥ রাজার মহিনী ছিলুঁ ইবে বনবাস। নির্দ্ধন দেখিয়া মুনি করে উপহাস॥ রাজমন্দির ছাড়িয়া পাইলুঁ পত্রকুড়া। ১৫ ঘরে থাক বাপু না জাইহ মুনি পাড়া॥ পিতা মোর জনকর্মীষ প্রভু রাজ্যেশ্বর । আমা না জানিআ মুনি বলে কুউত্তর॥ স্থনিয়া ঘৈড়ার কথা দীতা হৈলা স্থথী। পাইলে কেমন ঘোড়া আন আমি.দেখি॥২০ মাএর বচনে গেলা ছুই সহোদর। ভোরে ধরি কৈলা ঘোড়া মাতার গোচর॥ পাদ্য অর্ঘ্য দিয়া তার চরণ পাথালে। একদৃষ্টে সীতাদেবী ঘোড়াকে নেহালে॥ কোথা পাইলে বাপু হেন অশ্ব রতন ৷২৫ অনুমানে বুঝি ঘোড়া রাজার বাহন। আমি জানিলাম দ্বোঁহে বিধি হৈল স্থয়ু রাজপদ পায় জারে মিলে হেন লক্ষ্মী॥

(PF8)

(896)

বাল্মীকি তোর গুরু জনক মোর পিতা।
বাপে কঞা রাজ্য দিসা ধরাইব ছাতা॥
সকল লফণ ঘোড়া পাল্যে দেববরে।
রাজপদ পাবে দ্বোঁহে কে লজ্মিতে পারে
বৈদেহীর মুখে স্থনি এতেক বচন।
ভোজন করিয়া দোহে করিলা শয়ন॥
মায়া নিজা জান তথা সীতা ঠাকুরাণী।
নিজাভান্ধি ছই ভাই মুখে দিলা পানী॥
কৃত্তিবাদ পণ্ডিতের কবিত্ব রসাল।
উত্তরকাণ্ড গাইল মধুর আপার॥১০

নিদ্রা হইতে ছই ভাই উঠিয়া বসিল। কটকের কলরব স্থানিতে পাইল। कून वरन नव मामा टैश्त रमथ नाउँ। কলরব করিআ আইদে কার ঠাট॥ ঝাট চল গৃই ভাই করিআ সাজনি।১৫ এতবলি ঘরে বনি করে কানাকানি॥ <sup>'</sup>জাইতে জুকতি কৈল ভাই ছুই জনে। নিদ্রাতে থাকিয়া সীতা অল্প অল্প স্থনে॥ উঠিমা বদিলা সীতা মুখে দিল জল। ছই পুত্রে জিজ্ঞানৈন কারণ সকল ॥২০ বুঝি কার সঙ্গে বাছা করিলে বিবাদ। অকস্মাৎ স্থানি কেন কটকের নাদ॥ মিছা না বলিহ পুত্র মোর দিব্য লাগে। বিবরিআ সব কথা কহ মোর আগে॥ अ**७. छ**नि घुँ छाँहे करत निर्देशन ।२६ অবধান স্থন সাগো দব বিবরণ॥

অবোধ্যার রাজা অশ্বমেধ যক্ত করে। সেই বোডা আসাছিল আমার নগরে॥ তার সঙ্গে এক বুড়া অশ্ব রক্ষা করে। মহাতেজবন্ত সেই বড় ধমুদ্ধরে॥ বলে ধরি আমরা লাইল তার ঘোডা।৫ যুদ্ধ করি সৈতা মারি বান্ধিলাও বুড়া। তার পর আইল অনেক বীর গণ। রাক্ষস বানর জত কে করে গণন॥ তার মধ্যে এক বীর হতুমান নাম। সেই জে বানর বড় করিল সংগ্রাম ॥১০ দব মুনিগণে তারে বলে হতুমান। হুর্জ্জর প্রতাপ বীর বড় বলবান॥ মায়াময় অস্ত্রে তারে জবে কৈল বন্দি। লইঅ। তোমার নাম লোটাইয়া কান্দি॥ ইহা স্থনি কৈল তার বন্ধন উদাস।১৫ প্রাণ দান পাল্য বীর বাক্য অবকাশ। ইহা স্থনি সীতা দেবী কান্দেন করুণে। কি কাজ করিলে পুত্র বান্ধি হন্নুমানে॥ সেই জে বানর মোর দিল প্রাণ দান। তোমরা ছুই ভাই নহ তাহার সমান॥২० জবে বন্দি ছিত্র আমি রাক্ষ্পের ঘরে। আমার উদ্দেশ কৈল তরিষা সাগরে॥ রামের অঙ্গুরী দিয়া প্রবোধিল মোরে। সবংশে করিল নষ্ট রাজা লক্ষেশ্বরে॥ সেই হন্তমান মোর বড় কৈল হিত।২৫ হেন জনে বন্দি কর নহেত উচিত।। তাহার বন্ধন স্থনি প্রাণ মোর ফাটে। তুরিত আনহ তাঁরে আমার নিকটে॥

(698)

(840)

नप्रत ভরিয়া আমি দেখি হতুমান। ঘুচুক মনের হঃথ জুড়াকু পরাণ॥ विषम मक्ष्टि भात ताथिल जीवन। তার সঙ্গে বাপু করহ মিলন॥ ञ्चनिया गारवत कथा ভाই हुই জन IC কহিলা পশ্চাতে তার পাবে দর্শন॥ আর যত আইল রাক্ষস কপিগণে। সভাকারে বান্ধিআ থুঞাছি তপোবনে॥ তার পাছে আইল অনেক রাজগণ। আমাদের দৈত্য সভে কৈল মহারণ ॥১০ বান্ধিয়া রাখ্যাছি বনে রাজা শতকোটী। কত কত রাজা মৈল করি ছটফটি॥ তার পাছু আলা আর বুড়া হুই ভাই। ধন্তক বাণ কেহো ধরে কেহো গুণতাই॥ ছই বুড়া বিস্তর করিল অহন্ধার।১৫ শতমন লোহা এক বাটুল জাহরে॥ তাহাদিগে বানিয়া রাখিল মায়াজালে। অচেতন ছই বুড়া লোটায় ভূতলে॥ ছভাইর কথা স্থনি সীতাদেবী গুণে। ভরত লক্ষ্মণ শত্রুত্ব হেন মনে ॥২০ তপোৰনে বসিআ পাইল জেই ঘোড়া। সেই গোড়া লইতে আইল এক বুড়া॥ খ্রামল স্থলর বুড়া মনোহর বেশ। সেই বুড়া মারিআ লইব তার দেশ। **দীতা বলে হেন বাক্য না বলিহ আর**।২৫ দে বুড়ার পদে গিয়া কর নমস্বার॥ জগতের নাথ রাম তোমাদের পিতা। ভরত লক্ষ্য শক্রন্থ সে খুড়তা।।

এতেক বলিয়া সীতা কান্দে উচ্চৈঃস্বরে। कुनन (मिश्रा वर्ट प्रहामरत ॥ রাম শ্বঙরিয়া তুমি কান্দ রাত্রি দিনে। স্থনি মনে করি যুদ্ধ করি রাম সনে॥ মনে চিস্তি দোঁহে জবে রামের দেখা পাই।৫ কাটিয়া তাহার মাথা আনি তোমার ঠাই॥ সীতা বলে যুদ্ধে যদি জাবে প্রভুস্থান। पृर्वापणधाम अप्त ना मातिह वाण॥ স্থনিমা দীতার কথা গুই ভাই হাদে। তোমাকে বৰ্জিয়া রাম দিল বনবাসে ॥১০ তোমার বচনে রাম না মারিব প্রাণে। বলদর্প চুর করি পাঠাইব বনে॥ এত স্থনি ধরে সীতা তনয়ের হাথে। ছইপুত্রে বুঝান করুণা করি চিতে॥ ক্তত্তিবাস পণ্ডিতের কবিত্ব রসাল।১৫ স্থনিলে উত্তরকাও পাপ না রহে আর॥

## পহিড়া রাগ।

বাছ। আর ন। জাইহ তপোবনে।
জানিসা স্থানিআ মুনিআ মুনিআণ দিলেন মেলানি
ঘরে বসি থাক হুই জনে॥
পুর্বে বিষ্ণু আরাধিআ পৃথিবীতে জনমিআ
বাড়িলাঙ জনকের ঘরে।
পিতা বড় নিদারণ করিল বিষম পুণ্
হরণত্ব ভাঙ্গিবার তরে॥২০

(877)

(8৮২)

कानि, विश्वािश्व मूनि वानित्वन त्रपूर्मा অমুজ লক্ষ্ণ করি সঙ্গে। দুৰ্কাদল ভাষতমু ঈষতে হরের ধন্ম ভাঙ্গিলেন ঈষৎ তরঙ্গে॥ প্রভূ পূর্ণ নারায়ণ চারি অংশে চারি জন ভুবনে হল্ল ভ জার নাম। অগোচর চারিবেদ সম নহে অশ্বমেধ নামে হয় ধর্ম মোক কাম॥ হেন প্রভু মোর পতি মাতা মোর বস্থমতী विधि भारत कतिन नितान। व নাহি মোর অপরাধ থল লোকে অপবাদ প্রভু মোরে দিল বনবাস ॥ नाम नामी यूर्थ यूर्थ গমন বিচিত্র রথে প্রভু মোর রাজরাজেশ্বর। নাহি দিহ পরিচয় তোমরা তাঁর তনয় माँপিবে বাল্মীকি মুনিবর॥ জবে চান পরিচয় ্ব কহিয়া রাজতনয় সতমায়ে পাঠাইল বন। হেন বেলায় নৈরাশ ছত্ৰদণ্ড অধিবাস পালিলা বাল্মীকি তপোধন ॥১০ ञ्चनिका भारत्रत ठीरे भारत भारत भारत भूषठारे লব কুশ ছাড়য়ে নিশাস। জানকীর পতিগতি অন্ত নাহি লএ মতি নাচাড়ি রচিল ক্বন্তিবাস।

্রাম বলে অষ্টপাত্র হও আগুয়ান। মোর কাছে থাকুন স্থপেন জাম্বান॥

ঘরে গিগ্না মুনি সব কার্য্যে হইল ভোলা। পাইআ আপন কার্য্যে মোর কার্জে হেলা ॥ স্থনিঞা দকল মন্ত্রী রামের আদেশ। সৈত্যসনে বিষ্ণুপদা করিল প্রবেশ ॥ চারি দিকে কটক মুনির বন বেড়ে Ic ত্রাস পাইঞা মুনিসব চিকরাই ছাড়ে॥ সান সন্ধা করি হুই জানকীর বালা। বীর ধড়া পরে গাত্রে মাথে রাঙা ধলা॥ ধাঞা গিয়া মুনি সব করিল গোচর। চারি দিগে সেনা আসি বেড়িল নগর ॥১০ হাতে গণ্ডি বালক বিধায় ছই বীর। তপোবন ছাড়ি হৈলা গড়ের বাহির॥ দেখিল অনেক ঠাট রথ ঘোড়া হাথি। রাজবান্ত বাজিছে কাহোল দণ্ড ছাতি॥ পুষ্প রথে চড়ি রাম স্থমন্ত সারথ।১৫ ধরিল মাথাতে তার চন্দ্রমণ্ডল ছাতি॥ গায়ে দালা শিরে টোপর হাথে গণ্ডিবান। স্থদেন চড়িল রথে আর জামুবান॥ অনেক হারুআ রাজা অনেক বানর। চারিদিগে বেড়ে বিষ্ণুপদা সে নগর॥১० মুনিপত্নী শিশু আর বৃদ্ধ মুনিবর। কটক দেখিঞা সভে হইলা ফাঁফর॥ কেহো বলে গোড়ার কাটিআ দেহ দড়া। ফিরিআ জাউক রাফ ঘুচুক ঝগড়া॥ তপোবন ছাড়িঞা পালায় মুনিবর।২৫ কেহো ধাঞা কহে লব কুশের গোচর॥ ত্বই ভাই বনে গেলা হাথে গণ্ডিবালে। (मिथ्या द्वारमञ्चेत्रच शिक्त चन्नात्न ॥

(৪৮৩)

(848)

আকর্ণ পুরিআ দিল ধমুকে টকার। রাজগণ ভঙ্গ দিল সম্ভম অপার॥ त्रारम रमिथ नव कून मत्रमवनन। রাম বলে স্থন ছই মুনির নন্দন॥ মুনির কুমার দোঁতে বৈস মোর দেশে। তোমা সভা মারিতে জুগতি নাই আদে॥ মুনিপুত্র হইআ না জান নিজ ধর্ম। বালক হইআ কর নিদারণ কর্ম। মুনি সব তপ করে বসি তপোবনে। তপ নষ্ট হয় তার ক্রোধ কৈলে মনে ॥১০ ভাল কৈলে মন্দ কৈলে সহিল সকল। পাঠাইআ দেহ ঘোডা আর দৈহুবল ॥ আমা সনে বাদ কর ভাল নহে কার্যা। আপন গৌরব রাথ ছাড় মোর রাজ্য। মুনির বালক বলি অহঙ্কার সহি।১৫ আর কেহ হেন কৈলে ভার প্রাণ লহি মুনি সব তপ করে ব্রত উপবাদে। তপ নষ্ট হয়ে তার প্রাণী যদি হিংসে॥ রাজনীতি নাহি জান ধর্মের বিচার। আমা সনে বাদ কর নহে ব্যবহার ॥২০ তোমারে মারিতে মোর নাহি অধিকার। ব্রাহ্মণ বলিআ এত সহি অহস্কার॥ রাজন্রী ধরহ দোঁহে বিক্রমে হুর্জার। কোন কুলে জন্ম তোমার দেহ পরিচয়॥ কোন মুনির পুত্র দোঁহে কার বট নাতি।২৫ বালক বয়সে কেন বুল বনস্পতি॥ শ্রীযুক্ত হইআ কেন বৈদ তপোবনে। কার বোলে বাদ দোঁহে কর মোর সনে॥

রামের বচন স্থনি ছই ভাই ছাসে। উত্তর কাও গাইল পণ্ডিত ক্বত্তিবাসে।

লব কুশ বলে তুমি স্থন মহাশয়। কিসের লাগিআ মোর চাহ পরিচয়। মোর পরিচয়ে হে তোমার কিবা কাজ।৫ কহিতে আপন কথা বড় বাসি লাজ॥ চতুর্দশ ভূবনের মোর বাপ রাজা। পুত্র হেন পালন করেন সব প্রজা॥ আপনার তেজেতে পালন রাজ্যথও। মোরে রাজা করিতে আনিল ছত্র দণ্ড॥১০ বিধি বিভৃষিত হৈল রাজ্য নাহি পাই। দণ্ড ধরিবার কালে পাষ্ড সতাই ॥ অন্ত্র শান্ত্র ছই ভাই সিথিল বিস্তর। সেবাতে করিল তুষ্ট সব মুনিবর॥ নান। মতে হভাই মুনির কৈল পূজা।১৫ সর্ব্য মূনি কৈল মোরে তপোবনে রাজা॥ রাজধর্ম কর্ম করি থাকি তপোবনে॥ त्राज्ञ पिन स्मादि भव भूनि ज्ञान ॥ রাজবাহন অখ পাল্য মুনির প্রসাদে। হেন ঘোড়া নিবা তরে তোয়ার বড় সাধে॥ তপোবনে বসিআ আমরা পাল্য ঘোডা। সেই ঘোড়া নিবারে আস্থাছিল এক বুড়া॥ शाय धन्नर्साग तूजा वरण अत्रमान। তারে বন্দি করিআ লইল গণ্ডিবাণ॥ আর জত বীর আল্য জুঝিবার মনে।২৫ সভা বন্দি করিআ থুইল তপোবনে॥

(8bc)

(879)

এক গোটা কপি তাহে বড় বলবান। মুনিগণ বলে তার নাম হনুমান ॥ করিল অনেক রণ নিঞা কপিগণে। তাহা সভা বান্ধিয়া রাখিল তপোবনে॥ বড বড বানর রাক্ষ্স বিভীষণ।৫ মোর ঠাঞি বন্দি ভারা অবশ্র মরণ॥ অন্ত শিক্ষা মন্ত্ৰ আমি পাল্য শিশুকালে। ত্রিভুবন জিনিবারে পারি বাছবলে॥ স্বৰ্গ হইতে ঘোড়া পাঠাইল দেবগণ। হেন যোড়া নিতে মোর পায়ে কোনজন লইতে আমার ঘোডা বড কর সাধ। তোমাকে দইআ আজি পড়িব প্রমাদ॥ মোর ঠাঞি হৈতে নিতে না পারিবে ঘোডা লইতে পরের ঘোড়া এত সাধ বুড়া॥ মুনিজনে দেবা করি অথ পাল্য বরে ৷১৫ রাজপদ পাব আমি কে লঙ্ঘিতে পারে॥ হেন বীর নাহি জে লজিববে মোর ছায়া। তোমা বুড়া দেখিআ আমার লাগে দয়া। নেউটীআ জাহ তুমি বলিএ পিরিতি। মোর বাল বাজিলে না পাবে অব্যাহতি ॥২০ বাজিলে আমার বাণ জীব কোন জন। বদ্ধ হৈআ কেন চাহ করিবারে রণ। সূর্যাবংশে জন্ম তোমার কহে মুনিবর। প্রণাম করিআ বলি ফিরিআ জাহ ঘর ॥ वाकित्व यामात्र त्रा मः भन्न कीवन ।२० বুদ্ধলোক হও তুমি বাসি গুরুজন।। দ্বোহার বচন স্থানি রামচ্জ হাসে। উত্তরকাণ্ড রচিন পণ্ডিত ক্বতিবাসে ॥

### পঠমঞ্জরী রাগ।

স্থন বৃদ্ধ মহাশয়, বলিতে বাদিএ ভয়, এক বাক্য করি নিবেদন। পূর্বে, পিতামহ অজরাজে. স্ত্রীর শোকেপ্রাণ ত্যজে. জানে হুর নর মুনিগণ ॥ তার পুত্র দশরথে, রাজ্য করে অযোধ্যাতে জার ঘরে জন্মে নারায়ণ। পরজা গণের বোলে, নিজমন কুতৃহলে, পুত্রে রাজ্য করে সমর্পণ॥ স্ত্রীর বোলে তোর বাপ. তোমা পুত্র দিল তাপ. অন্ত নহ দেব নারায়ণ।৫ বিষম নারীর কথা, থণ্ডাইল দণ্ড ছাতা, তপস্বীর বেশে আগমন॥ পুত্রে দিল ছত্র দণ্ড, উলসিত রাজ্য খণ্ড, করিল তোমার অধিবাস। পাপাশয় স্ত্রীর বোলে, নুপতির মন টলে, প্রভাতে পাঠাইল বনবাস॥ তোমার বাপের যশ, আছিল নারীর বশু, বিষ্ণুরূপে পুত্রে দিল বন। ट्रन भारत मरन रुष्ठ, তात तीर्र्या जना नष्ठ, সতী স্ত্রীকে কব্লিলে বর্জন॥১০ ত্বভাইর স্থনি কথা, রাম কৈল হেঠমাতা. ঈষত হাসিআ কিছু কহি। শিশু তোরা হইভাই, ভালমন্দ জ্ঞান নাই, বালক বলিজা তেঞি সহি॥

(869)

(866)

তোমাদের রূপ দেখি জুড়াইল মোর আখি
ধন্ত জে উদরে দিল ঠাঞি।
রূপ দেখি মনোহর, তেঞি না মরিল শর,
লেউটীআ জাহ হুই ভাই॥
স্থান লব কুশ হাসে, রান্ধিতাঙ নাগ পাশে
বৃদ্ধ বলি করি মাআ মোএ।
কবি ক্তিবাদ ভণে, জীরামের চরণে,
রূপে বোলা বোলি বাপে পোএ॥

#### বরাড়ী রাগ।

এই তপোবনে মোরা ছই ভাই রাজা।৫ জত তপোবনবাসী সব মোর প্রজা। না কর বডাই রাম ফিরি ঘরে জাও। মুনির সমাজে পাছে পরাভব পাও। লোক মুখে স্থন রাম দেখ পরতেখ। আপনি বাল্মীকি মুনি কৈল অভিষেক ॥১٠ আপনার দেশে বসি পালা অর্থনিধি। হেন ঘোডা নিতে চাহ নাগিআছে বিধি॥ দিবা রথে চাপ রাম ধর বীর বাণা। মাথাতে টোপর পর গাএ পর সাণা॥ শিশু ধড়া পরি মোরা রাঙ্গা ধূলি গায় ৷১৫ সন্ধান পুরহ বাণ তার নাহি দায়॥ লক্ষা জিনি রাম তোমার বড় অহকার। মরা সেনা আপনে জিআলো বারে বার॥ আজিকার রণে জদি হার নারায়ণ। কেবা আনিঞা দিব অখ্য গন্ধমাদন ॥২০

যে সব বানর নিঞা বান্ধিলে সাগর। তা সভা ছাড়িআ কেন আল্যে একেশ্বর॥ অগ্নি সাক্ষী করিআ স্বগ্রীবে কৈলে মিত। হেনকালে সঙ্গে নাহি এ কোন বিহিত॥ রাবণে মারিআ লঙ্কা দিলে বিভীষণে।৫ হেনকালে সঙ্গে নাহি কিসের কারণে॥ দোঁহার বচন স্থান দেব রঘুনাথে। ত্বজনারে কন কিছু হাসিতে হাসিতে॥ অন্ত হেন রাজা নাহি দয়ার কাতর। চিত্তে দয়া লাগে তেঞি না মারিএ শর ॥১০ সূর্য্যবংশে জন্ত রাজা অযোধ্যা উপরে। নির্দায় হইআ কেবা জিনে দেবাস্থরে॥ সেই বংশে জন্ম মোর হই দয়াবান। দয়াতে করিল মুক্ত অহল্যা পাষাণ॥ দয়া করি বানরে দিলাঙ ঠাকুরাল।১৫ দয়া করি মৈত্র কৈল গুহক চণ্ডাল। मग्रा देकन मागत आंभारत निन रमथा। দয়া হেতু সম্পাতি পাইল দান পাথা # मग्रा कित नका मिन ताका विजीयर।। দয়া করি বেড়াই ভল্লুক কপি সনে ॥২০ - ত্রিভূবনে খ্যাত আমি হই দয়াবান। লেউটিআ জাহ নহে পাবে-অপমান॥ ত্ৰইভাই বলে তুমি জত দয়াবান। স্থনিল মুনির স্থানে সে সব বিধান ॥ স্থনিল তোমার দয়া মুনিদের স্থানে।২৫ वन পশু वानिक मातिल नुका वाल ॥ স্থানিল লক্ষার যুদ্ধে বিক্রম বাথানে। বীর পোণা জানিতাঙ নহিলে হয়মান।

(৪৮৯)

তম্ব কতবার রণে পাইলে যাতনা। প্রাণদান দিল সেই পবননন্দনা॥ এত স্থনি চান স্থদেনের পানে। ক্বতিবাদ রচিল উত্তর রামায়ণে॥

#### পঠমঞ্জরী রাগ।

জানিল জানিল রাম, তুমি জত দয়াবান, আর কত করিছ বড়াই।৫ বোলাহ রাজাধিরাজ, কহিলে পাইবে লাজ रि गर स्निन मूनि ठीहै। যে জন দ্বাল হয়, সমভাবে সভা লয়. আত্মপর না করি বিচার। भिज किर्म कांत्र मन्न, जांत्र जारे मरना वार्ष তোমা বই দআল নাহি আর॥ আর যে তোমার দরী স্থনিআ বিদরে হিয়া আশ্রুষ্য স্থানিল মুনির তুথে। জার তরে কৈলে শ্রম, কত দিশ পরাক্রম, প্রবেশ করাল্যে অগ্নিকুণ্ডে ॥>• অগ্নিঙ্কা জেবা হয়, তার দেহে পাপলয়, আপদি বিচার মনে মন। তোমার দআল পণ, স্থানি পরের বচন, হেন স্ত্রীকে করিলে বর্জন। যতি ব্রতী ব্রন্মচারী, উগ্রতপা নিরাহারী, ন্ত্রী পুত্রে সভার আছে মন। ু তোমার নাহিক দয়া, বড়ই নিষ্ঠুর হিম্মা, ় নাম ধর দকাল পাবন ॥

(068)

শিশু মোরা ছই ভাই, দয়া করি কাজ নাই
বাণ মার করিআ সন্ধান।

তুমি জে বীরের পুত্র সে কথা জানিল মাত্র
রণ কৈলে পাবে অপমান॥
গণ্ডি ফেলি পরাজয়ৢ মাগ রন্ধ মহাশয়
এখনি আনিআ দিব ঘোড়া।
আর জত সৈত্তগণ আনি করি সমর্পণ
ছাড়ি দিল আর তিন বুড়া॥

দোহার বচন স্থান রামচন্দ্র মনে গুণি
কুপিআ ধমুক নিল হাথে।

চাপিআ আপন পুশরেথে॥

#### বরাড়ী রাগ।

লোক মুখে স্থনি তোমার বাপ দশরথ।
অধার্মিক রাজা সে না জানে ধর্মপথ॥
লেউটিআ জাহ রাম না করিহ রণ।
বালি বানর নাহি মোরা লঙ্কার রাবণ॥>
তোমার বাপের কথা স্থনি উঠে হাস।
জীর বোলে তোমা পুত্রে দিল বনবাস॥
পালিতে বাপের সত্য তুমি গেলা বন।
সেই শোকে হৈল দশরথের মরণ॥
কত ভাল হবে সেই বীর্য্যে পরকাশ।>
লেকার বচনে লক্ষ্মী দিলা বনবাস॥
জত দিন দশর্থ রাজা রাজপাটে।
কোন খানে রণ্ড জয় কৈল পর রাটে॥

(683)

(824)

কুশ বলে হ্বন তুমি রাম গুণধাম। অবধানে আপন বাপের কহ নাম॥ এত স্থনি বলেন ঠাকুর রঘুনাথে। আমার বাপের নাম রাজা দশরথে। कुन वर्त त्राम वड़ मत्न निर्म जान। व কোন দশরথে বল আপনার বাপ॥ এক দশরথের স্থানিল আদি মূল। ভৃগুর ধমুক বঞা মাথার গেল চুল।। গণ্ডি ধরি বল কবে কৈল তোর বাপ। না হও বীরের বেটা কর বীর দাপ ॥>• বীর পুত্র বীর মোরা জগতে বিদিত। আমা সনে রণ নহে তোমার উচিত। শনিকে জিনিতে গেল দশরথ রাজে। তাহাতে বাচিআ আলা জটাউর কাজে॥ ছ ভাইর কথা স্থনি বলেন শ্রীরাম।১৫ কোন বংশে জন্ম কহ জনকের নাম ॥ লব কুশ বলে কথা স্থন প্রীরাম। পঞ্চ মুখ শিব জপে মোর বাপের নাম। তোমার বাপের নাম লয় কোন জনে। মোর বাপের নামে ব্রহ্ম হত্যা আদি পরিত্রাণে রাম বলে কর আত্ম বাপের বাথান। রূপে গুণে বাপ তোর কত বলবান্॥ इरे डारे वरन ताम खन मशानत। **সংক্ষেপে বাপের কিছু দিব পরিচয় ॥** ত্রিভূবন জিনি মোর বাপ অমুপম।২৫ মুনি সব সদাই জপিছে তাঁর নাম। আমার বাপের নামে বাল্মীকির শিকা। আমার বাপের মন্ত্রে মহেশুইহেল শিকা॥

কত শ্রম কর এক-অর্থমেধ তরে। . कां एक कन भारत एक नाम करता। দেআন করিআ বাপা বৈসে সভা মাঝে। উদয় না করে চক্র তাঁরে দেখি লাজে। ব্রহ্মহত্যা কৈলে দশর্থ এক কাণ্ডে Ic মোর বাপের নামে কত ব্রশ্নহত্যা থণ্ডে॥ বিক্রমে আগল তুমি জানে সভাতল। আমা হৈতে জানিবে আমার বাপের বল ॥ একই ধহুক ধরি একই ধরি বাণ। একই বয়েস বেশ একই বন্ধন ॥১০ তোমরা চারি ভাই দশরথের নন্দন। তবে কেন বর্ণ ভিন্ন ভাই চারি জন॥ গৌর বর্ণ ছই ভাই অতি অমুপাম। আর হুই ভাই কেন হর্কাদল শ্রাম॥ তোমরা চারি ভাই হুই বাপের জাত।১৫ তে কারণে বর্ণ ভিন্ন স্থন রঘুনাথ। ডাকি কুশ বলে রাম ফিরি ঘরে জাও। পরিচয় দিতে পাছে বড় লাজ পাও।। রাম বলেন জামুবান সহিতে না পারি। ধরুর্বাণ আন ঝাট ছুই শিশু মারি ॥২,• এতেক স্থান স্থাসন জামুবান হাসে। উত্তর কাণ্ড রচিল পণ্ডিত ক্রন্ডিবাসে॥

পঠমঞ্জরী রাগ।

ছই ভাই রণ স্থলে, হাসিআ হাসিআ বলে

দেখি বড় হৈলাঙ চিন্তিত।

অগ্নি করি প্রদক্ষিণে বন্ধু কৈলে জার সন্মে

সঙ্গে নাহি দেখি হেন মিত॥

(e48)

(868)

বধি রাজা দশানন রাজা কৈলে বিভীষণ সভে বলে ধর্ম অবতার। এমন সঙ্কট রণে না দেখি তোমার সনে ভাল দেখিএ ব্যবহার ॥ কটকে রাজপ্রধান সেনাপতি হরুমান মহাবল অতুল বিক্রম। জা হৈতে শ্বগ্রীব মীত করিল এতেক হিত ভূবনে বিদিত জার শ্রম॥ তপ ধর্মে করি ভর রণে আল্যে একেশ্বর कि कतिव निश्व घूरे जना। १ কোথা গেল সৈত্যগণ আর ভাই তিন জন কেবা দেই এতেক যন্ত্ৰণা॥ চাপিত্রা পুষ্পক রথে গণ্ডিবাণ ধরি হাথে সংহতি নাহিক একজন। প্রাণ নিঞা স্থসংশয় • স্থন বৃদ্ধ মহাশয় কে আনিব গন্ধ মাদন ॥ রাজ্য হত হই ভাই তাহাঁতে মা বাপ নাই মরণে তিলেক নাহি ডর। বড় ছথ উঠে মনে স্থ্যবংশ রাজী বিনে কে পালিব অযোধ্যানগর ॥১٠ রাম বলে জামুবান ধমুকে জুড়িএ বাণ আর কথা সহনে না জায়। শिশু হঞা कथा कग्न महित्न महन नग्न বিষ যেন বাণ বাজে গায়॥ মন্ত্রী বলে নারায়ণ কোপ কর সম্বরণ जिल्लाक इहेर मर्सनीय। বান্থীকি জে মহাশয় ভাঙ্গিবেন স্থসংশয় নাচাড়ি রচিল কুত্তিবাস।

রামচন্দ্র রণ স্থলে তুই পুত্র নেহালে ডাক দিআ বলেন তুরিত। মুনির শিষ্য ছইজনে বৈস মোর তপোবনে কেন হেন কর বিপরীত॥ আমি হুর্যাবংশের রাজা নিতা করি যজ্ঞ পূজা ঘোড়া দিল দেব পুরন্দর। সকল সইল গণ সনে হঞা আনন্দিত মনে রক্ক লক্ষণ ধহর্দর॥ ঘোড়া দরজুতে পার দৈন্ত ধায় পিছু তার विकृशमा नगत श्रावरम। e ধূলি থেলা ছই জনে যজ্ঞ ঘোড়া ধর কেনে ধর্ম পথ কেনে কর দোষে॥ আমি কেত্রি ধহর্দর ভান্সণে না মারি শর তেঞ্জি সহি এত অবেভার। দ্বিজ আসি জদি হানে তমু সহে ক্ষেত্রিগণে ধর্ম সাক্ষী করি সাতবার। **'মমু হৈতে জত রাজা সে করে মুনির পূজা** সর্ব্ব মুনি তুষ্ট স্থ্যবংশে ॥ দে কুলে তোমার জন্ম কোন নষ্ট কর ধর্ম ক্ষেত্রি হিংসা কর কোন দোষে ॥১० দোঁহে মুনির নন্দন স্থন আমার বচন তোমা সনে রণ নাহি সাজে। জদিবা করিএ রণ দোষ দিব মুনিগণ সব সহি বাল্মীকির লাজে॥

(368)

(৪৯৬)

कून राम नव वीत्र तूफ़ा करह धीरत्र धीत्र মরমে মরমে ভাল হানে। জত বৃদ্ধ বশ ধর প্রণ টানি শর মার পরাণে কাতর নহি রণে॥ স্থানিকা কুশের কথা' লব বীর হাদে তথা বুদ্ধ আশ্য অশ্ব প্রতি আশে। दफ़ अञ्च भाषा भारह कहिरन कथन नरह विन विन इव मिहे भारत ॥ আর তিন ঘোড়া চেরো তারে দেখি তোর পারা মিছা কাজে কর বীর দাপে।৫ मूनित निया घरे जारे वन मार्थ युक्त ठीरे ঘোড়া নিতে পারে কার বাপে॥ রামচন্দ্র কোপ চড়ে ধহুকে টকারে ছাড়ে ডানি হাথে বাণ যম দও। লব কুশ পরচত্ত উথলে কোদত দত্ত বাণে বাণে সব থও থও॥ বাণ মুখে কাটে বাণ পিতা পুত্রে সোমান কেহে। কারে জিনিতে না পারে। বন্দিত্বা সে কৃত্তিবাসে রচিল প্রসাদ দাসে না জানি বাল্মীকি মহাশয়ে ॥১০

l

পিতা পুতে মহারণ সংশয় সে মুনিগণ
দেখিআ লাগিল চমৎকার।
সমান বএস বেশ দোঁহে রণে পরবেশ
সম্বনে ডাকিছে মার মার॥

রামচন্দ্র কোপে চড়ে মারামই অস্ত্র জোড়ে দিব্য মৃত্তি হৈলা ততক্ষণ। এড়িলেন বাণ ছথে ছভাইর সমুখে স্বনেতে কর্ঞ চুম্বন॥ कित्रिया आहेल वान औत्रारमत मिश्राम প্রবেশ করিল গিআ তুণে। দেখি হেন বেবহার রামে লাগে চমংকার পুছেন সুদেন জম্বানে॥ नव वरन कून ভाই वान रान वूड़ा ठाहे अदिन ना किन कात अदन IC জ্থন গমন কৈল মাতা দোঁহে নিষেধিল রণ না করিহ তার সঙ্গে। কুশ বলে নাহি দায় বাণ মার বুড়া গায় বুড়া ধর্ম করিল লজ্মনে। তৃণ হৈতে নিঞা বাণ মন্ত্ৰ কৈল অধিষ্ঠান সাক্ষী কৈল সব দেবগণে॥ ধহুকে জুড়িআ বাণ দোহে কৈল সন্ধান স্চিমুখ বাণ অমুপাম। বাণ ছাতে পরিবন্ধে মারিবারে রামচন্দ্রে রামে বাণ করিল প্রণাম ॥১০ প্রণমি রামের পায় পুনরায় ফিরি জায় রহে গিজা হুভাইর বামে। রামের চরণ সেবি ভণে ক্বত্তিবাস কবি विश्वय পारेन त्रयूनारथ ॥

(829)

(824)

नव वतन कून छोटे प्रथ विमामारन। ভল্লুক কহিছে কথা শ্রীরামের কাণে॥ আগে বিন্ধ ছই গোটা ভল্লুক বানর। একেশ্বর থাক রাম রথের উপর॥ এতবলি করে দোঁহে বাণ বরিসন। c ধমুকে টকার জেন মেঘের গর্জন॥ বাণ জুড়ি মারে স্থসেন উপর। রথের উপরে পড়ে হইয়া জর্জর ॥ দশবাণে ফুটি পড়ে মন্ত্রী জামুবান। রথের উপরে রহে হরিআ গেআন ॥১০ অষ্ট বাণে কাটি পড়ে স্থমন্ত সার্থ। ভাগ্যে পুণ্যে প্রাণ রহে পাল্য অব্যাহতি॥ সাত বাণে ফুটি রাম রবুবংশের নাথ। আপনাকে নিন্দিআ উরাথে মারে হাত। খুকশ অৰ্দ্ধচন্দ্ৰবাণ বুণি কৰ্ণিকার।১৫ ছই ভাই বাণ এড়ে চোক চোক ধার॥ ছই ভাই বাণ ফেকে ছাতে শীঘ্ৰগতি। গগন মণ্ডলে বুলে আগুন মুরতি॥ হুই ভাই বাণ এড়ে রামের উপর। রথেতে পড়িলা রাম হইরা জর্জর ॥২০ পড়িলেন রামচক্র হঞা অচেতন। कून वर्णन लवु ना कतिश तरा ॥ জ্থন আইলু মোরা জুঝিবার মনে। তথন বুঝাল্য মাতা বিবিধ বিধানে॥ বাণে বাণে বুড়া যদি তেজএ জীবন।২৫ কি বলিয়া মায়েরে করিব সন্তাষণ॥ এতেক চিন্তিয়া মনে ভাই হুইজনে। রণ ছাড়ি দোঁহে গিআ বসে তপোবনে॥

এথা রামচক্র রথে পাইল চেতন। জামুবান স্থসেন সার্থি তিন জন ॥ রাম বলে জামুবান স্থনহ উত্তর। রণ ছাড়ি কোথা গেল হুই সহোদর॥ এত বার্তা পুছে রাম দেব ভগবান। । জোড় হাথে বলে মন্ত্রী রাম বিদ্যমান ॥ রথেতে পড়িলে জবে হঞা অচেতন। রণ ছাড়ি গেল তারা ভাই তুইজন॥ এতেক স্থনিঞা রাম বলে জাম্বানে। দোঁহা সম বীর নাহি এ তিন ভূবনে ॥১० জে সব বানরে নিঞা বান্ধিল সাগর। বড় বড় মারিল প্রধান নিশাচর ॥ হুর্জ্য রাবণ রাজা ত্রিভূবনে জিনে। হেন যুদ্ধপতি রাজা পড়ে মোর বাণে॥ ত্রিভুবনে বীর নাহি বালির সমান।১৫ ইন্দ্র সনে জুঝে জদি নাহি ধরে টান॥ অরুণ কিরণ জবে করে দিবাকর। চারি সাগরে সন্ধা করে বালি বানর॥ সন্ধা করে বালি জে রাবণ বাথ তলি। মোর এক বাণে পড়ে হেন রাজা বালি ॥২• অর্জুন সহস্র বাহ জিনিল রাবণে। হেন রাজা প্রাণ দিল ভৃগুরামের বাণে॥ ভৃগুরাম সম ক্ষেত্রী নাহি দেখি আর। নিক্ষেত্রী করিল ক্ষিত্রি তিন সাতবার॥ মহাবলবান্ ভৃগু বিক্রম হর্জায় ৷২৫ হেন ভৃগু মোর ঠাই পাইল পরাজয়। মোর বাণে তিতুবনে কেহ নহে স্থির। মোরে পরাজয় কুরে শিশু ছই বীর 🖟

(৪৯৯)

(¢ • •)

यळणाटन यख्य करत मव मूनिवत । ঘোড়া সৈত্য বন্দি তপোবনের ভিতর ॥ আচম্বিতে তপোবনে হুইটি ছাওমাল। কোথা হৈতে আদি পাড়ে এতেক জঞ্চাল। আর এক চিস্তা বড় মনে লাগে ভর।৫ পাছে গিআ লয়ে মোর অযোধ্যানগর॥ व्याषुतान मञ्जी ञ्चनि करत्र निरंतनन । দৈবের নির্বন্ধ প্রভু না জায়ে থওন॥ রামের চরণে বলে করিআ সম্পুটে। অবশু হইবে রাজা অবোধ্যার পাটে ॥১০ স্থনিঞা মন্ত্রীর কথা রাম ভগবান। দৈবের নির্বন্ধ কে করিতে পারে আন। ছই শিশু দেখিআ চিন্তিত আমি মনে। দোঁহাকার রূপ লাগে আমার নয়নে॥ রাম বলে জাম্বান কহি তোমা ঠাই।১৫ কেমনে দেখিয়ে আমি সেই হুইভাই॥ জন্মবান বলে প্রভূ কর সিংহনাদ। এথনি আসিব দোঁহে করিতে বিবাদ।। মন্ত্রীর বচনে রাম সিংহনাদ ছাড়ে। স্বৰ্গ মৰ্ত্ত পাতাল সমুদ্ৰ শৈল লড়ে ॥২• কুশ বলে লব দাদা স্থনহ বচন। সিংহনাদ ছাড়ে বুড়া পাইয়া চেতন। আমার বচন ভাই স্থন সাবধানে। জুঝিতে হাঁকারে বুড়া হেন লয়ে মনে॥ হাথে গণ্ডিবাণে ধায় ভাই হুইজন।২৫ রামের সাক্ষাতে আসি দিলা দরশন॥ দোঁহার হাতের গণ্ডি বিচিত্র লিখন। রামের উপরে করে বাণ বরিষণ॥

হুই ভাই অনর্থ বাণ কৈল অবতার। অনর্থ বাণেতে রাম করিল সংহার॥ ' ইক্রজাল বাণ রাম এড়ে বাহুবলে। ইক্ৰজাল বাণে কাটি পাড়িল ভূতলে॥ কাল বাণ এড়িলেন ভাই গুই জন।৫ অগ্নি বাণে কাটে রাম রঘুর নন্দন ॥ স্চিমুথ শিলীমুথ বাণ কণিকার। নানা বাণ তিন জনে করে অবতার॥ রামে অস্ত্র সিথাইল দেব পুরন্দর। লব কুশে সিথাল্য বাল্মীকি মুনিবর ॥১০ জার জত অন্ত্র শিক্ষা তিনজনে জানি। সেই সব অল্তে তিন করে হানাহানি॥ নাগ লোক থরহর কম্পিত পাতাল। স্বর্গেতে কম্পিত হৈল অষ্টলোকপাল।। চক্রস্থ্য কম্পবান গগনুমগুলে।১৫ পৃথিবী পৰ্বত কাঁপে সমুদ্র উথলে॥ রণ দেখি তিনলোকে লাগিল তরাস। রামের চরণ মাগে স্থধাকণ্ঠদাস \* ॥ কোপে র্মেচন্দ্র দিল ধন্তকে টকার। স্বৰ্গমন্ত্ৰ পাতালে লাগিল চমংকার এ২০ শ্রীরামের সিংহনাদে পৃথিবী উলটে। ত্বই ভাইর সিংহনাদে দশদিগ কাটে॥ ব্রন্ধা আদি করিআ জতেক দেবগণ। বড়ই সংশয় দেখি পিতা পুত্রে রণ॥ ব্রদা সম্বোধিতা বলে ইন্দ্র দেবরাজ।২৫ পিতা পুত্রে রণ হয়ে ভাল নহে কাজ॥

 \* এ স্থলে কৃত্তিবানের ভণিতা দৃষ্ট হইল নাক্

 স্থাকণ্ঠনান কে ?

(¢ 0 3)

(৫•३)

পিতার বাণেতে জদি পুত্রের সংহার। যুগক্ষ হবে তবে সকল সংসার॥ পুত্রের বাণেতে যদি পিতার নিধন। অপ্যশ হব তবে এ তিন ভুবন॥ मर्खामवर्गन जाना क्ट नाटि शाक । १ রথে চড়ি দেবগণ রহে অস্তরীক্ষে॥ অনস্ত নাগের রাজা অধো পুরে বৈদে। গেলেন বাল্মীকি মুনি তাঁহার সম্ভাষে॥ পাতাল পুরে গেলা বাল্মীকি মহামূনি। রাজ্যের প্রমাদ কথা কিছু নাহি জানি॥১০ সব দেবগণ মেলি পাঠাল্য পবন। मूनिटक कहिन शिव्या त्रट्वत कथन ॥ আন্তে বেন্তে আল্য মুনি বারতা পাইআ তপোবনে মহামূনি সাম্ভাইল গিআ। আগে মুনি গেলেন গীতার বাসা ঘর।১৫ সীতা নিদ্রা জান নাহি ছই সংহাদর॥ স্থান সন্ধ্যা করি মুনি করে দেবার্চন। ওথা রাম সঙ্গে জুঝে সীতার নন্দন॥ ধন্মকে টক্ষার স্থনি বাণের ঠণ্ঠনি। আকাশে উঠিআ লাগে জনন্ত আগুনি ॥২০ ছই ভাইর বাণ বুলে গগন মণ্ডলে। বাণ বরিষণ কহর নিজ বাছবলে॥ সন্ধান পূরেন রাম রঘুর নন্দন। ছই কুমারের মুথে করেন চুম্বন ॥ মন্ত্ৰ পড়ি ছুই ভাই নানা বাণ এড়ে।২¢ সেই বাণ জাইআ রামের পায়ে পড়ে॥ ুকোপে বাণ এড়ে রাম দিআ হহকার। **(म्वर्ग्य शक्तरक् नांशिय हमश्कात**॥

পিতা পুত্রে বাণ বর্ষে বাণমাত্র ক্ষয়। কেহো নারে কাহারে করিতে পরাজয়॥ তিন লোকে খ্যাত রাম বড় ধহুর্দ্মর। নানাঅন্ত্র শিক্ষা জানে হুই সহোদর॥ বাণের ঠণ্ঠনি স্থানি উঠে চট চটি।৫ অন্তরিকে বাণে বাণে হএ কাটা কাটি॥ বুদ্ধের সাগর রাম বুদ্ধে নাহি ঘাটী। লব কুশ ছই বীর বলে নাহি টুটী॥ ত্বই বীর বাণ ফেলে দিআ ছহন্ধার। রামের চরণে গিআ করে নমস্বার ॥১• মায়াময় বাণ দোঁহে এডিলেন রোষে। রামের চরণে পড়ে দেখি লোক হাসে॥ তবে হুই বাণ এড়ে মারিতে শ্রীরাম। কেহো বা ডাহিনে জায় কেহো জাএ বাম বাণ ব্যর্থ গেল হুই ভাই কোপে জলে ৷১৫ লেউটিআ আল্য বাণ হুই ভাইর কোলে॥ কোপে বাণ এড়ে রাম টানিআ ধরুকে। বাণে বাণে লব কুশের সর্ব্ব অঙ্গ ঢাকে॥ শ্রীরাম এড়িল বাণ অগ্নির উত্থাল। নারেন করিতে জয় হুইটি ছাওআল ॥২० অগ্নিবাণ এড়ে রাম অগ্নি হেন জলে। রাশি রাশি অগ্নি হৈল গগন মঙলে। কোপে হুই ভাই জে বৰুণ বাণ পেলে। শ্রীরামের অগ্নিবাণ নিভাইল জলে॥ কোপেতে শ্রীরাম রাজা সর্পবাণ পেলে ৷২৫ বিষ অগ্নি বিষম বাণের মুখে জলে॥ দর্পগুলা হঞা বাণ চারিদিগে ধায়। গরুড় বাণ এড়ে শব সর্প ধরি থায়॥

(0.9)

(4 • 8)

नर्गवान वार्थ राम त्राम रकारन खरन। বাণ বরিষণ করে অগ্নির উত্থালে ॥ বাণ বরিষয়ে রাম ধমুকে প্রচও। তপোবনের গাছ কাটি করে থগু থগু॥ ছাইল রামের বাণে সকল গগন।৫ তপোবন ছাড়িআ পালাএ মুনিজন। বজ্র সম বাণ সব অগ্নির উত্থাল। বাণে বাণে মোহ গেল ছইটা ছাওআল। জয় জয় বোল করে সব মুনিগণ। ধন্ত ধন্ত রাম তুমি শ্লাঘ্য জীবন ॥>• তুমি নারায়ণ তুমি দেব ভগবান। সূর্য্যবংশে রাজা নাহি তোমার দমান॥ শিশু সনে কর রণ না আসে জুগতি। সর্ব লোকের নাথ তুমি জগতের পতি ॥ রামে স্তৃতি করি মূনি বুঝাল কুমারে।১৫ ত্রৈলোক্য পূজিত রামে কে লজ্ফিতে পারে বাণ থাঞা হুই ভাই হৈলা অচেতন। মুনিগণ বলে তারে প্রবোধ বচন ॥ তুমি হুই ভাই হও অজয় প্রতাপ। তোমার প্রতাপে কার নাহিক সম্ভাপ॥२० পুন উঠ হুই ভাই পাইআ চেতন। ছাথে গণ্ডিবাণ ধরি কর মহারণ ॥ রাম জত বাণ এড়ে মায়ার<sup>e</sup>প্রবন্ধে। ছুই ভাই বাণেতে রামের সৈত্য বিন্ধে। অন্তর বাণ এড়ে রাম ধন্তকের টানে।২৫ পবন বাণে সেই বাণ কাটি ছই জনে। কেছো কালো নাহি জিনে বাণ বরিষণে। বিশিত হইকা চিত্তে সর্ব ৎদবগণে॥

পৃথিবীর তলে জত রাঞ্জগণ বৈদে। . তোমা সম নাহি কেহো অসম সাহসে॥ ধন্য ধন্য রাম তুমি জগতে পুজিত। তোমার বিক্রমে দেবগণ পুলকিত। ধন্য ধন্য লব কুশ সীতার নন্দন।৫ জার তেজে স্থথে তপ করে মুনিগণ। বুদ্ধকালে রামের বাণ বজ্র সমান। ত্রিভূবননাথ রাম লোকের প্রধান॥ জোড় হাথে বলেন স্থদেন জামুবান। কহিতে তোমার গুণ নাহি অবসান॥১• কেত্রি কলে জন্ম চুই রাজার কুমার। সুর্যোর সমান তেজ বীর অবতার॥ জত বাণ আপনে করিলে অবতার॥ সব বাণ ছুই ভাই করিল সংহার॥ তোমার সমান দোঁহে খহা ধহুর্বর।১৫ রণের পণ্ডিত দোঁহে গুণের সাগর॥ তুমি নারায়ণ প্রভু বঁড় দয়াবান। ত্ই শিশু দেখি প্রভূ তোমার সমান ॥ ছই বীর মৃহাবল জানে অন্ত্র শিকা। জারে বাণ এড়ে তার কারো নাহি রক্ষা। দা মরে তোমার বাণে কেন কর রণ। আমার বচনে কোপ কর সম্বরণ। বাঞ্জিল তোমার দৈত্য না মরে পরাণে। সর্ব্ধ সেনা রক্ষা পাইল তোমার সে গুণে 🛭 না মরে তোমার বাণে বাণ মিথ্যা হয়।২৫ ুস্গ্যবংশে জন্ম জার নহে পরাজয়॥ **(जरे दौत गन्तर महिन हेळकिए)**। হেন বীর বন্দি পড়ে ৰারাঞা সম্বিত।

 $(\mathbf{c} \cdot \mathbf{c})$ 

(¢•७)

বজ্রের রাটুল ধরে আর গুণ তাই। হেন ভরত বন্দি করি রাথে গুই ভাই॥ জেই শত্রুত্ব মারে হর্জ্য লবণে। **रहन वीद्र वन्ति कत्रि ब्राप्थ जर्भावरन** ॥ सू शीव अन्न म आत वीत रूपमान। १ মহেন্দ্র দেবেন্দ্র আর বানর প্রধান॥ नन नील जानि कति वाकिल वानत। ত্রিভূবন জিনি বীর বড় ধযুর্দ্ধর ॥ আছুক অন্তের কাজ বন্দি বিভীষণ। অন্তে শন্তে পরিপূর্ণ সব বন্ধুজন ॥১• না মরে তোমার বাণে কেন কর রণ। আমার বচনে কোপ কর সম্বরণ॥ বলিল এতেক জদি মন্ত্ৰী জামুবান। জ্ঞান গুরু মন্ত্র রাম করিল ধেআন। মন্ত্র পড়ে রামচন্দ্র বিষ্ণু অবতার।১৫ ব্রহ্মপত্র জোড়ে রাম ত্রিভূবনে সার॥ মায়াতে মোহিত রাম আপনা না জানে। দশদিগ ছাইলেক বাণ বরিষণে॥ হুই ভাই বলে বুড়া করে মায়া রণ্। পদ্ধর্ববাণ অবতার করে হুই জন ॥২• বাণের জ্যোতিতে আলা করে দশ দিগে। भक् ञ्चि नर्कालांक ठमएकांत नार्ग। মায়া বাণ শত শত হৈল অবতার। यूगक्तम देश किया श्रामात ॥ हेन्द्र (म निश्चाक यम वक्रण भवन।२६ সভে গিআ বিধাতার পশিল শরণ॥ রামের বাণের তেজে ল্যোকে চমৎকার। কৃটিল রাক্ষ্স পাল্য সম্ভ্রম অপার॥

সব মুনিগণে বলে পড়িল প্রমাদ। কোন জন সহিবে রামের বিষয়াদ।। इरें डार्ड वरण हिन्छ। ना कतिर मरन। বুড়া বন্দি করিআ লইব গণ্ডিবাণে॥ রাম বলে জানএ গন্ধর্ব সন্ধি।৫ এই বাণে আমার কটক কৈল বন্দি॥ কোপে রামচক্র করে বাণ বরিষণ। বাণে কাটী সেই বাণ পড়ে ততক্ষণ ম মায়া বাণ হুইভাই কৈল অবতার। শুনিতে বাণের শব্দ লাগে চমৎকার ॥১• ডাক দিআ বলে সব দেবতা সমাজ। পিতাপুত্রে রণ হএ ভাল নহে কাজ॥ বিষ্ণু অংশে জন্ম দোঁহে জানে অন্ত্ৰ শিকা। জারে বাণ বাজে তার কার নাহি রক্ষা॥ ক্বত্তিবাদ কবি গান রামায়ণ গীত।১৫ শুনিলে থণ্ডএ পাপ রামের চরিত।

জত জত রাজা বৈদে পৃথিবীর তলে।
দেবগণ তথ তাবে গগন মণ্ডলে॥
ব্রহ্মা আদি করিআ জতেক দেবগণ।
রণ দেথি সভাকার বিশ্বিত বদন॥২
ধাইআ কহিল মুনি সব বালীকি গোচর।
পাড়ল প্রমাদ বড় স্থন মুনিবর॥
রামের বাণের তেজ কোন জন সই।
তপোবন ছাড়ি মোরা অন্য ঠাই জাই॥
বাণে পথ নাহি দেখি খোর অদ্ধকার।২৫
বক্সবাত সম রামের ধনুকে টক্কার॥

(009)

(2.5)

সীতার তনম দোঁহে বিষ্ণু অবতার। তৈলোক্য জিনিঞা রাম রণের জুঝার॥ জিদ রামের ঠাঞি মরে ছই সহোদরে। তবে অপয়শ সব ভরিব সংসারে॥ জদি রামচন্দ্র মরে কুমারের বাণে। পালাইব তপের সাধ নাহি মুনিগণে॥ এত স্থানি লড়িলা বাল্মীকি মুনিবর। যথা যুদ্ধ করে হুই সীতার কোঙর॥ মুনিতে বেষ্টিত হঞা গেল তপোধন। গুঞ্জি হাথে ডাণ্ডাইলা রাম নারায়ণ ॥>• মধা রণে নাচেন বাল্মীকি তপোধন। আজি পূর্ণ হৈল সাতকাণ্ড রামায়ণ॥ রাম জন্মিতে ছিল সাঠে সহস্র বৎসর। তথন রচিল পিতা পুত্রের সমর॥ এতেক বলিঞা রণে নাচেন তপোধন।১৫ লব কুশ আসি বন্দে মুনির চরণ॥ মনের হরিষে মুনি দিল আশীর্কাদ। রণ দেখি মুনি সব হরিষে বিষাদ। রণ তেজি ছুই ভাই চল বাসা ঘর। मुनित প্রবোধে লড়ে ছই সহোদর ॥२० দেখিআ হরিষ বড় সর্ব্ব মুনিগণ। ক্তবিশ রচিল উত্তর রামায়ণ॥

#### পঠমঞ্জরী।

वाळा निन मूनिवत, इरेडारे कार घत, আর না থাকিছ মোর সাথে। यमि कदत्र উপরোধ, করিতে নারিব রোধ পরিচয় মাগিলে রঘুনাথে॥ মুনিরে প্রণাম করি, হাতে গণ্ডিবাণ ধরি, घरतरत চलिल घरे ভारे। দেখিআ পুত্রের মুখ, বাড়িল দীতার হথ কোলে কৈল পসরিআ বাই॥ রণ ধূলা সর্ব্বগায়. শোণিতের ধারা তায় আঁচালে মুছিআ বলে দীতা। রামে কেন কর রোষ আমার কর্ম্মের দোষ কি কার্যা করিতে নারে ধাতা॥ লবকুশ বলে মা. হের দেখ সর্বাগা জরজর এর্রামের বাণে। শ্রীরাম করুণাময় সকল সংসারে কয় এমন বলিষ্ঠা কেবা জানে॥ নারীকে পাঠায় বন শিশুদনে কুরে রণ বিনা দোষে প্রাণবধ করে। জাহার দেহে এত ক্রোধ না মানে পরের বোধ সে কেনে দয়াল নাম ধরে॥১० বাণ জেন খুরের ধার দেখ পুষ্ঠে হয় কার ভাগ্যে রাথিল মুনিগণে। তোমার ছিল আগ্লীর্কাদ এড়াইলাও প্রমাদ দেখিম তোমার জীচরণে ॥

(¢ 0 %)

(050)

জতেক্ করিল রণ, দেখিলেন মুনিগণ ' জিনিলাঙ তোমার প্রতাপে। সবে এক ছথ মানি যদি লইত বালাকি মুনি ঘোড়া নিতে পারে কার বাপে॥ আশ্চর্য্য লাগ্যেছে মনে, **(मिथा)** जोरे ठातिकत्न. সভাকার জন্ম এক বংশে। কথাতে পাইল চিহ্ন তবে কেন বৰ্ণ ভিন্ন একথা কহিল রামের পাশে॥ রাম লাজে হেট মাথা তোমাকে জিজ্ঞাসি কথা তোমাতে লাগ আমার শপথ।৫ লক্ষণ শত্রুত্ব একরূপ গুইজনে আররূপ, দেথিআ লাগায়ে বড় ভয়॥ লবকুশ মুখের বাণী •স্থন্যা সীতা ঠাকুরাণী ক্রন্দন সঙ্গলি মুগ্রাসে। ক্বতিবাদের বাণী স্থমিতা রাজরাণী এই তত্ত্ব পাবে তার পাশে॥

লড়িলা বাল্মীকি মুনি রাম সম্ভাষণে।
সারদিলা আকালে রহিছে দেবগণে॥১০
হাসিলা বাল্মীকি মুনি দেখিলা সংগ্রাম।
রথে হৈতে নামিঞা মুনিকে বন্দে শ্রীরাম॥
জত রাজা সব মুনির চরণ বন্দে।
আশীর্কাদ দিল মুনি পরম আনন্দে॥
বিদ্যুতে আসন দিল পাদ্যু অর্থ জল।১৫
জাত হাথে মুনিরে রাম পুছিল কুশল॥

मूनि वरण त्रांमहऋ ञ्चन मावधारन। পাতাল পুরে গিমাছিমু রাজ সম্ভাযণে॥ তথা হইতে স্থনি তোমার সংগ্রামের কথা স্থনিঞা রণের কথা বড় পাইল বেথা।। রঘুবংশে চূড়ামণি তুমি রাম রাজা।৫ পুত্রহেন পাল তুমি সকল পরজা। তোমার তেজে রাম সাগর গেল বন্ধ। ত্রিভূবনে হুর্জয় বধিলে দশস্কম। রাক্ষস মারি তুমি বসালে তপোবন। তোমা তেজে তপ করে সব মুনিগণ ॥১• প্রজা পালি তুমি এগার দহস্র বংসর। রাজ্যথত্ত পালি তুমি তুষি মুনিবর॥ সংপ্রাম জিনিঞা তুমি সংসারে পণ্ডিত। ছাওআলের দনে রণ নহেত উচিত॥ স্থ্যবংশে জন্ম দোঁহা রাজার নক্তন।১৫ রাজ্য হারাইআ আল্য মোর তপোবন॥ রাজকুমার হটী ভাই রাজন্রী ধরে। অস্ত্র শাস্ত্র জত বিদ্যা সিথি মোর ঘরে॥ হুটী ভাই মোর ঘরে করে অস্ত্র শিক্ষা। জারে বাণ এড়ে তাহার নাহি রক্ষা ॥২০ হাসিআ এরাম বলে মধুর বচন। পরিচয় দেহ মোকে কাহার নন্দন॥ চতুর্দশ ভূবনে অপছে বীরগণ। হেন ভরত বন্দি করিমা রাখিল তপোবন॥ জে শক্রন্থ মারিল লবণ অস্ত্রে।২৫ বিক্রমে আগল অঙ্গদ বুদ্ধে প্রচুরে॥ বিভীষণে ভাল জান ব্ৰহ্মা পড়ি নাতি। হেন বিভীষণ বন্দী লঙ্গি প্ৰজাপতি॥

(455)

(032)

জে বিশ্বকর্মা নির্মাল তোমা তপোবন। নল বীর করি দেখ সাগর বন্ধন॥ জে অগ্নি পৃজিষা তোমার উৎপতি। হেন নাল বার বন্দি বড় অক্ষেআতি॥ কোন কুলে জন্ম তার কাহার তনয়।৫ কোন বংশে জন্ম তার দেহ পরিচয়॥

পঠমঞ্জরী রাগ।

বান্মীকি বলেন রাম তুমি সে লোকের ধাম नीनां देश मञ्चनतीत। জার তুমি অবতংস ধন্ত জে তপনবংশ পরম দয়াল বলা ধর॥ বালক কন্ত বংশ জন্ম তার বিষ্ণুঅংশ রাজ্য হারাইআ আইল বন। ভোমার দারুণ শরে মরিত হুই সহোদরে কত যশ পাত্যে নারায়ণ ॥১• বাল্মীকির বোল স্থান রামচক্র মনে গুণি নিখাদ ছাড়ি কিছু বলে। অভিনব কুশেশয় স্থকোমল হাদয় নয়নে ভরিল অশ্রজনে॥ জিজ্ঞাদি তোমার ঠাই কোথা গেল হুইভাই क्टिन (मथा नांहे भात गतन। दश्न नम्र स्मात्र हिटल গেছে তারা প্রাণ হৈতে ক্লপ লাগ্যা রআছে নয়ানে n পুর্বে নিভৃত স্থানে আছিলাও সীতার সনে

मान्द्र अफ़िन व्यक्कश ।> €

অবধানে রঘুপতি চারি মাস গর্ভবতী **এইकथा कग्ना हिन मीठा ॥** ' মোরে বিধি প্রতিকূলে দারুণ লোকের বোলে **(रम शीज) कत्रिण वर्ष्क्राम।** চাপায়্যা পুষ্পক রথে স্থমন্ত সারথি সাতে কোন বনে রাথিল লক্ষণে॥ না জানি সীতা কোথা গেল কিবা তার উদরে হৈল **এইकथा यत्न यत्न छ**ि। বাশ্মীকি কৈল হেঠ মাথা তুমি বৰ্জ্যাছ দীতা এইকথা এতক্ষণে স্থানি ue অযোনিসম্ভবা দীতা জনক তাহার পিতা বস্থমতী জাহার জননী॥ হেন সীতা বনবাস গর্ভ তার চারি মাস এই কথা আমি নাহি জানি॥ বন আর উপবনে জত বৈদে মুনিগণে किछाना कतिन चरत्र चरत्र। জদি সীতা দেখা পাই কহিব তোমার ঠাই শয়া জাব অযোধ্যানগরে॥ বালীকির স্থনি বোল রাম হৈল উত্তরোল ঘন ঘন ছাড়েন নিশাস।১০ জানকীর পতি গতি আন না লয় মতি না চাড়ি রচিল ক্বত্তিবাস ॥

(050)

(628)

মুনি বলে তোমা ডরে পালাল ছাওআলে। তাস<sup>°</sup>ভার পরিচয় পাবে কার্যাকালে॥ অস্ত্র সম্বরণ তুমি করহ বিজয়। দেশে লৈঞা তা সভার করাব পরিচয় সূর্য্যবংশে জন্ম তার রাজার নন্দন।৫ আপন তেজে রাজা পালেন তপোবন ॥ মুনির কথা স্থানি রাম হাস্তা বদন। তোমার আজ্ঞা লঙ্খিতে পারে কোন জন॥ সকল কটক বন্দি রহিলা তপোবনে। কটক এড়িআ জাব ভাল বলিব কোনজনে মুনি বলেন রাম তুমি করহ গমনে। ভোমার পাছ পাঠাই মকল দৈন্তগণে॥ স্থানির বচন রাম মানিল যুক্তি। রাম বলেন রথ সাজ স্থমন্ত্র সার্থি॥ মুনির চরণে রাম মাগিল মেলানি।১৫ রামে মেলানি করি চলিলা সব মুনি॥ নৈভাগণ লৈআ রাম দর্যী হৈল পার। কটক বলে আমা সভা নহিল উদ্ধার॥ অংকমা করে কটক আপনাকে নিন্দে॥ রামকে সোভরিঞা কটক কান্দে ॥২০ তপোবনে বীর ভাগ কান্দে উচ্চ স্বরে॥ পার হৈঞা রহিল রাম সর্যূর তীরে॥ সর্যুর তীরে রহিলা সকল রাজাগণ। এথা বাল্মীকি মুনি গেল দীতার তপোবন॥ মুনির চরণে সীতা হৈলা নমস্বার।২৫ মুনির চরণ বন্দে দীতার ছই কুমার॥ वानींकान निव मूनि भवम मानदा। আশীয় করিআ বার্তা পুচ্ছে মুনিবরে॥

কি কারণে আইলা মুনি কেনে নেউটিলা আমার অসম্ভাবে তুমি সে কেনে গেলা॥ রাজার শাসনের ভিতর তোমার তপোবন। মূনি হৈআ কেনে কর রাজা সনে রণ॥ মুনি সব তপ করে ব্রহ্ন উপবাসে।৫ তপ নষ্ট হয় তার প্রাণী যদি হিংদে॥ ছাওআল হুইটা মোর কিছু নাহি জানে। থেলাইতে জায় মুনি ছাওআলের সনে॥ তপোবনের ভিতর কলরব স্থান। কে হারিল কে জিনিল কিছুই না জানি॥১० দশ মাস আছিলাও লক্ষার ভিতর। মরিত রাক্স সব জিনিত বানর॥ আমা পর বানর অলজ্য সাগর বান্ধি। হেন বানর আমার তপোবনে বনি।॥ দীতার বচন স্থনিক্রা মুনিরাজ হাসে।১৫ উত্তরকাও রচিল পণ্ডিত স্কৃত্তিবাসে॥

স্থানিক্রা সাতার কথা হাসে মুনিবর ।
ভাল মন্দ না বুঝে ছুইটা কোঙর ॥
অস্ত্র শাস্ত্রে দিখিলেন হইআ ধহুর্জর ।
তিন ভাই বন্দি করি খুড়তা সংহাদর ॥২০
স্থানীব অঙ্গদ আরু বীর হন্মান ।
নল নীল মহেক্র দ্বিদেশপ্রধান ॥
পন্দ কেশরী বন্দী রাক্ষ্য বিভীষণ ।
তোমার পুত্র বন্দি করিল সকল সৈম্প্রগণ ॥
মুনির স্থানিক্রা কথা সীতা চমকিত ।২৫
কোণা সৈম্ভ বন্দি শোসাক্রিদেখাক্ষ ভূরিত

(2)4)

(৫১৬)

মুনি বলে দীতা তুমি আইদ মোর দনে। জতেক কটক বন্দী আছে তপোবনে॥ আগে মূনি মাঝে সীতা হুই সহোদর। চারিজনে গেলা তপোবনের ভিতর ॥ নানা মায়া ধরে তবে সীতা গোসাঞিণী।৫ মায়া রূপে হৈলা সীতা বুদ্ধা ব্রাহ্মণী॥ হাথ তুলি দেখায় বাল্মীকি তপোধন। হেরে দেখ ভরত লক্ষণ শত্রুদ্ধ॥ अन्न नौन (प्रथ वीत श्नूमान। দেও গবাক পন্দ কেশরী ইন্দ্রজাল ॥১০ বীর ভাগ দেখি সীতা হেট করি মাথা। সভা ৰন্দি দেখিয়া মুনিকে কহিল কথা।। আমার বচনে সভা পাঠাহ রাজস্থানে। সকল দৈত্য পাঠাহ রাথহ হমুমানে॥ ব্ৰহ্ম মন্ত্ৰ মূনি মনে মনে পড়ে।১৫ মন্ত্রের তেজেতে সভার বন্ধন ছিড়ে॥ বন্ধন মুক্ত করি সকল সৈত্যগণে। স্থান করাই সভা বাল্মীকি তপোবনে॥ বীর ভাগ লড়িলা পর্বতের চূড়া। তিন ভাই পাঠাইল দিআ যজের ঘোড়া ॥২০ সকল কটক লড়িলা দিআ জয় জয়কার। উঠিআ সকল দৈত্য বলে মার মার॥ ইক্স আসিআ করিল অমৃত বরিষণ। अभ भागविन वन श्रेन इखन ॥ জতেক কটক পড়িল লবকুশের বাণে !২৫ সকল সৈত্য জিল ইন্দের বরিষণে॥ মুনির তেজে তপোবনে ফলে নানা ফল। ফল থাঞা সৈতা সব হৈল স্থলীতল।।

বীর ভাগ আসি মুনির চরণ বন্দে। व्यानीसीम मिल मूनि श्रवम शानत्न ॥ ' পার হৈআ সরয়তে গেলা রামের স্থান। রাম বলে কেনে নাহি আইল হমুমান॥ আইল সকল সৈত্ত মোর বিদ্যমান।৫ কিসের কারণে রহিল বীর হমুমান॥ वाचौकि मूनि दशहेन वीत हसूमाति। আমা সভা পাঠাইল করিআ সন্মানে॥ দীতা দঙ্গে হনুমানের হৈল দরশন। হমুমান করিল সীতার চরণ বন্দন ॥১০ হত্মানে সীতাদেবী করি আশীর্কাদ। সীতা দেখি হতুমান হরিষ বিষাদ॥ হত্নকে দেখিআ সীতা ছাড়স্তি নিশ্বাস। ছষ্টজনের বাক্যে প্রভু দিলা বনবাস॥ উদরে রহিল তথন গর্ভের প্রকাশ।১৫ জ্বন বর্জিলেন তথন গর্ভ চারিমাস ॥ এডিয়া গেলেন লক্ষণ এই তপোবনে। তপোবনে বিশুর ছঃখ পাইল রাত্রিদিনে॥ निष्ठंत नचार्वत थानिक नाहि पद्मा। আমা হেন স্ত্ৰীকে প্ৰভু ছাড়িলেন মারা॥২০ দৈব নির্বন্ধ দেখ মোর কর্ম্মের ফলে। नित्रुम इरे भूज अनितन क्रमतन ॥ অনেক পালন করি বাল্মীকি মুনিবরে। ছই পুত্র হৈল মোর বাল্মীকির ঘরে॥ অন্ত শন্তে যত বিদ্যা বাল্মীক্লি জত জানে। যত্ন করি সকল শিক্ষাই ছইজনে॥ আপন পুত্র বলি বিদ্যা শিক্ষাই সকল। ध्रब्बंग भ्रम्बंत **(मारह रे**हना महावन ॥

(629)

(461)

मनारे (थनारेट जात्र मूनि পाड़ा। আচঁম্বিতে পাইল তথা সর্বলক্ষণ ঘোড়া॥ ঘোড়া নিতে জে আইসে জুঝিবার মনে। তাহা সভা বন্দি করিআ রাথে তপোবনে॥ ভাল হৈল তাস ভার হইল এড়ান।৫ মুনির প্রসাদে সভার হৈল পরিত্রাণ। আর এক কথা বাপু কহি তোমার স্থানে। আমার বচনে বাপু কর অবধানে॥ সরোবরে তিন ভাই কর গিনা মান। ম্বান করি তিন ভাই কর ভোজন পান ॥১० আজ্ঞা পায়্যা তিন ভাই করিলা গমনে। সরোবরে গিআ স্নান করিলা তিনজনে॥ মান করিয়া ভোজনে বসিলা তিন ভাই। তিন ভাই অন্ন খায় সীতাদেবী দেই ॥ তিন ভাই স্থথে কব্লিল ভোজন পান।১৫ সীতা অন্ন দেই ভুঞ্জে বীর হমুমান॥ ঘন ঘন দেই সীতা অগ্ন ব্যঞ্জন। জত দেই তত খায় প্ৰননন্দন॥ এক থাল অন্ন দিতে কুড়ি থাল হয়। মহাস্ত্রে হতুমান সকল অন্ন থায়॥২० জত দেই তত থায় ভোজন না সঙ্কলি। হমুমানে অন্ন দিতে ধরিল কাঁকালি॥ চিনি নবাত মৃত দধি হ্লগ্ধ মুণ্ডা থণ্ডে। ছলে ভাত দিল সীতা হতুমানের মুণ্ডে॥ **দীতা বলে হমুমান মাথা ফুটি ভাত।২৫** ভোজন সঙ্কলি মাথায় বুলায় হাত॥ ভোজন সঙ্কলি করিল স্থাচমন। অবশেষে দীতা কিছু করিল ভোজন।

ভোজন করিলা তিন ভাই হৈলা স্থশীতল। হয়মানে দিল সীতা রত্ন কণ্ডল॥ रक्षमात्न जानीकां प्रिम (प्रवी मीजा। রামে না কহিবে বাপু আমি আছি এথা॥ হমুমান বলে মাগো, শুন মোর বাণী।c তোমার চরণে আমি কি বলিতে জানি॥ হমুমান বলে তোমা পুত্রে রাজ্য থও। রাজপাটে বসাইয়া দিব ছত্তদণ্ড॥ রাজনদান হুই ভাই হইবেন রাজা। সকল রাজা আসিয়া করিবেন পূজা॥১• হত্মানে সীতাদেবী করএ কল্যাণ। আঁথির লোহ ছল ছল প্রনন্দন॥ সীতার চরণে হন্ন করি নমস্বার। আশীর্মাদ দিল সীতা কৈল পুরস্কার॥ মেলানি মাগিয়ে মাতা তোমার চরণে।১৫ আজ্ঞা কর হাই আমি আপনার স্থানে॥ হমুমানে বিদায় দিল করি কোলাকুলি। আনন্দে চলিলা হমু ছঃথ সঙ্কলি॥ মুনির চরণ হমু শিরেতে বন্দিআ। আনন্দে চলিলা হমু হর্ষিত হৈআ॥২০ হত্নমানে দীতাদেবী করন্তি কথন। हन हन करत आँथि भवननमन ॥ পথে জাইতে হয়ুমানে চক্ষে লোহ পড়ে। কান্দিতে কান্দিতে গেলা রামের গোচরে 🛚 আপন কটকে মেলি বীর হমুমান।২৫ মাথা নোঙাঞিল গিআ রাম সন্নিধান ॥ मकल वीदगर। वरल ४ छ इसूमान। কাহার ঠাক্তি রম্ব কুণ্ডল পাইলে দান 🗈

(650)

(e 20)

জামার বচন স্থনি মুনি হৈলা কৌতুকী।
আমাকে প্রসাদ দিল মুনি বালাকি॥
হাদিল লক্ষণ স্থনি হনুমানের বাণা।
জার কুগুল পাইলে আমি ভালে জানি॥
লক্ষ্মণের মুখ চাহি জামুবান হাসে।
উত্তরকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাসে॥

চারিদিগে কটক মাঝে যজের ঘোড়া। স্তবর্ণ টোপর মাথায় রাঙ্গাপাটের ধড়া॥ দকল বীর ভাগ বেডি মধ্যে শ্রীরাম। সর্বলোক বলে আলা জিনিয়া সংগ্রাম ॥>• জয় করিয়া লড়িলা রাম নারায়ণে। সকল সৈত্য লৈআ রাম গেলা যজ্ঞ হানে॥ র্থ হৈতে নাধিআ বন্দি বশিষ্ঠ চরণ। রাম দেখিতে আইল সকল মূনিগণ॥ যজের বার্ত্তা রাম বশিষ্ঠকে পুছেন।১৫ কত যজ্ঞ সাঙ্গ হৈল কত যজ্ঞ আছেন। মুনি বলে যজ্ঞ করি তোমা বংশ হেতু। যজ্ঞ সাঙ্গ নাহি হয় আছে শতক্ৰতু॥ উনশত যজ্ঞ করি নৃপতি সগর। **(मरवंत र्वाटन विघ**ष्टेन कवि श्वन्मत ॥२० তবে অশ্বমেধ করি দিলীপ্থ নূপতি। বোড়া ধরি লৈআ জ্বায় ইন্দ্র স্থরপতি॥ त्रपूनारम महारल मिलील नकन। রহাইল ঘোড়া ইক্রসনে করি রণ। ইন্দ্র বজ্র মারি রঘু না করি কার্য্য জ্ঞান।২৫ ইল্রন্থ্য করি ঘোড়া আনি যক্তস্থান।।

যজ্ঞে পূর্ণা দিল রঘু করিআ আহতি। স্বৰ্গ ফল পাইল রাজা দিলীপ নূপতি। যোড়া রাখি বীরভাগ চলিল লক্ষণ। পালাইয়া গেল ঘোড়া মুনির তপোবন॥ ঘোড়া হৈতে পড়িল জতেক বিঘটন।৫ তপোবলে বন্দি হইল সকল দৈগুগণ। ঘোড়া আনিবারে তুমি গেলে সে আপনি। তোমারে পাঠাইআ দিল বাল্মীকি মুনি॥ তুমি নারায়ণ রাম তুমি ভগবান। সূর্যাবংশে রাজা নাহি তোমার ন্যান।।১০ জত রাজাগণ পৃথিবীর তলে বৈসে। তোমার বাপের যজ্ঞ সর্ব্বলোকে ঘোষে॥ অশ্বমেধ হৈতে হৈল রাজার অব্যাহতি। স্থ্যবংশের নাথ রাম তুমি শুদ্ধমতি॥ যজ্ঞ করে মুনি সব তোমা সিদ্ধি কাজে।১৫ তোমার পূর্ব্বে রাজা কাকুৎস্থ মহারাজে॥ তিহিঁ রাজ্য করিল শৃষ্টি সহস্র বৎসর। যজের ফলে সাধে রাজা আপন কলেবর। অন্ধক দৈতোর পো গোরকেত্র গেল। সকল দেবগণ জিনি নিল ঠাকুরাল ॥২० পালাইয়া গেলেন দেব দৈত্যের ডরে। সিংহাসন ছাড়ি পালাই দের পুরন্দরে॥ ইন্দ্র না থাকিলে না শোভে দেবতাগণে। তিনলোক গিআ ব্রহ্মা পদিলা শরণে॥ গোরআক্তের পুত্র নাম তারক্ষ।২৫ শত শত হস্তী তার একদিন ভক্ষ ॥ ' ধরিতা মন্ত্র্যা সব কর্ত্র সংহার। একে একে খাইলেক সকল সংসার॥

(623)

(& > >)

দশ সহস্র মত্ত হস্তী জত তেজ ধরে। এতের্ফ তেজ বৈদে তারক্ষের শরীরে॥ ব্রহ্মার' বরে অস্কর জিনিল দেবগণে। দেবগণের ঠাই তার নাহিক মরণে॥ মরণ জিনিল অস্তর ব্রহ্মার বরে Ic মুনি তপ নষ্ট করে ইন্দ্রের দারি হরে॥ সকল দেবগণ আসি ব্রহ্মার স্থান। ইন্দ্র লৈআ তথা সভে কবি অনুমান॥ দেবের ঠাঞি নাঞি মরে দেবের পায়াডির কাকুৎস্থ রাজা কান্ধে করি দেব পুরন্দর ॥১০ চিন্তিত হইল ইক্র স্থানি এক্সার কথা। ইন্দ্র হৈআ মাতুষ বহি মনে বড় বেথা।। ব্রহ্মা বলে সাবধানে স্থন দেবরাজ। তোমা হৈতে রক্ষা পায় দেবের সমাজ। ইন্দ্র অস্থীকার করি হরিব দেবপুরী।১৫ সকল দেবগণ গেলা অযোধ্যা নগরী॥ বারি হৈত্যা কাকুংস্থ র†জা দেখি দেবগণ। পরম ভক্তিএ বন্দি সভার চরণ॥ भाना **अर्घा फिल ता**का शृह रावहात । কি কার্য্যে গোসাঞি সব করি আগুসার॥ তারক্ষ নামে দৈত্যরাজ অন্ধকের নাতি। সেবাতে মানাল সে দেব প্রজাপতি॥ পূর্নে দ্বিতীয় ইন্দ্র বলি পড়াইল নাম। ত্রিভূবনে সহিতে নারে তাহার শংগ্রাম॥ ব্রন্ধাত্র সেবিয়া অস্থর জিনিল মরণ।২৫ দেবে না পারি তাহা করিতে সংহারণ॥ ইল্রের কান্ধে চড়িআ করহ আগুসার। দৈতা মারিআ দেবের কর উপকার॥

রথ সার্থিকে রাজা পড়িল হাঁকার। দেবগণ দনে বাজা কৈল আগুদার ৷ আগু কাকুৎস্থ রাজা পাছে দেবগণ। সকল কটকে বেডি দৈত্যের তপোবন॥ দেবগণ দেখিয়া কুপিল দৈত্যরাজ।৫ রণে ভঙ্গ দিল সব দেবের সমাজ। কুপিল তারক্ষ হাতে লৈআ গদাবাড়ি। চতুর্দ্দিগে দেবগণ পালাএ-রড়ারড়ি॥ ইন্দ্র কান্ধে চড়ি রাজা এড়ি নানা বাণ। রণে গদা কাটিআ রাজা করি থান থান ॥>• স্থাবংশে মহারাজা নানা বাণ জানে। বাণে ফুটি দৈত্যরাজা মোহ গেল রণে॥ সকল দেবগণে করে জয় জয় কার। কোপ বাঢ়ে দৈত্যরাজ বিক্রমে বিশাল কোপেতে বাঢিআ রাজা হইলা সাত তাল। কেহো কাহো জিনিতে নারে সংগ্রাম অপার ॥

ব্ৰহ্মা বিষ্ণু মহেশ্বর জতেক দেবগণ।
অগ্নি কুবের বরুণ যম পবন ॥
দেবাস্থরে রণ বাজিল রণস্থানে।
দৈত্যগণ মেলিজা দেবগণে মারে ॥২০
ভঙ্গ দিআ পালায় সকল দেবগণ।
ইল্রের উপরে করুর বাণ বরিষণ।
ঘন ঘন বাণ বরিষে দৈত্যের ঈশ্বর।
বাণে ফুটি ইল্ররাজা হৈলা জর জর ॥
ইল্র রণে মোহ গেলা কাকুংস্থ মনে ব্যথে।
দৈত্যরাজ বিন্ধি পাড়ে অতি শীঘ

श्रुष ॥

(৫২৩)

(428)

দৈত্যরাজ বিশ্বি পাড়ে বাছের বাছ বাণে। চতুৰ্দ্দিগে ভঙ্গ দিআ পালায় দৈত্যগণে॥ দশবাণ কাকুৎস্থ রাজ জুড়িল ধ্যুকে। বজ্ঞাঘাত হেন বাণ বাজি তার বুকে॥ চক্রবাণ এড়ে রাজা ক্লি কহিব কথা। ৫ চক্রবাণে কাটি পাড়ে তারক্ষের মাথা॥ দৈতারাজ পড়িল পালাএ দৈতাগণ। রাজার মাথায় করি দেব পুষ্প বরিষণ। তোমার উপর পুরুষ কারুৎস্থ মহাশর। ইল্রের কান্ধে চড়ি রাজা অম্বর করি কয়। ব্রন্ধার বরে দৈত্যরাজ কাকুৎস্থ মারি। ব্রহ্মবধ এড়াই রাজা অখনেধ করি। ইন্দ্র ঘোড়া পাঠাইল পূর্ণার বেলে। স্বৰ্গ গেলা কাকুৎস্থরাজ অখনেধের ফলে॥ তুমি লঙ্কা জিনি রাম সাগর করি বন্ধ।১৫ ত্রিভূবনে হর্জন বধিলে দশক্ষ ॥ তোমার পিতা শনি জিনি রাখিল সংসার। তোমার পুণ্যের বলে গেল স্বর্গ তুআর॥ বশিষ্ঠ মুনির কথা স্থনি শ্রীরাম হাসে। ধনা বলিয়া রাম কথাকে প্রশংসে ॥२० द्रारम रमनानि कदि चत्र राना मूनिवद्र। অশ্বমেধ যজ্ঞ করি রাম বার বৎসর॥ ক্লব্রিবাস পণ্ডিত নানা গুণ জানে। অমৃত চরিত্র রচিলা<sup>•</sup>উত্তর রামায়ণে ॥

শান সন্ধ্যা করি রাম করি ভোজন পান।২৫ সভাকে মেলানি দিলা গেলা নিজ স্থান॥

मकन रेमरस नम्मन रथाका ब्राय्थ वरन। वक्तर्वत कः थ त्राम मत्न मत्न १७८१ ॥ জত হঃথ পাইল লক্ষণ দণ্ড অরণ্যে i তত হ:খ পাইল লক্ষণ ছৰ্জন্ন বনে ॥ লক্ষণের ছ:খ রাম মনেতে চিস্তে IC লক্ষণের ছঃথ আমি স্থাধিব কেমতে ॥ সীতা লৈআ থুইল লক্ষণ তপোৰনে। তপোবনে মরিল সীতা আমার বিহনে ॥ বাপ জনকঋষি তার মা বস্থমতী। **শীতার হঃথ দেখি রাম পোহাইল রাতি ॥১**০ প্রাতঃক্বতা করি রাম প্রত্যুষ বিহানে। পাত্র মিত্র লৈআ রাম বসিল দেআনে॥ শতক্রত যজ্ঞ করিল বেহান বেলায়। হেন বেলায় বশিষ্ঠ মুনি শ্রীরামের ঠাঞি যায় দেআন সঙ্গলি ব্রাম শেলা যজ্ঞ স্থান।১৫ আচন্বিতে ঘোড়া আসি হৈল অধিষ্ঠান॥ সকল মুনিগণে করি জয় জয় কার। যজ্ঞ সালে অষ্টলোকপাল আগুসার॥ ব্ৰহ্মা বিষ্ণু মহেশ্বর জতেক দেবগণ। रेख कूरवंत्र वक्न यम देनक्षा भवन ॥२० সকল দেবগণ লডিল অন্তরীকে। मात्रि मिष्या मा आहेगा व्यवस्थ गटक ॥ নারি দিআ দাওাইলা সকল দেবগণ। অগ্রির আছতি করে সকল মুনিগণ॥ বিভীষণ স্থগ্ৰীব অঙ্গদ হতুমান ৷২৫ मरहक्त विविध नल **स्ट्र**मन जापूरान ॥ গয় গবাক সরভ গৃন্ধমাদন। पिशाम रेखजान तस प्रक्रम ॥

(¢ 2¢)

**(€**₹७)

শতবলি দধিমুথ পনস কেশরী। ঋষভ গন্ধমাদন বানর অধিকারী ॥ ज्यथनं श्रमाथि वित्नाम (इमकूरि)। চারি মন্ত্রী বসিলা বিভীষণের নিকটে ॥ মান সন্ধা করি রাম গেলা যজ্ঞত্বল।৫ यक्तभारम स्थी देश प्रभिग्भारम ॥ याळ व्यविद्यान देशना नकन (प्रवर्ण)। রামের বামে দাওাইল কাঞ্চনময়ী সীতা॥ या पूर्वा दिना त्राम जारे हाति त्राना দেবধ্বনি উঠিল সকল সভাতলি ॥১০ यक्तमाल रचाजा जामि देशना जिथकान। পাদ্য অৰ্থ্য দিল ৰোডাকে আপনি রাম॥ পবন বেগে উঠে ঘোডা গমনমগুলে। মুর্ত্তিমান হৈয়া খোড়া সাম্ভাই আনলে। চারিদিগে বেদ পড়ে সকলমূনিথায়।১৫ অগ্নি উপরে মৃত ঢালি কলসী কলসী॥ ঘোডার মাংস কাটি করিল থানি থানি। ঘতে মাংস জবড়াঞা অগ্নিতে হনে মুনি॥ জতেক বাক্ষস ছিলা জত মুনিগণ। রাক্ষ্য কৃপিতে ঘোড়া মাংস করিল ভক্ষণ ঋষিগণ না থাইল জত মুনিগণ। ঘোডার মাংস না থাইল ভাই চারিজন ॥ ঘোডার অস্থি সকল করি এক রাশি। মন্ত্র পড়ি আবাহন করি নব ঋষি॥ সব দেবগণ দিল ঘোড়াকে অর্য্যদান।২৫ কুণ্ডে হৈতে উঠে ঘোড়া হইআ অধিষ্ঠান। দশরথ রাজা আইলা সবু দেবগণে। বোঁড়া প্রষ্ঠে চড়ি রাজা গেলা স্বর্গমনে॥

অন্ধক মুনির পো ছাড়ি রাজসন্নিধান। ঘোড়া পৃঠে চড়ি রাজা গেলা স্বর্গস্থান॥ রাম লক্ষণের বাণে রাবণের বংশনাশ। ব্ৰহ্মবধ ঘুচে রাজা সিদ্ধি অভিলাষ॥ বাপ মুক্ত হৈল রাম হরিষ হৈল চিত্তে।৫ সর্বলোক প্রশংসে থাকিলেন নিশ্চিস্তে। ইন্দ্রত্বন গেল রাজা অজের নন্দন। ইন্দ্রসনে রাজার হইল একাসন॥ যজ্ঞ সাঙ্গ হৈল রাম পাই অবসর। উত্তরকাণ্ড রচিলা পণ্ডিত মহাশয় ॥১০ যজ্ঞ সাঙ্গ হৈল মুনি বান্ধিল পুরাণ। চারি ভাই করিল রাম ভোজন পান॥ ভোজন করি রাম বসিলা সিংহাসনে। দৰ্কাঙ্গে ভৃষিত রাম রাজ আভরণে॥ যজ্ঞ সাঞ্চ করি সভে রামেরে বাথানি।১৫ রামের ঠাঞি গেলা সভে করিতে মেলানি রাম বলে আজি বিশ্রাম কর মুনিগণ। প্রভাতে কালি সভে করিবেন গমন॥ স্থবর্ণের থাট পড়ে কনকদণ্ডের ছাতা। রামের বামে বসিলা কাঞ্চনমন্ত্রী সীতা ॥২০ রাজাগণ বাসাতে করিল মেলানি। যজ্ঞের নিকটে রহি সব মুনি॥ পাত্রমিত্র বিভীবণ জতেক বানর। রামের মেলানি রহিলা তিন সহোদর॥ পণ্ডিত আচাৰ্য্য যত মিশ্ৰি পাঠক ৷২৫ গায়েন নাটুআ যত কৌতুক কথক। त्रामरक विमाणा श्राम भग्रत्मत्र एत । রামের পাশে দাঙাইল সকল অত্নুচর॥

(429)

মেলানি করিয়া গেলা যার যথা বাস। শর্বারী পোহাইল অরুণ প্রকাশ ॥ सान मक्षा कित ताम विन निःशामता।

চারি ভাইকে আশীষ করি হাতে দুর্কাধানে রাম বলেন স্থন ভরত লক্ষণ শত্রুঘন। মুনিগণে সম্ভোষ কর জত ব্রাহ্মণ।।

ভরত লক্ষ্ণ শক্রত্ম বসি রামের স্থানে॥ नव मूनिशन शिना औतारमत ज्ञारन । ८

বাহির হইলা ভরত ভাই তিন জন। ধনে ধানে স্থা করি সকল ব্রাহ্মণ॥১०

মুনিগণ স্থা হইলা পাআ রাজদান।

তিনজনে বসিলা করিতে অমুমান॥

অশ্বমেধ যজ্ঞে বাপা পাইল স্বৰ্গ ফল।

জত দান কর সব আপনার কুশল ॥ সব মুনিগণে গেলা করিতে মেলানি।১৫

বশিষ্ঠ বামদেব রাম ডাকদিআ আনি॥

ছই মুনি আইল রামের পায়া। সংবাদ।

হাথে ত্র্কাধান রামে করি আশীর্কাদ॥

শ্রীরাম বলেন তুমি স্থন মুনিরাজ।

আপ্যায়িত যজ্ঞ করি দেই আমার কাজ। জেই মুনি আছেন জেবা নাই আইদে।

তাহা সভা আন তুনি পাঠাই মানুষে॥

নৃত্যক গায়ক বাদ্যক যন্ত্রকার।

রাজাগণ আন জত রাজ কুমার॥

স্মান সন্ধ্যা করি রামেরা চারি ভাই।২৫ সঙ্গল করি দভে হৈলা একু ঠাই॥

পৌলন্তা শত্যাবর্ত্ত আইলা স্থন বাণী।

পুলহ পোত্রিক আইলা না মানি অগ্নিপাণি

(425)

বৈশস্পায়ন আর সনক সনাতন। শতানন্দ নিত্যানন্দ কেবল কেতন। বিখামিত্র কশ্রপ ওর্ব্ব ভার্গব। অগ্নিকুল শিবানন ক্রোড গালব॥ ভরদ্বাজ জনক স্করত বৃহস্পতি।৫

অগস্তা পিপ্পলী আইলা মুনি উৎপত্তি। যজ্ঞশালে স্থারমূনি হৈলা উপনীত।

উত্তরকাণ্ড রচিলা ক্বত্তিবাস পণ্ডিত।

মান সন্ত্রা করি রাম করিল ভোজন। চারি ভাই বদিলা করিঅ৷ জতন ॥১০ সব মুনিগণ আলা বাল্মিকী নাহি দেখি।

বাল্মিকা না দেখি রাম হৈলা। অস্থা। স্বমন্ত্র সার্থি লড় কোঙর শক্রঘন।

ছাওঝালে স্থনিতে গীত বছত জতন॥ ভাইর চরণে শক্রম্ম হৈলা নমস্বার।১৫

রথে চড়ি হুই জনে করি আগুসার॥

লড়িলা সুমন্ত্র সার্থি কোঙর শক্রঘন। রথে চড়িআ গেলা মুনির তপোবন।।

মুনির চরণে শক্রন্ন হৈলা নমস্কার। ছুইটা বালক লইআ কর আগুসার॥২०

শক্রবের বচন স্থানি বলে মুনি। তোমার বচনেতে স্থা হইল আমি।

জিবতে আছে যাটি সহস্র বংসর।

ব্রন্দা নারদ দোঁহে আইলা মোর ঘর॥ তথন করিল কবিষে ব্রহ্মার পায়া৷ বর ৷২৫

সেই কবিত্ব শিথিল হুইটী কুমার॥

(e < 2)

(00)

আমা কথা স্থন তুমি কর ফল আহার। আমি বুঝাইঞা লই হুইটা কুমার॥ আপনি লড়িকা মুনি যথা আছে সাতা। দীতা আগে কহে মুনি জীরামের কথা।। আমারে লইতে আইলা কোঙর শত্রুঘন।৫ ছুই গায়েন নিবা তরে বছত জতন॥ তোমা হুই পুত্রে আমি শিখাইল গীত। আর বিহা শিথিলেন সঙ্গীত কবিত্ব॥ স্থ্যবংশে রাজা হইলা পুরুষ ক্রমে। সাতকাণ্ড রামায়ণ শিথাল শ্রমে ॥১০ তোমা হুই পুল্লে গীত পঠাইল পুরাণ। সংগীত পড়ি আ দ্বোঁহে হৈল সর্বজান॥ রাজ হব রাজ হয়া। শিখিলেন গীত। প্রচার করিলে হব লোকের বিদিত। মহাবোদ্ধা পুত্র তোমার বড় বলবান।১৫ লব কুশ রাজা হব বাপের সমান॥ আমার দঙ্গে জাবেক তোমার কুমার। আজি হৈতে কবিত্ব করিব প্রচার॥ এতেক বলিল মুনি জগতের পিতা। মুনির কথা স্থান কিছু বলৈন দীতা॥২• আমারে বর্জ্জি প্রভু দিলা বনবাস। মোরপুত্র নিঞা কেমনে জাবে তার পাশ। এ তিন ভূবনে গোসাঞি তুমি জে পূজিত কৌতুকে আমার পুত্রে শিথাইলে গীত॥ তোমার কবিত্ব প্রচারিব ত্রিভূবনে।২৫ আমি কি বলিব প্রভু তোমার চরণে॥ দীতার বচন স্থলি হাসেু মুনিবর। যতন করি শিথি তোমার ছই কোঙর॥

ছই পুত্রে বলেন সীতা মধুর বচনে। পরস্থথে জাহ ঘোঁহে মুনিরাজ সনে॥ মুনি বলে স্থন তুমি সীতার নন্দন। তোমারে নিবারে রাম করিছে যতন।। গীত স্থানিবারে রাম কৌতৃক বড় মন। তোমরা দেঁাহে আমা সনে করিবে গমন॥ মুনির বচন দ্বোঁহে স্থানি সাবধানে। প্রণাম করিষা বলি মুনির চরণে॥ জেথানকে জায় গোসাঞি তোমার চরণ। সেইখানে জাব আমর। ভাই ফুই জন॥১• দীতা বলে বাপু দোঁহে জাহ মুনি সনে। বাসা করি রহিবে আমার অশোক বনে॥ পাথরের তিনটা তিয়ড়ি আছে তথি। তিন পাথাতে চড়াইআ দিহ তাহে হাণ্ডি॥ আমা গোঙরিআ করিবে রন্ধনে ৷১৫ নানা পায়েদ পিষ্টক পাইবে ব্যঞ্জনে॥ স্বর্ণের থাল্ গাড়ু আছে স্থানে স্থানে। পরম স্থথে হুই ভাই করিবে ভোজনে॥ নেতের চান্দ্র্আতে লিখ পাথি পাখ্যাইলি। স্কুবর্ণের খাট পাড়া আছে নেতের তুলি॥ তক্ষক নাগ সব রাথে অশোক বন। অগ্রজন জাইতে নারে তার কি সে জীবন॥ यञ्ज कति धतिरक वांशू मूनित हत्र।॥ মুনি জাহা বলে তাহা-করিবে ছই জন। জগতের নাথ রাম তোমার হয় পিতা।২৫ ভরত লক্ষণ শত্রুত্ব তোমার **থুড়তা** ॥ বুদ্ধ করিবার বেলা ক্রোধ ছিলা মনে। गानि मन ना पिया वाशू ना वना कूवहरन ॥ ((0)

(৫৩২)

ছই পুত্রে শিখাইল সীতা ঠাকুরাণী। মায়ের চরণে ছোঁহে মাগিল মেলানি ॥ হই বালক লড়িলা কান্ধে করি বীণা। প্রভু প্রভু করি দীতা জুড়িলা কান্দনা॥ ছই পুত্রে পাঠাই দীতা কান্দি উচ্চস্বরে।৫ সীতাকে প্রবোধ দিতে মুনি গেলা তার ঘরে মুনি পাছু করি আইলা বীর শক্রঘন। সীতাসনে শত্রুখনে হইলা দর্শন ॥ দুর হৈতে শত্রুত্ব সীতা চরণ বন্দে। করুণাভাষে কান্দে সীতা আপনাকে নিন্দে॥ দীতা বলে চারি ভাই আছহ কুশলে। শাশুড়ী সতিসা মোর আছে ভাল ভালে॥ ভরত লক্ষণ তোমাতে কেমন পীরিতি। বিনি স্ত্রীতে গোদাঞি কেমনে বঞ্চে রাতি শক্রত্ম বলে কি কহিব রামের কুশল।১৫ তোমার হাব্যাসে রাম অধেক হর্বল। রাজ্যভার চিন্তা রাম কিছু নাহি চাহে। তোমা শ্বঙরিআ রাম নিরস্তর রহে। তোমার বিহনে রাম সকল শৃত্য বাসে। হেন জন নাহি কহে তোমার উদ্দেশে ॥২০ দীতা বলেন স্থন কোঙর শত্রুঘন। জেবা আছিল আমার ললাটে লিখন। প্রভূকে না কহিবেন আমি আছি এথা। লভিলা শক্ৰম্ব সীতাকে নোঙাঞি মাথা॥ পঞ্চশত শিষ্য মুনি সঙ্গেতে লইআ ৷২৫ হুই ভাই লব কুশ রথে চড়ে গিআ॥ রথে চড়ে গিআ মুনি সবশিষ্যগণে। স্থমন্ত্র সার্থি লড়ি কোঙুর শত্রুঘনে॥

রথ খান চালাইল স্থমন্ত্র সার্থি। নদ নদী এড়াইল সর্যু শীঘ্রগতি॥ ' হাথে পাচনি করি রথ চালয়ে মারু i পবন বেগে গেলা রথ অধোধ্যা কত দুর॥ রথে হৈতে নামিলা সভে সর্যুর কূলে। জোড় হাথে লব কুশ মুনিরাজে বলে॥ শিষ্য সমেতে চল তুমি রাজ দরশনে। আমরা হুইটী ভাই করি নগর ভ্রমণে॥ রাজসভাকে চলিলা বাল্মীকি মুনিবর। অয্যোধ্যাতে প্রবেশ করিলা হুই সহোদর॥ শক্রঘন কহিল গিআ রাজার গোচর। বশিষ্ঠের ঘরে রহিলা বাল্মীকি মুনিবর। শ্রীরাম লক্ষণে জানাবে আমার কল্যাণে। কালি সম্ভাষিব মুনি প্রত্যুষ বেহানে॥ চলিলা শক্তম জীরাম দর্শনে ।১৫ মাথা লোঙাঞিল গিআ রামের চরণে॥ রাত্রি রহিলা বশিষ্ঠের ঘরে মুনিবর। কালি প্রভাতে আসিবেন তোমার গোচর॥ শক্রঘনের বচন স্থানি রাম হরষিত ! ইই৷ স্থান বশিষ্ঠ লড়িলা তুরিত ॥২০ ,আতিভিতে ঘরে আইলা ভাই ছুইজন। পাত অর্ঘ দিআ মুনির বন্দিল চরণ॥ আতিথ্য ব্যবহারে করিল পুরস্কার। नानाकन मिन मूनिएत गृह वावहात ॥ শিষ্যগণে দিল মুনি নানা ফুল ফলে।২৫ মুনিরে পুছেন মুনি কহনা কুশলে॥ বশিষ্ঠ বলেন কুশলু তোমার প্রসাদে। তোমার গুণ কহিতে পারে কাহার বাপে॥

(000)

(800)

বশিষ্ঠ বামদেব বলে তুমি সর্বজনে।
সর্বে কার্য্য সিদ্ধ হয় তোমার গুণে॥
শিষ্য সহিতে মুনির কৈল পুরস্কার।
কৃত্তিবাস উত্তরকাও গাইল সার॥

বিশ্রাম করি বালীকি বশিষ্ঠের ঘরে।৫ অঘোধ্যা প্রবেশ করি হুই সহোদরে॥ কান্ধে বীণা হুই ভাই নগরে প্রবেশে। দেখিবারে ধার লোকে আউদড কেশে॥ রূপে কামদেব জেন অখিনীকুমার। দেখিআ দ্বোঁহার রূপ করি হাহাকার ॥১০ রাজমঙ্গল গীত গায়ে জয় জয়কারে। বীণা কান্ধে গীত গায় অতি মনোহরে॥ কোথাহে না থাকে হে হৈ জান রাজ বাটে প্রথমে চলিষা গেলা ভ্রগোলা হাটে। একভিতে বদিআছে মালিনী পুষ্প লৈআ। পুষ্প দেহ মোকে বলে হাসিআ হাসিআ। মোরে পুষ্প দেহ মালিনি না কর অন্ত মতে শতেক কাহনের পুষ্প পরিলেন মাথে ॥ কোপে মালিনী বলে দেখিয়ে না বড়ি। গৌরবে গুনিঞা দেহ শতেক কাহন কড়ি। লব কুশ বলে স্থন বচন আমার। জাবার বেলা দিব কডি না কর অহন্ধার। তহার বচন স্থানি মালিনী বলিল। বন্ধক দিআ জাহ দোঁহে তোমারে কহিল ॥ একটা কুণ্ডল জাহ বন্ধুক রাখিআ।২৫ জাবার বেলাতে ঘরেতে নিহ উদ্ধারিমা॥

ञ्चनि मानिनीत कथा शास्त्र इहे डाहे। দিআ জাব কড়ি মালিনি ইথে কিছু নাই # সঙ্গে পাঠাইয়া দেহ আপনার বেটি। বাণিঞার ঘরে দিব ভাঙ্গাইআ আঙ্গুটী॥ জিদ পাঠাইআ দিব আপনার ঝি।c স্বরূপ করিঅ। বল তোমার নাম কি॥ জাই জুই মালতি বান্ধ্যল আর চাঁপা। ইহার নাম বাপু বটে মোর নাম বাপা॥ জাহ বেটী তিলাবতী বাপু গোড়াইআ। রোজ কড়ি বাণ্যা ঘরে আনিবে সাধিআ॥ লব কুশ চলি গেলা বাজারে বাজারে। তিলাবতীকে নিঞা গেলা বাণ্যার হুআরে॥ তিলাবতীকে বলিল সব মধুর বচনে। চিড়া কলা লৈখা আমরা আসি হুইজনে॥ তিলাবতী মালিনীরে এড়ি মা তুআরে ৷১৫ প্রবেশ করিল দ্বোঁহে বাণিঞার ঘরে ॥ আমার ঝি তোমার ঘরে জাই বানা দিআ। শতেক কাহন কডি দেহত গণিআ॥ তোমার ঘরে একটা কুণ্ডল বান্ধা দিআ। ফিরিবার বেলে ঝিয়ে নিব উদ্ধারিয়া ॥২০ इरे जारे निष्ना माथारव कुन माना। ঝাট আইস বাপু বাপা লৈআ চিডা কলা ॥ कू गरीत दीन। बिन गर किए निका। বাহির হইল ছোঁহে ঝিড়িকি দিঞা॥ বাণিঞা মালিনে বান্ধে পায়ে দিছা দঙি। ফুলের কড়িকে আইলাও বাণ্যা না দেই কড়ি মামা বলিআ মালিনী তিলাবতী কানে। किरमत लागिया आरत वागा रकन वारक ॥

(000)

(đos)

মালিনে গিআ লোক করিল গোচরে। তোমার বেটা বাদ্ধা কেন বাণিঞার ঘরে **এহা স্থান মালিনী হৈল উত্তরোল।** মোর বেটাকে বান্ধে কেন করি গোওগো মণ্ডল পুরকান্তকে ডাক দিআ আনি।c সভা লৈআ বাণিঞা ঘরে চলিলা মালিনী ধনের গর্বে বাণিঞা তোর অহদ্ধার বড়ি। মোর বেটীকে বান্ধ কেনে পায়ে দিআ দড়ি শ্রীরাম রাজা আছেন ধর্ম অবতার। আপনি করিবেন তিছো এহার বিচার ॥১০ लाक माकी कति मानिनी निलक पाराहे গোহারি করিতে গেলা প্রীরামের ঠাই॥ लाक मन नत्न चाछ कतिया निहात। তবে সে জাইও দেঁাহে রাজার তুমার॥ লোকের প্রবোধ দেখ নাহি কেহো ধরে। গোহারি করিতে গেলা রাজার তুআরে॥ ছারথান রাথেন লক্ষণ স্থমিতা নন্দন। ৰক্ষণকে মাথা নোঙাইলা হুইজন॥ লক্ষণ বলেন থানিক থাকহ ছআরে। এহা বলিআ লক্ষণ গেলেন অন্তঃপুরে ৷২০ কহিল সকল কথা এরিমের আগে। স্থানিসা লক্ষণের বোল হৈলা বাহিরভাগে जिःशामा विषया ताम धर्मभावीत । পাত্র মিত্র বসিলা অবের কুল পুরোহিত। ভরত লক্ষণ বসিলা আর কোঙর শক্রত্ম।২৫ মুনিজন বসিলা আর সকল পাত্রগণ॥ विकीयन अधीव अञ्चन रुष्ट्रमान। दार्भंद निकछे वित्रला ऋरवन जाववान ॥

আগুসরিআ মালিনী নোঙাইল মাথা। এই বাণিঞা করে মোর পঞ্চনি আবস্তা। বারমাস ফুল গোসাঞি জোগাই নগরে। মাস গেলে রোজের কডি সাধি ঘরে ঘরে। সাধিতে পাঠাইআ দিল রোজের কডি।৫ মোর ঝিকে বান্ধে বাণ্যা পায়ে দিআ দড়ি॥ তোমার প্রদাদে গোদাঞি কারে নাঞিশঙ্কা স্থায় হারিলে গোসাঞি দিব শতভঙ্কা॥ मानिनी वनिन वाना इत्र न्द्रभ्दा। হারিলে এক লক্ষ দিব স্থন উত্তর ॥১০ মালিনীর কথা জবে হৈল অবদান। বাণ্যা বলেন গোসাঞি কর অবধান ॥ সেই বেটীর বাপ তাহাকে বান্ধা দিআ। শতেক কাহণ কড়ি নিলেক গণিঞা॥ স্থ্য দমান তেজ ধরে,বিষ্ণু অবতার।১৫ রপে কামদেব জেন অধিনীকুমার॥ নানা অভরণ পরিস্থাছে মধু বাজে বীণা। সপ্তস্বরা গীত গায়ে অমৃতের কোণা॥ রাজশ্রী ধরে দেঁাহে ভাই হুইজন। হের হের বলি গেলা সীতার অশোক বন ম ূনা জানিঞা পদরা তুমি দেহ গোলা হাটে না জানি সে হুই ভাই গেল্ম কোন বাটে॥ মালিনী বলে মোর স্বামী অতিবড় বডা। ঘরে আছে কেমতে আইল তোর পাডা॥ ছই ভাই বটে জেন গন্ধর্ম কোঙর।২৫ শতেক কাহণের ফুল মস্তক উপর ॥ वानिका मानिनी नुष्रा। ভরিল দেখানে। শ্রীরাম জিজাসিল মুবেণ জাম্ববানে ॥

(609)

(COF)

হেন অভুত কথা কোথাহ না স্থনি। কে হারিল কৈ জিনিল একুই না জানি। জাম্বান মহাপাত্র জোড করি হাথ। বিচার করিল ভাষ স্থন রঘুনাথ।। রাম পানে চাহে মন্ত্রী হাথে করি থড়।৫ ভাণ্ডার হৈতে আনি দেহ হুইশতকাহণ কড়ি বাপের ধনে আছে পোএর অধিকার। সভাথও চিন্তিত লাগিল চমৎকার॥ শীরাম বলেন কথা বুঝিতে না পারি। ডাক দিআ আনিল রাম মাধব ভাগুরি॥ মাধবেরে বলিল রাম সভার ভিতর। গোলাহাটের মণ্ডল আনহ স্বর ॥ রামের আদেশে মণ্ডল আল্যা বড়া বড়ি। দ্বোহাকে গণি দেহ হুই শত কাহণ কড়ি॥ वादमव (मलानि चदव-कार्य वांगा मानिनी। উত্তরকাণ্ড গাইল বাল্মীকি মহামুনি॥

वानिका मानिनी रामा आधनात्र मरत ।

आमाक वरन প্রবেশিলা ধই সহোদরে ॥

भान করিআ আইলা ভাই হইজন ।

মারে সোঙরিআ বোঁহে চড়াইল রন্ধন ॥२०
পঞ্চাশ ব্যঞ্জন ভাত স্বর্ণের থালে ।
ভোজন করিআ বোঁহে হৈলা স্থাতলে ॥
ভূলারের জলে বোঁহে আচমন করি ।

কর্পুর ভাষুল থাই খটার উপরি ॥
পর্ম স্থেথ হুই ভাই করিল শয়ন ।২৫
পোহাইল শর্মারী হৈল অক্ষণ কিরণ ॥

প্রাতঃকৃত্য করি গেলা বাত্মীকির পাশ 📭 লব কুল দেখি মুনির উপজিল হাস ॥ একভাবে ছইভাই মুনির চরণ বন্দে। व्यानीर्वाप पिन मूनि शतम मानटन ॥ যজ্ঞ নাঞি নিবড়ে যজ্ঞ করি নিরস্তর।৫ শিষ্য সমেতে আইল বাল্মীকি মুনিবর॥ মুনিগণে করি রাম গৌরব সম্মানে। আস্তা করি লব কুশে ডাকি ততক্ষণে॥ তোমরা দ্বোঁহে রামায়ণ শিখি মোর ঘরে ৷ তুমি বিস্তারিলে কবি হর প্রচারে ॥১০ ব্রাহ্মণ মুনিগণে গীত স্থনিব দেবগণে। গাইবে উত্তম বেশে স্থযন্ত্র গায়নে॥ সভাগণ রাজগণ শুনিব সাবধানে। সাবধানে গাইয় গীত ভাই হুইজনে॥ গীত অবসানে করিবে ফল আহার।১৫ রাজা প্রজার ধনে করিবে পরিহার॥ আজি হৈতে মোর কীর্ত্তি ঘূষিব সংসারে। যাবদ থাকিব ভারত জগতে প্রচারে॥ আমা কবিত্ব স্থানি কবিত্ব হব আর । তাহার কবিত্ব প্রচারিব জবে হয় স্থসার। তাহারে তুষ্ট হবেন সরস্বতী দেবী। আমা আদি করিয়া সেই হইবে কবি॥ পণ্ডিত সভা করিয়া জ্বন রাম বৈসে। তথন গাইবে গীত পরস্ক হরিষে॥ कुष् िमिकनि कति गीठ शाहरव मिरन ।२৫ কভু লোভ না ক্বিবে রাজাপ্রজাধনে॥ তোমাকে কহিব জবে জগত ঈশব। বালীকির শিষা বলি করিহ উত্তর ॥

(よりか)

(480)

জখন গাইবে গীত সীতার বর্জন। थिकारक ना पिरव शानि ना वनिरव क्विन। ত্রিভুবনের নাথ রাম মুনির পূজিত। হেন রামে দিবে গালি নহেত উচিত। আজিকার রাত্তি দোহে নিদ্রা জাহ স্থথ। কালি প্রভাতে গাইবে গীত রামের সম্মুথে॥ মুনিরাজে হই ভাই করি অঙ্গীকার। দোঁহেতে রহিলা জেন অখিনীকুমার॥ রাম রাত্রি পোহাইল প্রত্যুষ বিহান। একত্তে বসিত্বা হোঁহে করি অমুমান ॥>• ছুই ভাই স্নান করিলেন রাত্রি প্রভাতে। আগুসরিআ নিতে আল্য হুহে গীত গাইতে। আগুসারি গাইল গীত চাতরে চাতরে। ক্রমে ক্রমে গাইল গীত রাজার গোচরে॥ দিন কুতা করি রাম পাই অবকাশ।১৫ গীত স্থনিতে বসিলা রাম উপজিল হাস॥ ত্রিভুবনের রাজা আইল গীত স্থনিবারে। সভা পণ্ডিত আইলা জেবা বেদ উচ্চারে॥ আগম বেদ পড়ে জেবা পুরাণ পণ্ডিত। ৰুড়া সব পণ্ডিত আল্য জে জ্ঞানে পুজিত। নৃত্যক গায়েন আল্যা জেবা গীত বুঝে। সভা করি বসি রাম ছই গারেনের মাঝে॥ সপ্তস্তরতে গীত গায় সভাখতে বসি। স্থনি ঞা গায়েনের গীত সবে হরষি॥ চারি ভাই শ্রীরাম গীতে দিল মন।২৫ সকল রাক্ষে স্থনে আর বানরগণ॥ স্বাজন মেলি সভে করেন যুক্তি। রামের সমান দেখি হইটা মুরতি।।

জটা বাক্ষ পরেন এই মাত্র আন। আকৃতি প্রকৃতি ছোঁহে রামের সমান। গন্ধর্ব স্বরে গীত গায়ে মধুর প্রবণে। গীতেতে মোহিত হৈলা সকল লোকজনে শ্লোক চ্ছনে গায় গীত বীণার শবদে।৫ মোহিত হইলা লোক গীতের অমুবন্ধে॥ নারদ হৈতে গীত গাই কুড়ি শিকলি। কুড়ি শিক্ষলি গীত গায়া গীত সঙ্কলি॥ একদিনের গীত জবে হৈল অবসান। গীতে মোহিত রাম কিবা দিব দান ॥১০ ভরতেরে আজ্ঞা রাম করেন হেন বেলা। গায়েনে দেহ দান স্থবর্ণ সহস্র তোলা। গঠন অঙ্গুৱী দেহ দশ সহস্র তোলা। গায়েনেরে দান দিতে না করিবে হেলা॥ ভরতেরে তিন বার করিল আদেশে ৷১৫ স্থবর্ণ এড়িল লৈআ গায়েনের পাশে॥ গায়েন বলে ফলে আমার উদর ভরে। কি করিব এত দানে স্থন মহাশয়ে॥ ধনে কিথা কাজ আমার ধনে পরিহার। ঘর হৈতে আন্যাছ ধন জাউক ভাগুরি॥ ভাগোরের ধন তোমার যাউক ভাগোরে ৷ ধনে কার্য্য নাহি আমার ধনে পরিহারে॥ এমত স্থানিকা ছই ছাওআলের বোলে। চমৎকার লাগিল সকল সভাতলে ॥ রাম বলেন তোমরা দ্বোঁহে কে আপনি। কোন জনার কবিত্ব কোন কথা ভূমি॥ কোন কবি কহিলেন আদি অবসানা কাহার চরিত্র কহ কাহার বাথান।।

((83)

(¢82)

কাব্য বাথান ক্সহিলেন সভার গোচরে।
তোমার চরিত্র গাইল বাল্মীকি মুনিবরে॥
তোমাঁ জন্ম রহস্ত গাইল বুড়া রাজা মরণ।
তোমা বনবাদ গাইল দীতার হরণ॥
বালি রাজার বধ গাইল দাগর বন্ধন।
বিভাষণে রাজ্য দান বধ দশানন॥
দীতার পরীক্ষা গাইল দশরথের দর্শন।
পুপরথে চড়ি তোমার দেশে গমন॥
আদি উপান্ত গাইলু তোমার দর্শন।
দকল কথা স্থন তুমি কমললোচন॥১০
ছই ভাই বাদা ঘরে গেলা বাল্মীকি দনে।
যক্ত করিতে গেল রাম লৈত্যা মুনিগণে॥
ক্তিবাদ পণ্ডিত গাইল মধ্র প্রবন্ধ।
প্রথম দিবদে গাইল গীতের অনুবন্ধ॥

নর বানর আর সকল রীক্ষসগণে ।>৫
মা সপ্তমা লৈআ রাম রামায়ণ স্থনে ॥
ছই বালক গীত গায়ে জেন অমৃডের কণা।
সপ্তস্বরে গীত গায়ে বাজে মধু বীণা ॥
দশরপের মরণ গায় রামের বনবাস।
গীত স্থনি লোক সব ছাড়য়ে নিশাস ॥২০
ঘরে হৈতে দশরথ জখন বারি করি।
গীত স্থনি কান্দে সকল অন্তঃপুরি ॥
পুড়িবারে লৈআ জায় বালি বানরে।
মাথার হাথ দিআ কান্দে সকল কপিবরে॥
বীরুভাগ কোঙর ভাগ পুড়িল রাবণ।২৫
হাথ দিআ মাথে কান্দেন রাক্ষগণ।

জখন গাইলা গীত মায়ের বনবাস। মান্বের বর্জন গাইতে গদগদ ভাষ॥ ত্বই পুত্র প্রসবিল যমল সহোদর। লব কুশ গীত শিক্ষিল বাল্মীকির ঘর॥ এতেক বৃত্তান্ত রাম গ্লীত মুথে স্থনি।৫ লব কুশ আপন পুত্ৰ ততক্ষণ জানি॥ গীত রহাইআ রাম মনে মনে গুণে। দীতা হেন স্ত্রী আমি এড়ি অকারণে॥ জার গর্ভে ছই পুত্র সর্বান্তণ জানে। ত্রিভুবনে স্ত্রী নাহি সীতার সমানে ॥১• আর বিভা না করিব নাহিক সন্ততি। বিনি দোষে এড়ি আমি হেন রূপবতী॥ এতেক গণিঞা রাম না দিল মেলানি। পাত্র মিত্র লৈন্সা রাম কহেন কাহিনা॥ আমার বচন বালাকে করাবে গোচর 1>৫ পরীক্ষা দিআ দীতা আত্মক মোর ঘর 🅨 মুনিকে কহিল শক্রম রামের উত্তর। দীতাকে আনিতে পাঠাহ মুনিবর॥ শিষ্য হইতে না আসিব সীতা জে স্থলরী। সাতাকে আনিতে জাই আপনার পুরী ॥२० দেশ জাইতে রাম কারে না দিল মেলানি। কালি পরাকা দিব সীতা রাজরাণী॥ রাজায়ে মেলানি॰মাগে যজ্ঞ অবশেষে। পরীকা দেখিতে রাম কাথি সর্বদেশে 🖠 রাত্রি প্রভাত হৈল করি স্নান তর্পণ।২৫ নানা দেশের রাজা আইল রাম দরশন। জনকনন্দিনা সীতা नहेव পরীকে। मिथिवादत नव लोक शास अखतीका॥

(689)

(889)

সীতা পরীকা নইব সর্বজে ডাকরি। प्रिक्वाद्य थात्र लाक व्यवाधानगती ॥ নগরের বেঅগা। ধার লভি করি ভর। কুজা খোড়া অন্ধক ধাইল অনুসর ॥ লাক ভন্ন এড়ি ধান নগরের যুবতী।¢ উর্দ্ধরে ধাআ জায় নারী গর্ভবতী॥ নানা জাতি লোক ধামে দেখিবার তরে। রার্ত্তা কহিল গিআ রাজার অন্ত:পুরে॥ মশরথের বহু সব লাজে কাতর। মীতার পরীক্ষা স্থনি কান্দে উত্তরোল ॥১० কেহ কাড়িআ পেলায়ে গায়ের আভরণ। হাধ পা আছাড়ে কম্বণ করে ঝন ঝন॥ কেহে। কাঢ়িআ পেলারে পারের নৃপুর। কেহো পুছিআ পেলায়ে মাথার সিন্দুর॥ ভূমিতে লোট্যায়া কেহো করয়ে ক্রন। কাহার ক্রন্দনে ভাবে চক্রের অঞ্জন ॥ হত্তের কম্বণ কেহে। করিল চুরমার॥ শাশুজি সতিআ কেহো করে,তিরস্বার॥ কোন কাজে জীয়ে সীতা কোন প্রিয়কাজ। কুলের বহুমারি হৈমা এত বড় লাজ ॥২• जान रहेक मन रहेक निन वनवान। পরের ৰোলে দীতা এড় লোক উপহাস॥ প্রাণ মাত্র ধরেন সীতা তোঁমার লাজে। কেমতে দাগুটিবেদ ভরিল সমাজে॥ শান্তড়ি দতিঝা সভে করি ক্বতাঞ্জলি ৷২৫ বারেক সভার ঘুচার মুধের কালি ৷ তিন বুড়ি গেলেন প্রীরামের স্থানে। जामद्य वृशाहेन मट्ड विविध विशास ॥

आशनि त्र भतीका मि**जाल्या**नित्न सद्त । কার বোলে সীতাকে বাপু গাঁড় অর্থান্তরে জনকের গৌরব রাখিত তোমার বাঁপ। তোমাকে না জুআয় তারে দিতে মনস্তাপ তপেতে আগল বড় রাজা বুঢ়া বরেনে। তার ঝিয়ের অপমান কর তার পাশে। মনে অস্ত্রথ করি রাজা না বলেন লাজে। একবার পরাকা দিলে আর কোন কাজে ছই পুত্র লৈঅ। ঘরে করুণ প্রবেশ। প্রসন্নবদনে রাজা জামু আপন দেশ ॥১• অবোনিসম্ভবা সীতা উপজিল চাষে। কুলের পাবনী সীতা পরীকা দিব কিসে॥ এক বহু नाज हैटन मराकात नाज। বনবাসে থাকুক সীতা নাহি কোন কাজ ॥ त्राम वरण जान देशन'निन वनवारम ।> व বিনি পরীক্ষাতে আনি লোক উপহাসে 🛚 দীতা আনিতে রাম করিল উপরোধ। কেহো নারিল রামে করিতে প্রবোধ। সম্বরে চ্লিলা মুনি সীতার সন্নিধানে॥ मीजारमवी कत्रिन मुनित हत्रत्न जानारम।२। রাম সম্ভাষণে জত কহিল একে একে। লব কুশ গাইল গীত রামেশ্ব সন্মুখে॥ তোমা নিবার তরে রাম করিল বতন। পরীক্ষা দেখিতে রহিল সর্বজন॥ আমার বচন স্থন তুমি প্রাণ কর স্থির।২৫ ভোমার পরীকা হৈল জেন নীর শীক্ষা নীর ধীর পরীকা হব না কর অনুভাগ। তিল অৰ্দ্ধেক তোমান দেহে নাছিক পালা।

(282)

(\*85)

প্রক্রার পরীকা দেবতা বিদিত।

আর বার পরীকা তোমার ললাটে লিখিত
চুল ছিন্ডি দত্তে কুটা করিয়ে কাক্তি।
পাতালেতে থাকিব মাগো তোমার সংহতি॥
কুলবহু হৈ মা কত আসিব সমাজে। ৫
কোন স্ত্রী নাহি পায় এত বড় লাজে॥
অশেষ বিশেব সাঁতা করেন করুণে।
পথ পাতাল থাকি পৃথিবা তাহা স্থনে॥
সাঁতাকে আনিতে পূথিবা করি আগুসার।
সপ্রপাতাল হইতে হহল ত্রার॥ ১০
আচ্ছিতে উঠিল সোনার সিংহাসন।
চুদ্দিক আলো করিল মন্ত্রা সুবন॥
নাগগণের মাথার সোনার চুল্লি।

নাগগণের মাধার জলে মণির কিরণ। ১৫
আলো করি উঠিল দেবা বেশ আভরণ।
হার কেয়র নেপুর বস্ত্র পরিদান।
মৃত্তি ধরি উঠিলা দেবা সভা বিদ্যানন।
আস আস বলি সাতা ধরিলেক হাপে।
বজ ছংথ পাইলে কি রখুনাথের আগে।।২০
পরীকা লউক ভোরে পরলোকের বোলে।
বামিরাজ্য করুক দোহে জাইব পাতালে।
শাষ্ট্রের বোলে লোকে হরি বোলচাল।
মাষ্ট্রের সহিতে সাতা গেলেন পাতাল।
দেখিলা অভ্নত জাদ পাইল সংসার। ২৫
সাতা পাতালে গেলেন লাগিল তরাদ।
প্রিক্তা সকলা দোকে ভাজে ভাজাবিন।
সাক্ত্রের বোলেন সীতা করণামই।
সাক্ত্রের সকলা সকলা বিনা

আঁথি কোণে না গাছিল তুই ছাওসালে। রামের চরণ নেহালি গোলেন পাভালে।। দী তাকে লখা পৃথিৱী গেলা পাতাৰপুৰী ৰ পুপা বুষ্টি দেবগণ আকাশ থাকি করি। বিদ্যাধরা নৃত্য করে মুদক বাজায় া ৫ মাধু মাধু করি ডাকে দেবের স্মাজ্যি। রামের সভার উঠে জন্দন অপার 🖟 অত্যের কাজ আছুক দেবগণে হাহাকার 🖟 লেব গদ্ধর্ম আকাশে করেন অন্ধরে। । मर्थ भा जात्व नागत्वारक इहेव महार्शक्त অিস্বনে কাহার নাছিক বোলচাল। অবনী ছাড়িলা পাঁতা গেলেন পাতাল। শীতার চরিত্র স্থনিলে পাপ নাহি থাকে। মপ্ত পাতাল ভেদি পৃথিৱী উঠি জাভাকে॥ स्रवर्ग भिःशगटन विभिन्न। त्रिका। जानकी। ज মপ্ত পাতালে গেলেন সীতা কহি ৰাল্লীকি রামের মুখ নেহালে সাঁতার তরে চিন্তে 🕫 রামের সূভা খণ্ড আঁথির লোহে ডিজে ক্তিবাদ পণ্ডিতের কবিম র্দাল। উত্তৰকাও গাইল সীতা গেল পাতাল॥ ३६ কুত্তিবাদ পণ্ডিত জ্পন কবিল রচনা। আঁখির লোহ সগরিতে নারে কোনজনা লোকের শুভ'চিষ্টি গীতা থাকি আ পাতালে সীতার বরে সভাক<sup>†</sup>রে বাত্ক ঠাকুরা<del>লে</del> 🖹

(484)

(286)

সীতা সে পাতালে গেল পেলি হাথের বীণা শ্মামা বলিমা এই ভাই ছুড়িন করণা।। জুড়াবার তবে মাগো গেলি সে পাতাল। প্রমাথ করিয়া গেলে হুইটা ছাওআল। তেরি দ্বা নাহি মালো রড় পাটা বুকি। ৫ প্রবিশা পর্যাল মাগো হইলে দে লুকি। रिकास विस्त याला नाहि छिनि अग्रज्ञता। ভোমার বিহনে মাগো জাব কার স্থানে॥ र्ष अविधि (शत्य भारता मा फिर्ट प्रवस्त । শ্বনাণ হইলাঞ মাগো জাব তপোবন ॥ ১০ সা বলিখা তোমা দনে না কহিল কাহিনী তোৰা বিহনে আমাকে কে দিব অন পানি শ্বামা হ্বহা ছাড়ি তুমি গেলে সে পাতান। সাহার সঙ্গে থাকি আমরা ছই ছাআল। **এত ধলি** ছই জনে করেন রোদন। ১৫ **ভূমিতে** পড়িখা দোঁহে হরিণ চেতন। **্রিদেশের নাথ** গোসাঞি হইলা কাতর। শ্রীষ্ঠার সম্বাধে কান্দে হুই কোঙর।। জ্ঞাপনে কাতর হৈজা রাগ করি অমুমান। श्रमि अधि বুঝার পাত্র প্রধান ॥ ২০ বিছা আদি করি ধার সকল অন্তঃপ্রী। জাহা মরি আহা মরি প্রবোধিতে নারি॥ ৰাছা ৰাছা করি দোহাকে কোনে করি। ষ্ট্রেইছে চুম্বন দিখা বলৈ ধীরি ধারি। ত্রোমা সভা লৈ আ আমার ভালমন্দ কথা ২৫ সৌতা সংখ দেশ। নাহি পাইল বড় নেথা। भी के मटम (प्रचा माहि (शंग मुद्रापन)। টেটামরা বহিলা দেনে সাভাব সন্দেশ।

অদেখা হৈল৷ সাঁতা না দিল দরশন। সাতাৰ তবে **ভোম**রা না কর ক্রেন ন কোন স্বী পাতাহিতে নারে সীতার সুইনিল খুড়ি দৰ বলিল পাত্যাবার বেলা।। পরীক্ষা মুচরে বলি অনেক মৃতনে। এ खारनारकत रवान ताम ना स्निन कार्य ॥ দৈব নির্মান দেখ বাপু ক্রের কল। ্ৰত লোক ছাড়িখা গীতা গেলা ৱসাতলা সাঁতা তোমার ছিল সে এক জননী। অ্যার মতে হৈল তোমার শতেক জননীঃ পাতার দলে তোমার না হৈল দরশন। নতে তোমার হইলাও সঙল এন্দ্রা ত্ই ছাও খাল কেহো জোগার অর পানি। কোন জন পাত্যাইতে নাবে কোন জননী তিন ভাই আইলা ভাইপো পাজ্যাবারে।১ স্ত্রীগণ এড়িয়া সান্তাইলা ভিতরে। তিন ভাই বসিল। বিচিত্র সিংহাসনে। দীতার পুত্র পাতাাইলা মধুর বচনে। আমা সভার মাতৃ ভাগ গোরিপিয়লি । রূপে রূপদি দব সোহাগে আগলি ৫২০ মাতৃ ভাগের মোহ আমরা নাহি ধরি মনে यह वरशरम गाउँहीन देश्लाक ठाति जटन ॥ তুমি সব তপশ্বী হৈল। অল্ল ৰলেদে। " তপখী হৈআ কাতর হৈলে লোক উপধা মহারাজার বীজ বাগু তোমার উৎপত্তি হ ছাওমাল হইয়া তুমি প্রামাণি কেম্ভিট কালি পরত বাপু দুমি বংশ হবে রাজানু রাজা মরমতি হৈলে রাখিতে নারি প্রক্রা

(880)

(240)

ক্ষণীরথ রাজা আনি গঙ্গা ভাগরগী। জৈমার লগে বিভা করি নাভা হেন সভী।। এই কুই থাকি আমার কলের ভবপ। ইরিদের বেলা বাপু কিসের ক্রন্দন । সীতা মাধন্ত তোমার তুমি থাক স্কুথে।৫ মরিমা সে জিয়ে দীতা খঙ্রিবে লোকে। চারি যুগ ঘু নবারে থাকিল কারিতি। এতেক বলিল তিনে করিখ। গুগতি॥ কাৰ্য কোশৰ স্থানি রাজা বড় কৌতুকী। রাজা ভূষিলে রাজা পাবে কি করে জানকা ছই জন লৈখা পেল রাজার সলিধানে। শাতার তরে কান্দে রাম করিআ যতনে॥ मीछा नकी शहारेन आश्रम विमामारम। কি করিব রাজা ভার কি করিব ধনে। भी का बच्ची नित स्रावन आमा आशाहरत ১৫ জামার বাণে রাবণ সবংশেতে মরে॥ পৃথিৱী হৈতে আনি সীতা কোন কাৰ্য্যগণি এতেক লোকের আগে চরি আমার ঘরণী। যুক্ত করি জনকরাজ আপন হংলে চ্য। পুথিবীতে উপজিল সীতা সে রূপনা॥ ২০ প্রথিবী হৈতে সীতার জন্মের অমুবন। ক্ষেকারণে প্রথিবী সনে শাওড়ী সম্বর্ধ।। জোড়হাতে বলে স্থন শাশুড়ী গৰ্নিতা। জ্ঞামাঞিরে তুঃথ দেহ পাঠামা দেহ সীত। :: ব্লাক্রকে কত আছেন কথা স্বন্দরী। ২৫ ষীঠার রূপ যৌবন সভাতে গোচরি॥ দ্বীতা বই আমি মত স্ত্রীকে নাহি জানি। की का अंदर विकास किया ना किया गाउनी

গোমাণে মাগলি তোমার কেন কর নিছেন শাভড়ী হৈলা কেন দেহ এত ক্লেশ্ মনস্তাপ কেনে দেহ মনস্তাপে প্রস্তিত্র কহিব পৃথিবী তুঞি কহিব শাশুড়ী॥ পাত্ৰ মিত্ৰকে ভাকি আন বাণ্যভা ৷ & প্ৰিণী করিব থান থান উদ্ধারিব দীতা এতবলি রঘুমাথ আনি ধরুক থান। পথকে গোড়িয়া বাণ প্রারল সন্ধান ট তা দেখিখা দেবগণ করি হাহাকার বড়ই প্রমাদ হৈল উপায় নাহি আর 🛭 🐝 পব দেবগণ মেলি করিআ যুগতি। রামে স্তাতি করেন রাঘিবারে মি তি ॥ ভূমি বলা ভূমি বিষ্ণু ভূমি মহেশ্বর। সংসার পালন হেত জগত ঈশ্বর।। কে জানি তোমার মায়া কে বলিতে পাছে দরা করি রাখ গ্রাভূ পৃথিবীর **তরে**া আপনি সকল জান স্থন তণ্মণ। তোমার সাগাতে আমরা কি বলিতে জামি এতেক বলিল জবে ব্রন্থা অগোচরে চ रेश इनि उभा कि पूर्वा भीति भी दि । ३० আপনি প্রবোধে বন্ধা সভাখণ্ড স্কুমে। মদ্য হইলা গোমাঞি রামের কারণে ॥ মান্ত্র নহ ত্রি পাসর আগনা। আপনা বুঝি আ তুমি ছাড়হ করুণা 🌬 আপনি বুঝহ ভূমি কেমন অবভার। ২৫ তোমার মহিমা আমরা কি ব্যার আছে ॥ বালীকৈ ক্রিল কাবা পুষ্টেক সংস্থাত जय देवटल कल इ: य वहन द्रशासता

(400)

প্রায় রনে বাল্মীকি মুনি করিল প্রচার। তেমের জ্যোর কথা কি বলিব আর ॥ ভেখা হৈতে আৰু জত ভোমাৰ চৰিত্ৰ। প্ৰনাগত কাৰা করিন বালীকি পণ্ডিত। ভত ভবিষাৎ মনি তপের বলে জানে। ৫ সার্বপাপ খণেও জোমার চরিত প্রবংগ ॥ কম্পণ করি করিল বালীকি মনিরাজে। ব্রাল্লাকির কবির ভোমার মনে নাহি বাজে **বিফু খবতার** তুমি ত্রিভুবনে ঈশর। পুথিৱীর রাজা তুমি ওণের সাগর ॥ ১০ অঞ্জিদ্ধ দীতা এভিলে লোকের ডরে। ত্যোমার গুণ স্থানিলে পাপ কি করিতে পারে । তেওঁ বুভান্ত বলিল উত্তর রামায়ণে। 🐯 হ্রর রামায়ণ স্থানি জত ঋষিগণে।। ভিত্তবোল হৈলে তুমি জানকীর শোকে।১৫ উত্তর রামায়ণ স্থানিলে পাপ নাহি থাকে। স্থানিঞা তোমার চরিত্র পাপ বিমোচন। উত্তৰতাও স্থনিতে আইল মুনিগণ।। **প্রদা অনু** এজিবারে আইল। সব ঋষি। ব্রন্ধা বলে উত্তরকাও স্থানিবারে বসি॥ ২০ 📽 দেবলোক ম্নিলোক বসিলা ঝাঁকেই। জীৱামের ক্রন প্রতিঞা আত্বক **পর্ব্যলোকে** ॥

শীরামের ক্রন্তন স্থানি পাস্থকী উঠি পাতাল হৈতে। শুক্তিমান হুইয়া আইলা আচ্থিতে॥

্রিক্রীর কাশ ১৯১২ শ্কেল পুলি হরতে বিশিষ্ঠ সর্পর্যাণ বেষ্টিত বিদ্যা বাস্থাকি।
জাঞোমাইব জন্দন সমূব হই ঞা ডাকি।
অতি ব্যগ্রতা দেখি রামে করি নিবেদন।
না কান্দ না কান্দ গোদাঞি সম্বস্থ জন্দন।
কার দোষ নাঞি প্রভু দৈব নির্বন্ধ।
বিতা হৈতে তোমা সনে \* \*
কোন দোষে নীতা তৃমি দিলে ব্যবাস।
কোন লাভে গীতাকে আনিলে আপন
পাশ।

মারের ঘরে আসি সীতা তিলেক নাঞি থাকে:

মৃতি ধরি মীতা সঞ্চারিল তিনলোকে॥ >• দীতার তরে কান্দি রাম কেনে ছৈলে ছখী ত্রিভ্বনে সঞ্চারিল দীতা চক্রসুখী।। ना बायन द्वारम आहम का भी कमना। ত্থির ভিত্রে সীতা সাঞ্চাইল এক কলা। মন্ত্রালোকে মানুষে পূঁজন্তি দেবতা। ১৫ পৃথিবীতে সঞ্চারিল সাতা পতিএতা॥ নাগলোকে মর্ত্তা লাকে পুজন্তি পাতালে। ত্থির ভিত্রে সাস্তাইল মানুষ মিশালে 🖟 স্থালোকে সাম্ভাইল দেবের পিরিন্তী। মতাএ সাভাই দেবি তুযি সীতাপতি।। ২০ शास्त शास्त्र मधातिल मीजारमधीत गाँछ। সীতার উদ্দেশে প্রভু কেনে দেহ মতি। দীতার উদ্দেশ কহিল ছট ছাও**লালো**। বাখ্যীকির ভবিষা কথা হান মভাতকে 🖫 भा जोल भूतित कथा स्नि हमिक । रेक क्षाप शास वास नायात मनि वासिकी।

(4 0 0)

(ass)

জন্ত রেয়ুল হেলা রাম অপুর স্থান গাত।
গাঁত সুনি আ দৈতে হইলা মৃচ্ছিত।
এত সুনি জীরাম বাণ সংবিলা।
হাহাকার করি রাম নিখাস ছাড়িলা।
হহ ছাওয়ালে রাম ধরি হই হাথে। ৫
কোলে করি ছাওআল রাম দাতার তরে
বাথে।

কোন কালে হৈল। দী হা কোন কালে রাফে।

জন্মে জন্মে থণ্ডে পাপ করি জার নামে। স্ত্রী হৈছে। সাতাদেবী বছই ভক্তি। দেব প্রতি তুল্য দেখে আগনার পতি॥ ১০ মিজ পতির প্রসাদে নানা স্থ্য ভূজে। निक्र পতिর প্রসাদে সর্বলোক রঞ্জে॥ নিজ পতি ছাড়ি স্ত্রীর আন নাহি গতি। নিজপতি আরাধনে হুই লোকে সন্ততি॥ मिष्ठे अत शान कति मर्बुत वहरन। ১৫ **স**র্বাত্র কুশল তার স্বামি আরাধনে। विष देश्या यांभी जिन तमरे शानौशानि। সামীর সৌভাগ্য দে সোহাগে আগলি॥ রাম সীতা নিশ্বিত কৈল বদন্তে সাঁচে। দোশার দীতা নির্মাই আ ত্রথ রাত্রি বঞ্চেংত হেন সীতা রাম ছতে আসি দেউক বর। রাম দীভার বরে হউক অজর অমর॥ হেন দ্বাম দীতার অন্ত চরিত। স্কল জানেন ক্তিবাস পণ্ডিত।

বন বাস দিল্লা রাম দীতা খুইল বনে। রাম ছাড়িআ সীতার আন নাহি মনে। এক ভাবে ছই জনে গড়িল বিধাজা। বুগে ঘুগে গুপ্ত ভাবে বঞ্চে রাম দীতা। मन्नर्ड जानि तामायश कतिल विभिन्न । সকল পাঠানি জিনিল ক্লতিবাস পণ্ডিত। गरनक পूषा कति छेभिक्रिय कुछिताम। এমব কবিত্ব লোকে করিল প্রকাশ ॥ দীতা পাতালে গেল হরিষে বিযাদ। স্থনিতে স্থনিতে কবিত্ব অধিক রমাল। ১৯ কোর ভিতর দান্তাই নানা অর্থ আনে। পাঁচালি রচিআ থুইল পোগার প্রমাণে ॥ প্রাক্তে শকতি আর পণ্ডিত নাহি দেখে। দেবগণের আশীষে পড় ক সর্ব্ধ স্থা রাম বলে গীত গাছ না করিহ ভর। ১৫ আমার পুত্র দোঁহে তুমি জগত ঈশ্বরী। গীত গায় গুই ভাই উত্তম র্থাল ৷ জেন মতে দীতা দেবী গেলেন পাতাৰ ॥ চারি ভাই মায়ের গাইলেন নরণ। কেকয় ব্যাজিতের আইল ব্রাহ্মণ ॥ ২০ বাবে ভরত গদ্ধর দেশ জিন। সবংশে দেশ রাম ছাড়িআ দিল আপনি।। কাল পুক্র সঙ্গে রামের হৈল দর্শন। সংসার এড়িআ চারি ভাই করিল গমন ম কহিল সব বুতান্ত রাম স্থানি সচকিত। ২৫ निष्परक नार्यन ताम रेमव निक् क्षिक है দৈব নিকার স্থান দীতার পাসরিল শোক যজ্ঞ শেষে দমপিশ জত সৰ লোক

প্রাক্ষণ সূব তুই হৈল পান্ধা নানা ধন।
ধনেতে স্থবী হৈলা সকল ম্নিগণ ।
সাক্ষাতে সভা দেখি হরিষ দশরণে।
নানাদেশ সভায় বুলি চাপিআ দেব রথে।
শক্তিরতা জীগণ স্বামা,সঙ্গে নরে। ৫
স্থানিসঙ্গে কেলি করে গাকে স্থগপ্রে।
ক্রতিবাস পণ্ডিত ভণে উত্তর রামায়ণে।
দান করি দশর্থ গেলা স্বর্গ ভ্বনে॥

রাজ্যথন্ত লৈক। রাম বিদ রাজকাজে।
কৈক্য দেশের রাজণ আইল দিবা সাজে।
ভপানী রাজণ দেখি একার সোসর।
রাজপরিচ্ছদে আইল রামের গোচর।
যোজা হাথী রাজবাত পাইক বিতর।
বাজ সন্তাবণে আইলা অযোব্যা নগর।
কৃতিকে আইদে রাজণ করে তোল পাড় ১৫
রাজণ আওসারে রাম হৈলা স্জাড়।
কৃতিক লৈকা চলিলা দেখিতে আপার।
পাতের সহিত রাম করিলা আওপার।

জ্বাপন ধরে নিল রাম করিল নমসারে ॥২০ বিষ কুশ বার্ত্তা জিজ্ঞাসি তরি সভাতলে। কোন গুণ ধরে মোরে মুধাজিত মগুলে॥ কুলে কুলীন মোর মানা ধনে মহাধনী। মোর রাপ বিভা করিল তাহার ভগিনী॥ বাপ মোর খুজা খেল পরম বাদ্ধব। ২৫ সামা ইইজা ভাগিনার কথানে গৌরব॥

হেন মাম। কলিলেন মোর দ্বিধান। মাত্যের মানা মোর শাসন না করি জান এতেক বচন বলি রাম হুইলা দ্বিত্ত কেকয় বাজার বচন বলেন পুরোহিত্যা মানা তোমার পাঠাইল রাজ আভরণ 1.4 দশ সহস্র পাইক দেব পুর সাজন॥ রত্ন পাটা রত্ন সব দেখিতে আপারে। নানারত্ব মধুর রাজ উপভাবে ভারে। যতেক বলিল তিহু আমার গোচরে। মনে পরিহাসে জিদি করহ সাদরে ॥ ১০ বিশেষে গন্ধৰ সৰ লোকে সৰ জানে। তিন কোটি পুত্রে জার বিক্রমে বাথানে। সিজুনদের ছই কুলে রাজ্যের পাতন। হাথে অস্ত্রে রাজ। করেন অপেকণ। গধ্বৰ্ব সব জিনিলে দে রাজ্য বইদে। ১৫ আপনে লড়হ আনে পাঠাহ পরিতোধে। মামার আজ্ঞাতে বাঁমে কহেন হরিয়ে। পাঠাইল ছুই ভাই ৰসিয়াছিল পাশে॥ मातिव शक्ष तिशाण कवि थ ७ थ ७। ভরতের হুই পুজে ধরাইব **দও**॥ <mark>২</mark>• রামের আদেশ হৈল ভরতের তরে। নৈতা লইয়া ভারত চলিলা লাইকোন আপনে ভরত লড় সৈতা লইয়া বিজয় 🗗 ছুই পুত্রে রাজা করি আদিব সম্বন্ধ। ভাই ভাইপো পাঠাইদ দৈয় বিস্তৱে । ই অথুবজি থুইল-লৈয়া সকেন্ত নগৰে চবিৰা অনেক সেনা বাজাই নগায়ে। প্রোহিত আৰু করি গেলা শামা

(429)

( a a to )

ভাগিনা নাজি দেখি রাজা হৈলা হর্ষিত। স্মাট্ডার্ড শ্লানে কটক আপ্যায়িত। প্রভাঠে গর্ম্ব উপরে কটকের ধাড়ি। হাতে শস্ত্র গদ্ধ স্ব স্ব গ্রিতে বড়াবড়ি॥ বাণ বৃষ্টি গ্ৰহ্মৰ্থ এতে জাঠি বগভা। ৫ शिथि मण्टिय ना तट्ट शीनाहेल (शाड़ा॥ বাণ বরিষমে গদ্ধর্ম ধন্তকে টফার। পড়িল অনেক দৈত্য করি হাহাকার॥ ভরতের তুই পুত্র তারক পুদর। সংগ্রাম জিনিয়া বলে ভরতের কোওর ॥১० ষ্মাপনি কেকর জুঝে পাছু জুঝে নাতি। রামের প্রিয় জুঝে ভরত মহামতি॥ সভার সঙ্গে জুঝে ভরত মুরতি। রাণে দন্তাইক। মারে নদনত হাতি॥ কাটিমা পেলে ভরত সাজন হাথি যোড়া১৫ ভরতের বাবে গায়ে পড়য়ে সিঞ্ডা ॥ माउ बाळि तन देशन कौत नाहि जग। দেব দানৰ দেখিয়া হইলা বিশ্বয়॥ ভরত তাহার দলে জুঝে সাত রাতি। আজি রণে গদকের না পুঁই সন্ততি॥ ২০ দৃহর্ত্ত নামেতে অন্ত অত্ত অলহর। হেনই হুজায় অন্ধ ছুড়িল সম্বর। শমস্ত অত্তে বিষে গন্ধৰ্ব তিন কোট। **তিণ কোটি** গন্ধকা মৈল করি ছটফটা। এক অত্তে তিন কোটি গদর্মে বিনাশ। ২৫ দৈ**ষিৱা ড** দেবগণে লাগিল তরাস।। रम्भ रमाहर उद्या रोत भक्ष वरमत। নিৰ্মেক্ত মানামত উপজিল বিস্তর ॥

তাকশিলা দেশে তাক হৈল অধিপত্তিন পুদরের রাজ্য দিলেন পুদরাবতী ॥ রাজ সহ তুলি দিল অশ্বগজে আওমাস। পঞ্চ বংসরে আইল শ্রীরামের পাশ ॥ তাই দরশন করিল সাক্ষাতে ধর্ম অবভার 🛭 হুঁহে আসি যাথা নোঙাইল তিনবার্ম নানারত লৈয়া করি রাম দরশন। গন্ধৰ্ম বৰ স্থানি রামের হাস্ত বদন। ক্রিবাদ পণ্ডিতের সর্ম পাচালি। গদ্ধ জিনিঞা আইল ভরত মহাবলী ॥১৯ রাম বলে অবোধ্যাতে লক্ষণের কোঁওর। ভাল দেশ দেখিয়া করায় দওধর ॥ জে দেশে কোন রাজার নাহিক শাসন। জে দেশ বৰ্জিত নহে ঋষি মুনিজন।। হেন দেশে বভাহ লৈয়া আনহ লক্ষণে ১৫ সেই দেশে রাজা কর লইয়া ছই জনো রামের বটন স্থানি বদ্ধের সাগর। উত্তরা পথে গুই দেশ অতি স্থকর॥ विजान एतर निका रामा वीत ने नामा । के চক্রকেতু লৈমা গেলা ভরত বিচক্ষণ॥ २% इंटे तिर्म इंटे ताजा देश्ला आखमात्र। নিষণ্টক করি দিলা হ'ছে রাজ্যভার॥ इहे क्लाइत इहे एम्भ महानि इहे बीरत। রাম দরশন করি আশিয়া তৎপরে 🕮 চারি ভাইকে চারি রাজ্য দিল করি শাসনে মথুরায় রাজা কৈল শক্রন্থ নক্ষে। অবোধ্যাতে রাজ্য করি দিল লব কুলেন अहेकूमाद्य ब्रोका किना मश्राभक्षा

(443)

(6.34

শাপনপোৱে ভাইপোৱে না কৰি ভেদ।
পাত্ৰ নিত্ৰ কাহাকে না কহিল খেদ॥
কালা সহল বংগৰ কবিল বাজা ভোগে।
কিতৃবন তৃষি লাম বাজা তেতা হলগ॥
কালের সাগর রাম গুণদাগরী দীতা। ৫
কালা গুণে বনে পশুবন্দা তার কিসে চিন্ত।
কালাথের বছ দশ্রথের নাতি।
কালার নাম কবিলে হয় অর্গে বসতি॥
কালিবাসের কবিল দংলারে আনন্দ।
কালিবাসের কহিল করিল বিচিত্র প্রবন্ধ॥১০
কালিবাস অনুত করিলেন রামান্তে।
কালিকত হৈলা স্থান সকল তিত্বনে॥

কালপুক্ষ অংলাধ্যাতে কবিল গমন।
জলক আনল জেন দেখি গব জন।
য়াজবারে দেখি লক্ষণ বারের দেখান। ১৫
রক্ষার কৃত আমি আইলাঙ রামের স্থান।
য়াল্য ব্যবহারে মাধা লোঙাইল রামে।
য়িল্যলাক জিনি গোসাঞি ধানিকমতি।
বিশ্বার কাট জান কবিলে আবতি॥ ২০
রাম বলে ধাট জান কবিলে আবতি॥ ২০
রাম বলে ধাট জান কবিলে আবতি॥
সামা ঠাজি রক্ষাত্তিক্য আওসার।
সামা ঠাজি রক্ষাত্তিক্য আওসার॥
সামা ঠাজি রক্ষাত্তিক্য আওসার॥
সামা ঠাজি রক্ষাত্তিক্য আওসার॥
সামা কার্যজন ক্ষাত্তিক্য আন্তর্মার।
সামা কার্যজন ক্ষাত্তিক্য আন্তর্মার।
সামা কার্যজন ক্ষাত্তিক্য আন্তর্মার।
সামা কার্যজন ক্ষাত্তিক্য আন্তর্মার ।
সামা কার্যজন ক্ষাত্তিক্য আন্তর্মার বিশ্বার বিশ্

**्डामा मुजनरम कुडार्थ रहेशा** ५ अभून । इ আনার স্থানে ব্রহার আছে কোন প্রতিষ্ঠ काल भूतव बर्ल चार्छ सुनह बझ्ता তোমা সনে সন্তাধা না স্থানে কোনজন সতাই শুনিলে তাকে মারিব পরাণে। ৫ ব্ৰহ্মার বচন কেন না ধরশে মনে 🕸 🦈 রাম বলেন ভাই স্থানিশে কক্ষণ ে 💘 🐃 ষত্র করিয়ানা স্থানিল এসৰ বচন।। স্থানিবার কাজ আছে যে আমা পানে চায় তবে আমা চাঞি তার প্রাণ নাহি রয় \*> পাত্র মিত্র লৈকা লক্ষণ স্বার্থান রাথে রাজ কর্মা জত পড়ে সকল আংপেনে ৮ ঘারে হাথ দিয়া রাম বসিল তথ্য। काल शुक्रयतक ताम विवास चंडन ॥ े ः কালপুরুষ বলি তোমা পরিচয় করি ১৩৫ তোমার পূর্বদেহ সকল সংহারি ৷ 🔆 🕸 জ্থন করিলে গোর্মাঞি সৃষ্টি স্থান 🖰 মায়াতে উপজিল তোমার নশ্বন 🛊 💢 🦠 आभारक भेटाय देट्या मिरन अधिकातः সকল সৃষ্টি বুলি আমি করি সংহার । 🗫 মাআতে মধু কৈটভ হইল উৎপক্তি 🕬 নাভিপদ্মে ঠাঞি দিআ খুইল গুজানতিয় সকল সৃষ্টি রক্ষা করি দিলে অভুমতির কছাপ মূনির বাপ মারা ভূপতি মুক্ত ক্র সৃষ্টি রঙ্গা করি কৃমি এমাকে নিবেশভাগ্ন , এসার বোলে ডেখাম বৃষ্ণাইতে ক্ষান্ত্রীয় DIAN CECO CHARM MINES THE CHIRES

मर्का शोरेयां ছिल्म धनात मध्य वरमत । **মহ<sup>ক্ষ</sup> বংসর গেল** তবু না হৈলে শহর॥ বিশ্ব ক্ষরভার হৈয়। হৈলে মর্ভ্যক্রলে। काशाद्ध देवथा ना पिद्य गुज देहदन ॥ স্বৰ্গৰাদ এডি জবে থাক মন্ত্ৰ্য বাদে।৫ আপন ইছাতে থাকিলে লোকে পরিহানে ন্ত্রাম বলে ভোমারে আমি হরিষ আপার। আমি গেলে হইবেক সকলি সংহার॥ অথা হৈতে আইলাম তথা করি গমন। অপুকা তুমি মহাশর অপুর্ব দরশন ॥১০ কালপুৰুষ দনে রাম করে সন্থায়ণ। হেন বেলা ছর্কাদা আইল ততকণ। ছর্কাসা মূনি জে তেঁহ তপের সাগর। সর্বশরীরে তার দেখিতে পাছর॥ প্ৰম প্ৰানে ত্ৰ্বাদা দেখি চবিত I>৫ উন্মন্ত পাগল মুনি সংসারে বিদিত ॥ উद्धल भिष्मण छाउँ। दम्बि गाति। রাজস্বাবে দেখি বসিয়া লক্ষণ হ কারি।। मार्ग (मिषिया ग्रीम विशेश छेडते। স্থামে লোচর করি আমা লেহ ভিতর ॥२० ছ্র্কানার ভয়েতে ডরাইল লক্ষণ। क्षांप्रदाश कति कि इ तरनन वहन ॥ চারি রেদে বিধান তুমি সে অবতার। কোন দিগ ইইতে তোমার আগুদার ॥ কথা ক্রথা গোসাঞি ভোষার আগমন ৷২৫ द्यामास महिमा अन् चमित द्यान अन ॥ बादीएक बन्धर कृषा सद्यातम दकारण । nona neksyl by cen uich i

হর্ণোর তেজ আর ভূমি দে মুনিজন প্রনের গতি আর জলম্ভ চতাশন 🕸 সংসার তারিতে পার ভোমার শক্তি। তুমি পবিত্র করিতে পার বস্তমতী। থানিএক গোসাজি কুপা কর মনে। আমি কি বলিতে পারি তোমার চরপে থানিক বিলয় কর্ছ গুনহ বচন। কোন কাণ্য লাগিয়া বিরস করিছ মন্ত্রীয় জোডহাথ করি লক্ষণ জত বোল বলে। পাকল আঁথি করি মুনি লক্ষণ নেহাকে ॥১৯ অংশেধ্যার রাজা তোমরা সংসার ঠাকুর্ তেকারণে দর্প তোমার বাড়াছে প্রচর ! लमान লজ্জা নিবারণ যোৱে ছেন সৰ গণে। শাপ অধি দিমু আজি কোন জনে তার। শাপ অগ্নিতে পোডাইব অযোগানগন্তী 🖟 नमान भारत हारह मृति নিকংশ করিমু আজি দশরথ নুপতি ॥ যুনির গুনিয়া বোল ক্ষণ ছাড়ে নিশান। चाना गानि रूटद दक्त वारशब तथा सामग्र ्लाहाम माशा हि॰ কালপুক্ষ সঙ্গে রাম ছাড়ে গুপ্তক্থা ॥ কালপুরুষে রাম মিলেন মেশানি। हुकीमादक नमस्त्रि दिन्त, पामन गरिस क ভোডহাথে বলেন রাম কেন আগমনাঞ प्रसामा दरम अभिक नाहि व्यक्तान्त है। আহার নাহি করে । এক সহত রংগ্রহ

शादना कबार ट्याट्स एवस गाइन स

/48b

্ৰে ৰোল শুনি রাম হইলা চিস্তিত। পাৰিণ করাতে মনিকে হইলা তরিত॥ শ্ব বাজন তথ্য আইলা সভরে। পারণ করিয়া মুনি গেলা নিজাল্যে॥ करिंग्द्र केथा छनि साम जुलि मत्न मत्न। ब প্রথক্তা কহিতে রাম দেখিল লক্ষণে॥ **কৈনি কর্ম ক**রিব নির্ণয় করিতে নারি। দার্যন করি রহিলা তিদল-অধিকারী॥ ক্ষমে ভোলপাড় করেন চক্ষেতে লোহ পড়ে পার্জ সিত্র ভরে রাম নিখান এডে ৪১০ প্রীত্র-মিত্রের মূথে না আইদে উত্তর। ক্ষোড়ছাণ করি বলে নহিয়ে কাতর॥ মান্ত্র মোহ ছাড়ি মোর করহ বর্জন। স্তা বলি গোদাঞি তুমি করিবে পালন। জুমি একা ভূমি বিষ্ণু ভূমি নারায়ণ।১৫ কৈমোর মহিমা প্রভু জানে কোন জন॥ ফার্বি বেদে ভুলনা দিতে না পারে সংসারে র্ষিট মহামুনি আইলেন তৎপরে॥ প্রভাক্তি তপদীর করি সভাষণ। ইকাঁদার বচনে জেন আইল লক্ষণ॥२० প্ৰভিত্ত সৰ বলে কোপ না করহ মনে। প্রভা ক্রম হইল কি করিব লক্ষ্রে। বিষ্ণু-অবভার তুমি ধর্মশরীর। জনি যতা শশ্বিলে গ্রিভূখন নহে স্থির। রাজা করিবারে বাপে 🌞 পাৰ্ভিশ তথা কেকই দভাই। गणा कवित्र हाका आतृन काउटन। स्वार शक्ति रोका वाम शोठाव रान व

সভা করিল রাজা সভাবিভ্নানে 🕍 🦠 হেন কালে • \* পাঠাইল বনে ছ তোসা পাঠাইয়া রাজা প্রাণ ডেজিল টি প্রশোকে রাজা সকল মঞ্জাইল 🖟 🤼 সতা লাগি তোমার এতেক তুর্গ**তি**। সভা লাগি \* \* পাইল খেডি 🕷 পো বৰ্জিতে ভোমার বাপ কাহি নাহি আহন তাই বৰ্জিতে তুমি আনিলে দক্জনে ॥ বাপ হইতে রাম তোমার আধা বাধান ভাই বৰ্জিতে তোমার স্থানি অনুমান ॥১• ভূমি বৰ্জিলে লক্ষণ মরিব ভতক্ষণ। লক্ষণ-মরণ হৈলে ভোমার মরণ 🖟 🧦 তোমার পশ্চাতে ভাব সকল দংসার। শকল শুক্ত করিয়া তোমার **আঞ্**সার 🛊 ভাই ভাইপোয়ে ভূমি পর্বতের চুড়া ১১৩ তুমি না থাকিলে সকল হইবেক গুড়া 🖟 দারণ শরীর পড়িলে নাহি প্রতিকার। পাত্র সঙ্গে চিন্তা করি সকল সংসার ম ছাতা দণ্ড ধরিতে তুমি করিতে অধিবাস বাপের সভ্য পালিতে গেলে বনবার 🖹 স্ব্যিতদা গীতা এড়িলে পরময়করী। ন্ত্ৰী ছাড়িয়া রাজ্য করিলে হৈয়া ভ্রমচারী। জত কর্মচারী ভূমি না করি মন্ত্রণী 🚈 🥇 লক্ষণের লাগি কেনে কর 🔹 🛊 🗗 তোমার সতা লভিব জমি জীবের সমীণ হৈ লক্ষণ জীবার তরে কৈল প্রয়োজন 🛊 🖥 আপনি জানিয়া কেন কর অন্তমান। 🔭 wisa bilisti chinilee den affectel e

(440)

क्षाम बद्धाम द्यामाद्य कत्रिमाड वर्ष्क्रत्म। **ट्याबात महिटड** डाहे माहि मत्रमत्न ॥ कालशुक्रय महत्र कृषि इव आध्यान। প্রতিভা করিল তোমার লইতে পরাণ। মরণ তেজিতে লক্ষণ হন আগুনার। মতা লাগি তোমার সহি এত ভার। নোণার মাঠি এড়িলেন রাজ-আভরণ। बार्यक हत्रदेश विनाय गात्रिल लक्षण। बोक्राक्ष शाह शाह जीव जिल मन (नन । সর্যুর জলে লক্ষণ করিল প্রবেশ ॥১০ সর্যু নদী বহে অতি খরদান। ঝাঁপ দিয়া লক্ষ্ণ তাহে তেজিল পরাণ॥ মুখাদেহ ছাড়ি হইল দেব-মুরতি। विक्रुक इजूर्थ जः में देशलन (मरवद शिदिणि নেৰগৰে লৈজা গেলা বৈকুণ্ঠপুৱী ॥১৫ निक्षत नदीदा मिनाहेन त्मरत नमकति॥ ब्राह्मद स्मवा कति लक्ष्म देवक्र्छ शिला। नमस्नद्र छन स्मिथ भूमकि छ देश्या ॥ ক্সজিবান গভিতের সরস পাঁচালি। ৰামান্ত গাইল অভুত গিকলি।।২০

শক্ষণের মরণ শুনি প্রীরাম কাতর।
ছাতা দও ধরিছে চাহে তরত উপর ।
ছাতা দও ধরিছে চাহে তরত উপর ।
ছাতা দুও করু নহে অধ্যোধ্যানগরী।
ভবত ভাই রাজা হৈবেক দুওধারী।
ু ক্রিদি বংগর হাজা রাখি।২৫
ক্রিটে হাজা হব ব্রহ্মোক বিশ।

14 Steel ....

Section 1

এতেক বলিল হাম গুনি পারভাগে। জোড হাথ করি বলে এরামের আগে নানা ভোগ ভূঞ্জিল করি নানা অধিকার তোমার প্রসাদে রাজ্য করিল সংসার। ধর্মপথ পাছু হবেক তোমাতে মোর মন্তি তোমাভিন্ন রাজ্য করিব জবে আছে মজি 🛊 ভোমার পাছ জাব আমি আমার ব্যবহার তোমার বিহনে মোর কিনের অধিকার 🖟 অযোধ্যাতে কুশ করি ধর ছত্র দও। উত্তরদিকে রাজা হউক লব প্রচণ্ড ॥১• হুই ভাইয়ে রাজা করি রাম মহাশয়। ছত্র দণ্ড দিয়া রাম আর কিছু কয়। এতেক প্রমান পড়িছে শক্রঘন নাঞি স্নানে শত্ৰুখন না দেখি রাম মনে মনে গুণে ॥ ভরত বলে রাজাথও ছাড়ি জীবনে আশ্বাস হেট মাথা করিআ কান্দে ছাড়িআ আশ্ দ দণ্ডবৎ করি বলে পড়িসা ভূমিতলে। রাজ্যের তরে রামে বুঝাইআ। বলে। রাজ্যখণ্ড লোটাইআ কান্দে তোমার আদে রাজ্যথণ্ডের বার্ত্তা তোমাকে জানিতে লালে রাম বলেন কোন দান দিতে হয় সমান জেই চাহ তাই দিব গুনহ প্ৰমাণ্য दाजाय अ वर्त किছू ना माशिय मान। তোমা বিনে আমা নবার গতি নাহি আম তোমার প্রসাদে ভোগ ভূজিল বিস্তর ২০ আমা স্বা সঙ্গে করি লেহ গণাধ্য 🛭 কি করিব ঘর বাস কি করিব ধন। এই প্রস্তাব ভানিশে হয় পাপবিদে

(44)

কোন ভাবে তোমা বিলে থাকিব সংগারে ভৌমার সহিতে আনরা জাব অর্গপুরে। असिक शकादा देकरण मछात्र भागन। জাবার বেলে লভা ভাবে সকল প্রিজন। ভূমি এখা ভূমি বিষ্ণু তুমি নারারণ।৫ জোঁৱাৰ মহিমা প্ৰভু জানে কোন জন। **ক্ষায়ত্ত্তা কি বলিভে পারি ভোমার চরণে।** যদ্ধি ক্লা কর গোসাঞি আপনার গুণে॥ ভূমি পূৰ্ণ তুমি মঠা তুমি সে পাতাল। সুর্বেদেবের দেব তুমি ভূমি নিরাকার ॥১• প্রনাম মূর্তি ধর গোসাঞি বৈকৃতে স্থিতি। **সংসার্থালন হেতু খাপনার গতি**॥ থাত ক্ষতি করি জদি বলেন পরজা। জার্থাস করিয়া ভারে বলে রাম রাজা। ভাল ভাল বলি রাম করি অঙ্গীকার।১৫ **অনুধা সংগ্ৰ** যাবে যদি ছাড় ঘর ছার। রামের রচনে প্রজা হর্ষিত মন। আপন ভবনে পেলা হইআ একমন॥ পুঁই পুৰ্যে ব্ৰাহ্বা বাম করি ওভক্ষণে। পাই সভ্স রও একা পাঠাই ততকণে।।>• পাই মুহল বুখ পাইল জনে জনে। বিষয় হতী দিল বিষয় দিল ধনে। বিশ্বর দিলেন তারে হাবী নগড়।। **পার মত দিখ তাবে চড়িবারে ঘোড়া n** পাছালৈ পাঠাণ দত আনিতে বিভীষণ।১৫ भारतिकारकारम् सम्बन्धानसम्बन्धाः मानुद्धाः स्ट्रिकेट्टिण पूर्वः वर्षेत्रः। युक्तः । e adamient de résonación e

সকল বতান্ত কহি শক্তমের কারে ৮ 🗡 অংশাধা তেজিয়া রাম করিব গ্রামান কুশ রাজা করি রাম দিলা কুশার্তী বিভা व्यविधादक देवन डाजा मन महामण्डिक ভরতের হুই পুরে দিল অবস্থী প্রীদেশ্য রামের সংখে ভরত যাব মলে করি 🛊 🐇 वः भक्त छनि वीत दर्छ कति माधा। পুরোহিতে শতাঘন সকল কহে কথা # হ্বাহ নামে পুৰে করি মধুৱার নুপ্তির শক্রঘাতী সকল রাজা দক্ত অধিপতি গ্রহ বোড়া হাতী ৰাজনৈক দিলেক সপার। নানা রত্ত দিল আর ছনেক ভাগায়নাত ছই পুত্ৰে দৰ দিলা গড়িল দৰুৱে। वाम ८१विवादत आहेला अस्योधान्त्रद्व । जन अनन (धन (महिटक समाव। ১৫) বাকলথানি পরিধান দেখি গুরুত্রা মুনির বেশ ধরিষা খুনিতে রেষ্টিত। पृत रुरे छ ममस्रात रुरेणा महावीय 🛊 🛶 ছই পুটো দিল রাম আপন অধিকার। ट्यामात शमरन संदि कति स्वकीकृति । १३० ল্বণ মারিছে তুমি দিলে অবিকার 🛊 🐃 অণ্ড্যা বচন ভোষার কে লভিয়ৰ জ্বাস্থ্য ट्यामात हवन दम्सि अध्यासाचित्रक । अस्त यं जिस ना स्तर्या एक स्मान सम्बन्धि प्रदेश टर्न (जान मा राज आए क्या क्रान स्टब्स निग्नम कारिन ज्यानाकि र जाना गरम केरे राज्यास कृति स्रोध स्थम श्रम्णा ville same with many wind

(408)

बन्ड भेनेम दक्षीयी आहे श्रूरान । मण मीण मंदरस विविध खंडे भक्तजन ॥ গ্ৰহণক শ্বত গ্ৰহণদন। জাপুৰান ভল্ক আইল। এলার নন্দন। विजीवन पारिना मकल श्राक्रमन्। व बीबार्य कानिया कति हत्रगवनान । শ্রীরাম করিল যাতা সকল অন্ধকার। अंक्ष्मिं यादन अंकु नित्रा नाकन अहात ॥ দেৰক হলা আছি প্ৰভ কৰিআ আৰতি। উমি জাইবে আমি জাইব সংহতি॥১० द्वार्थ नेटलेन विष्टीयन ना कवि । स्थान। আখার গমনে তেনার নাহিক গমন। লছাতে অধিকার দিলুঁ ভুঞ্জ যুগে যুগে। আমার শপ্থ বলি বল আমার আগে॥ इन्मीन विने ट्डामीट्स अवननन्न 1: c আমার সংখ্যাইতে না কর রোদন ॥ शायर आभान्न नाम थाएक एवननानी। পृथिती धाकित यावर मानदतत्र भानि ॥ উত কাল হইবে তুমি অলর অমুর। मान किছ ना कतिरव आमि किए वत ॥२० भटकता विवित्त मक नाहि अमुर्डिनेटिन। . श्रीयांत नंतर श्रीर जूबि दर्कीन अत्यार्कतन अक्षों के के के बार्यान कारन उकालन । তিমুখীৰী হয় তুমি দিল বরদান ॥ खात में इन्सागम खांच त्यांत्र गार्थ । २६ क्षेत्रिक केष्ट्रांटक कांकुक हमात्र नरकरंड ।। . স্থায়ীয় দৰ লাভিলা খেন শ্ৰীয়ানে ডকতি। ent milie that wit of refer

কাহো সেশে থ্ক রাম কেছ সংস্কৃ কছে। রামের গুণ গান্ধা ভাষা আমনেল গড়ে । কৃতিবাদ পণ্ডিতের দকল গোচর। আপনি সরক্তী জার তুড়ের উপর ক

শ্যান তাজি রাম লডি রাত্রি প্রভাতে। মহাপথে যাতা করি জিজ্ঞাসি পুরোহিছে। অগ্নিহোত্ত লইয়া লড়িলা পুরোহিত ব্রাহ্মণ অযোধ্যা ছাড়িজা রামের স্বর্গগমন # রাজবন্ত ছাড়িয়া বাকল পরিধান। হাতে কুশেতে রাম করিলেন প্রস্থান 🗱 মহাপথে ধাতা রাম হইলা মৌনএতী। রামের সাক্ষাতে জার শন্ত্রী মৃত্তিমতী। मर्खि धति जञ्जावजी तारमत मिन्द्र । মৃতি ধরি রামের আগে যার আগুরানে ম नाना वक्ष मक्ष्म यात्र शुक्षस्थाकाञ्च । प्रद দেবমতা সন্ত্রী হত্তার দটকার # ব্ৰশ্বচারী সন্নাগী লড়িলা বিশ্বর। तारम व्ययु अ दिशन। मकन नगर ॥ অন্ত:পুরী লইফা ভরত করি আগুলার। তাহার পাছ কড়িলেন দকল সংগার 🗱 नश्रुक द्वाक हत्व टकवा औरवाक महिन गर्करमारक खी ठरम हा अप्राण हाएक करिय শক্রবন বীর লড়ে সভার পরাণ। देवबानी (वांनी ट्लानी हरन पातिस कांने क शांवत अन्नय आहेका नाम प्राम्य विके হর হার এডিয়ালিলের বেরের স্থান

(444)

(423)

কত কত চুলিল কতেক নিব নাম।

জীয়ামের চরণে গিথা করিল প্রাণাম।
জালের লাগর রাম দেখিলে মোহ লাগে।
ধর্মদার মূক হইল কেবা গেল সাতে।
জে জন শুনে গ্রভুর অধ্য স্থাবাস।
উত্রকাণ্ড গাইল পণ্ডিত ক্তিবাস।

দিন দিন পথ এজি এম নাহি মানে। হিমালয় পর্কত পাইল তিন দিনে॥ প্রস্থা ভাহিন করি চলি গেলা স্থথে। खनिया बाटमत नक गांव छेईन्ट्य ॥>• রত্রনিবিত রথ হত পথে প্রকাশ। দ্ধার আলাতে হইল স্থোর প্রতাপ। স্থগিক শীতল বায়ু বহে নিরম্ভর। अक्टब्स्ब्रा आप नीख नाट्ड विद्यान्त ॥ शका मन्य यथा वटर यज्ञ र 156 \* ছাড়িश প্রভু দিলেন উত্তর ॥ পুর্বাপুরুষ মৃক্ত মোর সর্যুর জলে। গলা ছাড়িয়া গোদাজি দরবুকে ধলে॥ পিন্তা দেখা দিলা মোর সরযুর তীরে। শ সে অস্তরে ॥२• विमन् रमिथियां त्रीका (१) निक निन नान। লিও শাখা পিতা মেরি পেলা স্বর্গতাল। সর্য বাখানি প্রভু আপনার গুণে। হেন কালে এক। আইলা জীরামের ভানে।। अनारक तमित्रा ताम राजन वहन । २० ক্ৰীরামে ধ্রেরিয়া একা কমিল ক্তবন।

आहेन आ**देन त्यानां कि आ**हेन अर्थपूद्ध । ভোমার মহিমা প্রভু কে ৰলিতে পারে 🖟 আমা হেন কভ ব্ৰহ্মা ভোমার নাভিত্তবোঃ आपि कि विविव शकु ५ तथक मरण ॥ वड़ डागा मानि প्रड भारेश पत्र मिने। আপন মৃত্তি আপন দেহে করহ প্রবেশ । দেবের দেব ভূমি তিভূবন-ঈশর। সকল সংসার নতে তোমার অগোচর ৮ তিন ভাই श्रांत्र कृति ब्राह्मत नहीं दि। বিষ্ণুমন্তি ধরিয়া গেলেন স্বর্গপুরে ॥১০ তা দেখিয়া দেবগণ করে হাহাকার। हावि डाहेत भिवन प्रिधि वात्त्र हम् का म সর্যুর ভালে দেহ ছাড়ি ব্রহ্মার বচনে। এক শরীর হইলা দেব নারায়ণে ম চারি ভাই বিষ্ণুশরীরে মিশাইল আরে।১৫ **८**भव मानव देनका मद कति नमसादहत विष्यु यत्नन एर इ उन्। उन मान्यस्त । (ज भव काहेम त्वाक सांगात गगम ॥ স্বৰ্গবাস তা স্বার কর্ছ মূগে মুগে ॥ এ मन कहिल निकृति उमा आल्या । १० विका रामस अन दनव भनावतः। मुखानक माहम पूर्व स्विमा भूतमात्। রাস নামে প্রাণ ছাড়িব জে বেক্তিঃ সন্তানক নামে পর্গ ভাহার ব্যক্তি 🖟 💍 গস্তানক পর্য বন্ধলোকের পর হেও সন্থানক আগে বদিবেক কোমার অন্তর। তোমার নাম গুনি, ছক্তি না করে জে লোকে कुछ नद्रदक भेटल जात रुप दलात्क क्षे

(828)

(418)

রামের অভ্যন্ত তন্ধার কথা গুনে। সহযুৱ জালে দেহ ছাড়ি রাম নামে ॥ গ্রন্থ পালে পাল দেন ছবের উপর ভাসে। রাম উদ্দেশে প্রাণ ছাতি গেখা পর্যবালে। য়ামের অভ্চন্ন নৰ হছিলা স্বৰ্গবাদে। হানৈর লকে ভোগদ্বাথ করি অভিলানে ৫ একা স্থান করিলা রামাখন্তার। এখা চিস্তিত যেন মতে হৈব প্রচার। ग्रुप्ती श्रमास + महामस्ति॥५+ পঠিকে পোধা পড়ে পণ্ডিতে বাখানে : त्नित्वा अभिवास इम युग अधिकारम ॥ इतिरांत्य गीक असि उड़रे मध्य। শুনি ব্যক্তিকা পুৰা হয় পাপ দুব।। खान नरना वांका नृत्युत कर्नुन ।) व গাঁভ শব্দে গাইফ গুন রাম্যায়ণ। ব্রাক্ষণে জনিবে পায় ওকর পূজা। **क्लिंगे क्रियल इप्र श्रीवेशेंड डाका** । दिश्र क्षेत्रिल माना घटन दावृष्ठ पुरु। পদ্ৰ শুনিয়েশ হয় ভকতি বিভার ॥২० मध्मादब समिदब दृदन कुछिवाम शाहांनी। धाराज अमार्क छनि नाना अर्थत्कि । राहात श्राहात स्थान त्रामावन। **इस शिख्य बार्गिय करत्र (धर्म नार्वाधर्म ॥** बाटबंब रामटन सामावन कवि मक्कि ।२० নাত কাত পোথা গান করিও পাচালী। में है। द्वारण कति विश्व कमगरनाहन। मार्थान देहता छन भागात वहन ।

পুটাঞ্লি কৰি বলি জন পুরুদ্ধ। 🗀 🐇 সাবিধানে তুন গোদাঞি দেব গৰানৰ 😥 দেবগণে বাৰি গোসাভিত ধারণ করি ক্ষয়। एकामान थामारम रहामाकि मर्करक सन्ना তুনি এক। তুনি বিষ্ণু তুমি দে শঙ্কর 🕫 🦈 ভূমি যে গোলাকি চারি বেণের **ঈখ**র ॥ নেত্রের অংগাচর কৃষি স্থপশূর। বিভার অবিভার ভূমি পাপ আর পুলা। ভূমি স্বাষ্ট বিভিন্ত ভূমি ভূমি যে সংসার। ভূমি দে গৰুল গোমাঞি কেছো মাহি আই তুদি যাল তুমি দান জুমি বজন যাজন।>• कि इयरनत मार्ट्स इमि ८५ एकन ॥ বিহানে বিধান ভূমি সে মহাখোগী। ভূমি চারি যুগে গোধাঞি ভোগে মহাজোগী रेटल व वहरम यास देशका शताबन १५४ কাৰে তবে নাজৰ মারিলে না করিয়ে ভয়। আৰু! বিভ্ৰমানে ভোষার নাছি অপ্তয় চ রাক্ষন মারিতে তুমি হৈলা দ্বায়॥ হাগ্যেছ করি বলেন পাক্রশাসন। গুল অজিতা মোৱে ক্রিলেন ভাপন ॥২० সতেক সতেক গম্ভা হৈলে আমার জানে কিন্তু মোর বিস্থমানে॥

\* \* কিন্তু মোর বিভ্নানে।
সপ্দরা নাচাঁরি গাঁত গায়ায় হরিখে।
প্রেশবে নাট বেলে তোমার প্রসাদে॥

\* দেখে সব দেবেতে মিলিআ।

চিত্রগুর নামে ধরে গন্ধর অধিপত্তি।

বাদে পোয়ে ধেলি রাজ্য করেনকাড়তি

'Real

1030

হাঁহা হুছু নাম ধৰে গ্ৰদৰ্কেৰ বাজ।

\* \*

উন্ধানীদি গদ্ধৰ্ক নাচন্তি হবিবে।

শানা পৰে গাঁত গায় নাচে নানা বেশে॥

\* \*

\* গাঁতে তৃষ্ট হৈলা সব দেবগণ।

শাস্ত্ৰীকে থাকি বলে ব্যত বাহন॥

সুত্ৰা গাঁত আৰু শেষে বলে শ্লপাণি।

গোবিল দকে হর রহিলা কুড়াইকে ।

সকল দেবগণে প্রাকৃ দিলা ফোননি।

শারোদে লড়িলা প্রাকৃ দেব চক্রগাদি ॥

\* \* \* \*

বৈকুঠে মিলিলা প্রাকৃ লন্দ্রী নারামণ ॥
কবিবাদ পাত্তিত তবে রামের চরবে।
উত্তরা হইল দাল গীত রামায়ণে॥

উত্তরকাও সমাধ।

#### রামায়ণ

# উত্তর কাও।

----

( অপ্রচলিত শব্দের তালিকা )

9

আইব...৪৫/১ ২০; হইল।
আউনিঞা 

আমী নৈতা।

আক্ষা 

১০ এংখ, শোক।

আক্ষাতি 
২৫৬/১/৪; অথ্যাতি।

আক্ষাতি 
২৫৬/১/৪; অথ্যাতি।

আক্ষাতি 
২৫৬/১/৪; অথ্যাতি।

আক্ষাতি 
২৫৬/১/৪; অথ্যাতি।

আক্ষাতি 
২৫৬/১/১; অভ্যান।

আক্ষাতি 
২২৭/১/১; অভ্যান।

আক্ষাতি 
২২৭/১/১; হতের অলকারভেদ।

আতিস্থি 
২২৭/১/১; ছলনা। প্রবঞ্চনা।

আবাত্তবে 
২২৭/১/৭; ছলনা। প্রবঞ্চনা।

আবাত্তবে 
২৭২/২/২; ছলবস্থা, বিপদ্।

অব্যাত্তবে হইতে 
বোধ হয়

এই শক্ষাত্তবে উৎপত্তি।

অবেক ... ২৬ ৮) ১১৬; অর্দ্ধেক ।
অনাগত ... ১) ১৮৪; ভবিষ্যং ।
অনুক্র ... ১৮) ১০৪; বিলম্ব ।
অবেক ... ২১৮) ১০৪; অবেক্ষার ।
অবকর ... ২২৮) ১০৪; অবশস্কর; নিন্দ্রনীয় ।
অবাত ... ১৮) ১০৪৮; অবশস্কর; নিন্দ্রনীয় ।
অবাত ... ১৮) ১০৪৮; তামার অরাতি
করিবেন শত্রে ভার ব্যবহার
করিবেন ।
অরাহি ... ১১) ১০; অরায়ঃ, আুসরমৃত্যা ।

্তা

আইর শুহ দাস্থিব , ১০াসাজ ; এয়ো ;

সথবা ।
আউট দেৱবায়েজ ; অই, অটি ।
আউদত্ত ৪৬াসাস ; ৫৭া২ ২১ ; ২২ নামা

২৭ ; ২৩০াসাল ; ২৩সামাস ;

২০হাহাহহ ; ইজ্বাসাল ; অলি ।

আউনিঞা ... ৬৪। ০।৯; অগ্রানীক অগ্রথামী

দৈয়।
আউলী .. ৩৮।১।২; 'আত্রতা' হইবে বাঁষ'
হয়। (বেমন' বাতৃল' হইতে 'বাউল')
আওআরি... ১১৪।২।১৭; ১৬ গ্রাহ

অশকা...১৫৩ হাই : ; অক্স (

'वारादि' भुक्त स्वाद हेन्। जातादि भरता मध्य होस्याः।

# অপ্রচলিত শব্দের তালিকা

(माकान, शांठेजानि । कविकक्न-চন্ডীতে—"গাণে কিয়ে আও-° য়ারি আওয়ায়ি"(বং সং >৬পুরা) व्याख्यांत्र... ১১।३।२०; २०।२।১৯; ६৮।२।১৮; 1917128:4617126-2176:00 2128: 20612128: 28912128: > दशरा ७-२२ ; ५१८। ३१२ ; ১৮৯।२।२¢;১०७।১।२६; आवाम । আওদার ... ২১২। ১।১৯; আগুদার, অগ্রদর। विवाभ। व्यक्तिमा .. > २।२।२ : হইবে বোধ হয়। আখাড়--> ৭৪।১।২৪; অথও। আথড়াবাড়ী হইবে কি গ আগল...২৪৬।২।৭; ২৫৫।২।২৬ ; ২৭২।২।৫; অগ্রগণ্য, শ্রেষ্ঠ। আগলিতে…২২৪।২।১৭: আট কাইতে १ व्यागम ... २१। २। २) , तका कता वाहे काता। षा छ... २२।२।२७ : ७३।३।२० : २००।२।३८: অগ্রে। च्यां खिनां ...२०।२।२•; शूरतावर्खी दहेगा পথরোধ করিয়া। আঙ্গার..: •৫।১।১৯: অঙ্গার, কয়লা। আঙ্গিনা...৫।১।২২ অন্তন: উঠান। আলগব ...৬৭।২।১; অভতপুর্দ্ধ। আঝর...( নয়ানে ) ১৯১৮; দরবিগলিত অজ্ঞধার পদতা।

वाएनिका...२>२) २।२०; वाउनिक, ভাগ্ৰাগায়ী। আতে -২০।২।১৮; বিস্তারে, প্রস্তে। আতিভিত্তে---২৬৮।২।২১; ব্যস্ত সমস্ত ইইয়া। আর্থাই...৯৮/১/১৬: আর্থাত। जार्था खरत्र ... ७ । १।२२: १७ २० २७: १३२ १११० তরবস্থা। আদাড়…১৭৪৷১৷২৩; বেড়া,ঝোঁপ অবস্থা-স্তরে জঙ্গল (१) वाँधत...७। । २। २२; व्यक्तकात्र । व्यान...)२३।२।५१; ३३३।२।७; २७२।३।३२; আন্ল ২৬৩।১।১৪; অনল; অগ্নি। আন্তর...১৯১।२।১२; অন্তর আৰুতে...>> ৪। ১। ২৪; পুং-জননে ক্রিয়ে। আপার...৪।২,১৮; • ৭।২।২৮; অপার। ष्या ... २७। ১। २) । जा श्री है । আয়াস - ৩৫/১/১৭: তারাম, চেষ্টা। আরোপণে...১২৪।২।১৭; বামপদ আরো-ন পণে বাদপদে ভর দিয়া। আবস্তা... ই৬৮।২। १ ; অবস্থা। আশোয়াস ... ৫২।১।২৫, আখাস।

আহিডি - ১৫১। হা১৫-১৭, 'ক্লাভীর' শব্দের

অপভ্রংশ। গোপ, গোরক্ষক। প্রাচীন বাঙ্গালা ভাষায় শক্টি

'वााध' अर्थि अयुक्त रम ।

Se Se

57

ঈষতে - - ২৪১।১।২; ঈষৎ বা অল্লকালের মধ্যে। চকিতের ভার।

উ

উনি...৫৪। ১:৯; 'দিল উনি' অর্থাং উঁকি
মারিরা দেখিল।
উপ্রবেলে ০:২৭ ১। ১১; উগ্রসমন্তে, ধরনেলায়
অর্থাং গর্ভাবানের অনুপ্র্তুকাল।
উক্তাল...৬৪। ১০১; ফোরারা।

উচ্চুর...১২৩:১৷২২;১৭৭৷২৷২১ ১৭৯ ১৷১৩; 'উৎসূর' শক্ষাত। স্থারং স্থাং।

অতিক্রান্ত: — উৎস্থর:। দিনাবসান, সন্ধ্যা।> উজিলা...৯:।১।৬; উদগত হইলা।

উঠানি ... २१। २। १: উथान।

উত্বড় · · › ৫ ৪ ৷ ১ ৷ ২৪; 'পাইক রাউত ঘড়'

হইল । ছাপার ভুল। অর্থ পাইক

এবং রাউত্সমহ।

উৎপত্তি...২১।২।১৫; উৎপত্তি। উত্থালে...২৫২।১।২; 'উচ্ছাল' ও 'উত্থাল'

একার্থক বোধ হয়।

উৎসর্গন...( উদ্ধর্গন ) ১৫ গাসারে,২১ গাসার

• ২:৮।১।৭-১২;২৩৬;২।১৯; উৎসর্গ। উৎসুব্ধন••১৪৬.২।২•; উৎসর্গ।

উদাস...২ ০৯।২।১৫; উংক্ষেপণ। মোচন।

উন্নম...১৬।১।২৬ ; (?) 'উ দ্ৰম' হইলে অৰ্থ

করা যাইতে পারে। আত্মার একটা নাম 'উং'। তাঁহাতে বাঁহারা রমণ

করেন-আত্মারাম।

প্রাচীন বাঙ্গালার 'ৎনী' প্রায় 'ছ' হইয় য়য় ।
 য়ধা—য়ৎস্ত,—য়াছ । বৎন—বাল্লা, বাছা ।

উপ্লাইন ...১৬৩:২০৩; শরীরনির্মালীকরণ-গন্ধ-জ্রবাদি। এথানে উক্ত জ্ব্যাদি-জ্ঞাপন। \*

উনকুরী -- ২৩৭৮ । ২২২; বেখানকার যন্ত। উপগারে -- ৫৭১ । ২; উপকারে।

উপজান ··· ৭২।১।৭; উপজাত করেন— জন্মাইয়া দেন।

উপহত...১৬২।২।১৩; উৎপাত। উপুর...১৭৯৮১-২৬, উপর। 'ব্রাহ্মণ উপুর' অর্থাৎ ব্রাহ্মণের উপরে।

উদ্বিঞা - ৩৮ ১ ১৮; উপাড়িয়া, উৎপাটিত ক্রিয়া।

উকড়িল তেলাসাসত, ঐ ঐ, সং—উৎপাট্য উভধাইত্ত্বসমাস্থ্য উদ্ধিখালে ধাবন বা দৌড।

উভে... খুং।১৫, উভয়ে।

উরাথে...২৪৯।১।১৪, বোধ হয় এটি 'উর-স্থাণ' শব্দের অপস্রংশ। বক্ষঃস্থলের সাঁজোয়াতে।

छेक्यान...६२ २२२०, 'আরোহী দৈরু' হও-য়াই সম্ভব।

উরে...>৫৮। না২৫, \* উরংস্থলে বক্ষাস্থলে। 'উরে' উরুদেশে, জান্তুতে।

উলসিত ··· ২৪৩। ৭, উন্নসিত, আনন্দিত। উসিম্দি... ৭০। ।২৪, অন্থিরতাদ্যোত্ব ভারপ্রকাশ।

# The

উলভিতে ৮।১।১৯, বরণ করিতে। অধিকাংশ প্রাচীন এছে 'উর্থিতে' পাঠ দেখা যার।

### 6

একোই ... ১০৫। ১০০, একই। এড়ান...: ৩০। ২০১, ২৫৯। ১০৫, অব্যাহতি। ছাড়ান। এড়ি... ২৭১। ২০১২: ত্যাগ করি।

এথা…২২৫।২।২, ২২৬।২।২, এথানে। সং
—ক্ষত্র।
এহ…১৯২।২।২৮, ইহাও।
এহার ..২৬৮।১।১•, ইহার।

ওঝা··· ১৭৭।২।২ -; মন্ত্রজ্ঞ,পণ্ডিত 'উপধ্যায়' শব্দের অপত্রংশ।

ওথা · ভাষাই; ওখানে। ওদন···১৬০াহান, ১০৪|হাই৮, অন্ন।

#### **(**)

क्रांन .. २৮)।२।३; ज्ञान। करेका कि... ७ हा २ १९; करेका नि रेम ग्रानि । কণ্ডানি ১৪৭।২।৪; অশ্বের বেশবিশেষ(१) ঘোঁড়ার গা চুলকাইবার 'থর্রা' হইবে নাত গ কথোক…৯।২।১৩; কতক। कनकित...५०।। ३०; করিয়া। কলা .. ৭০৷হাহ; ২২২৷২৷২০; ( অর্থ মূলগ্রন্থ मत्था (पश्चितन ) কাকতলি...৬১।১।১৮; • কাঁকে. कैं। कड़िल ... ७२।२ ७; ५७०।५ २७; कैंथि जिल ... ७ शार १३ ३ ; २८ शार १३ २ ; ) द्वा महत्त कारकदर्श ६ । ३।२५; कार्शाकछ। कांग्रेब ... >१८। >१२०; केंग्रिस, कलेंद्रकत्र।

কুড়িআ...৫৪।১।৭;

কুড়ালি : ২১৭।১।১২; ) কুড়ুল, কুঠার কুড়ালি : ২২১।২।৭; ) বা কোদাল। কুলাইল : ১৭৮।২।২২; 'ফুলাইল' হইবে না ত ? কুলি : ১১৪।২১৪; পল্লী, পাড়া। কুশেশয় : ২৫৬।১।১২; পল্ম। কুশ্র : এ৫:১।২২;৯৮।১।২২;২২২।২।২; ২৩৭। ২।১৫;২৩৮।১।১০, সর্বাথা আস্রিত। হকুমের চাকর। "নীচ্সেবা নাহি করে নহে নীচের কুর্ণর" চৈঃ চরিতা-

মৃত, মধ্য, ১ম পং। "কুর্পরং যমদৃতানাং" পারোত্তর থপ্ত ৪০।৬৪॥
কেয়কার — ৪৭।২।৫; 'কা ইয়ং'— 'এ কে'
ইত্যাকার শল। অর্থাং 'এ
আবার কি বিপদ্ কোথা হইতে
তাসিল' ইত্যাকার ধ্বনি।
কৌয়ারী ... ২০৪।১।১৭; কুমারী। 'বৌরারী'
হইবে না ত ?
ক্ষম ...১৮৪।২।২; ক্ষমা কর। ( সং—
ক্ষম )।

2

শনতী…১৭৭।২।১১; 'খনিত্র'। এদেশে
চল্তি কথায় 'থোস্তা' বলে।
খনে…১৪৩।২।২৫; ২১৯:২।১৯; ক্লণে।
খনতি…১৭৮।১৮; এটি 'খনতি'। ভ্রাস্তিক্রমে 'খনতি' হইয়া গিবাছে।
পূর্ব্বাপর পাঠ করিলেই বেশ বুঝা
যাইবে।
খাঁথার…১২৩।১৷২৭; লক্ষ্মীছাড়া। আল্টর অভিধানে দেখা যায়,—
"থক্থর:—Beggars staff"
খান্তের…৭৩/১৷৮; স্তন্তের—থানের। অগ্লাঁৎ
এক একটি রোম যেন এক
একটী থাম। 'স্তন্তে খা' প্রাক্রত-

থেন্ত'যদি সিদ্ধ হয়। থেন্ত' হইতে
থান্ত' বা থান্তা' হয়।
থাল ডোভ - ৩৭।১।৯; জলাশ্যনিদেখ।
খুড়ভা --- ২৪০।১।১৮; ২৬৫।২:২৬; খুড়া,
খুনতাত।
থেচনী --- ৫।১।২৩;
থেচানি --- ১৬০।২।২৫;
থেদড়ে --- ১৬৬।১।১৭; দাঁত থিচাইয়া
ভাড়াইয়া দেয়! ('থৰ্দ্দ' দশনে
দশনং—দত্তকরণক ক্রিয়া)
থেন --- ১০৩।২।১৪; ক্রেমিণ। ক্রমা কর।
থেয়াতি - ২।২।১; থ্যাতি।

পুর...১৭৮।২।২৭; শার্ষদ, পরিকর। (জীরামের, পার্ষদর্শ-শ্রীরামের মনোগত ভাব ভালই ক্লানেন, তাই— গ গণ্ডি...) হাসভ : ধমুক। গাণ্ডীব। গাছোগভি

১৯২। ১।২৭ ; (মুলগ্রন্থ দ্রপ্তবা) शादी... १७ २। २-२ ; शाजी। शीरवन २६७:२।२५; २१०।२।১७; शीव्रक; যে গান করে। গিরি.. ২৫। ১।০; পর্বত। खनि... ১৮२ २। ५ ३ ; खनी - खनवान । 'मछ-বিজ্ঞ' অর্থও হইতে পারে। চলতি কথার বলে-এ লোকটা বডই खनी-व्यत्नक 'खनशान' जाता।

গুণা,...১২৪।১।৪ ; ২২৫।২।৪ ; , শুঁড়া ; চৰীকত। खन... >> >। रात्र : हिस्रा कत्। (शंश्रान...) • >।>।२१: छान । গোচরে - ১।১।১৮; গোচর করে; জানায়। গোফা...২০১।२।১৫; সাধন-গৃহ। গোহারি...১৩৪। ২। ২৪: ১৭৮। ১। ১০: २७৮। ১: ১२; আবেদন; প্রার্থনা वा नानिम।

ঘ

ঘড় • • ৪ হাহা হ; 'ঘট'; শক্ষ। বারিকুন্ত। 'ঘটা' শব্জাতও হইতে পারে। 'ঘটা' করিণাং ঘটনা। হস্তিনাং যুদ্ধাদাবেকত্র-সংঘাতীকরণম্।" ইত্যমর:। थनावर्ख... २ २। ७; शूव घन, शाह । यत-थान्डा--- ४।२।२; घटतत थाम।

घांठीला • २२२।२।७; ( मृलश्रद्ध क्रिया ) षाणि षाष्टि...१)।२।>८;>६६।>।६; २६)।२।१; (বিশেষ্য বা বিশেষণ) ন্যুনভা; থৰ্মতা। চলতি ও হিন্দী-ঘাটতী।

5

**च्छेब्री. (ठो**ब्रि...>>।>।२∙;२७।२।>৯; ১७०।> ী(২৬;১৮৯/২।২৫; চাল ?) 'চত্বর' শব্দজাত হইবে বোধ হয়। हर्ण .. 8२। २। ७, 'हर्ण निशा'--- ज्ञा जात्ता-পণ করিয়া, জ্যা চড়াইয়া। চাড়লানি...৯৷২৷২৪; চাল্ ধোষা জল' তো নয় ? চলর্তি কথায় যাহাকে '(हरलांगि' वरल। ठांखत ··११।ऽ।२४; ৮€।ऽ।ऽ६; ऽऽ४।२।ऽ७; ু ২৭০।১।১৩; চমর। উঠান, চাতাল, व्यामक्य ।

চাতুরী...১৮৯।২।২৬; 'চাতুর্ঘ্য-দ্যোতক'। চারিপানে 🖟 ৮।১ '১ १; চারিদিকে। চালুনি ... ৯৭।১।২; সচ্ছিদ্র—জর্জ্বরীভূত। চাঁকরাই ০০৮।১।১৫; চীৎকার। চীৎকার। 'চিকরাই **ठिकत्रार्डे...१७:२।२;**>>8।२।२२; ছাডে' বা 22313126;2831316; চিকবাই

हिट्टि.. ७३१३१, हिनि।

চিমাড়ি...৪২।>।৪; খননোপ্যোগী চে'ঝাড়ি...১৫১।২।১৬; আন্তবিশের। চেলীদার...১৬।১।৪; বোড়ার সহিস্। চৌতারা...১১।২।১; চাতাল। চম্বর। বেদী।

চৌধ জী...১ • 1518; ১১18152; ৭৩12158, ১৬২(২)২৮; বাড়ী। মহল 'চারিটি

### ছ

ছামনি...৯৭৷২৷১৮,

ছামনি...৮৷২৷২৪;৩২৷১৷১ • চলে—'ছামুনি

ছামুনি...৯৯৷২৷১৬,

নাড়া, 'ছামুনি

আছড়ায়, আছড়াইয়া। জোরে
ভূমিতে নিক্ষেপ করা বা হিচরাইয়া,
বলে টানিয়া।
ছোড়ান...৮৮/১/১৩; অব্যাহতি।

ছেঁছরি...१৪।১।२०; १७।১।२७; ১১৪।২।১৪;

#### 57

জবৈকে...১৩২1১।২৩; যধন।
জশা...২৭।২।১৪; যশসী।
জানান...৫।২।২৫; জ্ঞাপন, সংবাদ।
জিল...২৫৮।১।২৬;
জীলা...৫৯।১৷২;
জুঝার...৮৯।১৷১; ১৮৩১।১; ৯৭।১৯; ২৫৪।
১৷২; খোজা।

জুষার...১২১/২৮; ২০৭/১৯; বোগ্য হয়।
সং— যুজ্যতে।
ক্ষেক্...১১/২৮, যেন।
জোবড়ার...১০০/২/২৭; ডুবাইরা বা মাথান
ইয়া দেয়।

# ঝ

বড়া...১৭:২।১১; ঝটিকা।
বাট...১৭:২।১১; ঝটিকা।
বাট...১৭:২।১৯; ২১৬১।২৫; ২৬৭ ২।২২;
শীঘ্র। ঝটিভি
বাপিআ—১৭১।১।২২; ঢাকিয়া। আর্ভ
করিয়া।
ঝারা...১১।২।৬; ঝালর।
ঝিকে..১১ং।২২; ক্সা।
ঝিকি...১১ং।২২; 'ঝিকি॰ মারিয়া' পুব

লোলা দিয়া 'নৌকায় ঝিকি মারা'

এ দ্বেশে প্রসিদ্ধ । ঝিকি মারিলে
নৌকা শীঘ্র চলে।

ঝিল ৬৬ ২।২৩, ময়লা। শকটি সম্ভবত
'ঝিল্লী' শক্জাত। 'ঝিল্লী' শক্দের
অর্থ—বিলেপনমল, উদ্বর্তনাংগুক
প্রভৃতি। (?)
সুরে...১৯০।২।২৮, অশ্রুবর্ষণ করে।

# यशहलिक भरमत जानिका।

De

किहात..... १२। >1> , हेहींब ।

5

টিনে - ৫৫।২।১২ ; তুণে। টিটকারী---৩৭।২।২৫ ; • অবজ্ঞাসহকৃত উপহাস। টুঞ্জি --১৭৪।১।২৮ ; টঙ্ড; খুব উঁচু ঘর। টুটন ৪৩/২/২০ ; (ক্রটন) কম। ু
টুট্যা...১৩৬/২/৬; টুট্রা, ভাঙ্গিরা বা
কমিয়া, ক্রটিত হইয়া।

7

ঠকঠান্দি...৯৭।১।২৭; 'ঠকঠান্দি লাগে' অর্থাৎ সকলে ভীতচকিত হইয়া পড়িন। (?) ( মূল গ্রন্থ দ্রপ্রস্থা ) ঠাই···›১৬৮।২।২৭; নিকটে। ঠাকুরাল ··৯৬।১।১৫-২।১৮; প্রভুষ।

U

ডড়াইল ... > ৭ > । ২ ং ২ ; তীত হইল । ডর
পাইল । 'নর' শক্তাত ।
ডর... ২৬ ১ ৷ ১ ৷ ডর করিব (१)
ডকেরি... ২ ৭ ২ ৷ ১ ৷ ডাক সাড়া ৷
ডাগর ... ১৮৮ ৷ ২ ৷ ১ ; বৃহং ।
ডাগ্র ... ১ ১ ২ ৷ ২ ৷ ২ ; লগুড় । 'দ্পু'শক্ত (१)
ডাপুকা ... ৫ ৷ ১ ৷ ৭ ; বেড়ি চৈতক্সচরিতামূতে

মধ্য ২০ পরিচ্ছেদে ভাঁকেকা পাঠ আছে। কবিকক্কণ-চণ্ডীতে ১০:১১০০ (বং সং) 'বাড়ুকা' পাঠ দেখা যায়। ভাব্স...৪২ ২।৪; অস্ত্রশস্ত্রবিশেষ। ভাহে ...গৃংহা১১; (??) ভাহিন ( দক্ষিণ) দিকে হইবে কি ?

6

 করে। 'গোমালি' খুব মাতা-মাতির রসের গান। এখানে অর্থ হইবে—'ত্তুপনা'। ত্রক্ত ছেলেকে 'গোমাল-ছেলে' বলে।

# অপ্রচলিত শব্দের তালিকা

ভড়িতাপড়ি ... ৭৷২৷৬: (?) প্রকরণান্ম্সারে বোধ হয়—উদাসীনবিশেষ। তথি ... ১ ১ ৷ ১ ৷ ১১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ ১ ৷ २१२।२।२८; ११८।२१६; -११।३।२; ३४६।३।२२ ; ( त्रशास २७६।२।३७; তথো.. ১৯৪।২।২০: তত। ভমু০০০ ৪৫(১) ১; বোধ হয় ছাপার ভল "তম" হউবে। 西刊... 99 SISE ; 353 を150 ; ) ১৩০। হাই ; ১৪৮। হা১৪ ; ১৬৯। হা২৮ ; ২২৫। হা৮ ; তথাপি। ভরাতরি তেজা হাহহ ; 'বরাবরি'--ভাডা-তাড়ি, শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ। তাজি ... ৬৪।২।৮; ১৮৩।১।৩; তাজা, টাটুকা। তাজন ২২১/২/২৮: অর্থাৎ থাটিয়া থাটিরা যাহার। অবসর হয় নাই। তানার ..১ ০০। ১০ : তাঁহার। ভাপরে...১৩৭।১।১৭ ; তৎপরে। তাহার পরে

তাসভার---২৫৭।১।২; তাহাদিগের সকলের। তিতল সংসাহাসম : ভিজিল। তিয়ড়ি --- ২৬৫।২।১৩ ; পাক্ষবিশেষ ( মল-গ্ৰন্থ জন্মবা ) তিহো...२৬৮।১।১०: তিনি। कृरख---२२।ऽ।ऽ६:५७।ऽ।ऽ०:ऽ७४।ऽ२: मृत्य । তুরা - ১৬৪।১।৭; তোমার (সং—তব) তুরিত...১৷২৷১০: ২৫৷১৷২৫: ৫৭৷১৷১২: ২৫৭।২।২৬ ; ছরিত ; শীঘ। তুলি ন ২৬৫।২।২০ ; তোষক, লেপ। সং — তুলী বা তুলিকা। ভেঘাই ১৯৫৪(১)৯৫ : (१) তেন - ১৩৪/২/২৩ : সেই প্রকারে তেপাতত্ত্তে...(লাখা) ৯; তেপান্তর...৭ খা ১।২৫ ; প্রন্মানবহীন
২১ খা ১।২০ ; শূক্তভূমি। তেয়জ…২০৮।১।৪ , তৃতীয়। **उट्हां...>२।५।७; ५३।२।२०;** ২৩৷২৷১২; ১০৪৷২৷১৯; তিনিও৷

### श

থেঁতল্প-১৫:১।১৬; থেঁতলান; দলিত করা⊹ থু∌বোঁ---৩৪৷২৷৩ ; রাথিব 'ফ্ল

দত্তাথানি (।১।২৪; (?)
দীঘলে...২৩।২।১৭; দীর্ঘে।
ছরাক্ষর ৪৬।১।২৭; ছর্বচন।
ছর্মারী ০১৫৪।১।২৫; (?)
নেরা ৫৫।২।৭; দেবভা। (সং—দেবক'
বাদেবভা, দেব'+অ=দেবা।)

দোআদশ ... ১, ৯। ১। ২৭; দ্বাদশ।
দোহাতিয়া ১৮৮ ৷ ২, ২২৭। ২। ২৫, ত্ই
হাতে । ত্ইহাত দিয়া।
দোসহ ... ১৩৫। ২। ১৯; 'সংহাদর' হইবে কি 

'বো সহ ভাই'—তই সহোদর ভাই

# ধ

ধড়া…১৪৮।২।১৮; বন্ত্রবিশেব। ধর্মসং…৩৭।১।২৩; १ ধন্য ৮৫।২।১, ধবল, শ্বেতবর্ণ। ধাড়ি...২৫।১।১৫;১৫৪।২।৮, ধাটী শক্ষাত ধাটী--শক্তসমূ্থগমনম্। ধারা...২২।২।৪; ?

리

নব (লব ?)...২২১।১।২৭, ছাপার ভূল ?
নহিলাহোঁ...২৯।২।১২; হইলাম না।
নাকড়ির...২২২।১।১; বোধ হয় 'লাক্ডির'
হইবে। লাক্ডি বা লেক্ডি শব্দের
অর্থ—য়ষ্টি, চাবুক।
নাগিআছে...২৪৪।১।১২; লাগিরাছে।
নাটুআ...২৬৩।২।২৬; নর্ত্তক।
নাদ...১৪৫।১।২৬; ধ্বনি. শন্দ।
নাবড়ি..৭৬।১।২৫; 'না বড়ি' 'বড় নাই'
'না বড়ি করে' অর্থাৎ 'আমার
চেরে আর বড় নাই' এইরূপ অহছার্প্রকাশ করে।
নাছে...৯৭।২।৯; স্থান করে।
নিঅড় ..৫০।১।১০; নিগড়। শৃদ্ধল।

নাহে ... ৯৭। বাল ; স্থান করে।
নিঅড় .. ৫০। ১া০০; নিগড়। শৃষ্ণল।
নিয়ড়... ১০৯। ১৮; ১১৫। হা২৬; নিকটি।
নিকটিআ...৮১। হা২৪; 'নিকসিয়া' বা
'নিকলিয়া' হইবে বোধ হয়।
নিকলিল.. ৪৫। হা১৯; বাহির হইল।
নিকলে ৬৩। ২৭; ৭৮। হা৫, বাহির হয়।
নিহিঞা...৮। ১া২৩; নিশ্বন্ধন করিয়া।
নিয়েজ্ঞা...১৮১২৩; নিশ্বন্ধ করিয়া।

নিয়ড় ··· ৫ • । ১। ১ • ;
নিয়লী ··· ৫ • । ১। ৭;

হইয়াছে ।

নিরকত · · ৭৮।১।২৪; নিরক্ত; বক্তশৃস্থ । নিরাক্ল · · ৭০।২।১• ; অব্যাকুলভাবে, স্বচ্ছদে।

নিরাপ...৩৯।১.৩ মূলগ্রন্থ দেখ। নির্জ্ঞাস...৩৬।১।১২; এটি চল্তি কথা। প্রবলন্ধপে।

নির্যাস--- সাসচ; ভারোর্থ 'দার কথা বা 'তত্ত্ব'। (ইংরাজী—Extract, দুইতে পারে)

নির্বৃতি শহাসংধ; হাহা৪; শ্বস্তি। শ্বপ।
নির্বার...১৮হাহা১২ 'বধ' হইবে কি ?
নির্বিষয়...১৮ গহাণ; বিষয়চিন্তাশৃন্ত।
নিবড়ি শহাই গ্রাহাণ করিয়া।
নিবড়ে ...২৬৯া২৫; সমাপ্ত হর।
নিবড়িল শহাই শ্বিষা হর।
নিবড়িল শহাইল বা হইল। (নিবর্ত্তিল)

নিশ্বরে...১১৯।১।২৮; নিঃস্থত হয়। বাহির হয়। নেউটি ... ১৮ না১।২৫; ফিরিরা।
নেউটিআ ... ন১।২।ন; ৯৮।২।২; ১৩২।১।১৯;
২২৭।১।১৬; ফিরিয়া।
নেউটিলা...২৫৭।২।১; ফিরিল; প্রত্যাবর্তান।
নেত...১০।১।৫; ১৫৬।১।১১;২৬৫।২।১৯-২০;
স্কল্ম বস্ত্রবিশেষ।

নেহালিয়া -- ১৮৫।১।৬;
নেহালিঞা -- তা১।১৬;
নেহালে -- ১১৪।১।২৬;১৩৫।১।১৮;২৩১।২।৬;
২৩৪।১।২•;২৩৮।২।২৪; নিরীক্ষণ
করে।

2

প্রথান ... ৯৮।२।३६; প্রস্থান। প্রয়াণ। त्रक्षि ... २७४।२।२; 'शक्षि' इटेरव। 'गू:-\*bनी' 'পঞ্চলি আবস্তা' অর্থাৎ পং-শ্চলী বা বেখ্যার মত ব্যবহার। পড়িনাতি...৪না১া১০; প্রপৌত্র। প্র-নপ্তু। পত্তন...১৮৯।২।২১; গ্রাম। পর.... ১।১।२১; শক্ত। পর্চ ও—২৪৮। ১৮; প্রচ ও; প্রবশ। পরতেক...১২ • ১ ১১৩; পরতেথ...৯।২।১৬;২৪৪। ন৯; পরস্পাত... নাহাত; পাতাবিশেষ। পরস্থার 

। ২৬৫ । ২। ২; পরমস্থাথ। প্রকৃতিআ ৬৪।২।৮; পার্বত্য । পাকলে...১৩গ্রা১৮; পাঁকল—পঞ্চিল অর্থাৎ मक्तन। इत्मारश्रदाध 'भाकतन' व्हेशास्त्र । পাখালিল 🗝 🌭। হা২৩; প্রকালন করিল। পाथात्म...२०४।२।२७; श्रक्नामन करत्। शाबी ... > गरा . .: भाषि...२७e1२1>>;

'পাখী--পাথী-পाथीयानि...>>।२।> •; আলি'বা'পাথি পাখ্যাইলি' এক भाषााईमि...२७८।२।১৯: श्ट्रेदि । এখনও চলতি কথায় 'পাথি পাকালি' বলে। অর্থাৎ পাথী এবং অন্তান্ত জন্ত। ঠিক যেন 'পাৰী টাখী'। পাঙ--->•वारा>१; পাই। পাঙ্জে ে ২০৫। সাহ •; ডম্মে। আমরা এখন শব্জাত। পাঁচির জ্বাচার। পাঁচে ৪৫।২।২৮: সন্মুখের দিকে প্রেরণ করে। (মূলগ্রন্থ দ্রপ্তবা) পাছড়া...২ : শাহা১১; পাছোড়া…২ৢ১৭ ২৷১৮;

পাটধড়া... १১ १। २। २२; পট্রধটী।

পটिশালा...>० दारा>>; পঠিশালা।

भार्षेत्नक · > १ कारार • ; शर्षे-श्रमावस्त्रवित्मव ।

পাটোআড়...৮ । হাখ;৮১। ১।১১; ২১ ৭। হা২৮; যোন ক্ৰীড়া।

পাড়্যাতে...৯৮।১।৫; প্রত্যয়িতে—আশ্বন্ত করিতে। পাতিলী ..ে ১১১০; পাত্র, হাঁড়ী প্রভৃতি। পাতে ... ৯৭৷১৷৩, 'মুখ নাহি পাতে' অর্থাং মুখ দেখায় না, সন্মুখ হয় না : পাত্যাইতে ১৭১।২।৬; পাত্যাইরা ১৯৩।২।৪; পাত্যাইরা ১৯৩২।৪; পাত্যাইরা ১৯৩।২।৪ পাতি...>৬।১।৪: সারি। পংক্তি। পারনা...১০৮/১/৯; ১৭৯/২/২৭; ভোজন; পারণ অর্থে ব্রত-উপবাদের পর-দিনে আহার। भौतिम ... २ > ৮। २। २ ; 'भितिम' २ हेर्त । পালান .. ৪২।২।২১; 'পানাল' হইবে বোধ रमः। शानान- शर्धानानी । (?) পিত্রবধিনী...২্যাহাহে : পিত্রধিনী হুইবে না ত ? পিতৃঘাতিনী। **পিলে...>** २०१२) ७ : পরিধান করে। পুছিত্র ২০১।১।২৫ ; জিজ্ঞাসা করি। পুছেন্ত । ২।১।২৪ : জিল্লাসা করেন। शृहेश्विनी : १७७१। २१ ; २००१) : : কুতাঞ্জলী।

थूनवरा... ecisib; -- धूनन व, खावात न्छन। পুরস্করী...২।২.১৬; ১২১৷১৷ ৫ (অগ্রগুণ্য ৷ ু ১১৮৷১৷২২; প্রশংসার্হ ৷ ) ৫ পুরস্কারি...২০খামান ; 'লোকপুরস্কারী' লোকপ্ৰিত বা লোকাগ্ৰগণা। পেলাপেলী ৩৫৷২৷৪ : ফেলাফেলি পেলারে...৭৪:১।২০; ) ফেলাইয়া বা ২৭২৷১১১৪-১৫ (ফলে। পরি-পেলে...৯০৷২।২৬। ; ১৬৷১১১ :दादाक्त > 6812150; প্রেরণ করে। পৈশহ···২৪:২।২৫; । প্রবেশ করে। পৈশে-->৮৭।১।১২ : ∫প্রবেশ কর। (ला...२) (।२।२०; পোএর...২৬৯।১।৭: পুত্রের। পোত্রের...১৭৫।২।২৬: সত্তের। (भारती...) । गरद मा পুকুর, পুষ্বিণী। ३३।२।३৮ ; 30312120: (পाएनि ... ) ७७। राम खाना, प्रश्नानि । প্রতিপান... ১৭৮। হা৮; প্রতিপালক।

5

ভালে ... ৯৮ ২ ২৩; ভালরপে।
ভিত্ত ১৮০।২।১৮; ভীত, ভর।
ভিনাঞা ... ৭।২।২৭; ভিজাইরা।
ডোকশোবে ... ৭৬৷২।১৩; ক্ষ্মা পিপাসার
ভোধে ... ৯।১।২২; ক্ষ্মার।

ভোগ জে পিরাস শেশ হা ১ ৪ ; ভোগতৃষ্ণা। ভোল ... ৮। ১।২১; মোহে। ভ্রমে। ক্ষধা পিপাসা।

মথি...> ৭৭।১।১, মন্থন করিয়া।
মনোহিজ...২৪।২।২৫; মনস্কামপূর্ণ বা মঙ্গল।
মহৈ...১।২।৪; মন্থন করে।
মহিল...১৯৮।২।১৬; মারিল; বধিল।
মান...১৯৮।২।২১; সম্মান, মান নাহি
ধরি অর্থাৎ সম্মান বা প্রশংসা

মানা...১৩৪।২।২১; ১৪৮।২।১৯; এ শক্টি কথার মাত্রাবিশেব। রাচ্দেশে এখনও এরপ অর্থে 'মেনে' শব্দের প্রচুর প্রয়োগ দেখা ঘার।

মারু... ৬৬ ২।৩; 'মারুও' শক্তের অর্থ— পথ। সম্ভরত ঐ 'মারুও' শক্ত হইতেই 'মারু'র উৎপত্তি।

মাল্য...১৮৮।১।৫ ; বং বা প্রহার করিল। মাইল, মারিল।

মালো…১৮২।২।.৮; বধ বা প্রহার করি-লেন। মাইলো,—মারিলে। মিত · · · ০৪।১।২৫; মিত্র।

মূটকি · · · ১০৮।১।২১; 'বজের মূটকি' 'বজ্ব
মূটি' হইবে বোধ হয়।

মূঠকা মূঠকি · · · ১৪৩।১।২৬; মূটামৃষ্টি।

কিলাকিলি।

মুজ্যালা...৬৬।২:৩ ; মুকুটাদি 'শিরোভূষণ-বিশেষ' হইবে বোধ হয়।

মুঢ়া ··· ৯।২।২৬; শীর্ষদেশ; অগ্রভাগ।
মুদা ··· ৫।১।৪; 'মুদ্রা' শক্তজাত। পূর্ব্বকালে
কোন জিনিস কোথাও পাঠাইতে
হইলে পাত্রের মুথ বন্ধ করিয়া 'মুদ্রা'
বা শিলমোহর করিয়া ঢাকনি দেওয়া
হইত। এথানেও সেই অর্থ।
পাত্রের মুথের মোহর বা ঢাকনি।

মেলনা...৯।২।১২; ? ভাঙ্গিরা।
মেলানি ১৬•।১।১৯; ১৬১।২।২৬ ইত্যাদি

বিদায় বা বিদায়সভাক্রে।

মো তথা হাহ৬;৩৮। ১১৯; আমি বা আমাকে। মোসম্ভার...১৮•। ২০১৮; আমাদের সকলের।

য

যাবড়ি…৪৬।১।১৪;় (?) বুলাহ্তি…১৭।১।২১; গুনামহ; যুক্তি। युक्षत्र...৩৽।১।২৬; ৪২।২।১৮-১৯; যোদ্ধা। যুদ্ধ করে। ব

রকত...১৬।১।৪: রক্ত। तक ... > 6 १। >। २७; तक्षनकाती। '(भोदर्ग ···রঙ্গ' অর্থাৎ এতদিন রাক্ষস-वशामि कार्या (कवन (भोर्यावीर्याहे প্রকাশ করিতে হইয়াছে; কিন্ত তাহাতে স্নীর মনোরঞ্জন করিতে পারি নাই। রজোমোহে...৩৮।২।২৪: রজো ঋণজনিত মোহে। त्रदश्च∙∙∙८ श्राटिः, ভान नार्ग। রভে...>>৪।১।১১; ১৩।।२।১२; ৯१।১।७: পলায়ন করে বা পশ্চাৎপদ হয়। দোউড দেয়। व्रम्हेभारणयु...>६ अ)।२२ ; व्रष्ट्रनभागात्र । রহাইতে...> । হা২ ঃ; ) রাখিতে; त्रहाका ... २२।३।३७;

ता... ১৯৯। ১। ১३; त्रव; भक्ष; ही ९कात । রাউত--->•৮াসাধ; ১৫৪াসা২৬; রবকারী সৈন্তবিশেষ। ( ঘড়-শব্দ দেখ ) রাএ - ৩৮। ১।১৮: শব্দে বা চীৎকারে। রবে। রাখ...১৯/১/২১ - বর্ণ গেল' देश्य । त्राकविष्टत्म...७।२।১७; 'ज्ञश्रताकविष्ट्रत्म' रुटेर्द र्वाथ रहा। विक्रास —বিগত-চ্চন্দে। এলো-(मर्ला तकरम। রাও রাঙি ... ৯৮/১/৮-১৪; বিধবা, পতি-होना । রাতা…১৪৭।২।১৯; 'রাজা' হবে না ত ় উপনিষৎ অনুসারে 'দাতা' অর্থ করিতে পারা মায়।

লড়িলা...৭।১।২৭, নড়িল, চলিল ।
লড়ে.. ২৭।২।১০; ১৫৮।১।২-৩; আন্দোলিড হয় বা অগ্রসর হয়।
লংখিতে ১১৭।২।২৮; লজ্বন বা অবমাননা
করিতে
লাগ...৫৮।২।২; নিকটে; সমীপে।
লাকট প্রাচাহত; উলক।
লাক্ক...১।১।১৫; খই।
লিখনসঞ্জাভ...৬২।২১২; (যে পত্রখানি)

ে লেখা হইয়াছে।

প্ৰঠে প্ৰকৃতিৰ মত।

লেখি...)২৮।২।২৭; তুলনা করি। লেখী...৩৩।২১২; গণনা করি। মূলগ্রন্থ দেখা।

लाएं --- २१। २४; (नार्षे -- नूषे करत्र।

লোহ...১৬•।১।১৩; ১৬১।১।১৬; ১৬৯।১।১৯; ১৭•।১।১•; ১৭২।১।১৬; ৮৫।২।২•; ২৫৯।২।১২; অঞ্

ব

বই...১৫৭।১।১; গত হইলে, পরে।
বউরী---৯৮।১।৭; 'বধ্টা' অন্নবয়স্কা বধ্।
বক্ষেবন্ধ---৪৭১১ ১; 'বাঁকার প্রতি বাঁকা।
বড়াঞি...৪•। গৈ৯; ১২৩।১।২৫; অহন্ধার,
গৌরব।
বিদিন্ধান---১১৯।২।২৭; বন্দী।

विनिष्यांन २२२।२।२१; वन्ती । वत्रनांत्र २३२॥२।२२ ; वत्रनावी, श्रार्थना-भृगकातिनी ।

वज्ञान ... > १६।२।>६; 'वज्ञानरम' इहेरत त्वास हम्र । वाजागमीरक । वनका... > ६७।२।>२; वनम्म, वाना ।

वनात...>२०२।२৮; वनाख, कश्छ। वटनाटमी ...>२०१।२१२; वनिव।

वस् (वह १)...>>२।२।२७; हानात जुन

বাই...१৪।২।৬; বাছ।
বাই...১৬৮।২।২৮; চালনা করে।
বাউ...১৫।২।১৯; বায়।
বাক...১৫৬।১।২৬; বাক্যে।
বাশ্র্ম হাহা১•; প্রশংসা।
বাবছাড়...১২৩।২।১১; বাবছাল।

वाष्ट्र---११११७; ३१४।३।७; २०१।२।३० ३ २७१।ऽ।३७: वर्षाः १४। বাড়লি ১•৩া২া২;\*
বালী---১৮৮।১০;
বাহরা---১১৷২া৫; (१)
বাহড়ি---২৫৷১ ১৬; ১৮৯ ১৷১২; ত্যাগ
করিয়া। 'ফিরাইয়া' অর্থও হয়।

বাহ...१।১।২৫; ১৯১।২।৫; বাহু। বাসসি...৬।২।১৮; অন্বভব কর। বিকলি•••৭৬।২।১৮; 'করম্রে বিকলি' ব্যাকু-

> শতা বা বিক্**ন**ভাব প্রক করে।

वि**क्**ति...>>८।२।>৯; विक्तनी, विद्यु९ । विज्ञथा...२२०।२।৮; वार्थ, मिथा। विज्ञथि...>१।১।১७; वार्थ।

বিমুকি বিমুকি ... ১০৮। ১। ২২; ১ মূলগ্রন্থ বিমুকি ... ১০২। ২। ৫; বিমুকী বিমুকী ... ১০৮। ১। ৭;

বিলসে...) ৭৬। ১।২৮; ভোগ করে। বিবৃদ্ধি···>২৫। ১।৩; হর্ব্দ্ধি। বিসাট...৬•।১।২৭; ু 'বচন-বিসটে' বাগ্-

বিস্পষ্ট। বাক্য-ত্যাগ।

विरुम्म...४६। ১१२०; ४७॥ २१२४; २५॥ २१३। ३३ ३१२८; प्रत्रमानाम । अरुम

রিক্তান ১০০ চাহ১; ১০২ চাহ১৬; ১৫৬ চা:২-১৫

বেকান ৫৪:২ ২০;২৬ হাই১০; কাল।
ইত্যাদি
বুদ্ধে হেত হাই।৭; বুদ্ধিতে।
বুল হেত হাই।১২৬; ভ্রমণ কর।
বুলি ১৭ হাই১১৭; ১৮৮।১২; ২০১।২১৩;
ভ্রমণ করি।
বুলে ২২২।২২০; ১৮৮।২২০; ২০৯।২৫৫;
২২১।১১৬-২।১৫; ২৩১।১৮; ভ্রমণ

1

শক্তে...২০৮।২।২; শস্তিতে। শক্তো...২১।২১৯: প্রাণশক্তে' প্রাণ দিয়া' শক্তি দিয়া। শর্করপুটালি ০০১৮৭।২৮; চিনির বোঝা। শবদ...৭০১।২৩; শব্দ। শাল...২৬।১।২; শল্য।

শিঅলি তভাসা২স; শৃষ্টলী অর্থাৎ শৃষ্ট্টলা-ভিজ্ঞ। শিবাই—৪।২।সঃ; হে শিব! শুতিঞা...৫২।সাস;শর্ম,করিয়া। সং—স্থা। শুনিউ ...সচা২।১৬; শুনিব।

F

সউরন.. ৮০:২।৭; 'সভরন' হইবে। স্মরণ।
সক্রাশন…১২৪।১।৪; 'সক্রাশন' হইবে।
সিদ্ধি, ভাঙ\_।
সক্ষাল…১৭২।১)১০;২৫৯।১।২१;
সক্ষাল…১৭২।১)৪।৫;
সক্ষাল…১৭২।১;৪০।২।০; দ্রবা। 'সজ্জ' হইবে।
সক্ষাভি
সক্রাভি
ইক্রোভি
ইক্রোভ
ইক্রাভ
ইক্রাভ
ইক্রোভ
ইক্রাভ
ইক্রা

সভিআ

নহিনা

সভিনা

সভিন

সভিনা

সভিন

সভিনা

সভি

शक्षादेश ... ১৮৪। ১। ১ ३; व्यत्वन क्रिन । সম্ভাল--- ২৩৪।১।১৮; সামলাও। সরিতে…২৯।১।১৬; 'সহিতে' হবে কি ? সবদি ... ১৬৪। ১।৯; শপথ, দিবা । महि... > १ > १ २ १६ वा मधी। সাজাড়... ২৩৬। ১/২০; 'রণের সাজাড়' রণ-সজ্জা' 1 সাজিবেঁ।...২৫।১।১৫; সজ্জিত হইব। माना...११।२।३; मुर्गेष्काया । माम...२७१।२।८; भाना সামাই ০০৬০।২।২২ প্রবেশ করিবা . माछारेन, मागारेन, **२৮।**>२६; ४७।२१२०,३४१।२१२३,३८३।३१३४, माखात्र... ३२७।२।२৮,२७०।১।३८; कत्रिम । সায়ক...>৯২।২।৫; বাণ। হর্ভিকরপ বাণ 'গুরিক্সায়ক'। मारम... >१ ७१। >६: शृत्र, मानारज, प्रमान-শালে, সভাগৃহে। मामिष्ड...३१० ३।२२; भामन कतिष ।

माङ्गा ... ६ दाराद; में गुरुषा সিচিকা...৭৪।২৮ ; 'হুচিকণ' বোধ হয় ৰ निक्का .. ৮८। २। २१, वराहार : , क्रानाक ; ১৮৪া২া১৪; 'দিউরে উঠাকে 'শিঞ্চতা পড়া' বলে। সিতের…১৭৪।১।২৭; শীতকালের বালের নিমিত্ত। সিদ্ধেয় ... ১৯১। ৫; 'সিদ্ধের' হবে কি? সিদ্ধ পুরুষের। नियमि ... ১৬१। २।৮; প्राणीम । मित्राहेका ... ०६। २। ५; (१) ञ्चधाकर्शनाम ... २ ६ ०। २। २৮; य नाम ञ्चधामन् ( আমার বোধ হয় 'স্লধাকণ্ঠ' কবির শুক্র ছিলেন। সুনিলাভ ... ১২২।২।১০; শুনিলাম। স্থলঙ্গ...৮০।২।১।১২; স্থড়ঙ্গ।

ছক্ -- > ২০ | ১০ |
ছক্ -- ১৬ | ২০ |
ছক্ -- ১৯ | ১০ |
ছক

शहै...>>>।>।२७; महि, छन १

হাঁকরিঞা ··· › ১ ৷ ১ ৷ ডা কিয়া, আহ্বান করিয়া। হাকার ··· ৪ ৭ ৷ ২ ৷ ১ ; ১ ৫ ৪ ৷ ২ ৷ ১ ৪ ; ডাক, আহ্বান । হাড় ... ১ ২ ৷ ২ ৷ ২ ; হাড় , হস্ত ৷ হাজী ··· ৫ ৷ ১ ৷ ১ ; ৬ ৬ ৷ ২ ৷ ২ ; হাড়ী, যাহাতে পাক করে । হাজা ··· ৭ ৬ ৷ ১ ৷ ২ গুলু , প্রতিবন্ধকতা, বাধা হাজা ··· ৭ ৬ ৷ ১ ৷ ১ ; হজা শ ।

ञ्चाक ... खुष्क ।

# অপ্রচলিত শব্দের তালিকা।

হাথি ... ৭ বাস ।
হাবে ... প্রান্ত হার ।
হাবে ... প্রান্ত হার ।
হাবে ... পর হার হার ।
হাবে ... পর হার হিল ।
হারাল্য .. হারাইল ।
হিল্মা ... ১৬৮। ১) ২৬ বুক

34

হেউ...৯।২।১); ২২।১।১৩; े নীচে।
হেব...৪৩১।২; এমন।
হেমস্ত...৪।১।১২; হিমালয়।
হেব...৭৯।২।১৬; দেখ।
হেলায়ে..৪৬।২।১৮; জনায়াসে।
হেলায়ে..৪৮।১৮; জনায়াসে।